**168.** **Allegato B**

# ATTI DI CONTROLLO E DI INDIRIZZO

## INDICE

**Interrogazioni a risposta scritta:**

| | | PAG. |
|---|---|---|
| Biondi | 4-12913 | 9741 |
| Biasci | 4-12914 | 9741 |
| Tripodi | 4-12915 | 9741 |
| Gorgoni | 4-12916 | 9742 |
| Bottini | 4-12917 | 9742 |
| Ravaglia | 4-12918 | 9742 |
| Matteoli | 4-12919 | 9743 |
| Mancini Gianmarco | 4-12920 | 9743 |
| Pecoraro Scanio | 4-12921 | 9743 |
| Pecoraro Scanio | 4-12922 | 9743 |
| Pecoraro Scanio | 4-12923 | 9744 |
| Pecoraro Scanio | 4-12924 | 9744 |
| Leccese | 4-12925 | 9745 |
| Russo Ivo | 4-12926 | 9745 |
| Russo Ivo | 4-12927 | 9746 |
| Matteoli | 4-12928 | 9747 |
| Matteoli | 4-12929 | 9748 |
| Matteoli | 4-12930 | 9748 |
| Matteoli | 4-12931 | 9749 |
| Cellai | 4-12932 | 9750 |
| Tassi | 4-12933 | 9750 |
| Rutelli | 4-12934 | 9750 |
| Leccese | 4-12935 | 9751 |
| Polli | 4-12936 | 9752 |
| Scalia | 4-12937 | 9753 |
| Ferri | 4-12938 | 9753 |
| Calzolaio | 4-12939 | 9754 |
| Matteoli | 4-12940 | 9756 |
| Colucci Gaetano | 4-12941 | 9757 |
| Colucci Gaetano | 4-12942 | 9757 |
| Colucci Gaetano | 4-12943 | 9757 |
| Buontempo | 4-12944 | 9758 |
| Bottini | 4-12945 | 9758 |
| Rossi Oreste | 4-12946 | 9759 |
| Cellai | 4-12947 | 9759 |
| Pappalardo | 4-12948 | 9759 |
| Scalia | 4-12949 | 9760 |
| Ravaglia | 4-12950 | 9760 |
| Carcarino | 4-12951 | 9760 |
| Lettieri | 4-12952 | 9761 |
| Parlato | 4-12953 | 9762 |
| Parlato | 4-12954 | 9762 |
| Parlato | 4-12955 | 9763 |
| Parlato | 4-12956 | 9764 |
| Parlato | 4-12957 | 9764 |
| Parlato | 4-12958 | 9764 |
| Tassi | 4-12959 | 9765 |
| Parlato | 4-12960 | 9765 |


**N.B. Questo allegato, oltre gli atti di controllo e di indirizzo presentati nel corso della seduta, reca anche le risposte scritte alle interrogazioni presentate alla Presidenza.**

| | | PAG. |
|---|---|---|
| Diglio | 4-12961 | 9766 |
| Bolognesi | 4-12962 | 9768 |
| Taradash | 4-12963 | 9768 |
| Romeo | 4-12964 | 9768 |
| Testa Enrico | 4-12965 | 9769 |
| Testa Enrico | 4-12966 | 9769 |
| Pasetto | 4-12967 | 9770 |
| Cellai | 4-12968 | 9770 |
| Trabacchini | 4-12969 | 9771 |
| Trabacchini | 4-12970 | 9771 |
| Berni | 4-12971 | 9772 |
| Apuzzo | 4-12972 | 9772 |
| Crippa | 4-12973 | 9773 |
| Crippa | 4-12974 | 9774 |
| Marcucci | 4-12975 | 9774 |
| Calderoli | 4-12976 | 9775 |
| Apuzzo | 4-12977 | 9775 |
| Filippini | 4-12978 | 9776 |
| Vito Elio | 4-12979 | 9777 |
| Vito Elio | 4-12980 | 9778 |
| Gasparri | 4-12981 | 9778 |
| Gasparri | 4-12982 | 9778 |
| Gasparri | 4-12983 | 9779 |
| Gasparri | 4-12984 | 9780 |
| Maceratini | 4-12985 | 9780 |
| Taradash | 4-12986 | 9781 |
| Torchio | 4-12987 | 9781 |
| Torchio | 4-12988 | 9781 |
| Borghezio | 4-12989 | 9781 |
| Matteja | 4-12990 | 9782 |
| Provera | 4-12991 | 9782 |
| Crucianelli | 4-12992 | 9783 |
| Valensise | 4-12993 | 9783 |
| Valensise | 4-12994 | 9784 |
| Valensise | 4-12995 | 9784 |
| Bottini | 4-12996 | 9784 |
| Ravaglia | 4-12997 | 9785 |
| Russo Spena | 4-12998 | 9785 |
| Prevosto | 4-12999 | 9786 |
| Servello | 4-13000 | 9786 |
| Pasetto | 4-13001 | 9787 |
| Nania | 4-13002 | 9787 |
| Nania | 4-13003 | 9788 |
| Buontempo | 4-13004 | 9788 |
| Servello | 4-13005 | 9789 |
| Taradash | 4-13006 | 9789 |
| Nuccio | 4-13007 | 9790 |
| Napoli | 4-13008 | 9790 |
| Scalia | 4-13009 | 9790 |
| Crippa | 4-13010 | 9791 |
| Palermo | 4-13011 | 9791 |
| Biasci | 4-13012 | 9792 |
| Testa Enrico | 4-13013 | 9792 |
| Russo Spena | 4-13014 | 9793 |
| Ciabarri | 4-13015 | 9794 |
| Cellai | 4-13016 | 9794 |
| Borghezio | 4-13017 | 9795 |
| Borghezio | 4-13018 | 9795 |
| Fini | 4-13019 | 9795 |
| Trabacchini | 4-13020 | 9796 |
| Pasetto | 4-13021 | 9797 |
| Sospiri | 4-13022 | 9797 |
| Galasso Alfredo | 4-13023 | 9798 |
| Galasso Alfredo | 4-13024 | 9798 |
| Galasso Alfredo | 4-13025 | 9798 |
| Galasso Alfredo | 4-13026 | 9799 |
| Galasso Alfredo | 4-13027 | 9799 |
| Perani | 4-13028 | 9800 |
| Gambale | 4-13029 | 9800 |
| Pratesi | 4-13030 | 9800 |
| Scalia | 4-13031 | 9801 |
| Orgiana | 4-13032 | 9802 |
| Caccavari | 4-13033 | 9802 |
| Colucci Gaetano | 4-13034 | 9803 |
| Passigli | 4-13035 | 9803 |
| Pecoraro Scanio | 4-13036 | 9803 |
| Tassi | 4-13037 | 9804 |
| Mantovani Silvio | 4-13038 | 9804 |
| Pivetti | 4-13039 | 9805 |
| Rigo | 4-13040 | 9805 |
| Maceratini | 4-13041 | 9806 |
| Gasparri | 4-13042 | 9806 |
| Pappalardo | 4-13043 | 9809 |
| Mancini Gianmarco | 4-13044 | 9810 |
| Tassone | 4-13045 | 9810 |
| La Penna | 4-13046 | 9811 |
| Tassi | 4-13047 | 9811 |
| Latronico | 4-13048 | 9811 |
| Russo Spena | 4-13049 | 9812 |
| Nuccio | 4-13050 | 9812 |
| Patuelli | 4-13051 | 9813 |
| Pecoraro Scanio | 4-13052 | 9813 |
| Buontempo | 4-13053 | 9814 |
| Gasparri | 4-13054 | 9814 |
| Pappalardo | 4-13055 | 9814 |
| Pappalardo | 4-13056 | 9815 |
| Pappalardo | 4-13057 | 9816 |
| Pappalardo | 4-13058 | 9816 |
| Matteja | 4-13059 | 9817 |
| Crippa | 4-13060 | 9818 |
| Servello | 4-13061 | 9818 |
| Tremaglia | 4-13062 | 9818 |

| | | PAG. |
|---|---|---|
| Tremaglia | 4-13063 | 9819 |
| Tremaglia | 4-13064 | 9819 |
| Tremaglia | 4-13065 | 9819 |
| Tremaglia | 4-13066 | 9820 |
| Tremaglia | 4-13067 | 9820 |
| Tremaglia | 4-13068 | 9820 |
| Tremaglia | 4-13069 | 9821 |
| Tremaglia | 4-13070 | 9821 |
| Tremaglia | 4-13071 | 9821 |
| Tremaglia | 4-13072 | 9822 |
| Tremaglia | 4-13073 | 9822 |
| Tremaglia | 4-13074 | 9823 |
| Tremaglia | 4-13075 | 9823 |
| Tremaglia | 4-13076 | 9824 |
| Parlato | 4-13077 | 9824 |
| Parlato | 4-13078 | 9824 |
| Parlato | 4-13079 | 9826 |
| Parlato | 4-13080 | 9827 |
| Parlato | 4-13081 | 9828 |
| Parlato | 4-13082 | 9829 |
| Parlato | 4-13083 | 9830 |
| Parlato | 4-13084 | 9831 |
| Parlato | 4-13085 | 9831 |
| Staniscia | 4-13086 | 9831 |
| Borghezio | 4-13087 | 9832 |
| Bottini | 4-13088 | 9833 |
| Bottini | 4-13089 | 9833 |
| Parlato | 4-13090 | 9833 |
| Parlato | 4-13091 | 9835 |
| Parlato | 4-13092 | 9836 |
| Parlato | 4-13093 | 9836 |
| Parlato | 4-13094 | 9837 |
| Parlato | 4-13095 | 9837 |
| Parlato | 4-13096 | 9837 |
| Parlato | 4-13097 | 9838 |
| Parlato | 4-13098 | 9838 |
| Parlato | 4-13099 | 9839 |
| Parlato | 4-13100 | 9840 |
| Parlato | 4-13101 | 9840 |
| Parlato | 4-13102 | 9841 |
| Parlato | 4-13103 | 9841 |
| Parlato | 4-13104 | 9842 |
| Parlato | 4-13105 | 9843 |
| Parlato | 4-13106 | 9843 |
| Bottini | 4-13107 | 9844 |
| Bottini | 4-13108 | 9844 |
| Tassi | 4-13109 | 9845 |
| Tassi | 4-13110 | 9845 |
| Tassi | 4-13111 | 9846 |
| Tassi | 4-13112 | 9847 |
| Tassi | 4-13113 | 9848 |
| Parlato | 4-13114 | 9849 |
| Parlato | 4-13115 | 9850 |
| Parlato | 4-13116 | 9851 |
| Parlato | 4-13117 | 9851 |
| Tremaglia | 4-13118 | 9852 |
| Tremaglia | 4-13119 | 9852 |
| Giannotti | 4-13120 | 9852 |
| Carli | 4-13121 | 9853 |
| Tassi | 4-13122 | 9853 |
| Battaglia Augusto | 4-13123 | 9854 |
| Battaglia Augusto | 4-13124 | 9854 |
| Turroni | 4-13125 | 9855 |
| Tremaglia | 4-13126 | 9859 |
| Tremaglia | 4-13127 | 9859 |
| Matteoli | 4-13128 | 9859 |
| Matteoli | 4-13129 | 9860 |
| Scalia | 4-13130 | 9860 |
| Scalia | 4-13131 | 9861 |
| Scalia | 4-13132 | 9861 |
| Pasetto | 4-13133 | 9862 |
| Vendola | 4-13134 | 9863 |
| Gambale | 4-13135 | 9863 |
| Pieroni | 4-13136 | 9864 |
| Pivetti | 4-13137 | 9864 |
| Pivetti | 4-13138 | 9865 |
| Tremaglia | 4-13139 | 9865 |
| Tremaglia | 4-13140 | 9865 |
| Tremaglia | 4-13141 | 9866 |
| Colucci Gaetano | 4-13142 | 9866 |
| De Simone | 4-13143 | 9867 |
| Marenco | 4-13144 | 9867 |
| Marenco | 4-13145 | 9868 |
| Marenco | 4-13146 | 9868 |
| Marenco | 4-13147 | 9868 |
| Marenco | 4-13148 | 9869 |
| Marenco | 4-13149 | 9869 |
| Marenco | 4-13150 | 9870 |
| Marenco | 4-13151 | 9870 |
| Marenco | 4-13152 | 9870 |
| Pratesi | 4-13153 | 9871 |
| Ronzani | 4-13154 | 9872 |
| Galasso Alfredo | 4-13155 | 9873 |
| Pieroni | 4-13156 | 9874 |
| Pasetto | 4-13157 | 9875 |
| Parlato | 4-13158 | 9875 |
| Parlato | 4-13159 | 9876 |
| Parlato | 4-13160 | 9877 |
| Parlato | 4-13161 | 9877 |
| Parlato | 4-13162 | 9877 |
| Parlato | 4-13163 | 9878 |
| Rigo | 4-13164 | 9878 |

| | | PAG. |
|---|---|---|
| Russo Spena | 4-13165 | 9879 |
| Russo Spena | 4-13166 | 9880 |
| Russo Spena | 4-13167 | 9881 |
| Vito Elio | 4-13168 | 9882 |
| Pasetto | 4-13169 | 9883 |
| Berselli | 4-13170 | 9883 |
| Berselli | 4-13171 | 9884 |
| Berselli | 4-13172 | 9884 |
| Parlato | 4-13173 | 9885 |
| Soriero | 4-13174 | 9885 |
| Maroni | 4-13175 | 9886 |
| Zoppi | 4-13176 | 9887 |
| Terzi | 4-13177 | 9888 |
| Tassi | 4-13178 | 9889 |
| Tassi | 4-13179 | 9889 |
| Tassi | 4-13180 | 9890 |
| Tassi | 4-13181 | 9890 |
| Tassi | 4-13182 | 9891 |
| Tassi | 4-13183 | 9891 |
| Colucci Gaetano | 4-13184 | 9892 |
| Colucci Gaetano | 4-13185 | 9893 |
| Colucci Gaetano | 4-13186 | 9893 |
| Biasci | 4-13187 | 9893 |
| Biasci | 4-13188 | 9894 |
| Parlato | 4-13189 | 9894 |
| Parlato | 4-13190 | 9895 |
| Parlato | 4-13191 | 9895 |
| Parlato | 4-13192 | 9895 |
| Sartori | 4-13193 | 9896 |
| Mancini Gianmarco | 4-13194 | 9896 |
| Sestero Gianotti | 4-13195 | 9897 |
| Dosi | 4-13196 | 9897 |
| Dosi | 4-13197 | 9898 |
| Mengoli | 4-13198 | 9899 |
| Mengoli | 4-13199 | 9899 |
| Mengoli | 4-13200 | 9899 |
| Mengoli | 4-13201 | 9900 |
| Turroni | 4-13202 | 9901 |
| Turroni | 4-13203 | 9902 |
| Battaglia Augusto | 4-13204 | 9902 |
| Battaglia Augusto | 4-13205 | 9903 |
| Boato | 4-13206 | 9903 |
| Perinei | 4-13207 | 9904 |
| Poli Bortone | 4-13208 | 9905 |
| Lucarelli | 4-13209 | 9905 |
| Tealdi | 4-13210 | 9906 |
| Tealdi | 4-13211 | 9906 |
| Tealdi | 4-13212 | 9907 |
| Tealdi | 4-13213 | 9907 |
| Cicciomessere | 4-13214 | 9908 |
| Tealdi | 4-13215 | 9908 |
| Tealdi | 4-13216 | 9909 |
| Tealdi | 4-13217 | 9909 |
| Tealdi | 4-13218 | 9909 |
| Colaianni | 4-13219 | 9910 |
| Trabacchini | 4-13220 | 9911 |
| Marenco | 4-13221 | 9912 |
| Russo Ivo | 4-13222 | 9913 |
| Russo Ivo | 4-13223 | 9914 |

**Mozione:**

| | | |
|---|---|---|
| Poli Bortone | 1-00167 | 9916 |

**Interpellanze:**

| | | |
|---|---|---|
| Romeo | 2-00673 | 9919 |
| Tarabini | 2-00674 | 9919 |
| Tassi | 2-00675 | 9920 |
| Bonato | 2-00676 | 9921 |
| Borghezio | 2-00677 | 9922 |
| Rossi Luigi | 2-00678 | 9922 |
| Lombardo | 2-00679 | 9923 |
| Tassi | 2-00680 | 9923 |
| Tremaglia | 2-00681 | 9924 |
| Tassi | 2-00682 | 9925 |
| Tassi | 2-00683 | 9925 |
| Borghezio | 2-00684 | 9926 |

**Interrogazioni a risposta orale:**

| | | |
|---|---|---|
| Flego | 3-00916 | 9928 |
| Pellicanò | 3-00917 | 9928 |
| Maceratini | 3-00918 | 9928 |
| Valensise | 3-00919 | 9929 |
| Pivetti | 3-00920 | 9929 |
| Pizzinato | 3-00921 | 9929 |
| Lucchesi | 3-00922 | 9930 |
| Fini | 3-00923 | 9931 |

**Interrogazioni a risposta in Commissione:**

| | | |
|---|---|---|
| Cicciomessere | 5-01094 | 9933 |
| Grilli | 5-01095 | 9933 |
| Trabacchini | 5-01096 | 9935 |
| D'amato | 5-01097 | 9936 |
| Staniscia | 5-01098 | 9936 |
| Ronzani | 5-01099 | 9937 |
| Ronzani | 5-01100 | 9938 |
| Pizzinato | 5-01101 | 9939 |
| Pizzinato | 5-01102 | 9939 |
| Lucarelli | 5-01103 | 9940 |

*ERRATA CORRIGE* ..... 9941

**Interrogazioni per le quali è pervenuta risposta scritta alla Presidenza:**


| | | PAG. |
|---|---|---|
| Aloise | 4-09928 | III |
| Buttitta | 4-04342 | IV |
| Calzolaio | 4-04712 | VI |
| Crucianelli | 4-04655 | VIII |
| Crucianelli | 4-04656 | X |
| Ebner | 4-00041 | X |
| Folena | 4-01902 | XI |
| Galasso Alfredo | 4-02282 | XII |
| Lucchesi | 4-10485 | XIV |
| Maceratini | 4-05264 | XV |
| Marenco | 4-01942 | XV |
| Marenco | 4-05022 | XVI |
| Marenco | 4-05447 | XVII |
| Matteoli | 4-10852 | XVII |
| Mensorio | 4-04727 | XVIII |
| Mensorio | 4-10571 | XIX |
| Mundo | 4-08916 | XX |
| Nucara | 4-01050 | XXI |
| Paissan | 4-08257 | XXII |
| Parlato | 4-00259 | XXIII |
| Parlato | 4-00826 | XXIII |
| Parlato | 4-04914 | XXV |
| Parlato | 4-07181 | XXVI |
| Parlato | 4-10918 | XXVII |
| Pasetto | 4-05236 | XXIX |
| Pasetto | 4-05394 | XXX |
| Petrocelli | 4-01795 | XXXI |
| Pieroni | 4-04825 | XXXIV |
| Poli Bortone | 4-00351 | XXXVI |
| Poli Bortone | 4-00352 | XXXVII |
| Poli Bortone | 4-03085 | XXXVIII |
| Poli Bortone | 4-06556 | XXXIX |
| Rapagnà | 4-10134 | XXXIX |
| Ronzani | 4-02707 | XL |
| Russo Ivo | 4-08462 | XLI |
| Scalia | 4-00639 | XLII |
| Sospiri | 4-01193 | XLII |
| Tassi | 4-00500 | XLIII |
| Tassi | 4-00508 | XLIII |
| Tassi | 4-00515 | XLIV |
| Tassi | 4-00557 | XLIII |
| Tassi | 4-00606 | XLIII |
| Tassi | 4-00622 | XLV |
| Tassi | 4-03307 | XLV |
| Tassi | 4-05300 | XLVI |
| Tassi | 4-08831 | XLVII |
| Tatarella | 4-01874 | XLVIII |
| Torchio | 4-04836 | XLIX |
| Tremaglia | 4-02022 | L |
| Tremaglia | 4-02685 | L |
| Tremaglia | 4-03272 | LI |
| Tremaglia | 4-04211 | LI |
| Tremaglia | 4-06050 | LI |
| Tremaglia | 4-06425 | LII |
| Trupia Abate | 4-04461 | LII |
| Vigneri | 4-10296 | LIV |


Per esigenze tipografiche i documenti del sindacato ispettivo vengono pubblicati in un ordine diverso da quello comunemente seguito.

## INTERROGAZIONI A RISPOSTA SCRITTA

BIONDI – *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere quali provvedimenti intenda adottare in merito alla realizzazione di una RSA di mq. 4.000 in località San Teodoro (Genova) che comporta l'abbattimento del « Bosco dei frati », locale area boschiva, con dichiarate modificazioni idrogeologiche che risulterebbe necessario valutare attentamente. (4-12913)

BIASCI. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

la strada statale 68 risulta essere l'arteria di maggiore interesse nella direttrice Cecina-Firenze-Siena;

il progetto di massima riguardante l'ammodernamento della stessa, redatto dagli enti locali con il contributo della Cassa di risparmio di Volterra, aveva ricevuto il parere favorevole da parte del consiglio di amministrazione dell'Anas già nel lontano 1989;

a tutt'oggi, i lavori di ammodernamento non risultano ancora conclusi: i lotti 8 e 9, approvati e finanziati dal consiglio di amministrazione dell'Anas nel maggio 1991 non sono ancora iniziati e i lotti precedenti non sono ancora interamente ultimati –:

in base a quali motivazioni non siano stati completati i lavori di ammodernamento della statale 68, programmati da circa un decennio, la cui parte finale risulta approvata, finanziata ed in attasa di essere appaltata;

cosa si intenda fare, concretamente, per porre rimedio a tutto ciò, evitando così di aggravare ulteriormente la vivibilità di una zona quale la Val di Cecina, le cui prospettive future, sotto parecchi punti di vista, risultano piuttosto difficili e che, ultimamente è stata, tra l'altro, epicentro di movimenti tellurici ripetuti che hanno creato panico nella popolazione e mobilitazione da parte di tutte le organizzazioni legate alla protezione civile: in questo contesto la necessità di una rete stradale efficiente si è sentita con ancora maggior intensità. (4-12914)

TRIPODI. — *Ai Ministri dell'agricoltura e foreste e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

i dipendenti del Consorzio agrario provinciale di Reggio Calabria occupano ormai da diversi giorni i locali del CAP per protestare contro il commissario liquidatore dottor Hiram Marsilii, che dopo aver disatteso gli obblighi sottoscritti nel protocollo d'intesa del 4 novembre 1991, ha disposto la cessazione dell'attività del consorzio e il licenziamento dei 30 dipendenti;

la sciagurata decisione del commissario, non solo priva i 30 lavoratori del posto di lavoro, in una città dove la disoccupazione raggiunge il 40 per cento, ma taglia il reddito per vivere a circa cento famiglie che operano nell'attività indotta;

la cessazione dell'attività dell'azienda non trova alcuna fondata giustificazione sul piano economico e finanziario in quanto l'esercizio 1992 si è chiuso con un attivo di circa 450 milioni di lire e può recuperare anche 12 miliardi di lire di crediti pregressi, ponendo, così, il CAP di Reggio Calabria in condizioni di tranquillità finanziaria rispetto ad altri consorzi –:

se non ritengano opportuno intervenire rapidamente per costringere il commissario liquidatore a revocare immediatamente la decisione della cessazione della attività e quindi del licenziamento dei lavoratori;

se non ritengano ormai improcrastinabile la sostituzione del commissario liquidatore per essersi reso responsabile di permanenti violazioni degli accordi sindacali e determinato un conflitto sociale molto aspro. (4-12915)

GORGONI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro del turismo e spettacolo.* — Per sapere – premesso che:

in occasione dei Giochi della Gioventù organizzati nella provincia di Lecce, il CONI aveva incaricato la CIT per la sistemazione alberghiera di circa 1000 persone (sportivi, dirigenti e accompagnatori);

in tale circostanza la CIT stessa chiese alla Promotur (agenzia turistica di Otranto) i preventivi per il vitto e per l'alloggio presso il comprensorio di Alimini (per l'alloggio presso la Serra degli Alimini e per il vitto presso il Country Club) concordando un prezzo di lire 43 mila al giorno a persona;

successivamente la Thema Vacanze di Otranto, gestita dal dottor De Santis, si inserì direttamente nella trattativa e presentò al CONI un preventivo di lire 55 mila;

il CONI, scartando la CIT, alla quale si era rivolta per la ricerca, affidò alla Thema Vacanze il compito di tutta l'organizzazione con il prezzo maggiorato di lire 12 mila a testa rispetto a quello concordato con la CIT e quindi a lire 55 mila a persona –:

quali siano stati i criteri e quale la logica che hanno indotto il CONI, che amministra anche denaro pubblico, ad accettare per la sistemazione alberghiera di un migliaio di persone un prezzo superiore a quello convenuto con la CIT e se non è anche questo un modo di dissipazione e spreco e quali provvedimenti si intendano adottare nei confronti dei responsabili di una così allegra gestione del denaro pubblico. (4-12916)

BOTTINI. — *Ai Ministri delle poste e telecomunicazioni e per gli affari sociali.* — Per sapere – premesso:

che la legge n. 104 del 1992 riguardante gli *handicaps* contiene specifici riferimenti ai numerosissimi soggetti appartenenti al drammatico e doloroso mondo silente;

che si deve dare atto ai sistemi radiotelevisivi pubblici di massa, che un qualche particolare accorgimento hanno predisposto nei confronti di queste categorie –:

se non sia il caso di intervenire tempestivamente con provvedimenti migliorativi delle programmazioni degli spettacoli televisivi e dell'approntamento dei palinsesti per consentire alle migliaia di audiolesi e sordomuti di rompere in tal modo l'isolamento sulla informazione e su di una parte di tempo libero. (4-12917)

RAVAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per conoscere – premesso che:

da oltre un anno l'attuale direttore reggente dell'UPLMO di Piacenza ha attivato strumenti che pongono i rappresentanti delle categorie protette facenti parte della Commissione provinciale per il collocamento obbligatorio, nella condizione di non poter più accedere:

all'acquisizione di elementi conoscitivi circa consistenza di scoperture di unità tutelate nemmeno per quanto attiene alle generalità degli invalidi alle dipendenze delle imprese;

alla verifica dei conteggi effettuati dall'UPLMO onde razionalmente deliberare l'attribuzione delle frazioni percentuali di cui all'articolo 17 della legge n. 482 del 1968 (in sede di commissione l'ufficio esibisce un progetto con indicazioni numeriche senza alcuna indicazione anche riguardo la eventuale vacanza del posto da attribuirsi);

al recepimento di informazioni in ordine alla percentuale di esonero attribuita dal Ministero delle aziende e, più in particolare, all'eventualità di revoca della concessione a carico dei soggetti che hanno proceduto all'assunzione di orfani e vedove in sostituzione degli invalidi scomputati;

peraltro le copie dei nulla osta di avviamento degli invalidi ed assimilati non vengono più inviate alle associazioni in

tempo reale limitandosi l'UPLMO a fornire ai componenti di commissione un elenco riepilogativo degli atti emessi a distanza di oltre 15 giorni dall'ultimo rilasciato; ne consegue l'impossibilità per gli organi di tutela di assolvere ai compiti che la legge loro assegna;

tutto quanto rappresentato, viene giustificato, dal vice-direttore, con le limitazioni imposte dalla legge n. 241 del 1990 che viceversa, anche alla luce del relativo regolamento vigente, ha un significato totalmente opposto;

peraltro gli avviamenti degli aventi diritto avvengono nei confronti di aziende a totale discrezione dell'UPLMO senza che l'interessato possa, come avviene altrove, esprimere un proprio gradimento preventivo –:

quali provvedimenti intenda adottare per evitare il protrarsi della situazione descritta in premessa. (4-12918)

MATTEOLI e CELLAI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

da sei mesi l'azienda Menci SpA di Castiglion Fiorentino, una delle realtà produttive e tecnologiche più importanti della provincia di Arezzo, si trova in grave difficoltà con rischi per l'occupazione dei suoi 135 lavoratori, notevoli e possibili drammatiche conseguenze per l'intera economia della Valdichiana Est;

si rileva l'esigenza di forti iniziative atte a scongiurare la chiusura dello stabilimento o la riduzione del numero dei dipendenti –:

se non si ritenga opportuno ed urgente convocare un incontro tra le parti al fine di individuare soluzioni operative alla crisi della Menci SpA che garantiscano sotto il profilo occupazionale e rilancino l'alto potenziale tecnologico dell'azienda. (4-12919)

GIANMARCO MANCINI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

la legge 25 marzo 1993, n. 81, stabilisce che le sottoscrizioni e le relative autenticazioni sono nulle se anteriori al centottantesimo giorno precedente il termine finale fissato per la presentazione delle candidature;

le prefetture sono tenute a predisporre e distribuire gli appositi moduli riportanti il contrassegno di lista e le generalità dei candidati –:

se non si ritenga opportuno considerare che a tutt'oggi le prefetture non hanno ancora provveduto alla distribuzione dei relativi moduli;

se si intenda considerare che, anche qualora pervenissero i suddetti moduli, non sarà comunque possibile usufruire dei tempi concessi in quanto il termine ultimo scade tra un mese. (4-12920)

PECORARO SCANIO e LECCESE. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

l'Ente autonomo per l'acquedotto pugliese, che distribuisce acqua potabile nei territori dei comuni delle regioni Puglia e Basilicata, adotta sulla carta intestata l'effigie del sigillo di Stato –:

se l'ente citato sia autorizzato, e in base a quale norma, e, nel caso di uso illegittimo, quali provvedimenti intendano adottare. (4-12921)

PECORARO SCANIO e PRATESI. — *Al ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

nei territori vincolati del comune di Torre del Greco (NA) continua il massiccio taglio di alberi;

già in passato sono state segnalate, da parte del WWF, operazioni analoghe in località Colle Sant'Alfonso facente parte del citato comune;

in località Quarantotto, sempre nel citato comune, a monte dello stradello di quota 600 del Vesuvio, è iniziato il taglio di una grossa porzione di lecceta, ivi compresi esemplari di alto fusto e con diametro alla base si 40/50 cm. circa;

tali zone sono tutelate dal vincolo di cui al decreto ministeriale 4 dicembre 1992 (emanazione delle misure di salvaguardia del Parco nazionale del Vesuvio) nonché della legge n. 431 del 1985, la quale prevede, per i tagli boschivi, solo tagli colturali consistenti nel lasciare tre generazioni diverse di matricine e che non risulta siano stati rispettati questi vincoli;

la legge n. 394 del 1991 e successivi decreti di attuazione indicano con estrema chiarezza le circostanze e le nuove modalità per la concessione di autorizzazioni in materia di attività agro-silvo-pastorali –:

quali provvedimenti urgenti intenda adottare per verificare quanto sta accadendo e le eventuali responsabilità e fermare in tempo lo scempio di ciò che costituisce un *unicum* floristico. (4-12922)

PECORARO SCANIO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'ambiente, della marina mercantile e della sanità.* — Per sapere – premesso che:

a Bagnoli, litorale di via di Pozzuoli, nell'area in concessione al CORI (Consorzio ricostruzione) – commissariato di Governo, in deroga alla legge n. 219, è stata eliminata una spiaggia per creare le vasche di caduta del terminale del collettore fognario di via Cinthia-La Pietra;

i lavori sono terminati da oltre tre anni ed attualmente persiste una situazione di tale degrado sanitario ed ambientale visto che l'area è di fatto diventata una discarica, anche per rifiuti tossici speciali (amianto);

questi episodi sono avvenuti per la totale mancanza di controllo da parte dei concessionari e perché non si è provveduto al ripristino e recupero dei luoghi; inoltre, anche le spiagge adiacenti hanno per questo subìto grave danno –:

quali provvedimenti intendano adottare per verificare quanto sta accadendo e per consentire un ripristino dei luoghi. (4-12923)

PECORARO SCANIO. — *Ai Ministri dell'ambiente e per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

il consiglio comunale di Cetara (Sa) approvava in data 6 novembre 1989 un progetto di edilizia residenziale pubblica per la realizzazione di 17 alloggi e conseguente urbanizzazione, in località Chianiello;

la realizzazione dell'opera avrebbe comportato la cementificazione di un'area di altissimo valore ambientale, nella quale si alternano colture tipiche della costiera (agrumeto specializzato) e macchia mediterranea;

già in precedenza in data 16 novembre 1987 il ministro per i BBCC aveva annullato analogo progetto e delibera per l'edificazione dei 17 alloggi, in località Valle, assumendo che l'insediamento avrebbe deturpato una zona agricola tipica della Costiera amalfitana;

con proprio decreto, del 20 dicembre 1990, il ministro per i beni culturali ha annullato il decreto del sindaco di Cetara n. 7 del 6 dicembre 1989, con cui, vista la delibera del consiglio comunale del 6 novembre 1989, autorizzava la realizzazione dei 17 alloggi in località Chianiello;

il ministro ha motivato il suo provvedimento, oltre che per la palese violazione di legge (articolo 82, comma 3, del decreto del Presidente della Repubblica 616/77 legge regionale 35/87) delle delibere del consiglio comunale e l'ordinanza sindacale, principalmente perché « L'intervento edilizio determinerebbe la totale modifica dei caratteri morfologici di un sito di rilevante interesse ambientale, che per la sua posizione in un'orografia molto articolata si configura, sia come punto di

osservazione di scenari di straordinaria bellezza panoramica, sia come elemento di un più ampio quadro naturale caratterizzato da edilizia rurale sparsa su pendii terrazzati e coltivati ad agrumeto »;

gli agrumeti specializzati insistenti nella località Chianiello hanno ultimamente beneficiato di finanziamenti pubblici dall'Asmez proprio in considerazione della loro ubicazione in una zona ad altissimo valore agricolo;

nonostante il provvedimento del ministro, il comune di Cetara, ritoccato superficialmente il progetto dell'insediamento abitativo, lo ha riproposto alla sovrintendenza per il necessario parere, ottenendone l'approvazione;

il « nuovo » progetto altro non è se non la riproposizione, neanche tanto riveduta e corretta, del progetto bocciato dal ministro con il decreto del 20 dicembre 1990;

infatti, la strada di servizio all'insediamento abitativo è della stessa dimensione e larghezza di quella precedente;

lo sviluppo longitudinale della cortina abitativa che inizialmente, era di soli 140 mt, nell'attuale progetto si riduce di soli 12 mt, dimostrandosi solo un piccolo palliativo;

la tipologia edilizia che si intende realizzare si discosta enormemente dalla tipologia tradizionale costruttiva della Costiera amalfitana;

per quanto riguarda l'altezza dei piani progettati nel « nuovo » intervento, essi risultano comunque in numero di 3, anche se si è cercato di mascherare il piano seminterrato, incassandolo per qualche metro sottoterra;

tra il vecchio progetto e quello ultimamente approvato dalle commissioni comunali, in data 30 luglio 1992 e 3 settembre 1992, si può affermare che le differenze sono irrilevanti;

inoltre, la località Chianiello, sovrastata da un costone franoso, ricade in un contesto geologico caratterizzato da instabilità geomorfologica, per cui sarebbe anche oltremodo pericoloso realizzarvi un massiccio insediamento abitativo;

infine dai grafici non risultano evidenziati i massicci movimenti di terra, che dovranno essere effettuati, non esistendo né un computo metrico né un piano quotato –:

quali provvedimenti intendano adottare per impedire un gravissimo scempio all'integrità territoriale e alle bellezze ambientali della Costiera amalfitana.

(4-12924)

LECCESE. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – premesso che:

la nave traghetto Sveti-Stefan in partenza settimanale dal porto di Bari verso le coste della *ex* Jugoslavia effettua trasporti di aiuti umanitari raccolti dall'Associazione non governativa CINIS in favore delle popolazioni bosniache;

risulta strano che tali aiuti che dovrebbero arrivare in Bosnia-Erzegovina, vengono sbarcati in un porto dello stato del Montenegro alleato alla Serbia;

da voci raccolte, ovviamente da verificare, risulta all'interrogante che tali aiuti vengono invece dirottati verso la Serbia, in violazione dell'*embargo* deciso dalle Nazioni Unite cui ha aderito il Governo italiano –:

se non ritenga opportuno verificare la destinazione finale degli aiuti umanitari;

se non ritenga opportuno interessare le autorità giudiziarie per controllare il contenuto del carico trasportato. (4-12925)

IVO RUSSO. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

con decreto legislativo n. 88 del 27 gennaio 1992 il Governo ha recepito le direttive comunitarie in materia di revisori dei conti istituendo in Italia il « Registro dei revisori contabili »;

per incertezze relative al regolamento di attuazione e alla prima formazione del suddetto registro si sono rese necessarie più proroghe, varate a mezzo delle decretazioni d'urgenza, per consentire a tutti i cittadini interessati di presentare apposita domanda di iscrizione al costituendo registro;

da notizie apparse di recente sulla stampa specializzata si apprende che sarebbero 125.000 le domande di iscrizione presentate dagli aspiranti revisori contabili;

nulla è stato fatto per adeguare la commissione di valutazione delle domande, che risulta composta da 18 membri (nove componenti effettivi e nove supplenti);

la predetta Commissione si riunirebbe al massimo 2 volte alla settimana gratificando i propri componenti con un gettone di presenza di lire 5 mila;

la Commissione avrebbe in arretrato l'esame delle domande delle due sessioni precedenti, per l'iscrizione al vecchio registro dei revisori ufficiali dei conti;

tutti gli ordini professionali e le associazioni interessate hanno già informato e sollecitato il Governo comunicando quanto su esposto, evidenziando che anche con ritmi serrati di lavoro da parte della Commissione sarebbero necessari anni per esaminare le 125.000 domande pervenute penalizzando, al contempo, coloro i quali avendo maturato i titoli al 28 febbraio 1992 dovranno attendere la formazione del registro per poter chiedere l'iscrizione in seconda istanza –:

se le notizie riportate corrispondano al vero ed in particolare:

*a)* con quali criteri e quando si sia pervenuti alla nomina dei componenti la Commissione;

*b)* se non intenda, verificata la situazione esposta, integrare la Commissione, ovvero autorizzare la nomina di un adeguato numero di sottocommissioni, in modo da consentire un sollecito esame delle domande presentate, incentivando i commissari anche attraverso la corresponsione di un adeguato gettone di presenza;

*c)* se non ritenga opportuno e necessario fissare un termine perentorio, eventualmente il 31 dicembre prossimo, per la conclusione di detto esame e la pubblicazione del nuovo Registro dei revisori contabili. (4-12926)

IVO RUSSO. — *Ai Ministri per i beni culturali e ambientali, dell'interno, di grazia e giustizia e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per sapere – premesso:

che a Torre Orsaia (provincia di Salerno) l'edificio ex caserma carabinieri – resti del Palazzo Vescovile fatto edificare dal vescovo Pagano nel 1301 riattato a seminario nel 1639 (come da lapide) di proprietà della comunità montana « Bussento », a seguito di donazione del comune di Torre Orsaia, è stato completamente demolito e sull'area di sedime sorge una struttura in cls. armato;

che l'edificio, per le sue caratteristiche tipologiche e per numerosi riferimenti con la storia di Torre Orsaia e del Cilento era da ritenersi *ipso jure* sottoposto, ai sensi e per gli effetti degli articoli 1 e 4, a tutte le disposizioni della legge n. 1089 del 1939;

che la soprintendenza BAAAS di Salerno e Avellino, a seguito dell'esposto di alcuni cittadini, datato 11 febbraio 1989, con fono n. 4651/SA del 14 marzo 1989 diretto al comune di Torre Orsaia chiedeva di « sospendere ogni attività connessa con le paventate opere di demolizione e di provvedere alla redazione di un progetto di restauro da sottoporre all'esame di questo ufficio »;

che nonostante quanto richiesto dalla soprintendenza BAAAS di Salerno e Avellino non è stato presentato alcun progetto di restauro conservativo;

che l'edificio doveva essere ristrutturato con la conservazione delle murature perimetrali e della tipologia originaria,

svuotandone l'interno (concessione edilizia n. 1026 – prot. 358 del 18 mazo 1991);

che l'edificio, invece, è stato completamente demolito (in data 30 novembre 1991 e 4 aprile 1992), pure essendo nel centro storico;

che il comune di Torre Orsaia è sprovvisto di piano regolatore generale e di piano di recupero operante per cui sono preclusi gli interventi edilizi che eccedono la manutenzione, il restauro, il risanamento conservativo e la ristrutturazione, che comportino aumento delle superfici utili preesistenti (articolo 4 legge 28 gennaio 1977 n. 10 e articolo 4 legge regionale 20 marzo 1982 n. 17);

che, attualmente, la struttura in cls. armato presenta notevoli difformità, rispetto al fabbricato preesistente distrutto, di struttura, di volume e di superficie con ampliamenti e traslazione (aumento delle superfici utili per circa 240 mq. e un maggior volume di circa 450 mc.);

che la struttura è stata oggetto di sequestro probatorio: procedimento penale n. 1823/92 R.G. procura della Repubblica di Vallo della Lucania (SA);

che il primo lotto dei lavori si svolge con il contributo della legge n. 219 del 1981 (350 milioni), senza esame e parere della commissione tecnica *ex* articolo 14 legge 219 del 1981, di dubbia validità;

che l'edificio era già stato oggetto di riparazione, nel 1981, con contributo *ex* ordinanza commissariale 80 (schede A e B del 6 gennaio 1981 « lieve – abitabile – da riparare ») e successivamente abitato da: comunità montana « Bussento », Istituto professionale agricoltura, Istituto magistrale statale, cooperativa giovanile;

che la distruzione dell'edificio *ex* caserma – resti del palazzo vescovile è stata deplorata dalla stampa scritta e parlata;

che i cittadini di Torre Orsaia hanno inoltrato esposti fin dal febbraio 1989 a: comune, comunità montana « Bussento », regione Campania, Ministro beni ambientali e culturali, Soprintendenza BAAAS di Salerno e Avellino, prefetto di Salerno, Ministro interni, carabinieri di Torre Orsaia, Ministro difesa, procura della Repubblica Vallo della Lucania, Procura generale Corte d'appello Salerno, Ministro grazia e giustizia, Consiglio superiore magistratura, Presidente della Repubblica;

che il signor Presidente della Repubblica ha trasmesso per competenza al CSM esposti e copia perizia giurata di consulente di parte –:

quali iniziative siano state intraprese sino ad ora e quali iniziative intendano assumere per restituire alla collettività un edificio della stessa tipologia di quello preesistente distrutto, nel rispetto della legge n. 1089 del 1939, e che sia la fedele ricostruzione di quello abbattuto, nel rispetto della legge n. 219 del 1981;

quali provvedimenti intendano adottare e quali iniziative assumere affinché l'edificio citato venga ricostruito nella sua struttura perimetrale nella tipologia originaria e affinché nel futuro non si verifichino danneggiamenti ad edifici di importanza storica. (4-12927)

MATTEOLI. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

da alcuni mesi il servizio di recapito della corrispondenza in arrivo nel comune di Castellina Marittima (PI) subisce, nuovamente, ritardi impressionanti ed inaccettabili che, oltre a determinare danno e disagio alla intera comunità, compromettono perfino il regolare funzionamento dell'attività amministrativa del comune;

alle lettere ordinarie, anche con provenienza da zone limitrofe, per compiere i tragitti ed essere consegnate occorre un tempo che varia da 8 a 20 giorni;

questo grave disservizio si era manifestato già alcuni anni or sono e pare addebitabile a disfunzioni presenti nel nodo di smistamento di Pisa ferrovia –:

se non ritenga opportuno, acclarati i motivi di tali ritardi, predisporre tutte le iniziative necessarie a rimuovere le cause di tale increscioso e penalizzante disservizio. (4-12928)

MATTEOLI. — *Ai Ministri dell'interno, per il coordinamento della protezione civile e della marina mercantile.* — Per sapere – premesso che:

a seguito di quanto all'articolo 65 del decreto del Presidente della Repubblica n. 335 del 1990 e nella circolare del Ministero dell'interno n. 27 del 7 ottobre 1991 viene ventilata la ipotesi che i servizi di prevenzione incendi, che di fatto vengono svolti sin dal 1972 da imprese private e/o da cooperative, vengano effettuati con personale dei vigili del fuoco in orario *extra* servizio;

tale eventualità relegherebbe i privati, fin ora esercenti di detto servizio, ad un ruolo meramente residuale e del tutto marginale subordinato alla disponibilità dei vigili del fuoco ad effettuare o meno il servizio in parola;

i vigili del fuoco non sono in grado di corrispondere con immediatezza alla richiesta del servizio e pertanto sono preventivabili tempi di attesa per l'operatività delle navi, con ripercussioni negative sugli aspetti economici sia per gli armatori che per le industrie petrolchimiche;

se attuata tale ipotesi di utilizzazione dei vigili del fuoco verrebbero messi in pericolo numerosi posti di lavoro in molti scali marittimi italiani, con conseguenze sociali di estrema gravità che non possono non essere tenute di conto –:

se non reputino opportuno intervenire per riportare nei porti italiani quella tranquillità, attualmente turbata, che rischia di compromettere la operatività degli scali marittimi nazionali e causare, inoltre, numerosissimi licenziamenti. (4-12929)

MATTEOLI. — *Al Ministro delle poste e telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

gli uffici CPO di Pisa hanno avuto nel mese di gennaio 1993 questa traffico:

*a)* LCS 1ª fase: Kg. 17,744;

*b)* LCS 2ª fase: Kg. 6,878;

*c)* ufficiose: Kg. 17,163;

*d)* stampe: Kg. 395.495;

*e)* pacchi: N. 83.841;

il traffico è in costante crescita dato che sono stati recuperati numerosi « grandi utenti » (Banche, INPS, SIP, Confesercenti, UNICOOP eccetera):

la lavorazione con le codificatrici, anche 50.000 pezzi al giorno, è stata eseguita, per buona parte, con unità fuori orario;

la situazione del personale è particolarmente precaria considerato che, a fronte di una assegnazione che dovrebbe essere di 358 unità mai introdotta, all'ufficio CPO di Pisa sono in realtà assegnate 339 unità che sono aumentati nel frattempo i seguenti servizi:

*a)* n. 3 turni di messaggeri (OSE);

*b)* n. 3 unità alla posta celere (2 OE e 1 OSE);

*c)* n. 4 unità per lavorazioni provenienti da altri uffici (3 OSE e 1 OE)

ed inoltre che, gestito da personale ELSAG, è stato aperto il centro della posta elettronica al quale vengono applicate giornalmente da 2 a 5 unità OSE ricoprendo a turni di straordinario corrispondenti, nel mese di gennaio, a 39 unità;

in tutti i reparti dove occorre la presenza fisica delle persone (furgoni, treni, circuiti, messaggeri ecc.) si è ricorso a turni di straordinario mentre per lavori collettivi si è utilizzata la lavorazione con il modulo del superprodotto;

dall'apertura del CPO di Pisa sono venute a mancare all'ufficio altre 10 unità per pensionamenti e trasferimenti ad altre sedi senza che vi siano state sostituzioni –:

se non ritenga che per poter garantire il buon funzionamento futuro occorra una assegnazione di personale almeno a parziale copertura della scorta, del servizio di codifiche ELSAG e della istituenda posta elettronica;

se non reputi la divisione in due uffici: Pisa AD-Transiti e Pisa CPO, più volte ventilata, primaria per un più efficace ed appropriato controllo, per una migliore gestione del personale, per un minore onere di mezzi e personale nonché per eliminare duplicazioni operative;

se non reputi opportuno andare, nell'immediato, al reperimento di unità, magari attingendo da uffici con maggiori disponibilità a seguito di nuovi servizi automatizzati, anche perché, nei confronti della direzione provinciale, che non assume idonei provvedimenti, sta crescendo nel personale un profondo malumore che potrebbe portare, in un prossimo futuro, alla non effettuazione di prestazioni previste e, sino ad oggi, garantite con lavoro straordinario od attraverso l'utilizzo della lavorazione con il modulo del superprodotto. (4-12930)

MATTEOLI. — *Ai Ministri della pubblica istruzione e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il piano di razionalizzazione delle scuole medie della provincia di Lucca, inviato al Ministero della pubblica istruzione dal provveditore agli studi di Lucca, prevede la soppressione della scuola media « L. Puccetti » di Gallicano ed il suo accorpamento alla scuola media « G. Pascoli » di Castelnuovo Garfagnana fin dall'anno scolastico 1993/94;

la proposta di sospensione non tiene conto della morfologia del territorio della Garfagnana e penalizza la utenza di 4 comuni (Gallicano, Fabbriche di Vallico, Vergemoli e Molazzana) classificati di montagna creando condizioni di grave disagio per i precari collegamenti stradali e, di fatto, contribuendo a diminuire sempre più la partecipazione delle famiglie alla vita della scuola;

tale atto non tiene conto delle realtà sociali e culturali della zona, molto estesa ma poco popolata e dove forme di isolamento costituiscono un alto rischio per l'abbandono scolastico, per processi di emarginazione sociale e di devianza tra i giovani;

tale atto non tiene, inoltre, conto dell'impegno che scuola, famiglie, enti ed associazioni hanno profuso nell'attuare progetti educativi e formativi per i ragazzi e per l'intera comunità (fra questi ricordiamo il Progetto Echo per l'educazione permanente, il Progetto Giovani, il Progetto Prevenzione delle tossicodipendenze, l'Educazione alla salute, Laboratori scolastici, Ragazzi 2.000), sostenuti anche economicamente dalle amministrazioni comunali, dall'USL e dalla regione Toscana oltre che dai Ministeri dell'interno e della pubblica istruzione);

tale atto non tiene conto, altresì, del ruolo insostituibile di un preside e di un direttore didattico come figure di riferimento e di coordinamento delle sopra citate iniziative in campo pedagogico e didattico, del processo educativo di « rete » in classi che funzionano da anni a tempo pieno ed a tempo prolungato;

tale atto, non concordato ed inserito in un piano d'area delle due comunità montane, è stato imposto senza che abbia trovato il consenso di alcun amministratore interessato;

questa decisione, se attuata, porterà le scuole dell'obbligo dei comuni interessati in una situazione organizzativa e di servizi svuotata di significato e di qualità; in nome di una razionalizzazione puramente economica e numerica senza tener conto dei motivi sociali, presenti anche nella ordinanza ministeriale 271 del 1990 –:

se non ritengano giusto ed opportuno intervenire presso il provveditorato agli studi di Lucca affinché, per i motivi sopra

descritti, non attui nell'anno scolastico 1993/1994 la soppressione della scuola media « L. Puccetti » di Gallicano ed il conseguenziale accorpamento alla scuola media « G. Pascoli » di Castelnuovo Garfagnana. (4-12931)

CELLAI. — *Al Ministro dell'agricoltura e delle foreste.* — Per sapere – premesso che:

il comparto florovivaistico di Pescia (PT) vive una situazione di pesante crisi;

i mutui erogati al comparto da parte della regione Toscana – come rilevato in una recente assemblea pubblica da parte del Comitato agricoltori Valdinievole – penalizzano i floricoltori pesciatini, essendo gli stessi finalizzati solo alle « serre fisse », mentre a Pescia viene sostanzialmente espletata una attività su « serre non fisse »;

i tempi di erogazione per gli interventi collegati all'alluvione del 25 novembre 1991 appaiono di esasperante e indecente lentezza –:

quali iniziative finanziarie si intendano assumere in via d'urgenza a favore del settore florovivaistico pesciatino;

quali provvedimenti siano in atto per rendere efficaci i finanziamenti – ed accelerarne la tempistica – in merito alla erogazione delle provvidenze per i sopracitati fatti alluvionali. (4-12932)

TASSI. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere:

se risulti al Ministro che i fondi erogati dalla Direzione generale della cooperazione per lavori di cui alle opere edili di Mers El Hadjadj – Algeria – appaltati alla Ansaldo GIE di cui è dirigente l'ingegner Italo Lingua siano stati erogati nel rispetto formale e sostanziale delle leggi;

se siano in corso verifiche, controlli e ispezioni relativamente a tali appalti con l'Ansaldo, sia da parte del Ministero che dell'autorità giudiziaria;

l'elenco dei lavori eseguiti dalla Sadelmi SpA negli ultimi cinque anni nei quali codesto Ministero sia intervenuto con agevolazioni della cooperazione. (4-12933)

RUTELLI, DE BENETTI e GIULIARI. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere – premesso che:

l'Ente nazionale assistenza lavoratori (ENAL) inizialmente soppresso dalla legge n. 70/1975, poi riconosciuto ente morale ai sensi dell'articolo 115 del decreto del Presidente della Repubblica n. 616 del 1977, è stato definitivamente soppresso e posto in liquidazione ai sensi dell'articolo 2-*bis* del decreto-legge n. 481 del 1978, convertito in legge n. 641 del 1978;

la gestione delle operazioni residue di liquidazione è stata assunta dal Ministero del tesoro-ispettorato generale degli enti disciolti (IGED), a far data dal 1° aprile 1979 (decreto ministeriale 24 marzo 1979);

si è appreso dalla stampa e da segnalazioni dei cittadini che i circoli ricreativi dell'ENAL sono tutt'ora in attività su tutto il territorio nazionale;

gli elenchi della SIP del comune di Roma del 1992/93 indicano ancora la sede nazionale dell'ENAL, in via Ottaviano, 105 con il relativo numero telefonico (381910);

l'Ispettorato generale per gli affari e per la gestione del patrimonio degli enti sciolti presso la ragioneria generale dello Stato interpellato sulla questione ha, tra l'altro, risposto: « qualsiasi attività attualmente svolta da enti che operano nel campo dell'assistenza ai lavoratori in Italia non può essere riferita all'Enal di cui lo Stato ha disposto la soppressione », e « eventuali organizzazioni aventi la stessa vecchia denominazione del disciolto ENAL, compresi i circoli ricreativi, non sono in ogni caso riconducibili al soppresso ENAL » –:

come sia possibile che un ente soppresso e in via di definitiva liquidazione come l'ENAL sia tutt'ora in piena attività, sia attraverso la propria sede nazionale,

sia attraverso i circoli ricreativi diffusi su tutto il territorio nazionale;

a chi appartenga, attualmente, il patrimonio immobiliare dell'ENAL, costituito dalla sede centrale e dai circoli diffusi in tutto il paese;

quali iniziative urgenti intenda prendere per mettere fine a questi abusi.

(4-12934)

LECCESE. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

alle porte della città di Foggia, sorge il Bosco dell'Incoronata;

il 30 dicembre 1991 il sindaco di Foggia ha illustrato quanto l'Asiprogest stava elaborando per la valorizzazione del Bosco dell'Incoronata (in agro di Foggia) in virtù del finanziamento comunitario europeo del POP (Programma operativo pluriennale) mis. 5.7. di durata triennale;

l'Asiprogest srl, costituita con presenza maggioritaria dal Consorzio ASI e con presidente *pro-tempore* il geometra Darsio Camerino, veniva riconosciuta idonea e particolarmente qualificata alla soluzione progettuale della problematica inerente il Bosco dell'Incoronata;

il consorzio ASI e il suo presidente *pro-tempore* Darsio Camerino sono attualmente indagati per reati contro la pubblica amministrazione (concussione, corruzione) all'inchiesta giudiziaria cosiddetta dei « nastri d'oro » del Golfo di Manfredonia;

associazioni ambientaliste avevano espresso, a titolo gratuito, contributi di idee per la tutela e la salvaguardia del bosco in oggetto;

con la nota dell'assessorato regionale all'ambiente del 15 gennaio 1993 prot. 20/IV/EC3 si apprendeva che il 30 dicembre 1991 il comune di Foggia con nota prot. n. 985/GAB trasmetteva il progetto di massima, probabilmente dell'Asiprogest, al suddetto assessorato;

a livello istituzionale in tutte le sedute del consiglio comunale convocate dal 26 marzo al 20 ottobre del 1992, compariva il seguente: « incarico alla società Asiprogest srl per elaborazione e relizzazione del progetto di tutela, salvaguardia e riqualificazione del Parco urbano territoriale di Incoronata con formula a rischio », allegato alla proposta di delibera iscritta all'odg dei lavori del Consiglio;

dallo schema di convenzione, si evinceva che le prestazioni della società erano pari al 18 per cento dell'importo finanziato (5 miliardi) più eventuali *extra*;

in data 21 ottobre 1992 la *Gazzetta del Mezzogiorno* riportava le dichiarazioni del consigliere comunale di Foggia signor Meluso, secondo cui per il progetto « Bosco dell'Incoronata » sarebbe stata costituita strumentalmente una società per la gestione dell'opera con i fondi POP;

in data 20 novembre 1992 veniva presentata una delibera consiliare (n. 75) in cui non compariva più la società Asiprogest come affidataria dell'incarico e avente per oggetto una variazione di bilancio tesa ad introitare l'importo di lire 5.063.120.000;

tra febbraio ed ottobre le associazioni ambientaliste incontravano l'assessore al patrimonio ed alcuni rappresentanti dell'Asiprogest e organizzavano in data 30 giugno 1992 una conferenza stampa di denuncia del mancato loro coinvolgimento, a titolo gratuito per la redazione del progetto del Bosco dell'Incoronata;

nel luglio 1992 le associazioni ambientaliste inviavano a tutti i capigruppo delle forze politiche presenti in consiglio comunale una lettera in cui mettevano a disposizione, ancora una volta, per l'elaborazione del progetto a titolo gratuito le competenze professionali del professor Iannelli Pierino, docente della facoltà di agraria dell'università di Potenza e presidente dell'Università Verde, esperto dell'ecosistema del bosco dell'Incoronata in quanto oggetto di suoi studi e ricerche da oltre un ventennio;

a livello istituzionale, più volte, veniva ribadita questa offerta e la necessità di affidare nell'immediato l'incarico al suddetto professore onde evitare di perdere i finanziamenti;

in data 22 dicembre 1992 la giunta municipale con delibera n. 788 affidava al professor Iannelli Pierino l'incarico della redazione del programma esecutivo per il recupero del Bosco Urbano dell'Incoronata e la consulenza finanziaria alla società Italcad, mai coinvolta fino allora nelle vicende del bosco;

il 28 dicembre 1992 la giunta municipale si riuniva per modificare la precedente delibera n. 788 affidando al professor Iannelli e all'ingegner Costantino Ferdinando, amministratore unico della Italcad srl, le prestazioni professionali intese entrambe come incarichi di progettazione;

la prestazione dell'Italcad nella delibera del 22 dicembre 1992 era da intendersi come consulenza finanziaria, il 28 dicembre 1992 l'amministratore unico dell'Italcad veniva indicato come soggetto che doveva collaborare con il professor Iannelli in ordine al contenuto della prestazione professionale stessa;

il professor Iannelli designato all'incarico della redazione del programma esecutivo dei lavori sul Bosco dell'Incoronata, non fu mai contattato dalla giunta comunale, in data 30 dicembre 1992 la stessa deliberava la revoca dell'incarico al professor Iannelli adducendo la pretestuosa motivazione che non era stato possibile contattarlo e che invece poiché l'ingegner Costantino dichiarava di essere in condizioni di produrre immediatamente il programma esecutivo e quant'altro necessario al fine di non perdere il finanziamento, veniva conferito l'incarico di progettazione a titolo oneroso;

quanto suesposto riportato nella delibera di giunta municipale n. 818 che modificava ancora una volta le precedenti n. 788 e 817, in data 30 dicembre 1992 veniva trasmesso il progetto dell'Italcad alla regione Puglia;

nel su citato progetto si evincono una serie di misure da attuare da società specializzate e da professionisti iscritti all'Albo –:

se intendano avviare una indagine amministrativa su una vicenda dagli aspetti procedurali poco limpidi e poco lineari. (4-12935)

POLLI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso che:

il contenuto dell'articolo 7, 1° comma del decreto-legge 30 dicembre 1980 n. 901 prevede l'applicazione « facoltativa » da parte di province e comuni di una imposta addizionale per ogni KWH di energia elettrica consumata, pena l'impossibilità da parte delle amministrazioni di contrarre mutui presso istituti di credito;

questo dispositivo, che praticamente costringe le amministrazioni all'applicazione di questo rilevante balzello, crea per le popolazioni alpine ed Ossolane in particolare, motivo di discriminazione essendo la Val d'Ossola una delle zone, in campo nazionale, di maggior produzione di energia elettrica. La valle è solcata da numerosi elettrodotti che limitano considerevolmente le già ridotte disponibilità del territorio e che trasportano a beneficio di altre zone, l'energia qui generata;

l'Ossola, attraverso una più razionale utilizzazione delle risorse idriche potrebbe apportare un ulteriore significativo contributo all'incremento di produzione della energia elettrica stessa –:

se non si ritenga opportuno prevedere l'esclusione dell'applicazione dell'addizionale per le zone di elevata produzione di energia elettrica come lo è la Val d'Ossola;

se non si ritenga opportuno provvedere alla riduzione e la differenziazione delle tariffe dell'energia elettrica per gli usi industriali locali, ripristinando cioè le agevolazioni dei tempi passati la cui soppressione è stata uno degli elementi determinanti l'inaccettabile taglio occupazio-

nale che ha investito gli operatori del settore siderurgico, metallurgico e chimico locale;

se non si ritenga opportuno sollecitare l'ENEL ad avviare e concludere in tempi brevi sia la realizzazione degli impianti già programmati, che la stesura di uno studio completo, nel rispetto dell'ambiente, per una migliore e più razionale utilizzazione delle risorse idriche esistenti sul territorio;

se non si ritenga opportuno provvedere ad una radicale modifica delle norme vigenti in materia di concessioni di sfruttamento dei salti idrici per autoproduzione di energia elettrica allo scopo di consentire ai richiedenti, sempre più numerosi, l'installazione di piccoli impianti, facilitando, con procedure semplici e decentrate, sia l'*iter* burocratico che la possibilità di ricorrere in tempi brevi a finanziamenti agevolati. (4-12936)

SCALIA e MATTIOLI. — *Ai Ministri dell'ambiente, per i beni culturali e ambientali e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per sapere – premesso che:

la regione Umbria e il comune di Magione hanno approvato un progetto per l'attuazione di un « Centro Servizi Turistici S. Feliciano », da realizzarsi sulle sponde del Lago Trasimeno, a ridosso dell'abitato di S. Feliciano, frazione rivierasca del comune di Magione, ciò danneggerebbe gravemente ed irreparabilmente un territorio ad alta valenza ambientale;

contro la realizzazione di questo progetto si sono espressi un Comitato di cittadini e la sezione di Italia Nostra e per ben due volte il Ministero per i beni culturali ed ambientali ha bocciato il progetto;

successivamente la regione ha fatto ricorso contro la decisione del Ministero, ma il Consiglio di Stato ha ritenuto lecita tale bocciatura;

il 18 gennaio 1993, prima della pubblicazione della motivazione della sentenza del Consiglio di Stato, il progetto viene riproposto, con lievi varianti, per l'approvazione per la terza volta;

sulla realizzazione del « Centro Servizi S. Feliciano » gravano grossi interessi speculativi da parte di privati, i quali si avvantaggerebbero anche di finanziamenti pubblici, fondi P.I.M. della CEE;

non è da escludere che l'ostinazione a voler costruire questo Centro Servizi, proprio e solo in qual determinato punto è dovuto all'esistenza a monte di quest'area del cosiddetto « Villaggio Piselli », incompiuto, perché a quasi opera ultimata, il costruttore è fallito. Infatti la realizzazione del Centro Servizi farebbe aumentare di moltissimo il valore del complesso immobiliare del « Villaggio Piselli »;

dall'abitato di S. Feliciano, a partire dalla chiesa parrocchiale, si diparte uno stupendo sentiero, in terra battuta, che risale la collina, attraversa tutto il bosco con fauna e flora protetti, fino a raggiungere il « Villaggio Piselli »;

il comune di Magione, con la variante n. 6 del Piano Regolatore, ha progettato di trasformare questo sentiero in una strada asfaltata di ben otto metri di carreggiata. È indubbio che con la realizzazione di tale opera, in dispregio di un *habitat* ancora integro, il valore degli immobili del « Villaggio Piselli » aumenterebbe in maniera vertiginosa –:

se siano a conoscenza dei fatti esposti e quali siano le loro valutazioni;

quali iniziative intendano adottare per fermare questa ennesima speculazione;

se non ritengano di verificare la corretta destinazione dei fondi CEE per i P.I.M. (4-12937)

FERRI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso:

che con circolare del 1° dicembre 1992 prot. 6719/92/10.0.235 del Ministero

della funzione pubblica sono state impartite nuove direttive in ordine alla concessione del congedo straordinario ai dipendenti pubblici, in concomitanza di elezioni politiche ed amministrative e di *referendum*;

che detta circolare individua e specifica il significato che si deve attribuire alla disposizione contenuta nell'articolo 12 del decreto del Presidente della Repubblica n. 3 del 1957, nel senso che l'impiegato dello Stato ha l'obbligo di trasferire la residenza anagrafica nel comune sede dell'ufficio con conseguente iscrizione nelle liste elettorali del comune di nuova residenza in base alle disposizioni contenute nell'articolo 10 della legge 22 gennaio 1966, n. 1;

che ai dipendenti pubblici, che siano rimasti iscritti nelle liste elettorali del comune di provenienza, non deve essere corrisposto il trattamento di missione previsto dall'articolo 118 del decreto del Presidente della Repubblica 30 marzo 1957, n. 361, tranne nel caso in cui la cancellazione non sia potuta avvenire per altri motivi;

che i dipendenti dello Stato residenti all'estero in forza di un rapporto di servizio con la pubblica amministrazione in riferimento al caso precisato, hanno l'obbligo dell'iscrizione all'AIRE (anagrafe italiani residenti all'estero) e che ovviamente non possono essere cancellati dalle liste elettorali dell'ultimo comune di residenza in Italia;

che i nuovi limiti di tempo previsti dal decreto ministeriale 5 marzo 1992 pubblicato sulla *Gazzetta Ufficiale* n. 67 del 20 marzo 1992, a parere dell'interrogante, sono riferibili agli impiegati in servizio nelle sedi situate nel territorio della Repubblica –:

se la riduzione dei limiti di tempo sia riferibile, come da parere espresso dalla amministrazioni interessate (Sanità di confine, Finanze, Poste, Interni), ai dipendenti residenti all'estero (n. 300 unità lavorative);

quali misure intenda adottare per agevolare il diritto di voto dei nostri connazionali residenti in territorio estero di confine (Svizzera e Austria), anche in considerazione delle prossime consultazioni referendarie del 18 aprile. (4-12938)

CALZOLAIO. — *Ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

negli ultimi mesi l'INPS ha promosso nelle Marche una campagna ispettiva, tuttora in corso, nei confronti di aziende industriali ed artigiane (di ogni settore ma in particolare nel calzaturiero, nelle pelletterie e nella lavorazione del giunco) che intrattengono rapporti di subfornitura con altre piccole imprese artigiane; l'INPS contesta a queste ultime la qualifica artigiana sostenendo che il rapporto di committenza da parte delle aziende maggiori si configura come rapporto di lavoro subordinato o a domicilio, con tutte le conseguenze che tale interpretazione comporta in particolare sul piano contributivo, assistenziale e previdenziale;

in molti di questi casi le sedi locali dell'istituto hanno chiesto alle C.P.A. – Commissioni provinciali per l'artigianato – la cancellazione dall'Albo per le imprese ritenute non artigiane, avvalendosi della facoltà prevista dall'articolo 7 della legge n. 443 del 1985 (legge quadro per l'artigianato) ma attivando parallelamente e senza attendere l'esito di quel procedimento di contenzioso, l'*iter* di reinquadramento previdenziale e di recupero contributivo, disconoscendo quindi nei fatti la stessa qualifica artigiana di quelle imprese regolarmente iscritte all'Albo;

in altri casi le stesse sedi INPS hanno attivato procedure di reinquadramento previdenziale e di recupero contributivo, sempre disconoscendo la qualifica artigiana ma senza avviare il procedimento di contenzioso previsto dall'articolo 7 della legge quadro per l'artigianato;

tali procedure sono state recentemente legittimate da specifiche direttive della sede centrale INPS, emanate a seguito della deliberazione del comitato esecutivo n. 822 del 2 giugno 1992, adottata a maggioranza;

con tale deliberazione l'INPS si è unilateralmente arrogato il potere di accertare il possesso dei requisiti artigiani dell'impresa e dell'imprenditore, requisiti previsti dalla legge n. 443 del 1985 e il cui potere di accertamento la stessa legge affida alla competenza piena ed esclusiva delle C.P.A. – Commissioni provinciali per l'artigianato;

la situazione desta profonda preoccupazione nei confronti di un settore portante dell'economia regionale, nonché per il rispetto delle leggi dello Stato e della regione che hanno inteso garantirne lo sviluppo e la tutela;

si è ormai aperto un contenzioso che rischia di acuirsi pesantemente e di divenire interminabile e paralizzante;

vanno certamente tutelati i diritti dei lavoratori dipendenti e a domicilio in ogni impresa;

sul piano normativo la legge 8 agosto 1985 n. 443, « Legge quadro per l'artigianato », nonché la relativa legge regionale Marche di attuazione (legge regionale 28 marzo 1988 n. 6), istituiscono gli Albi provinciali delle imprese artigiane la cui tenuta è affidata in via piena ed esclusiva alle C.P.A. – Commissioni provinciale per l'artigianato – in cui l'INPS stesso è rappresentato; inoltre stabiliscono i requisiti di impresa artigiana, l'obbligatorietà dell'iscrizione all'Albo per tutti coloro che siano in possesso di tali requisiti, il carattere costitutivo e vincolante a tutti gli effetti delle delibere di iscrizione – modificazione – cancellazione adottate dalle Commissioni provinciali per l'artigianato, l'unicità e l'inderogabilità del procedimento di contenzioso « commissione provinciale – commissione regionale – tribunale » in caso di controversie sulla sussistenza dei requisiti, tutto fino al maggio 1992 riconosciuto dall'INPS stesso;

il consiglio regionale delle Marche ha approvato all'unanimità il 23 giugno 1992 un ordine del giorno che riconferma il valore e il ruolo del sistema economico marchigiano, basato essenzialmente sull'imprenditoria diffusa e sul rapporto di interrelazione tra imprese, moltissime delle quali di piccole e piccolissime dimensioni; esprime forte preoccupazione per la nuova situazione venutasi a creare con le recenti scelte dell'INPS; invita l'INPS nazionale a riconsiderare quelle scelte alla luce di quanto disposto dalla legge quadro per l'artigianato e dalle sue leggi regionali di attuazione;

il Consiglio nazionale dell'artigianato nel parere (« Problematiche attinenti di coordinamento della Legge-quadro per l'Artigianato con le norme speciali in materia di inquadramento obbligatorio ai fini previdenziali, assistenziali e contributivi per il settore artigiano »), adottato il 19 ottobre 1992 sotto la presidenza del Ministro dell'industria, ha confermato l'interpretazione del dettato della legge quadro per l'artigianato, comprese la competenze piene ed esclusive delle commissioni;

il recente decreto-legge 15 gennaio 1993, n. 6, convertito con legge 17 marzo 1993 n. 63, all'articolo 1, comma 3, ultima parte ribadisce definitivamente le « funzioni esclusive attinenti alla tenuta dell'albo delle imprese artigiane ... e degli elenchi nominativi degli assistibili » in capo alle « commissioni provinciali per l'artigianato », le loro competenze « alla verifica della sussistenza dei requisiti di qualifica artigiana del titolare e dell'impresa con dipendenti, adottando provvedimento vincolante di fini previdenziali ed assistenziali », nonché l'inderogabilità del procedimento di contenzioso « ai sensi delle procedure previste dall'articolo 7 della citata legge n. 443 del 1985 » –:

*a)* come valutano giuridicamente il rapporto di subfornitura tra imprese;

*b)* se esistano problemi analoghi di interpretazione, di contenzioso e di attività ispettiva in altre regioni;

*c)* come valutino la deliberazione del comitato esecutivo INPS (n. 822 del 2 giugno 1992, attuata con circolare 26 ottobre 1992 n. 249) con la quale si stabilirebbe che « È riservato all'esclusiva potestà dell'Istituto l'accertamento dell'esistenza dei requisiti di legge per il riconoscimento, a tutti i fini previdenziali ed assistenziali, della qualificazione artigiana dell'impresa e dell'imprenditore »;

*d)* come intendano comunque garantire il rispetto dei diritti dei lavoratori dipendenti o a domicilio. (4-12939)

MATTEOLI. — *Ai Ministri della sanità, dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

notizie di stampa di questi giorni riportano che 55 funzionari ed amministratori della USL 25 di Piombino (Li) sono stati segnalati dalla Guardia di Finanza all'autorità giudiziaria, senza che siano noti i nominativi e gli addebiti mossi;

il 22 gennaio 1992, la segreteria provinciale di Livorno del sindacato CISNAL inoltrò domanda all'USL 25 di Piombino di partecipazione alle trattative per l'applicazione del contratto di lavoro in sede aziendale come previsto dal decreto del Presidente della Repubblica n. 384 del 1990 ed altre disposizioni legislative;

l'USL 25, a firma dell'amministratore straordinario dottor Vincenzo Lorenzini, con lettera del 10 febbraio 1992 rispondeva negativamente chiedendo nel contempo un parere in merito al dipartimento sicurezza sociale della regione Toscana ed al Ministero della funzione pubblica;

non ricevendo risposta la Cisnal ricorreva al TAR del Lazio che con sentenze 1353 e 1354 del 24 giugno 1992 pubblicate il 29 ottobre 1992 annullava le norme base dei cosiddetti decreti Pomicino e Gaspari, in realtà semplici circolari, sulla rappresentatività e partecipazione alle trattative intercompartimentali, di comparto e di livello decentrato;

le sentenze dei TAR sono immediatamente eseguibili ed è fatto obbligo a tutte le autorità amministrative di darne esecuzione;

la Cisnal di Livorno comunicava quanto sopra alla citata USL 25 in data 25 novembre 1992 e che la stessa rispondeva il 27 gennaio 1993 negando la partecipazione, con lettera a firma dell'amministratore straordinario dottor Lorenzini e del coordinatore amministrativo dottoressa Francesca Ravasco, adducendo le seguenti argomentazioni « ... non si è trovata la motivazione giuridica necessaria a suffragare la sua richiesta ... » e anche « ... il contestato criterio di esclusività delle deleghe non preclude l'obbligo da parte delle associazioni sindacali interessate di fornire tutti gli elementi utili dai quali si possa desumere il grado di rappresentatività... »;

dopo questi scambi di lettere il segretario Cisnal di Livorno, Leandro Paladini, a suffragare il non contestabile diritto di qualificare la Cisnal sindacato « maggiormente rappresentativo » a livello nazionale, presentava al dottor Lorenzini citato, inviti di partecipazione ad incontri sindacali da parte della regione Toscana ed altre UUSSLL, quali Grosseto e Lucca –:

se la citata dottoressa Ravasco aveva, al momento della delibera per il suo inquadramento nel ruolo di apicale dell'USL 25 i requisiti che la legge prescrive di dover già possedere, quali anzianità nei ruoli inferiori, titoli di studio;

se risponda al vero che la Toscoristorazione, ditta che gestisce la mensa aziendale e la somministrazione dei pasti agli ammalati ricoverati nell'ospedale di Piombino della USL 25, è inquisita per tale gestione e se esistano contrasti e/o contenzioso tra la stessa e gli uffici amministrativi dell'USL 25 per per la manutenzione e l'uso giornaliero dei macchinari di cucina di proprietà USL 25 ma in uso alla suddetta ditta;

se risponda al vero che la citata dottoressa Ravasco ha parenti e/o affini assunti, successivamente alla gara di appalto, presso la citata Toscoristorazione;

se risponda al vero che la pensione di invalidità civile alla citata dottoressa Ravasco è stata liquidata in circa 15 milioni e senza aver avuto il prescritto parere della commissione centrale per le pensioni di privilegio presso i Ministeri della sanità e del tesoro;

se risponda al vero che la citata dottoressa Ravasco ha dato le dimissioni da coordinatore amministrativo dell'USL 25 e nel caso conoscerne i motivi;

se gli importi liquidati al personale dipendente dell'USL 25 per incentivazione della produttività (le cosiddette compartecipazioni) negli anni dal 1987 al 1993, se gli stessi importi sono stati ritenuti congrui dagli organi deliberanti la spesa e dai sindaci revisori in base anche ad altre analoghe situazioni dello stesso comparto;

il nome della ditta costruttrice il parcheggio dell'ospedale di Piombino, l'importo dei lavori a base d'asta, il tipo di gara di appalto esperito, gli importi finora liquidati, le eventuali varianti in corso d'opera con relativi nuovi prezzi, il nominativo del direttore dei lavori medesimi, le ragioni del fermo dei lavori e della relativa chiusura del cantiere di lavoro;

se i citati dottor Lorenzini e dottoressa Ravasco hanno dato informazione agli organi deliberanti dell'USL 25, della richiesta Cisnal sopra citata, e se gli stessi organi hanno assunto decisioni in merito;

se sia possibile conoscere i nominativi, con i relativi addebiti, mossi dalla Guardia di Finanza ai 55 dipendenti come in premessa;

se risponda al vero che la giurisprudenza in materia sindacale afferma che la consistenza numerica si può ottenere con le elezioni nell'ente essendo la delega un rapporto personale tra l'organizzazione sindacale ed il lavoratore, a tutela del suo diritto alla riservatezza;

se non ritengano giusto ed opportuno permettere al sindacato Cisnal, tramite la struttura provinciale di Livorno, partecipare alle trattative sindacali con l'USL 25;

infine se non ritengano necessario, ciascuno per quanto di propria competenza, attivare una ispezione ministeriale atta ad acclarare i fatti. (4-12940)

GAETANO COLUCCI. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere:

a che punto si trovi l'*iter* della pratica intestata a Pietro Paesano nato a Tunisi l'8 settembre 1915 e residente in Busto Arsizio, via Varzi 14/B (*ex* via Card. Tosi 6) intesa ad ottenere il risarcimento dei danni in base alla legge n. 135 del 1985 (beni italiani espropriati in Tunisia). Il signor Paesano ha dovuto abbandonare la Tunisia in data novembre 1964. (Posizione 1783/NT). (4-12941)

GAETANO COLUCCI. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere:

a che punto si trovi l'*iter* della pratica intestata a Raffaella Del Vicario nata a San Severo (FG) il 7 maggio 1943 e residente in Busto Arsizio via Perosi 1, intesa ad ottenere la ricongiunzione dei contributi e quindi il trattamento definitivo di quiescenza. La signora Del Vicario, *ex* dipendente del comune di Busto Arsizio, è in pensione dall'inizio 1993; aveva chiesto la ricongiunzione dei periodi assicurativi ai sensi della legge n. 29 del 1979; il comune di Busto Arsizio ha già inviato copia della delibera e scheda individuale di inquadramento ai sensi del decreto del Presidente della Repubblica n. 347 del 1983 (posizione 8283780). (4-12942)

GAETANO COLUCCI. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere – premesso che:

il signor Calogero Palmeri nato a Casteltermini (Agrigento) il 30 luglio 1939

e residente in Busto Arsizio via Francesco Crispi 9, in data 25 marzo 1992, aveva chiesto la revisione del decreto di ricongiunzione n. 182981, in un primo tempo *regolarmente accettato, in quanto, contrariamente* alla comunicazione negativa del Ministero del tesoro, l'interessato ha ricevuto oltre al TRC/01-*bis* dell'INPS di Varese, anche il TRC/01-*bis* di Agrigento. Il signor Palmeri è dipendente del comune di Busto Arsizio e, per definire la sua posizione vorrebbe nel nuovo decreto, la totalità dei contributi versati (posizione CPDEL 2820326). (4-12943)

BUONTEMPO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro delle finanze.* — Per sapere – premesso che:

la società Alitalia e la società Aeroporti di Roma sono titolari e gestori di magazzini di temporanea custodia (A/3) di merci estere negli spazi doganali dell'aeroporto di Fiumicino;

esiste un notevole numero di partite, giacenti nei magazzini A/3 Alitalia ed Aeroporti di Roma, da evadere per numerosi arretrati;

le poche partite considerate evase sono state appurate sulla scorta delle scritture rispettivamente della società Alitalia e della società Aeroporti di Roma senza avere un riscontro oggettivo, con le scritture doganali;

non si comprende l'eccessiva disponibilità della circoscrizione doganale di Roma II nei confronti delle società Alitalia ed Aeroporti di Roma;

l'erario, chiedendo notevoli sacrifici ai cittadini, non accerta imponibili per cifre dell'ordine di miliardi perdendo di conseguenza notevoli introiti –:

se non ritengano opportuno e urgente verificare la reale situazione degli sgravi doganali e delle merci considerate evase sulla base delle scritture doganali;

a quanto ammontano le somme introitate fino ad oggi dall'erario relativamente alle operazioni di appuramento dei magazzini A/3 Alitalia ed Aeroporti di Roma e se non intendano interessare la magistratra nell'eventualità emergessero responsabilità penali. (4-12944)

BOTTINI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

il sordomuto Bonfanti Mauro, nato a Calcinate in provincia di Bergamo il 26 gennaio 1974, è stato sottoposto all'esame della commissione sanitaria presso l'USSL n. 30 di Seriate provincia di Bergamo, per l'accertamento degli stati di invalidità civile, delle condizioni visive e del sordomutismo, ai sensi delle leggi regionali del 5 febbraio 1982, n. 9 e del 25 marzo 1985, n. 18;

visti gli atti di ufficio, la Commissione ha certificato che nella seduta del 9 marzo 1989, presenti il medico legale Zenoni Stefano, il medico del lavoro Imberti Alberto, il medico di categoria Belotti Antonio e il medico specialista Colli Alessandro, Bonfanti Mauro non è affetto da sordomutismo;

sul modello A/SAN Commissione di prima istanza nella parte II^a^ (giudizio diagnostico della commissione) al paragrafo 18 (principali disabilità rilevate – sensoriali) i commissari hanno barrato che il Bonfanti ha il difetto del linguaggio e dell'udito, accertato la patologia (ipoacusia neurosensoriale bilaterale); invece nella parte III^a^ (« giudizio espresso dalla commissione ») al paragrafo 20, (« la commissione certifica che ... ») i commissari hanno barrato la legge n. 381, mentre al paragrafo 21 sempre della parte III^a^ (« il richiedente è riconosciuto ... ») hanno barrato la casella 01 e hanno scritto « non sordomuto »;

è in base alla legge 26 maggio 1970, n. 381, articolo 3 (Accertamenti sanitari –

Commissione sanitaria provinciale – Presentazione delle domande di concessione), che la commissione sanitaria riconosce il Bonfanti come affetto da sordomutismo;

visto l'esame audiometrico eseguito il 10 maggio 1991, sempre presso l'USSL n. 30 (« affetto da grave ipoacusia neurosensoriale bilaterale, con ben 90 decibel di perdita uditiva ») –:

per quale motivo i commissari abbiano barrato la legge 381;

per quale motivo i commissari abbiano dichiarato che il predetto Bonfanti non è affetto da sordomutismo;

se si ritenga di fornire una dettagliata documentazione degli aggravi e dei danni sostenuti in conseguenza dalla persona stessa. (4-12945)

ORESTE ROSSI. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale e delle finanze.* — Per sapere – premesso che:

durante un consiglio comunale aperto tenutosi presso il comune di Tortona sabato 3 aprile, sono venuto a conoscenza che i dipendenti della ditta INGRAMATIC da oltre dieci mesi non percepiscono stipendio;

a tutt'oggi a tali lavoratori non è stato riconosciuto il sussidio della cassa integrazione –:

quali siano i motivi del ritardo nell'erogazione di un sussidio ormai divenuto indispensabile per i lavoratori della INGRAMATIC;

se intendano, con la massima urgenza, intervenire al fine di risolvere la triste situazione dei suddetti lavoratori. (4-12946)

CELLAI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

con decreto-legge 16 febbraio 1993, n. 34, è stato istituito l'INPDAP (Istituto nazionale di previdenza per i dipendenti dell'amministrazione pubblica) con i compiti precedentemente attribuiti all'ENPAS, all'INADEL, all'ENPDEDP, alla CPDEL, alla CPI, alla CPUG;

con detto decreto-legge si è prevista la nomina di un commissario straordinario dell'Ente « al fine di assicurare la gestione fino alla costituzione degli organi ordinari », da nominarsi con decreto del ministro del lavoro e della previdenza sociale, di concerto con il ministro del tesoro;

con specifico decreto del 24 febbraio 1993 è stato nominato commissario straordinario dell'INPDAP il ragionier Mauro Seppia;

con detto decreto è stato attribuito al neo commissario « un compenso mensile lordo pari a quello fissato per il presidente dell'INPS con decreto ministeriale 15 ottobre 1990, il cui onere è a carico dell'istituto » –:

quali siano i criteri che hanno portato alla individuazione del neo commissario e se siano stati basati su oggettive valutazioni di professionalità, managerialità e competenza di merito o sulla mera appartenenza del designato ad un partito politico dell'area di Governo;

a quanto ammonti l'indennità mensile lorda di cui al citato decreto ministeriale. (4-12947)

PAPPALARDO. — *Al Ministro della difesa.* — Per conoscere – premesso che:

al contingente di personale dell'Arma dei carabinieri, recentemente inviato in Cambogia per la nota missione, al fine di far rispettare i diritti umani, sarebbero state sospese le licenze in vista delle elezioni in quel Paese, previste per il 23 maggio prossimo –:

se non ritenga di impartire precise ed urgenti disposizioni, atteso anche il breve lasso di tempo ormai a disposizione, per-

ché al medesimo personale venga consentito di rimpatriare, per poter esercitare il proprio diritto al voto in occasione dei *referendum* indetti in Italia per il giorno 18 aprile 1993. (4-12948)

SCALIA e MATTIOLI. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

il decreto del 22 maggio 1985, successivamente trasformato nell'articolo 1-*quinquies* della legge n. 431 del 1985, escludeva dal vincolo paesistico *ex* legge n. 1497 del 1939, comprensorio del Lago di Bolsena-Monti Volsini, inspiegabilmente la zona di via Gradolana, Monte Tomoco, S. Lorenzo Nuovo;

i valori paesistici, naturalistici e storico archeologici sono molto elevati e tali da inserirsi perfettamente nel *continuum* del vincolo di cui all'articolo 1-*quinquies* legge n. 431 del 1985;

l'orografia, profondamente incisa e tormentata è quella tipica del comprensorio vulcanico vulsino ed è caratterizzata da canaloni tufacei rivestiti da una ricca vegetazione, ove, insieme alle specie a prevalente genere « quercus », spiccano ampie fasce ad oliveto;

la qualità delle cenosi è prevalentemente orientata verso il passaggio da ceduo a fustaia, data la mancata applicazione di turni regolari di rotazione culturale, dovuta spesso alla forte pendenza;

notevoli sono, sotto il profilo paesaggistico, i coni di visuale che spaziano sull'intero bacino lacustre, in modo da costituire un tipico insieme di altissimo contenuto estetico;

importanti sono anche i siti archeologici (strada comunale di Grotte di Castro e aree tombali sparse) di origine etrusco-romana;

l'area infine presenta una notevole ricchezza di risorse idropotabili: acquedotto Bolsena-Civitavecchia ed acquedotti comunali vicinali, oltre ad alcune tipiche sorgenti « libere » come quella in località « Pantano » ed in località « Ponticello » –:

se il Ministro sia a conoscenza di quanto in premessa;

se non ritenga, per la tutela e salvaguardia della zona di via Gradolana, Monte Tomoco e S. Lorenzo Nuovo, emanare al più presto un decreto di vincolo paesistico *ex* legge n. 1497 del 1939. (4-12949)

RAVAGLIA. — *Ai Ministri dei lavori pubblici, per il coordinamento della protezione civile, dei trasporti, della marina mercantile, dell'ambiente e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per conoscere – premesso che:

nel 1988 è stato approvato il decreto n. 175 (definito Legge Seveso) finalizzato alla prevenzione dei rischi di incidenti rilevanti determinati da depositi ed insediamenti industriali;

recentemente il Ministro dell'ambiente ha predisposto uno studio sulle aree a rischio presenti in Italia, tra le quali è compresa anche l'area portuale ed industriale di Ravenna, come indicato anche dal rapporto dello studio ARIPAR sul rischio indotto nell'area di Ravenna dalle attività industriali comportanti l'uso di sostanze pericolose e dal trasporto (navale, ferroviario, stradale e in condotte) delle sostanze medesime –:

se non ritengano urgente completare l'esame del Piano di emergenza per il territorio ravennate predisposto da tempo dalla prefettura di Ravenna e di inviarlo a tutti gli enti preposti alla sua attuazione affinché possa essere portato tempestivamente, ed in maniera adeguata, a conoscenza dei cittadini, sollecitando ai competenti Ministeri la rapida conclusione dell'*iter* di approvazione del Piano di emergenza per il territorio ravennate. (4-12950)

CARCARINO. — *Ai Ministri per i beni culturali e ambientali e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

l'associazione « Progetto Meta » in data 3 febbraio 1993 ha inviato un esposto alla procura della Repubblica di Napoli in merito alla raccolta di rifiuti solidi urbani che avviene a Meta di Sorrento (NA);

la raccolta di rifiuti a Meta, prima che l'amministrazione comunale provvedesse ad innovarla, si svolgeva con il metodo « porta a porta », ciò comportava l'assenza dalle strade di cassonetti, di rifiuti abbandonati sui marciapiedi, di camion rumorosi nel centro storico;

il servizio di N.U. era composto da 14 operatori ecologici che provvedevano oltre alla raccolta giornaliera di rifiuti a domicilio alla pulizia delle strade comunali;

tale servizio era poco costoso e garantiva un servizio all'altezza delle esigenze. Il servizio esterno della ditta appaltatrice fece lievitare i costi dai circa 35 milioni annui fino al 1985 ai 106 milioni annui fino al 1989;

con delibera del consiglio comunale n. 2 del 10 febbraio 1989 fu approvato un capitolato di appalto per un servizio rinnovato di N.U., ovvero con raccolta dei rifiuti a mezzo cassonetti con onere previsto in lire 150 milioni;

con delibera del consiglio comunale n. 41 del 23 ottobre 1990 e n. 3 del 9 gennaio 1991 fu approvato un capitolato a mezzo del quale il costo è passato a oltre 236 milioni di lire;

a tale aumento dei costi non è corrisposto alcun miglioramento globale del servizio. Mentre restano del tutto sottoutilizzati i 14 operatori ecologici sempre presenti in pianta organica;

da pochi anni quindi è stato istituito il nuovo sistema di raccolta mediante cassonetti ribaltabili e camion compattatori che raggiungono anche le strade più intime del paese;

tale servizio manifesta gravi deficienze e produce seri danni al patrimonio, all'igiene, al decoro, alla quiete;

il patrimonio viene danneggiato dagli addetti al servizio che nel riporre i cassonetti al loro posto li sbattono violentemente contro i muri, infatti diversi antichi portali scolpiti in pietra pipernoide nonché molte facciate di palazzi antichi sono stati danneggiati in maniera irreparabile;

è da tener presente che l'intero territorio di Meta e in particolare il suo centro storico sono assoggettati alla tutela speciale di cui alla legge 8 agosto 1985 n. 431 e quindi al piano urbanistico territoriale approvato con legge regionale n. 35/87;

l'immagine del paese, soprattutto nelle strade antiche, è snaturata dalla presenza di grossi contenitori metallici o plastici tenuti in condizioni di totale abbandono –:

se non intenda assumere le iniziative di competenza nei confronti dell'amministrazione comunale che ha palesato inerzia di fronte ai palesi danni cagionati alle case e agli antichi portali;

se non ritenga il caso di verificare la qualità del servizio reso dalla ditta appaltatrice nella raccolta di rifiuti;

quali azioni intenda intraprendere allo scopo di salvaguardare il centro storico di Meta e l'intero territorio del comune assoggettati a tutela speciale dalla legge 431/85. (4-12951)

LETTIERI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il rapporto assicurativo tra imprese ed INAIL non è soddisfacente e va razionalizzato;

la crisi economica ha determinato una situazione assai pesante per la gran parte delle imprese che, oltre al blocco dei lavori e degli appalti, registrano spesso anche una crisi di liquidità;

le imprese versano anticipatamente all'INAIL i premi per l'assicurazione obbligatoria per gli infortuni e le malattie professionali dei lavoratori non sulla base

delle retribuzioni effettive, ma su quelle presuntive e salvo conguaglio nell'anno successivo;

i versamenti, invece, non dovrebbero essere effettuati in anticipo e con il sistema del conguaglio su base annuale, ma con cadenze mensili e trimestrali sulla base delle retribuzioni effettivamente erogate, così come del resto già avviene con contributi INPS;

ciò permetterebbe alle aziende, in particolare a quelle in crisi di liquidità, di evitare chiedere la rateizzazione o la dilazione dei redditi, per le quali è richiesto un tasso di interesse assai oneroso pari al 29 per cento;

bisogna rivedere con urgenza l'attuale sistema se davvero si vuole instaurare un rapporto più corretto e meno vessatorio tra Stato e cittadini e se si vuole dare l'adeguata attenzione ai piccoli e grandi problemi delle imprese e della ripresa economica;

nelle regioni meridionali tutto ciò sta pregiudicando la stessa esistenza di molte piccole imprese –:

se non intenda adottare i provvedimenti di competenza per ovviare alla distorta situazione su esposta. (4-12952)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e delle poste e telecomunicazioni.* — Per conoscere – premesso che:

la CISNAL Telecomunicazioni di Napoli ha invitato l'ispettorato del lavoro con raccomandata 10 febbraio 1993, giuntagli il 26 febbraio 1993, ad effettuare una visita ispettiva presso i locali della SIP di via Generale Parisi 13, al piano B, dove è ubicato il Centro lavori servizi di utenza che, tra l'altro, vede l'operatività dei servizi del 12 e del 187;

in tali locali è installata una apparecchiatura in cuffia per asseriti « fini statistici », che invece viene utilizzata in violazione dell'articolo 4 della legge n. 300 del 1970, per controlli sulla attività degli addetti che subiscono così continui, ingiustificati, vessatori e pretestuosi richiami da parte dei loro superiori;

la CISNAL si è rivolta all'ispettorato, ora sono due mesi, dopo aver invano protestato con l'azienda;

tuttavia a tutt'oggi l'ispettorato non ha ancora effettuato, oberato come sarà di impegni, la attesa e non più differibile visita ispettiva –:

se intendano rispettivamente intervenire perché l'ispettorato del lavoro dia luogo, sentita la CISNAL, alla visita ispettiva e perché alla SIP si suggerisca l'opportunità di far cessare vessazioni tipiche del vetero capitalismo « tayloristico ». (4-12953)

PARLATO. — *Al Ministro delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

la risposta del Ministro delle finanze, prot. n. 2/3306 del 2 novembre 1992, all'interrogazione n. 4-02742 non sembra esauriente all'interrogante. Leggendo analiticamente la risposta si evidenzia innanzitutto che si afferma che: « il riconoscimento ai gerenti... non è consentito dalla vigente normativa... « Tale affermazione sembra, a parere dell'interrogante, inesatta. La legge n. 165 del 1982, tuttora vigente, in quanto non abrogata, ha previsto la istituzione (vedasi la tabella allegata alla sopraddetta legge) di ben 122 posti nel profilo professionale di « Vice-Conservatore ». Alla copertura dei posti disponibili alla data della suddetta veniva previsto l'inquadramento degli impiegati appartenenti alla VI qualifica funzionale purché in possesso del diploma di istruzione secondaria di II grado che avevano esercitato la funzione di gerente per almeno sei mesi;

a conoscenza dell'interrogante sono, per la zona di Napoli, ben due casi:

Bartolomeo Mariniello, da gerente della conservatoria dei RR.II. di Napoli I, livello VI, a conservatore, livello VII (allora direttivo) dei RR.II. di Avellino;

Rocco Pirozzi, da gerente della conservatoria dei RR.II. di Napoli III, livello VI, a conservatore di Benevento, livello VII (allora direttivo);

pertanto non si comprende l'orientamento del Ministero: un profilo professionale è istituito per legge e si afferma che tale profilo professionale non è consentito dalla vigente normativa. Sembra assurdo in quanto non vi può essere disparità di trattamento tra possibili beneficiari della stessa norma allorché tale norma non è stata abrogata. Quanto poi al concetto di « rapporto fiduciario », sembrerebbe all'interrogante concetto arcaico non confacente alle leggi e sentenze che si sono succedute. La sentenza di Cassazione a sezioni riunite n. 3015 del 7 luglio 1977 è chiarificatrice in tal senso: « il gerente ne esercita le funzioni con pienezza di poteri ed in assoluta autonomia, del tutto libero dal vincolo gerarchico cui è sottoposto.... »;

alla luce di quanto detto e del nuovo riordinamento della pubblica amministrazione sembra assurdo che la nomina del gerente avvenga ancora con nomina diretta del conservatore allorquando la legge n. 22 del 21 gennaio 1983 ha eliminato lo specifico regime di responsabilità del conservatore assimilandola a quella di funzionario dello Stato, tanto che oggi per il fatto del gerente la responsabilità non ricade più sul conservatore ma sull'amministrazione. L'amministrazione sarebbe pertanto responsabile del fatto di un funzionario non incardinato in tale funzione e per giunta scelto da un altro funzionario, svilito di quella specifica responsabilità prevista dalla legge n. 540 del 1943;

il richiamo all'articolo 82 del regolamento degli uffici e del personale del ministero sembra contraddittorio con quanto esposto nella stessa risposta: farebbe infatti supporre che il problema dei gerenti sia sanabile con « concorsi per esami e per titoli riservati al personale che abbia, fra l'altro, svolto nell'ultimo decennio mansioni corrispondenti a profili professionali appartenenti alla qualifica superiore per almeno un triennio ». Ma allora ci si chiede: se i gerenti, per quanto detto, possono partecipare a tale tipo di concorso per aver svolto mansioni appartenenti alla qualifica superiore, allora vuole significare che i gerenti hanno effettivamente svolto mansioni superiori riconducibili a quanto richiede l'articolo 2 della legge n. 312 del 1980. L'interrogante si domanda perché allora si nega l'inquadramento nel profilo professionale di funzionario tributario ai gerenti se espressamente si dichiara che tale personale può partecipare al concorso per la qualifica superiore in quanto ha svolto mansioni superiori. Oltre tutto nella conservatoria dei RR.II., non vi è, con esclusione della figura del conservatore, *personale della carriera direttiva*. L'interrogante si domanda se non sarebbe giusto che nel caso di sostituzione del conservatore il sostituto appartenesse, come d'altronde si verifica in tutti gli uffici finanziaria alla carriera direttiva. Sembra, pertanto, che non solo l'inquadramento dei gerenti nella qualifica superiore è dovuto perché svolgono « funzioni meritevoli della massima considerazione », ma soprattutto perché tale figura è oggi riconducibile alla figura espressamente prevista dalla legge —:

se, con la serenità che ci si attende, voglia riscontrare gli interrogativi ora posti e rivedere, eventualmente, con la medesima serenità, i contenuti della risposta alla interrogazione n. 4-02742 del 1° luglio 1992, aggiornandola alla luce delle osservazioni di cui al presente atto ispettivo.

(4-12954)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

il centro storico di Maddaloni è caratterizzato da edifici sette-ottocenteschi di particolare pregio e tuttavia abbandonati al più totale degrado;

inoltre a Maddaloni il palazzo del XVI secolo, appartenuto al celeberrimo duca Carafa di Maddaloni, benché veda apposto all'ingresso – chiuso – un cartello

indicatore, è nel più completo abbandono tanto che, minacciando di crollare, è stato innalzato lungo la facciata principale un muretto « provvisorio » di protezione divenuto definitivamente parte oscena della sua architettura, senza che alcun intervento di restauro fosse disposto benché i suoi ambienti possano, una volta recuperati, essere utilizzati per quei fini culturali e sociali che la cittadinanza ha il diritto di veder perseguiti dalle istituzioni locali e centrali;

ancora più degradati appaiono gli altri lati dell'ampio complesso –:

se il palazzo sia vincolato ed esista un progetto, e quale, per il restauro e la valorizzazione dello storico edificio che testimonia la sua decadenza a monumento sì ma dell'incuria, del degrado e della insensibilità degli enti che avrebbero dovuto aver cura del suo recupero e riuso se non altro per finalità di pubblico interesse, a voler tacere del doveroso e mancato rispetto per la memoria storica, culturale ed architettonica dei luoghi. (4-12955)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

alla periferia di Maddaloni (Ce) insiste il complesso agricolo di "Masseria Carbone", un esempio molto interessante di architettura rurale, in larga misura abbandonato al degrado –:

se esistano progetti volti al recupero ed alla valorizzazione del complesso, se per la sua esecuzione siano stati stanziati i fondi necessari ad evitarne l'ulteriore degrado e magari l'assalto successivo della speculazione edilizia e comunque se la "Masseria Carbone" risulti vincolata. (4-12956)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per conoscere se risalga a responsabilità del comune di Pozzuoli o dell'Enel la carenza di pubblica illuminazione della frazione puteolana di Licola: trattasi di una carenza di particolare gravità giacché il buio favorisce le attività criminali prospere in una zona dove i cittadini anche per la inadeguatezza dell'organico della locale stazione dei carabinieri e nonostante il loro sacrificio ed impegno, sono frequentemente vittime delle criminalità commesse, anche a causa di immigrati clandestini senza lavoro e delle prostitute di colore che svolgono nella frazione una rigogliosa attività non propriamente lecite e favorite dalle tenebre. (4-12957)

PARLATO. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* Per conoscere – premesso che:

la crisi operativa e strutturale della giustizia a Napoli è gravissima tanto che dall'ordine degli Avvocati è stato elaborato e diffuso il seguente documento:

« Il Consiglio dell'Ordine degli Avvocati e Procuratori di Napoli, d'intesa con le Associazioni forensi, ritenuto lo stato di grave disagio in cui sono costretti ad operare i propri iscritti e facendosi interprete delle notevoli difficoltà per il corretto espletamento dell'attività forense, ha invitato i Capi degli Uffici Giudiziari, nell'ambito delle rispettive competenze, ad adottare, in via di urgenza, i seguenti provvedimenti:

nel settore civile:

1) Risistemazione dell'uffficio notifiche in stato di crisi profonda dopo l'allontanamento di alcuni dipendenti.

2) Predisposizione di un « piano di efficienza » per la dattiloscrittura di ben 1.300 sentenze arretrate che altrimenti subirebbero ritardi di anche un anno per la pubblicazione.

3) Scritturazione urgente di migliaia di decreti ingiuntivi già esaminati;

4) Piano di coordinamento per la trasmissione in giornata degli atti all'ufficio del registro ed immediata restituzione all'ufficio cronologico dopo la registrazione;

5) Potenziamento e migliore organizzazione dell'ufficio per il rilascio di copie degli atti;

nel settore penale:

1) Puntuale osservanza dell'orario di inizio e chiusura delle udienze dibattimentali secondo le intese già raggiunte con i vertici degli Uffici Giudiziari;

2) Immediata riattivazione degli impianti e delle apparecchiature di stenotipia per la verbalizzazione della istruttoria dibattimentale nei processi penali;

3) Rispetto dei tempi rigorosamente fissati dalla legge per lo svolgimento delle udienze innanzi al Tribunale del riesame;

4) Tempestiva osservanza dei termini di decorrenza della custodia cautelare con predisposizione di turni d'ufficio per l'adozione delle relative ordinanze di scarcerazione » –:

quale sia, secondo le informazioni in possesso del Ministro, il grado di disfunzione della giustizia a Napoli punto per punto dei nove sollevati dal Consiglio dell'Ordine degli Avvocati e Procuratori e dalle Associazioni forensi, (tanto generose – ritiene l'interrogante – da non porre l'accento anche su altri problemi connessi al funzionamento della giustizia tra cui l'inquietante vicenda del mancato completamento, da anni, del nuovo Palazzo di Giustizia nel Centro Direzionale e tante altre questioni);

quali rimedi, per parte sua, si ritenga sia possibile adottare con assoluta urgenza, a supporto delle iniziative assunte o in via di assunzione da parte dei « capi degli Uffici Giudiziari » e che si desidera conoscere quali siano state o saranno in concreto. (4-12958)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei Ministri e ai Ministri dell'interno, dei trasporti, dei lavori pubblici e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se sia noto al Governo, anche tramite gli uffici periferici dei ministri interrogati, che le prefetture « interpretano » la norma del codice della strada, nuovo e vigente, per la « sospensione della patente nuova » vale a dire con la sanzione aggravata, in relazione alla data del rilascio del documento, non tanto della patente. Così è il caso di un cittadino che titolare di patente « B » dal 1986, nel 1992 chiese ed ottenne la patente « C »: avendo infranto la norma sulla velocità si è visto sospendere la patente per il « periodo » previsto per i titolari di « nuova » patente, mentre egli era abilitato alla guida di autoveicoli con patente « b » sin dal 1986 e al momento dell'accertata infrazione, per eccesso di velocità, guidava un veicolo che poteva essere guidato con patente « B »;

se non sia il caso di intervenire al più presto con idonea circolare per evitare che casi del genere, di applicazione gravemente errata delle pur drastiche nuove norme sulla circolazione, non comportino anche ingiustizie palesi, come quella sopra esposta;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la corte dei conti al fine di accertare, doverosamente perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili che conseguono sempre non solo per gli abusi e le omissioni, anche nei doveri di controllo, ma anche per gli errori che possano portare ingiusti danni ai cittadini e alla amministrazione pubblica, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come direttori generali o dirigenti di pubblici uffici, ovvero onorari, come ministri, o sottosegretari, specie se muniti di delega. Infatti è noto che non basta emettere le disposizioni, ma è doveroso anche controllare che le stesse siano regolarmente applicate e, pertanto, correttamente interpretate. (4-12959)

PARLATO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia, dei trasporti, della marina mercantile, dell'agricoltura e foreste e degli affari esteri.* — Per conoscere – premesso che:

il 21 maggio dello scorso anno un armatore napoletano a nome anche di altri armatori locali sistematicamente esclusi dalla aste pubbliche bandite per l'AIMA dalla Direzione Generale per la Cooperazione e lo Sviluppo presso il Ministero degli esteri, diretta dall'ambasciatore Santoro ed arrestato in questi giorni, denunciava alla Procura della Repubblica di Napoli un inquietante episodio: « abbiamo saputo che la società EURICO ITALIA, aggiudicataria dell'asta per il trasporto di 2.710 tonnellate di riso in cartoni da Savona al Madagascar, ha noleggiato una nave estera (la Mn. Majan, bandiera di San Vincente Grenadine) senza ottemperare all'obbligo di utilizzare nave con bandiera italiana »;

è ben noto che le navi italiane costano e giustamente di più esse applicano la legislazione sociale e quindi non possono reggere la concorrenza con armatori che disinvoltamente operano in "*dumping* sociale" e che – come invece è accaduto – mai dovrebbero essere privilegiati con deroghe per quanto eccezionali;

secondo il consorzio delle piccole e medie imprese armatoriali del Mezzogiorno anche per il traffico di carbone tra la Sardegna e Brindisi vi è una « copertura di Stato » alle medesime illegalità;

Ministero della marina mercantile, AIMA, Ministero degli esteri hanno aperto una inchiesta del cui esito non si e saputo nulla;

analogamente a dirsi per la procura della Repubblica di Napoli –:

a quali conclusioni siano pervenuti, in ordine al detto grave episodio, ministeri competenti, AIMA e Magistratura napoletana e soprattutto quali responsabilità siano emerse;

se risulti che la magistratura romana, che ha in carico i procedimenti penali relativi alle illegali e tangentocratiche modalità con le quali ha avuto luogo la cooperazione italiana allo sviluppo, abbia inserito od intenda inserire nei suoi filoni d'indagine una completa verifica delle spedizioni di aiuti effettuati via mare allo scopo di comprendere se il tradimento della bandiera nazionale, con enorme danno per gli imprenditori marittimi italiani ed i loro dipendenti, abbia contributo ad « arricchire » interessi privati in violazione degli interessi nazionali e dei diritti sociali italiani. (4-12960)

DIGLIO. — *Ai Ministro della sanità e dell'agricoltura e foreste.* — Per sapere – premesso:

che si sono manifestati focolai di afta epizootica tra il 28 febbraio e il 27 marzo per un totale di 51, così ripartiti:

regione Campania:

n. 8 in Avellino e provincia;

n. 1 in provincia di Salerno;

regione Basilicata:

n. 14 in provincia di Potenza;

n. 11 in provincia di Matera;

regione Calabria:

n. 8 in provincia di Cosenza;

n. 1 in provincia di Catanzaro;

regione Puglia:

n. 4 in provincia di Lecce;

regione Veneto:

n. 4 in provincia di Verona;

in materia esistono le seguenti direttive CEE:

direttiva 93/143 del 5 marzo 1993: divieto di importazioni da territori Repubbliche Slovenia – Croazia – ed *ex* Jugoslavia, con divieto anche di transito per importazione da Paesi dell'Est, nessuna indicazione su scambi Intercomunitari;

direttiva 93/162 del 17 marzo 1993: divieto di esportazione nei territori comunitari di animali e carni aftoso sensibili dall'Italia con la sola eccezione per le carni ed i prodotti carnei lavorati prima del 1° febbraio 1993 provenienti dalle regioni non

colpite da afta, per le regioni colpite blocco totale. Decisione della commissione senza sentire il parere del Comitato veterinario permanente;

direttiva 93/168 del 19 marzo 1993; modifica della direttiva precedente dove si inserisce il parere del Com. Vet. Per. che consiste nel prescrivere la dizione seguente sui certificati sanitari che accompagnano le carni nelle spedizioni verso gli Stati membri: « carni/prodotti conformi alla decisione della commissione 93/168 del 19 marzo 1993 ».

direttiva 93/180 del 26 marzo 1993: decisione del comitato veterinario permanente, entrata in vigore il 29 marzo 1993 che modifica le decisioni precedenti, liberalizza le spedizioni verso i Paesi comunitari degli animali e delle carni dalle regioni non colpite accompagnata da certificati sanitari con la dizione 93/180 del 26 marzo 1993. Consentendo la spedizione delle sole carni o prodotti carnei dalle regioni colpite per quelle macellate e lavorate prima del 1° febbraio 1993 ed accompagnate dal certificato sanitario con l'indicazione indicata nel paragrafo precedente;

è nota l'ordinanza del Ministero della sanità del 29 marzo 1993 pubblicata sulla *Gazzetta Ufficiale* n. 75 il 31 marzo 1993;

che le prime misure di restrizione adottate dal Ministero della sanità, verso le regioni colpite, escludendo quella relative alla sola Basilicata, risalgono al:

12 marzo (ordinanza 10 marzo 1993 *Gazzetta Ufficiale* n. 58 serie generale dell'11 marzo 1993 in vigore dal 12 marzo 1993) relativamente alle norme sanitarie per lo spostamento degli animali aftososensibili ai fini della profilassi e della lotta contro l'afta epizootica;

al 17 marzo (decisione 93/162 CEE) per le spedizioni di animali e carni verso i soli territori comunitari, con la sola eccezione delle carni lavorate prima del 1/2, e recepita dal nostro Ministero della sanità –:

quale potrà essere la sorte di dette carni lavorate, all'oscuro dei provvedimenti, dall'1/2 alla data della comunicazione ufficiale (carni immesse in magazzini doganali e/o stoccate congelate in attesa di spedizione);

perché, come per il Veneto, anche le altre regioni non abbiano avuto bloccate le sole province interessate dai focolai epidemici. Anche in funzione delle misure previste dal decreto del Presidente della Repubblica n. 229 del 1° marzo 1992 che governa la lotta contro l'afta e attua le direttive comunitarie in proposito. Misure che sono di gran lunga meno restrittive di quelle adottate);

perché la direzione generale dei servizi veterinari abbia bloccato, dalle province colpite, per lo più dal provvedimento e non dall'afta, le spedizioni delle carni lavorate dopo il 1° febbraio, verso i Paesi Terzi (tutti), anche se gli stessi non hanno adottato alcuna limitazione all'importazione, e verso le altre regioni italiane.

L'interrogante si domanda se il Ministero abbia considerato che avrebbe causato il blocco totale dell'economia zootecnica nelle province interessate le quali, per molte di esse almeno, hanno il solo torto, non essendo state colpite dall'afta, di appartenere ad una regione dove si è manifestata la patologia.

come potranno essere utilizzate e/o recuperate le molte tonnellate di carni per i Paesi Terzi (a tutt'oggi non risulta abbiano adottato misure restrittive ufficiali, eccezione fatta per due dei tanti) prodotte e lavorate fino al 31 marzo, data del provvedimento, e conferite al magazzino doganale dall'unica azienda nel panorama italiano del settore bovino, insediata al sud nelle province non colpite da epidemia, operante prevalentemente verso l'*export* nei Paesi terzi meridionali e nord africani;

chi rifonderà i danni qualora, come facilmente ipotizzabile data la presa di posizione del nostro Ministero della sanità, venissero respinte quelle già esportate o in viaggio a destino, rientranti tra quelle prodotte dopo il 1° febbraio 1993.

(4-12961)

BOLOGNESI, CALINI CANAVESI, AZZOLINA, CRUCIANELLI e SPERANZA. — *Al Ministro per la funzione pubblica.* — Per sapere – premesso che:

il giorno 8 aprile il Governo incontrerà CGIL CISL UIL per verificare l'attuazione del decreto legislativo 29/93 e le modifiche da introdurre entro il 31 dicembre 1993, tra cui anche l'individuazione dei nuovi comparti di contrattazione;

a seguito dell'emanazione di criteri di rappresentatività contenuti nelle circolari del dipartimento funzione pubblica n. 24518/8.93.5. del 28 ottobre 1988 e n. 72549/8.93.5 dell'11 marzo 1991 la federazione delle rappresentanze sindacali di base è stata riconosciuta maggiormente rappresentativa tanto da essere stata convocata alle trattative per il rinnovo dei contratti nazionali per i comparti enti pubblici non economici e aziende autonome già dal 1985;

la suddetta organizzazione sindacale ha aderito alla Confederazione unitaria di base, confederazione cui recenti e numerose sentenze hanno riconosciuto la maggiore rappresentatività sia nel settore pubblico che in quello privato;

la Federazione delle rappresentanze sindacali di base non solo viene sistematicamente esclusa da qualsiasi convocazione e trattativa, ma si vede negata altresì qualsiasi possibilità di relazioni sindacali da parte del dipartimento della funzione pubblica –:

i motivi di tali esclusioni e quali misure si intendano mettere in atto per riconoscere alla suddetta organizzazione sindacale i pieni diritti sindacali. (4-12962)

TARADASH, BONINO, CICCIOMESSERE, ELIO VITO, RAPAGNÀ e PANNELLA. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

il professor Antonio Pochesci, insegnante presso la scuola media « Concetto Marchesi » sita in Genazzano (Roma), denunciò il 9 ottobre 1992, durante un consiglio d'istituto, la necessità di un controllo da parte del provveditorato agli studi su alcune gravi inadempienze che, a suo parere, determinavano un non regolare funzionamento dell'istituto scolastico;

in particolare il professor Pochesci faceva presente che all'interno della scuola, per 13 anni, il preside, durante il mese di congedo ordinario, non era stato sostituito, come per legge dal vicario, ma da un altro insegnante (fatto questo che, se corrispondesse al vero, rischierebbe di invalidare gli atti posti in essere dal soggetto non legittimato all'esercizio della funzione vicaria con evidente violazione della legge);

a questo si aggiungeva il fatto che per così lungo tempo era stato scelto nella funzione di vicario un docente non laureato, pur in presenza di insegnanti in possesso di titolo adeguato;

a conclusione di questa storia il provveditorato ha disposto una visita ispettiva non per verificare la denuncia presentata dal professor Pochesci ma per indagare sulle « carenze comportamentali manifestate dal denunciante » –:

1) in base a quali criteri si è arrivati alla visita ispettiva nei confronti di chi aveva pubblicamente denunciato una grave violazione di carattere amministrativo-patrimoniale;

2) quali sono stati i risultati dell'ispezione e se si è controllata l'attendibilità di quanto denunciato dal professor Pochesci che, se risultasse vero, creerebbe un grave danno per l'istituzione scolastica. (4-12963)

ROMEO. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso che:

sulla stampa in generale ed in particolare su quella medica sono stati pubblicati numerosi articoli in merito alle gravi irregolarità di cui sono oggetto i concorsi

universitari a professore di prima e seconda fascia, segnatamente nelle facoltà di medicina;

l'assegnazione dei posti di recenti concorsi ha raggiunto livello di macroscopiche ingiustizie come denunciato dai professori Todisco e Businco e da alcuni ordinari di medicina interna delle università di Bologna, Torino, Napoli, Verona, Cagliari, Modena: sono stati premiati grigi o sconosciuti portaborse e si è giunti a forme di arrogante nepotismo con la nomina a professori associati di alcuni figli di professori universitari di scarso spessore scientifico ed addirittura senza una maturata esperienza, in ciò non tenendo sistematicamente conto dei *curricula* dei candidati, né dell'impatto scientifico nazionale ed internazionale della ricerca svolta da noti cultori di sicuro valore, ingiustamente esclusi;

con una recentissima sentenza la corte dei conti si è rifiutata di registrare i decreti dei concorsi – cattedre universitarie per professore ordinario di pediatria e di malattie dell'apparato respiratorio – due concorsi che avevano provocato – anche questi – la reazione del mondo scientifico italiano ed internazionale perché erano stati esclusi candidati noti per la loro preparazione scientifica;

tali gravi e reiterati episodi determinano condizioni di sfiducia nei confronti della prassi concorsuale con grave detrimento dell'immagine dell'università italiana –:

quali iniziative intenda assumere per modificare gli attuali metodi e sistemi posti alla base dei concorsi universitari a professore di prima e seconda fascia, nella facoltà di medicina. (4-12964)

TESTA ENRICO. — *Al Ministero dell'industria, del commercio e dell'artigianato.* — Per sapere – premesso che:

il Ministero dell'industria sta procedendo alla stesura della nuova mappa che individua le « aree di declino industriale » ai sensi del regolamento CEE 2052/88;

il territorio della Val Camonica – Sebino (Bergamo-Brescia) è stato investito in questi ultimi mesi da un drammatico processo di crisi che ha reso precaria la situazione di numerose aziende industriali ed ha avuto pesanti riflessi sui livelli di occupazione;

un'ampia documentazione di questo fenomeno è stata rimessa al Ministero dagli enti locali, dalle organizzazioni sindacali dei lavoratori dipendenti ed autonomi e degli imprenditori –:

se non intenda inserire l'area Camuno-Sebina fra quelle classificate come « aree di declino industriale ». (4-12965)

ENRICO TESTA, BARGONE, CALZOLAIO, CAMOIRANO ANDRIOLLO, CIONI, LORENZETTI PASQUALE, MELILLA e ZAGATTI. – *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

il nuovo codice della strada, con l'articolo 231, ha abrogato la legge 18 marzo 1988, n. 111;

tale legge, recependo la direttiva 80/1263/CEE, all'articolo 10 comma 3, confermava la validità delle patenti B o superiori, già rilasciate, per la guida dei motoveicoli;

di conseguenza, il nuovo codice prevede ora che solo la patente A è valida per la guida dei motoveicoli (articolo 116);

ciò è in palese contrasto con lo stesso codice della strada che, all'articolo 236, fa salvi i diritti acquisiti e stabilisce che le nuove regole si applicano solo alle patenti rilasciate dopo l'1° luglio 1993 confermando, quindi, la validità dei documenti preesistenti;

sempre il suddetto articolo 236 stabilisce che la validità delle precedenti patenti può essere rivista in occasione della prima revisione decennale, da operarsi secondo gli articoli 126 e 128 che

trattano, logicamente, solo dei requisiti fisici e psichici del possessore;

non si vede, perciò, come possa essere messa in discussione la capacità di guida e la conoscenza delle regole di circolazione, e perciò la validità della patente, se non per il venir meno dei requisiti fisici;

in ogni caso, dato che il diritto comunitario è preminente su quello nazionale, al di là delle norme del nuovo Codice e dell'abrogazione della legge 111, la questione è molto più semplicemente riconducibile alla direttiva CEE, sempre vigente;

la già menzionata direttiva 80/1363/CEE, all'articolo 11, impone, infatti, agli Stati membri di sostituire « le patenti di guida nazionali in corso di validità da essi rilasciate con patenti di guida (di modello comunitario) della categoria o delle categorie corrispondenti. La sostituzione avviene senza gli esami di cui all'articolo 6 (che tratta degli esami teorici, pratici e medici, ndr) su presentazione ed in sostituzione delle vecchie patenti. »;

risulta perciò evidente che l'utente in possesso di patente B o superiore, rilasciata in passato, ha il diritto di pretendere di ricevere dallo Stato italiano una patente di modello comunitario valida per la categoria A, B o superiore, e di guidare con essa moto, auto, eccetera, senza che alcuna condizione aggiuntiva gli venga imposta –:

se siano allo studio provvedimenti che reintroducano la normativa abrogata dal nuovo codice della strada affinché, nel rispetto di fondamentali princìpi giuridici, della logica e della direttiva 80/1263/CEE, siano fatti salvi i diritti acquisiti dai possessori di patente B, confermando la validità delle suddette patenti B o superiori, già rilasciate, per la guida dei motoveicoli. (4-12966)

PASETTO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che nel comune di Vigasio (Verona) sono stati accertati da parte di un consigliere comunale alcuni fatti relativi ad appalti pubblici che presenterebbero elementi di irregolarità;

che tali appalti si riferiscono alla costruzione di un centro sportivo comunale nel comune di Vigasio (Verona);

che, in particolare, sarebbero stati appaltati a trattativa privata lavori per quasi un miliardo di lire;

che le delibere a cui si riferisce questo interrogante partono dal 17 febbraio 1988, (delibera n. 11 del Consiglio comunale) per continuare con la deliberazione della Giunta Municipale del 4 febbraio 1992, la n. 76, alla quale è seguita un'altra, sempre della Giunta Municipale, la n. 165 del 7 aprile 1992, per finire poi con le ulteriori delibere della Giunta Municipale n. 185 del 5 maggio 1992, e n. 206 del 2 giugno 1992 –:

se non ritenga opportuno predisporre un'indagine amministrativa presso il comune di Vigasio per verificare la regolarità delle deliberazioni di cui alla presente interrogazione, e comunque di tutta la procedura relativa all'appalto dei lavori per la costruzione del centro sportivo comunale del comune di Vigasio. (4-12967)

CELLAI. — *Al Presidente del Consiglio dei Ministri.* — Per sapere – premesso che:

la SMA – azienda fiorentina operante nel settore elettronico – appartenente al gruppo *ex* EFIM versa in un momento di gravissima difficoltà;

il blocco da parte della Corte dei conti del decreto del Ministero del tesoro stanziante 1068 miliardi per il primo semestre 1993 a favore delle aziende del Gruppo ha causato una drammatica crisi di liquidità;

detto ritardo nel finanziamento ha comportato il mancato pagamento degli stipendi di gennaio e febbraio ai dipendenti, il blocco degli approvvigionamenti da parte dei fornitori, la CIGO per 400 dei 520 addetti;

il rischio di un blocco produttivo che, in breve tempo, potrebbe portare alla paralisi totale dell'azienda è incombente;

la posizione assunta dalla CEE in rapporto ai debiti *ex* EFIM appare foriera di ulteriori preoccupazioni;

quali iniziative si intendano adottare in via immediata per sbloccare il finanziamento delle aziende interessate e, in particolare, per salvaguardare l'operatività di aziende dal grande patrimonio professionale e tecnologico come la SMA e la GALILEO –:

se e come si intenda intervenire sulla CEE al fine di non far ulteriormente pagare ai dipendenti lo scotto di una gestione EFIM le cui responsabilità di vertice sono ormai accertate, ma che non debbono ricadere sulle spalle del mondo del lavoro dipendente. (4-12968)

TRABACCHINI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro della marina mercantile e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

nel 1981 il CAP (consorzio autonomo del porto) di Civitavecchia, in base alle leggi vigenti, chiede in concessione tutta l'area dove dovrà sorgere il nuovo porto;

la motivazione della richiesta di concessione fu giustificata dal CAP con la necessità di imbonimento dell'area paludosa e quindi con la necessità di scaricarvi materiali inerti;

nel 1982 viene varata la nuova normativa sui rifiuti che prevedeva nuove autorizzazioni allo scarico, ma il CAP non le chiede e continua a scaricare materiali nell'area suddetta;

nel 1990 (il 24 dicembre), all'insorgere di alcuni problemi, si forma il consorzio NOPC (nuove opere portuali di Civitavecchia) al quale il CAP affida l'area in oggetto per 10 milioni al mese;

il NOPC, con una operazione niente affatto chiara, cede a sua volta l'area-discarica a una piccola ditta in sub-appalto, e da quel momento non si scaricano più solo inerti ma materiali di tutti i tipi senza alcun controllo;

è da tenere presente che alcune imprese facenti parte del NOPC (Lodigiani, CMC, + Vianini, Cogefar e Condotte) sono le stesse che fanno parte del CAT (Central Area Terminal SpA), la nuova società alla quale il CAP vuole affidare in concessione la costruzione e la gestione del porto di Civitavecchia, concessione bloccata dalle proteste dei cittadini per gravi irregolarità riscontrate anche dalla Commissione antimafia;

nonostante le reiterate proteste e interrogazioni sulla discarica abusiva che sono state sollevate da tempo anche con esposti alla magistratura, solo la scorsa settimana l'autorità sanitaria del porto di Civitavecchia ha rilevato con chiarezza le irregolarità e ha denunciato il Presidente del CAP e i responsabili delle ditte appaltanti chiedendo il sequestro dell'area in questione –:

se il Ministro della marina mercantile fosse o sia a conoscenza di quanto sopra e quali sono gli atti espletati, o che intenda espletare nei confronti del CAP e dei suoi amministratori viste le sue competenze di vigilanza e di controllo sulle autorità portuali e sulle aree demaniali;

se il Ministro di grazia e giustizia sia a conoscenza dei motivi che hanno impedito al procuratore di Civitavecchia di intervenire nonostante gli esposti e se sia a conoscenza delle eventuali e doverose iniziative intraprese adesso che c'è una decisione dell'autorità sanitaria del porto;

se il Ministro di grazia e giustizia non ritenga inoltre di segnalare il caso al Consiglio superiore della magistratura per quanto di sua competenza. (4-12969)

TRABACCHINI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri, al Ministro della marina mercantile.* — Per sapere – premesso che:

la realizzazione del nuovo porto di Civitavecchia rappresenta un obiettivo essenziale per lo sviluppo economico dell'Alto Lazio e del Paese così come richiesto dai sindacati, dai lavoratori e dalle forze economiche e politiche in numerose iniziative;

è intenzione del CAP (Consorzio autonomo porto di Civitavecchia) affidare in concessione la realizzazione e la gestione del nuovo porto alla società CAT (Central Area Terminal) di cui fanno parte diverse imprese coinvolte nelle vicende delle tangenti e in vicende di mafia;

dopo ampio e approfondito dibattito il consiglio comunale e il sindaco di Civitavecchia hanno ritenuto opportuno interessare la Commissione Parlamentare Antimafia in merito alla realizzazione del nuovo porto;

dall'indagine prodotta dalla Commissione Antimafia sono emersi « molteplici e gravi profili di irregolarità amministrative » nelle procedure adottate per l'affidamento della concessione demaniale all'impresa CAT da parte dei dirigenti e degli amministratori del CAP –:

se il ministro della marina mercantile non ritenga di dover intervenire immediatamente per l'annullamento della concessione demaniale alla CAT e per fare in modo che il nuovo porto venga realizzato con le procedure europee dell'appalto pubblico e nella massima trasparenza;

se il Presidente del Consiglio, anche in ragione della grave situazione occupazionale che si va creando nel polo energetico di Civitavecchia-Montalto di Castro, non intenda adoperarsi urgentemente per reperire adeguate risorse finanziarie per la realizzazione del nuovo porto di Civitavecchia;

se non ritengano di accertare definitivamente il reale interessamento e l'auspicabile coinvolgimento alla realizzazione del nuovo porto di tutte le maggiori utenze dello scalo di Civitavecchia che sono l'ENEL, le F.S., la TIRRENIA, l'AGIP-PETROLI. (4-12970)

BERNI. — *Ai Ministri della sanità e dell'agricoltura e foreste.* — Per sapere – premesso che:

in relazione ai provvedimenti conseguenti all'epidemia di Afta epizootica con l'ordinanza del Ministro della Sanità del 29 marzo 1993 l'articolo 2 dispone la possibilità di commercializzazione delle carni fresche ad esclusione delle province indicate nello stesso provvedimento;

all'articolo 11 comma 2, altresì la stessa ordinanza dispone per le regioni che avevano adottato provvedimenti propri, di adeguarsi alla ordinanza stessa –:

visto che la regione Sardegna non ha provveduto ad adeguarsi al disposto, quali immediati ed urgenti iniziative di competenza intendano adottare i Ministeri della sanità e dell'agricoltura e foreste per ovviare a questa grave situazione. (4-12971)

APUZZO e PECORARO SCANIO. — *Ai Ministri della sanità e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso che:

è in vigore il decreto-legge 27 gennaio 1992, n. 116, concernente « Attuazione della direttiva n. 86/609/CEE in materia di protezione degli animali utilizzati a fini sperimentali o ad altri fini scientifici »;

sul giornale *Il Mattino* del giorno 19 dicembre 1992 è apparso un articolo in si parla di un corso di microchirurgia sperimentale a scopo didattico, organizzato dal laboratorio di farmacologia sperimentale del presidio multizonale e della XXV divisione di neurochirurgia dell'ospedale Cardarelli (USL 40 di Napoli), diretto dal professore Antonio Ambrosio;

tale corso consiste in trenta ore di esperimenti di microchirurgia su cavie vive;

da un articolo de *Il Mattino* del 9 aprile 1992 riferendosi sempre al corso suddetto, si evince che, nell'ambito dello stesso, ventiquattro medici avrebbero ope-

rato per tre giorni le cavie con interventi al sistema vascolare e nervoso –:

se tale iniziativa risulti essere in regola con il dettato del decreto-legge n. 116 del 1992, ed in particolare quanto previsto:

dall'articolo 2;

dall'articolo 4, comma 1 (se, per ottenere il risultato ricercato, non fosse possibile utilizzare altro metodo scientificamente valido, ragionevolmente e praticamente applicabile, che non implicasse l'impiego di animali); comma 2 (se sia stata documentata all'autorità sanitaria competente la necessità del ricorso ad una specie determinata e al tipo di esperimento, e se siano stati preferiti gli esperimenti che: 1) richiedano il minor numero di animali; 2) implichino l'impiego di animali con il più basso sviluppo neurologico; 3) causino meno dolore, sofferenza, angoscia o danni durevoli; 4) offrano maggiori probabilità di risultati soddisfacenti); comma 3 (se tutti gli esperimenti siano stati effettuati sotto anestesia generale o locale); comma 4 (se ciascun animale non sia stato utilizzato più di una volta per ciascun esperimento); comma 5;

dall'articolo 6 (concernente le procedure previste per gli esperimenti);

dall'articolo 7, comma 1 (ovvero se sia stata data comunicazione di tali esperimenti al Ministero della sanità secondo le modalità previste, e se sia stata inviata copia della comunicazione anche alla regione, alla prefettura, al comune ed alla unità sanitaria locale competente per territorio);

dall'articolo 8, comma 3 (se il Ministro della sanità, in deroga all'articolo 3, comma 1, abbia autorizzato tali esperimenti, i quali sembravano essere a semplice scopo didattico, in quanto inderogabili e necessari, ed insostituibili con altri sistemi dimostrativi);

dall'articolo 9, comma 3 (« Ogni esperimento, che comporta o rischia di comportare gravi lesioni o un forte dolore che potrebbe protrarsi, deve essere specificamente dichiarato per l'autorizzazione del Ministro della sanità, che la concede alle condizioni di cui al comma 1 e solo in caso di eccezionale importanza dell'esperimento »);

l'articolo 16 della predetta legge;

se gli animali utilizzati per gli esperimenti rientrassero tre le specie di cui all'allegato I del decreto-legge n. 116 del 1992;

quali provvedimenti, in caso di inadempienza rispetto alla legge, intendano adottare rispetto a tale situazione;

se non ritengano, nel caso particolare ed in generale, preferire metodi non violenti alla sperimentazione sugli animali, frutto di una concezione scientifica e meccanicistica della medicina. (4-12972)

CRIPPA e RONCHI. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

in occasione delle festività pasquali è stata concessa una licenza di 5 giorni ai giovani che svolgevano servizio di leva, sia militare che civile;

il Tenente Colonnello Patruno, del distretto militare di Treviso, comunicava telefonicamente, dietro apposita domanda fatta dal responsabile dell'ente convenzionato « comune di Conegliano » tale decisione adottata dall'amministrazione della difesa;

il Tenente Colonnello Patruno affermava inoltre che ai giovani in servizio civile cui fosse stata concessa la licenza per festività pasquali non dovevano essere concessi i cosiddetti « giorni di viaggio » per recarsi presso il proprio domicilio, a meno che esso non si trovasse fuori dalla regione Veneto;

il « manuale di procedura per l'istruttoria delle domande di riconoscimento dell'obiezione di coscienza e la gestione del servizio civile » (prot. Lev. I/3 U.D.G. del dicembre 1990), al punto 12.2 "tipi di licenza" riporta alla voce 4.c, licenza spe-

ciale per ferie natalizie e pasquali, che tale tipo di licenza consiste in « giorni 5 più il viaggio »;

il medesimo manuale, al punto 12.3 recante « computo dei giorni di viaggio per licenze » recita che « i giorni di viaggio, quando previsti, debbono essere sempre concessi », stabilendo in un'apposita tabella una stretta relazione tra « giorni di viaggio » da concedere ed « ore di viaggio per andata e ritorno nel territorio nazionale », e non tra luogo di servizio e luogo di residenza;

il tenente colonnello Patruno ha quindi fatto affermazioni non rispondenti al vero, rifiutandosi inoltre di rilasciare qualsiasi dichiarazione scritta in proposito e non esibendo alcun documento amministrativo che appoggiasse le sue decisioni, nonostante le richieste in proposito avanzate dai diretti interessati, sia responsabili di ente che obiettori in servizio civile;

si rammenta a tale proposito che la legge n. 241 del 1990, sancisce il diritto di ogni cittadino ad accedere a documenti amministrativi che lo interessino direttamente. Il fatto che il tenente colonnello Patruno non abbia esibito documenti che comprovassero le sue affermazioni, sebbene ciò gli fosse stato esplicitamente richiesto, si configura come una violazione della legge suddetta –:

quali provvedimenti intenda prendere nei confronti del tenente colonnello Patruno;

se non ritenga che il suo operato abbia leso i diritti di cittadini che stanno difendendo il paese e che il suo rifiuto di esibire documentazione attestante la legittimità del suo operato non si configuri oggettivamente come "omissione di atti d'ufficio". (4-12973)

CRIPPA. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

il signor Eugenio Merico, nato ad Alessandria il 16 maggio 1967, e residente ad Acqui Terme, è stato riconosciuto obiettore il 31 luglio 1992, (prot. Leva n. 92808159) e distaccato in servizio civile presso il comune di Santhià (VC) il 23 marzo 1993;

il 25 marzo 1993, il signor Merico ha inviato al distretto militare di Vercelli richiesta, corredata della documentazione del caso, per essere trasferito presso un ente convenzionato situato nel proprio comune di residenza, dato che si trova ad essere figlio unico di madre divorziata;

il « manuale di procedura per l'istruttoria delle domande di riconoscimento dell'obiezione di coscienza e la gestione del servizio civile » del dicembre 1990, al punto 8.2. indica il caso di « figlio unico di madre.....divorziata » come una delle situazioni meritevoli di essere prese in considerazione per eventuali trasferimenti ad enti di servizio civile situati nel comune di residenza;

vi è inoltre da sottolineare come nei primi giorni di giugno si congederà l'obiettore in servizio civile presso la sezione di Acqui Terme di Italia Nostra –:

se non ritenga opportuno concedere il trasferimento richiesto dal signor Eugenio Merico, visti i gravi turbamenti al nucleo familiare che sono stati apportati con il suo distacco in servizio civile presso un ente eccessivamente distante dalla propria residenza. (4-12974)

MARCUCCI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, di grazia e giustizia, dell'ambiente e delle finanze.* — Per sapere – premesso che:

l'ENPA (Ente Nazionale Protezione Animali), che è la più antica e prestigiosa associazione protezionistica d'Italia per gli animali, in seguito alla sua trasformazione con il decreto del Presidente della Repubblica 31 marzo 1979, da ente di diritto pubblico a ente di diritto privato, si è venuta a trovare in gravissime difficoltà, essendo venuto meno anche il contributo dello Stato ed ogni controllo da parte del Ministero dell'interno;

l'ENPA stesso ha subito negli anni un immeritato e crescente decadimento come più volte denunciato in numerose interrogazioni parlamentari;

l'iniquo decreto del Presidente della Repubblica del 1979 ha anche evidenziato la totale latitanza di comuni e comunità montane nei riguardi degli obblighi imposti loro relativamente alla protezione degli animali e alla difesa del patrimonio zootecnico;

si è venuta a creare una inaccettabile situazione, nella gestione amministrativa dell'istituto, per cui chi è stato investito di responsabilità ha agito senza scrupoli, al fine di tutelare meri interessi personali anziché esprimere il dovuto rispetto per le istituzioni nonché per il patrimonio ambientale, portando l'ente al suo livello più basso e creando una grave situazione a danno degli animali –:

se il Governo intenda promuovere al più presto un'indagine amministrativa e fiscale allo scopo di denunciare ogni illecito;

se il Governo stesso intenda riqualificare come merita l'istituto dell'ENPA abrogando il decreto del Presidente della Repubblica 31 marzo 1979, che di fatto ha portato allo sbando l'ente;

se il Ministro dell'interno intenda doverosamente nominare con la massima urgenza un commissario straordinario alla sede centrale dell'ENPA per riportare legalità e trasparenza alla prestigiosa istituzione, vagliando minuziosamente anche eventuali responsabilità penali. (4-12975)

CALDEROLI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il Movimento Lega Nord in data 8 aprile 1993 ha sottoposto formale richiesta al Sindaco del comune di Gorle (BG) per l'utilizzo della sala auditorium presso il centro culturale in occasione di un incontro pubblico su tema politico indetto per il giorno 14 maggio 1993;

al suddetto incontro avrebbero dovuto partecipare due rappresentanti di questo Parlamento;

in passato la sala era già stata utilizzata per incontri pubblici organizzati dalla Democrazia cristiana;

il Sindaco, signor Papetti, eletto nelle liste dalla Democrazia cristiana o la Giunta comunale hanno negato l'utilizzo dalla sala di cui sopra;

sempre nella provincia di Bergamo, il Sindaco di Chignolo d'Isola ha negato l'utilizzo della Palestra comunale per una tavola rotonda di tematica referendaria alla quale avrebbero dovuto partecipare esponenti di varie forze politiche –:

non ritenendo l'interrogante fondate le motivazioni addotte dai rispettivi Sindaci:

se gli episodi riferiti in premessa corrispondano a verità;

in caso affermativo, se non valuti estremamente discriminatorio e antidemocratico il comportamento del Sindaco di Gorle;

se non consideri censurabile l'atteggiamento d'indisponibilità dimostrato dal Sindaco di Chignolo d'Isola che ha impedito il dibattito politico e la necessaria informazione del cittadino in relazione ai quesiti referendari;

se non si ritenga opportuno dare informazione al signor Prefetto di Bergamo degli episodi riportati;

quali misure intenda adottare per impedire il ripetersi di episodi che rischiano di ostacolare la nascita della tanto auspicata seconda Repubblica. (4-12976)

APUZZO e PECORARO SCANIO. — *Ai Ministri dell'interno, dell'agricoltura e foreste e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

nella settimana di Pasqua 1993 un gruppo di ambientalisti, accompagnati dall'onorevole Stefano Apuzzo, si è recato

nelle isole di Ischia, Ventotene, Procida e Ponza per verificare la consistenza del fenomeno del bracconaggio, operato tutto l'anno con trappole illegali per uccelli ed a maggio con armi da fuoco;

nelle isole, ed in particolare ad Ischia (NA) e Ponza (LT), veniva constatata la preoccupante diffusione del bracconaggio con piccole trappole illegali. Ad Ischia gli ambientalisti e l'onorevole Apuzzo ottenevano dalle Forze di polizia del locale commissariato e dai carabinieri collaborazione ed efficacia operativa totale nella identificazione e nel sequestro di strumenti abusivi, e uccelli protetti, trovati ovunque e in gran quantità, in località Barano d'Ischia in sole due ore di ispezioni venivano raccolte e sequestrate decine di trappole, molte contenenti uccelli morti, 6 uccelli morti protetti, consegnati da una signora, identificate 3 persone proprietarie dei terreni e delle trappole;

le campagne, i terreni e gli orti privati delle isole in oggetto sono disseminati di trappole illegali le quali si acquistano in tutta facilità presso negozi, in particolare di ferramenta;

ad Ischia sono stati effettuati in alcuni negozi sequestri delle trappole illegali. Dette trappole vengono ufficialmente vendute per catturare i topi ma la loro conformazione e tecnica di funzionamento sono inadatte per i roditori e studiate appositamente per i piccoli uccelli;

nell'isola di Ischia esiste un forte fenomeno di abusivismo edilizio e di scarichi abusivi in mare che impegna cospicue energie a carabinieri e polizia, non consentendo una metodica e meticolosa ricerca e sequestro delle trappole e della repressione del bracconaggio –:

quali provvedimenti di supporto, rafforzamento ed incentivo intendano i Ministri mettere in opera al fine di reprimere e prevenire il fenomeno del bracconaggio nelle isole in oggetto;

se non si ritenga di dover sequestrare negli esercizi di vendita tutte le trappole del modello usato dai bracconieri per la cattura di uccelli o che presentino le caratteristiche di trappole illegali per uccelli;

se non si ritenga di dover rinforzare il nucleo campano della Guardia forestale al fine di adibire energie e risorse unicamente per la lotta al bracconaggio nelle isole, in particolare nel mese di maggio, quando, al passo dei migratori, cacciatori e bracconieri sparano ovunque a qualsiasi cosa si muova in periodo di caccia chiusa;

se non si ritenga di dover provvedere ad ordinare ed autorizzare l'abbattimento delle strutture fisse (capanni ed appostamenti), utilizzate per un tipo di caccia non consentito dalla legge. (4-12977)

FILIPPINI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

con deliberazione 4145 del 5 ottobre 1982, il Consiglio comunale di Roma ha adottato, in esecuzione dell'articolo 2, punto 7, delle N.T.A. del P.R.G. il piano particolareggiato del comprensorio dell'Acqua Traversa;

la suddetta deliberazione veniva annullata nel 1985 dal TAR del Lazio con decisioni n. 87/85 e 88/85;

avverso tali decisioni, l'Amministrazione comunale di Roma proponeva ricorso al Consiglio di Stato;

stando a quanto riportato in altro ricorso (avverso a concessione edilizia alla società CERES), patrocinato per il comune di Roma dall'avvocato Martis il 28 gennaio 1993 le decisioni del TAR del Lazio nn. 87 e 88 del 21 gennaio 1985 « gravate da appello al Consiglio di Stato, discusso nell'udienza del 14.2.92 davanti alla IV Sezione », sarebbero state annullate, visto che, come ha riportato la stampa, e lo stesso avvocato Martis conferma, « l'appello parrebbe essere stato accolto »;

l'accoglimento delle istanze del comune di Roma contro le suddette decisioni del TAR del Lazio, implicherebbe di fatto il verificarsi della reviviscenza del Piano

Particolareggiato del 1982, dal momento che anche la delibera di adozione da parte del Consiglio comunale di Roma del 2 marzo 1992 n. 83 della variante del P.R.G. per la salvaguardia del comprensorio dell'Acqua Traversa prevede che « sono comunque fatti salvi gli effetti dell'appello proposto dal comune di Roma alla sentenza del TAR del Lazio nn. 87/85 e 88/85 di annullamento della deliberazione del Consiglio comunale n. 4145/82, di adozione del Piano particolareggiato dell'Acqua Traversa;

la reviviscenza del Piano particolareggiato del 1982 permetterebbe di fare giustizia degli scempi ambientali avvenuti nel comprensorio mediante la massiccia e scriteriata edificazione dal 1985 a oggi; consentirebbe al comune di Roma di adottare le misure necessarie nei confronti dei titolari di concessioni edilizie illegittime e di vincere tutte le cause pendenti davanti al giudice amministrativo avverso i titolari di concessioni edilizie che non potevano essere rilasciate in vigenza del Piano particolareggiato sopra citato; permetterebbe infine, di impedire il rilascio di nuove concessioni edilizie nel comprensorio, nonostante gli abitanti insediati o insediabili ai sensi del D.I. 1444/68 risultino, in base ai rilevamenti aerofotogrammetrici, superiori alle 29.000 unità a fronte di una previsione nel P.R.G. di 12.300. Con la conferma di tale notizia inoltre, potrebbe essere salvato il bosco mediterraneo di sughere che ricopre interamente il lotto della società « La Faggeta » (pari a mq. 2236), sito in via della Mendola, su cui in data 1° aprile 1993 è iniziato il deposito di materiali in vista dell'apertura del cantiere edile, in una zona nella quale il Piano Particolareggiato del 1982 prevede la destinazione a « zona N », cioè per verde pubblico –:

se corrisponda a verità la notizia secondo cui, a un anno di distanza, non è stata ancora depositata la sentenza della IV Sezione del Consiglio di Stato che riesumerebbe il Piano Particolareggiato 4145/82 per l'Acqua Traversa annullando così le decisioni del TAR del Lazio 87/85 e 88/85. E, in caso affermativo, quali siano i motivi di un così grave ritardo nel depositare la suddetta sentenza e, comunque, quali iniziative si intendano assumere per sollecitarne il deposito e individuare eventuali responsabili della mancata pubblicazione della sentenza medesima. (4-12978)

ELIO VITO. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso:

che lunedì 5 aprile nell'aula Francesco De Sanctis della Facoltà di Giurisprudenza dell'Università di Napoli, in occasione delle prossime elezioni universitarie, si sarebbe dovuto svolgere un dibattito per la presentazione del programma della lista Sinistra Universitaria sul tema – ripreso dal titolo di un famoso opuscolo di Benedetto Croce – « La disonestà nella vita universitaria italiana »;

che l'uso dell'aula De Sanctis è stato inspiegabilmente vietato, non si comprende bene se dal Preside della Facoltà di Giurisprudenza o dal Rettore dell'Università o da entrambi – dopo che inizialmente era stata concessa regolare autorizzazione –:

1) se risulti per quali ragioni e da chi sia stata vietata l'aula per la presentazione del programma di una lista alle elezioni universitarie e se non ritenga gravissima questa decisione;

2) se l'aula sia stata negata in relazione al tema del dibattito ed all'annunciata intenzione di discutere delle responsabilità dell'Università nella crisi culturale e sociale del nostro Paese, in un momento in cui dilaga la corruzione nella vita pubblica e privata;

3) quali urgenti provvedimenti intenda adottare in merito all'episodio in premessa e per garantire lo svolgimento del più ampio dibattito culturale nell'Università di Napoli anche in occasione delle prossime elezioni. (4-12979)

ELIO VITO, BONINO, CICCIOMESSERE, PANNELLA, TARADASH e RAPAGNÀ. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere:

1) se corrisponda al vero che da diversi mesi in gran parte dei comuni della Calabria, come pubblicamente denunciato dalle associazioni sindacali di categoria, il personale non percepisce stipendi e che a questo si è aggiunta la decisione, da parte del Ministero dell'interno, di ridurre le spese elettorali per i prossimi referendum, dopo che quasi tutte le incombenze era state compiute da parte dei dipendenti;

2) se corrisponda al vero che la riduzione dei rimborsi delle spese elettorali referendarie consentirà al massimo di coprire le spese per i componenti dei seggi e per gli stampati;

3) se corrisponda al vero che, in seguito a questa decisione, si sarebbe manifestata la volontà da parte di alcuni messi comunali di non consegnare più i certificati elettorali visto che non saranno più pagati per il loro lavoro;

4) cosa si intenda fare per garantire quanto dovuto ai lavoratori in questione e per far sì che vi sia un regolare svolgimento delle votazioni sui referendum in Calabria visto il pericolo che molti cittadini non si vedano consegnati i certificati elettorali. (4-12980)

GASPARRI. — *Ai Ministri dell'interno e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che il giorno 7 aprile 1993 un dipendente della ditta Miles, che cura le pulizie degli stabili di Largo Anzani, dove ha sede uno dei centri operativi della Banca di Roma, ha riportato traumi e fratture a causa del cedimento della scala esterna antincendio di suddetti stabili;

che il grave fatto, per il quale i vigili del fuoco e la Polizia di Stato hanno redatto apposito verbale, denota preoccupanti carenze nelle strutture di sicurezza, poiché la scala antincendio è crollata sotto il « peso » di una unica persona, lasciando immaginare conseguenze ancora più gravi nel deprecabile caso di evacuazione degli stabili, dove operano 800 lavoratori, per situazioni di emergenza;

che si rileva una scarsissima cura da parte della Banca di Roma per i problemi della sicurezza delle proprie sedi, con conseguenti pericoli per i dipendenti della banca stessa, che tale situazione è aggravata dalla presenza nella sede di Largo Anzani di dipendenti portatori di *handicap* non deambulanti;

che al momento la scala antincendio esterna è inutilizzabile, rendendo di fatto inagibili i locali della banca a causa della mancanza di strutture di emergenza;

che le organizzazioni sindacali si sono rivolte all'ispettorato del lavoro di Roma, ai vigili del fuoco e alla USL RM16 per gli interventi urgenti da adottare –:

quali valutazioni si esprimano sull'accaduto e quali controlli si intendano disporre sia sugli stabili di Largo Anzani sia di tutti gli altri dove hanno sede le varie unità produttive della Banca di Roma;

quali responsabilità, anche penali, si possano ravvisare nel comportamento della banca che non ha fatto tutto quanto era in suo dovere affinché l'edificio nel quale si è verificato il grave fatto, fosse dotato di adeguate strutture di sicurezza. (4-12981)

GASPARRI. — *Ai Ministri dei lavori pubblici, dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

il Consiglio di Stato nella sua decisione in merito alle vicende della discarica di Pomezia, resa nota in data 16 febbraio 1993, afferma tra l'altro che « i lavori di realizzazione della discarica sono stati completati », utilizzando tale motivazione per respingere l'appello avverso le ordinanze del TAR che sospendevano la delibera n. 80 1992 del comune di Pomezia hanno presentato un esposto denuncia alla locale stazione dei carabinieri, nella quale

si afferma, con dovizia di particolari, che nella stessa giornata del 20 marzo presso la costruenda discarica sita in Pomezia località Cerqueto di Santa Palomba erano in corso dei lavori, in particolare per la messa in opera dei teli di polietilene nel lato sud-ovest dell'invaso;

tale esposto è stato supportato da documentazione fotografica;

la evidente prosecuzione dei lavori contrasta palesemente con le affermazioni della società Cavedil alla regione Lazio in merito alla conclusione dei lavori stessi;

la denuncia dei cittadini smentisce le affermazioni contenute nella precedente decisione del Consiglio di Stato, le cui valutazioni potrebbero essere state condizionate da un'informazione inesatta circa l'andamento dei lavori della discarica –:

se risulti chi abbia fornito informazioni errate al Consiglio di Stato;

quali verifiche urgenti si intendano effettuare sul comportamento della ditta Cavedil che ha affermato il falso, e cioè che i lavori erano terminati;

quali valutazioni si esprimano sul fatto che non sia stato svolto un approfondito studio sul territorio destinato ad accogliere la discarica, palesemente inadeguato, facendo tra l'altro sì che le scelte della ditta Cavedil si trasformassero in un vero e proprio *diktat* ai danni dei cittadini che hanno contestato la indicazione dei siti fornendo argomenti consistenti a sostegno della loro protesta. (4-12982)

GASPARRI. — *Ai Ministri della sanità, del lavoro e previdenza sociale e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per sapere – premesso:

che la FIDIA è una delle più prestigiose aziende farmaceutiche italiane nonché punto cardine per il settore della ricerca di base benché alla sua guida si siano avvicendati personaggi spesso privi di capacità gestionali, alcuni dei quali coinvolti anche in inquietanti vicende;

che circa l'80 per cento del fatturato dell'azienda è stato realizzato con farmaci a base di gangliosidi, una sostanza naturale presente nell'organismo ottenuto dal cervello bovino;

che alcuni anni addietro, in Germania, quando la FIDIA cercava di entrare in quel mercato, si sono verificati attacchi, finanziati dalle ditte tedesche, contro i gangliosidi, accusati di provocare pericolosi effetti collaterali;

che nel mese di marzo il ministro Costa, da poco insediato al dicastero della sanità, ha firmato un decreto col quale venivano messi al bando tutti i prodotti terapeutici a base di gangliosidi, sposando così la « tesi tedesca » della loro pericolosità, sebbene tali farmaci siano in commercio in Italia da più di venti anni senza che siano mai stati notati effetti collaterali ad essi riconducibili;

che, a seguito delle numerose critiche provenienti dal mondo scientifico italiano e straniero ed alle rimostranze dell'azienda, il ministro ha deciso di revocare il decreto;

che tale ridda di decisioni contrastanti ha apportato notevoli danni all'immagine della FIDIA ed alla sua solidità economica già compromessa dai numerosi errori di gestione, cosicché la direzione dell'azienda, sfruttando la drastica caduta del fatturato, ha deciso di estromettere dal ciclo produttivo quasi la metà dei lavoratori (circa 590) collocandoli forzatamente in cassa integrazione e chiudendo completamente i laboratori di ricerca di Abano Terme;

che attualmente esiste il pericolo reale della vendita della FIDIA a qualche multinazionale del farmaco –:

per quali reali motivi il decreto ministeriale sia stato emanato e successivamente revocato;

quale ruolo abbia svolto il professor Poggiolini nella vicenda del decreto anti FIDIA;

quali misure occupazionali si intendano assumere a tutela dei lavoratori dell'azienda, penalizzati dallo sconsiderato comportamento gestionale dei dirigenti della FIDIA;

quali valutazioni esprimano sulla colonizzazione del settore farmaceutico italiano. (4-12983)

GASPARRI. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso:

che presso l'università di Viterbo è in corso da tempo una vera e propria campagna di diffamazione nei confronti di un funzionario dell'ateneo, con l'attiva partecipazione di un gruppo di studenti, supportati da esponenti del Pds e della Rete;

che tale campagna si basa sull'accusa di utilizzzo illegittimo di materiali di proprietà dell'università, in particolare alcune tettoie;

che l'autorità giudiziaria ha esperito i necessari controlli ed ha constatato che le tettoie installate presso l'abitazione del predetto dirigente dell'università sono cosa del tutto diversa da quelle oggetto della denuncia degli studenti;

che la vicenda ha avuto eco sui giornali anche per le conferenze stampa tenute dal consigliere regionale Daga e dall'avvocato Palermo;

che nonostante la perizia dell'autorità giudiziaria che ha smentito con chiarezza ogni ipotesi circa uso illegittimo o appropriazione di materiale dell'ateneo da parte del dirigente vittima di attacchi calunniosi e denigratori;

che lo stesso dirigente ha sporto querela per diffamazione e calunnia a tutela della propria onorabilità;

che la vicenda ha turbato la vita dell'ateneo, sia per le continue polemiche da parte di sedicenti comitati studenteschi, sia per le interferenze politiche esterne –:

quali valutazioni si esprimano sui fatti esposti;

quali iniziative si intendano assumere affinché l'università di Viterbo non sia più turbata nelle sue attività da autentiche campagne di provocazione e di diffamazione, che hanno colpito un dirigente stimato e apprezzato e noto per onestà e professionalità. (4-12984)

MACERATINI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che il centro storico del comune di Fondi ha raggiunto un pericoloso livello di degrado;

che infatti le strade appaiono colme di cartacce con un sottobosco di erbe di ogni specie, i giardinetti comunali sono in completo abbandono, i cassonetti per la raccolta di immondizia stracolmi e maleodoranti, con la conseguenza che i commercianti che operano nel centro storico di Fondi sono costretti a sostituirsi agli spazzini, nonostante la tassa dei rifiuti solidi urbani, che ammonta a ben lire 2.500 al metro quadrato e che costituisce una autentica beffa, posto che il servizio è in realtà effettuato da coloro che lo pagano;

che si moltiplicano durante la notte gli atti vandalici contro le vetrine dei negozi, i giornali murali dei partiti, i pneumatici delle vetture sistematicamente trinciati;

che a ciò si aggiunge lo spaccio di sostanze stupefacenti che ormai viene effettuato liberamente nelle strade del centro cittadino –:

quali urgenti provvedimenti il Governo intenda assumere, anche mediante opportune sollecitazioni delle autorità locali, perché si possa stabilire un miglior servizio di prevenzione e di repressione da parte delle forze dell'ordine sia nel centro di Fondi sia sul Lido di Fondi dove la criminalità camorristica sta mettendo in pericolo gli assetti sociali ed economici della zona e quali altri provvedimenti il Governo intenda assumere per restituire

ordine, sicurezza e serenità ad una città, come Fondi, che vive in termini drammatici il degrado civile della sua condizione. (4-12985)

TARADASH, BONINO, CICCIOMESSERE, PANNELLA, RAPAGNÀ e ELIO VITO. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

tre studenti maggiorenni del Liceo Scientifico di Dolo « G. Galilei » sorpresi durante l'annuale gita scolastica, chiusi nella loro stanza d'albergo, in possesso di hascish, furono denunciati dal Preside e carcerati;

dopo il rilascio gli stessi furono « cautelativamente » sospesi in attesa della delibera degli organi collegiali della scuola che ha sentenziato l'esclusione a priori per i tre dalla promozione a giugno, rimandandoli in tutte le materie a settembre –:

se non si ritenga inopportuna e persecutoria la sanzione disciplinare decisa dagli organi collegiali nei confronti dei tre studenti, che, per avere fumato alcuni spinelli, si sono già visti trattare come pericolosi criminali e che ora rischiano di non poter terminare serenamente l'anno scolastico. (4-12986)

TORCHIO. — *Al Ministro dell'agricoltura e foreste.* — Per sapere – premesso che:

l'agricoltore Ugo Dall'Aglio nato a Curtatone (MN) il 25 settembre 1961 ha presentato in data 1° gennaio 1990 – protocollo numero 2636 del 16 febbraio 1990 – domanda di premio insediamento giovani agricoltori (Regolamento CEE n. 797);

tale domanda era riferita al fondo di HA 32 destinato a grandi coltivazioni, posto in via Morante 20, Curtatone (MN), per ULM 1,5 somma prevista di lire 13.210.675 –:

quali motivazioni ostino, a distanza di oltre tre anni, alla liquidazione della prevista indennità. (4-12987)

TORCHIO. — *Al Ministro dell'agricoltura e foreste.* — Per sapere – premesso che:

in data 23 giugno 1986 il servizio provinciale agricoltura e foreste ed alimentazioni di Mantova, organo periferico dell'assessorato all'agricoltura della regione Lombardia, ha presentato l'elenco delle indennità per l'estirpazione vigneti per la campagna 1984-1985, Regolamento CEE 456/80 e n. 2313/80 della Commissione, in tale elenco era compresa la posizione dei signori Dall'Aglio Telesforo e Maria, nati a Curtatone (MN) rispettivamente il 22 novembre 1922 e il 20 novembre 1923, residenti sempre in comune di Curtatone (MN) alla Strada Morante, 24 - HA 0.75.00 per un premio di 1379,75 ECU, pari a lire 1.947.162;

a distanza di sette anni da tale data non è stato ancora possibile percepire detto premio –:

quali siano le motivazioni di tale ritardo e se non ritenga di impartire le opportune istruzioni affinché la questione sia finalmente definita. (4-12988)

BORGHEZIO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

dal 14 al 16 aprile gli avvocati torinesi hanno proclamato l'astensione dall'attività giudiziaria per protestare sia contro la collocazione degli uffici dell'Ordine e annessa biblioteca in locali sotterranei nel nuovo Palazzo di Giustizia sia contro l'assurda scelta di allocare gli uffici del Giudice di Pace in altra sede lontana e periferica;

risulta incomprensibile la mancata previsione, in sede di progettazione del nuovo edificio, delle esigenze che, di fatto, sarebbero state determinate dalla ben prevedibile istituzione del Giudice di Pace;

appaiono invece estremamente fondate le ragioni espresse dall'ordine forense torinese che propone alternativamente o la soluzione di un'elevazione del costruendo Palazzo di Giustizia o l'utilizzazione di

un'ampia costruzione attigua, al fine di evitare prevedibili intralci e lungaggini per i trasferimenti dall'una all'altra sede giudiziaria, con costi che andrebbero a gravare sugli utenti –:

quali urgenti iniziative intendano assumere per dare finalmente adeguata e puntuale risposta alle richieste da lungo tempo formulate dall'Ordine Avvocati e Procuratori di Torino e dalle varie associazioni forensi subalpine per una adeguata e dignitosa collocazione degli uffici, aule e biblioteca forensi nel nuovo Palazzo di Giustizia e per una collocazione degli uffici del Giudice di Pace che non penalizzi avvocati e utenti, costringendoli a spostamenti chilometrici. (4-12989)

MATTEJA. — *Al Ministro delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

l'Ufficio Tecnico Erariale (UTE) di Torino è sempre stato un classico esempio di disservizio pubblico, dove l'espletamento di qualunque pratica, anche la più semplice, richiedeva parecchi giorni;

la recente informatizzazione del servizio non ha portato ad alcun miglioramento. Infatti, per ottenere uno stesso documento, all'UTE di Torino occorrono almeno 20 giorni, a Milano lo si ottiene immediatamente, a Vercelli entro 30 minuti;

l'UTE di Torino assorbe mediamente solo 15 pratiche di accatastamento al giorno, quando sarebbe necessario esplicarne 60 per rendere accettabile il servizio;

qualunque utente, privato o professionista che sia, è costretto a lunghe ed interminabili code nel cortile dello stabile, code che iniziano spesso prima dell'alba. L'accesso agli uffici è poi regolato da un impiegato a sua discrezione, indipendentemente dalla disponibilità o meno di certi sportelli o funzionari;

ripetuti richiami e suggerimenti al fine di migliorare il servizio alla diregenza dell'UTE di Torino da parte di categorie di professionisti sono rimasti inascoltati;

al cittadino è richiesto di ottemperare alle vigenti leggi: pertanto è indispensabile che questi uffici siano a disposizione dei cittadini e categorie di professionisti, facilitandoli in tutto e per tutto, anziché difendere ad oltranza sistemi arcaici e borbonici che vanno a scapito di tutti;

la causa del disservizio dell'UTE di Torino sia da attribuirsi all'incapacità gestionale della direzione stessa, come asserito unanimemente da tutti i professionisti che frequentano l'ambiente –:

quali provvedimenti intenda adottare e in che tempi prevedibili per rimuovere gli ostacoli che mantengono l'inefficienza dell'UTE di Torino, considerando tra l'altro che questa situazione sta anche frenando le attività edilizie, cosa inaccettabile in una zona dal tasso di disoccupazione tra i più alti d'Italia. (4-12990)

PROVERA. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per conoscere – premesso che:

la legge n. 102 del 2 maggio 1990 denominata « Legge Valtellina » all'articolo 5 disciplina gli obiettivi generali per quanto riguarda la ricostruzione e lo sviluppo socio-economico, individuando tra le tematiche prioritarie l'integrazione e l'ammodernamento del sistema ferroviario e sollecitando una particolare attenzione alla potenzialità di tale mezzo di trasporto;

nel Piano di Ricostruzione e Sviluppo della Valtellina, steso dal consiglio regionale con deliberazione n. 508 del 19 marzo 1992, viene definito uno schema d'intervento articolato sulle linee ferroviarie Lecco-Colico-Sondrio che prevede l'ammodernamento, la riqualificazione e il potenziamento delle tratte Colico-Sondrio e Colico-Chiavenna, nonché la realizzazione di un'area per l'interscambio delle merci con magazzini generali sulla tratta Colico-Tirano –:

quali siano gli intendimenti delle Ferrovie dello Stato per dare attuazione a tali indicazioni di programmazione e quali siano i programmi dell'ente, visti gli stan-

ziamenti previsti in tale senso dalla deliberazione del consiglio regionale della Lombardia sopra citato. (4-12991)

CRUCIANELLI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che la Costituzione dello Stato italiano prevede l'istituto del referendum e garantisce il diritto di raccogliere le firme necessarie per indire il referendum nell'ambito del territorio di ogni comune della Repubblica;

che il PRC di Sezze aveva formalmente richiesto, all'Amministrazione del comune di Sezze, l'autorizzazione per istituire un banchetto idoneo per concorrere alla raccolta delle firme avviata per promuovere la richiesta di referendum concernente la democrazia sul luogo del lavoro, il diritto alla salute di ogni cittadino, per una pensione garantita e pubblica, contro la svendita dell'ambiente;

che per motivi imprecisati, è stata negata l'autorizzazione;

che, a termini di legge, non era possibile rifiutare l'autorizzazione e che, ai sensi del Testo unico, l'ordine pubblico doveva essere garantito dalle autorità preposte, in tal caso il Sindaco *pro tempore* del comune di Sezze, signor Antonio Maurizi e dal comando *pro tempore* della Polizia Municipale del comune di Sezze, signor Luciano Caldarozzi;

che tale atto si configura come un attentato alla libertà e alla democrazia in quanto teso ad inficiare uno strumento di democrazia diretta previsto dalla Costituzione e al tentativo di ledere i diritti dei lavoratori, pensionati e malati che con la promozione di tali referendum si vogliono difendere –:

se intenda adottare tutti i provvedimenti che il caso richiede e se intenda ripristinare immediatamente la validità della Costituzione anche nell'ambito del comune di Sezze verificando se tale inadempienza sia dovuta alla solita arrogante protervia di questa amministrazione o ad una evidente ignoranza in materia di diritto costituzionale. (4-12992)

VALENSISE. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per conoscere – premesso che:

verso le ore 18 del 27 febbraio scorso all'interno della galleria "Francica", sulla tratta ferroviaria Vibo Pizzo-Rosarno, via Mileto, si verificava il crollo di un ampio settore della volta in cemento che trascinava a terra la linea aerea di contatto relativa al binario pari;

il traffico veniva dirottato sull'altro binario rimasto funzionante, dopo che i segnalatori automatici avevano fatto riscontrare l'interruzione del binario pari diretto al Nord;

il personale del primo treno transitato, dopo l'evento dannoso, suggeriva l'interruzione della circolazione dei treni per entrambi i binari e, l'intero traffico della tratta Vibo Pizzo-Rosarno, via Mileto, veniva dirottato lungo la tratta litoranea Eccellente-Rosarno, via Tropea;

in data 1° marzo, dopo i primi interventi di ripristino nella galleria, interessata dal crollo, l'esercizio lungo la tratta Vibo Pizzo-Rosarno, via Mileto veniva ripreso con limitazioni della velocità dei convogli;

la ripresa del traffico è stata decisa senza le usuali indagini e sperimentazioni e senza ricognizioni minuziose e particolareggiate dello stato del rivestimento e della volta della galleria;

allo sbocco della detta galleria "Francica" vi è un viadotto, noto nella letteratura ferroviaria per l'instabilità del terreno sul quale è stato costruito, di natura argillosa, tale da aver comportato per oltre 15 anni il quotidiano ripristino della massicciata ferroviaria delle zone a ridosso del viadotto, anche interne alla galleria "Francica" –:

quali organiche quanto urgenti iniziative si intendano assumere per ammodernare e potenziare la tratta litoranea via

Tropea, che non presenta alcun dissesto ed è determinante per alleggerire il traffico dell'altra tratta Vibo Pizzo-Rosarno, via Mileto e, nel contempo, ammodernata e potenziata, risolve e razionalizza il servizio ferroviario nell'ambito del territorio della provincia di Vibo Valentia, come da anni insistentemente richiesto dalle popolazioni interessate. (4-12993)

VALENSISE. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere permesso che:

in base a delega del 25 dicembre 1992, in forza della legge n. 726 del 1982 e n. 486 del 1988, con ordinanza dell'11 febbraio 1993 n. 84/12. B.2/GAB, il Prefetto di Cosenza disponeva l'accesso presso gli uffici del comune di Rossano per lo svolgimento di accertamenti relativi a possibili irregolarità nell'attività amministrativa nei settori edilizio, urbanistico, appalti e subappalti di opere pubbliche, personale;

veniva incaricato dell'accesso e dello svolgimento degli accertamenti utili, anche a mezzo di acquisizione dei documenti, il rag. Adele Cinelli con la collaborazione dell'ingegner Francesco Trecroci, designato dal Provveditore alle OOPP della Calabria, e dal dottor Pasquale Perfetti, designato dal Dirigente dell'Ufficio provinciale del Lavoro di Cosenza, con il termine di quindici giorni per l'espletamento dell'incarico da concludersi con una relazione riepilogativa sugli accertamenti espletati –:

se gli accertamenti sopra descritti siano stati portati a termine e quali siano gli elementi emersi e le conclusioni rassegnate nella relazione riepilogativa dei funzionari delegati all'espletamento della ispezione disposta dal Prefetto di Cosenza, su delega del Ministro dell'intemo al quale, dal 31 dicembre 1992, sono state attribuite le funzioni dell'Alto Commissario per il coordinamento della lotta contro la delinquenza mafiosa, con facoltà di delega ai Prefetti. (4-12994)

VALENSISE. — *Al Ministro delle poste e telecomunicazioni.* — Per conoscere quali iniziative siano state assunte per adeguare gli uffici SIP della città di Crotone al nuovo ruolo di capoluogo di provincia che la città medesima ha conseguito e che comporta, con l'aumento del volume del traffico, strutture conformi alle necessità dell'utenza residente e delle prevedibili nuove fasce di utenti, conseguenti agli insediamenti degli uffici pubblici provinciali. (4-12995)

BOTTINI. — *Al Ministro delle poste e telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

si verifica un gravissimo e costante disagio, alle persone sordomute, di fronte alla insufficiente comunicazione delle trasmissioni televisive, soprattutto i telegiornali, i dibattiti, la tribuna politica, medicina 33, e altri vari programmi di interesse pubblico delle emittenti locali RAI TV;

l'interrogante ha verificato anche che tutti i sordomuti presenti nel nostro territorio italiano pagano regolarmente il canone TV (solamente i sordumuti riconosciuti dalla legge 26 maggio 1970, n. 381, e non quelli che sentono poco o non conoscono il linguaggio gestuale);

i rappresentanti di sordomuti tempo fa, hanno protestato via stampa per il fatto che, quando c'era la piccola finestra con interprete gestuale, si è dichiarato sconosciuto il linguaggio gestuale per sordomuti;

i veri sordomuti hanno protestato, perché vogliono capiere come tutte le persone normali, non amano l'isolamento –:

se si ritenga di aprire la piccola finestra sullo schermo della TV con l'interprete gestuale per garantire i sordomuti;

per quale motivo, sia stata soppressa la piccola finestra con interprete gestuale;

se si ritenga di fornire una dettagliata documentazione sul punto. (4-12996)

RAVAGLIA. — *Al Ministro della marina mercantile.* — Per sapere – premesso che:

in base al combinato disposto dalle disposizioni della legge n. 690 del 1940 e dell'articolo 20 della legge n. 850 del 1973 è previsto l'esercizio da parte di privati dei servizi antincendi integrativi negli ambiti portuali o complementari limitrofi, previa autorizzazione rilasciata dal comandante della competente capitaneria di porto, su conforme parere del comandante provinciale dei vigili del fuoco;

in data 4 agosto 1990 è stato inoltre emanato il decreto del Presidente della Repubblica n. 335 che all'articolo 65 prevede l'istituzione di un fondo per compensare i dipendenti che espletino servizio in ore straordinarie che assicurino la reperibilità e l'incentivazione all'aggiornamento professionale, ed alimentato con il 60 per cento dei proventi derivanti dai servizi di prevenzione e vigilanza prestati dai vigili del fuoco fuori dagli orari di lavoro ordinari, straordinari e di turnazione;

in base a detto decreto del Presidente della Repubblica il Ministero dell'interno ha diramato una circolare informativa (n. 27 del 7 ottobre 1991) ai propri uffici. Ciò ha causato che alcuni comandi provinciali, a causa di un'erronea interpretazione, abbiano comunicato alle capitanerie di porto che i servizi in questione sono di competenza esclusivamente del Corpo nazionale dei vigili del fuoco;

il permanere di tale interpretazione causerebbe:

l'affidamento dei delicati compiti inerenti la sicurezza portuale a personale che ha già sostenuto o dovrà sostenere un turno di lavoro;

la mancanza di garanzie per la continuità del servizio, come formalmente richiesto da diverse autorità marittime;

la perdita del posto di lavoro per i dipendenti di organismi privati (circa 3.000 maestranze), a vantaggio di quelli di organismi pubblici che utilizzerebbero questa attività come secondo lavoro;

un aggravamento degli oneri portuali, in quanto le tariffe del Corpo nazionale dei vigili del fuoco sono più alte di quelle applicate dagli organismi privati stabilite dai comandanti di porto sentita l'utenza interessata;

una grave situazione per le ditte che hanno attuato notevoli investimenti finanziari per le attrezzature e le strutture idonee –:

quali iniziative saranno intraprese per evitare quanto sopra dal competente ministro della marina mercantile.

(4-12997)

RUSSO SPENA e DORIGO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – premesso che:

secondo le informazioni raccolte dall'onorevole Eugenio Melandri, parlamentare europeo, recentemente tornato da una missione politica in Sudafrica, risulta che il generale Gian Adelio Maletti starebbe in questi giorni tenendo un ciclo di conferenze sulla cultura italiana, organizzate da una nota fondazione finanziata dal Ministero degli esteri italiano;

il generale Maletti è ricercato dalla magistratura italiana per essere fuggito in Sudafrica con importanti bobine e casse di materiale dei servizi segreti inerenti la strage di Piazza Fontana;

la fondazione in questione è la « Dante Alighieri » che ha il compito di diffondere la cultura italiana all'estero e per queste ragioni riceve lauti finanziamenti dalla Farnesina;

l'ultima conferenza a cui ha partecipato come relatore il generale Maletti, che per sfuggire al mandato di cattura internazionale è diventato nel frattempo cittadino sudafricano, ha trattato i temi dei « canti patriottici italiani ». Risulta che il generale si sia particolarmente soffermato sui canti patriottici dell'epoca fascista –:

le ragioni per le quali si è invitato un pluriricercato a tenere conferenze sulla cultura italiana;

se il Governo non ritenga doveroso sospendere ogni finanziamento alla sezione sudafricana della Fondazione « Dante Alighieri » dissociandosi apertamente da tale, disdicevole, iniziativa. (4-12998)

PREVOSTO, SANNA e ORGIANA. — *Al Ministro delle poste e telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

i servizi di trasporto extraurbani espletati dai lavoratori del settore P.T. si svolgono in Sardegna, anche per le caratteristiche geomorfologiche del territorio, in condizioni particolarmente difficili e usuranti;

il « nastro orario » dagli stessi arriva anche a 13h, in taluni casi si svolge di notte senza adeguate misure di sicurezza e di collegamento radio;

a tali lavoratori viene corrisposta un'indennità fuori residenza pari a 2.100 lire quale risarcimento incongruo dei disagi e dei sacrifici sopportati;

l'Amministrazione postale non prevede, salvo che per specifiche missioni, un consumo-pasto per i suoi dipendenti più esposti –:

se non ritenga opportuno concordare un « nastro orario » più umano garantendo nel contempo sicurezza e certezza del servizio;

se non ritenga necessario rivedere le norme relative al buono pasto uniformandolo al trattamento di missione;

se non ritenga opportuno avviare su tali materie un confronto di merito con le organizzazioni sindacali. (4-12999)

SERVELLO e POLI BORTONE. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

nel corso del recente seminario nazionale sulla stenografia dell'1, 2, 3 aprile scorso, sono state denunciate alcune deficienze e gravi ingiustizie nel sistema didattico italiano che sollecitano l'intervento delle autorità governative competenti;

in particolare, si è rilevata un'ingiustificata discriminazione da parte dei presidi di alcuni istituti di istruzione secondaria superiore (istituti tecnici commerciali statali, istituti statali per periti aziendali, per corrispondenti in lingue estere e gli istituti professionali di Stato per i servizi commerciali, sociali e turistici), nei confronti dei docenti di stenografia – classe di concorso A089 LXXXIX, dovuta alla esclusione – per soprannumero – di questi ultimi dai corsi sperimentali, situazione dovuta ad una normativa poco organica e non al calo demografico;

detta discriminazione è in contrasto con la sentenza n. 985 del 14 settembre 1992 del TAR Lombardia e l'ordinanza ministeriale del MPI prot. n. 1156/div/VIII del 6 agosto 1992 per la formazione degli organici delle scuole secondarie superiori di cui sopra;

nel corso del medesimo convegno si è inoltre sollecitata – all'unanimità – una riformulazione del programma didattico-pedagogico di stenografia trattamento parola-testi, dati ed informazioni, mediante un incontro tra le rappresentanze governative ed il presidente nazionale degli stenografi, professor Rosario Leone;

si è quindi chiesta la celere approvazione del corso di laurea con indirizzo in stenografia così come previsto dalla proposta di legge n. 1605 presentata dagli interroganti;

si è ancora sollecitato l'inserimento della stenografia tra le discipline oggetto degli esami di maturità degli istituti tecnici e professionali –:

se intenda assumere adeguate iniziative in ordine ai punti sopra elencati anche in relazione a precedenti atti ispettivi presentati sulla stessa materia dagli interroganti. (4-13000)

PASETTO. — *Ai Ministri della sanità e del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per sapere – premesso:

che a Cologna Veneta (VR) esistono numerosi problemi legati alle locali strutture ospedaliere;

che innanzitutto deve trovare immediata soluzione la vergognosa situazione nella quale sono costretti a vivere decine di degenti non autosufficienti o portatori di gravi *handicaps* mentali e fisici nella cosiddetta « casa di salute », una struttura fatiscente a tal punto da rendere proponibile unicamente il trasferimento immediato di tutte le persone ivi detenute;

che tale soluzione è a portata di mano: accanto al luogo sopra indicato vi è una struttura ospedaliera appena dismessa, della quale basterebbe riattivare una sola ala per risolvere il problema dell'alloggio dei poveretti attualmente reclusi nella menzionata « casa di salute »;

che, inoltre, accanto alle due strutture ospedaliere di cui sopra, a Cologna Veneta è stato appena attivato un nuovissimo ospedale, che inspiegabilmente viene o sottoutilizzato, o depredato di personale (spesso trasferito alla « corte » del direttore sanitario della USL n. 28 competente per territorio), ed è messo nelle condizioni di non svolgere la propria fondamentale attività di assistenza, con portieri impiegati come autisti, con la conseguenza allucinante (come più volte accaduto nel passato) che spesso si resta senza portineria e servizio di centralino; oppure con reparti occupati al 110 per cento della loro potenzialità che hanno medici presenti al 50 per cento dell'organico, ed infermieri addirittura al di sotto di tale percentuale (il sottoscritto, in propria ispezione, ha personalmente visto il capo-sala di medicina costretto a lavare i piatti del reparto per assenza di personale);

che sempre in questo nuovo ospedale sono accolte persone mai registrate in accettazione sanitaria, senza alcuna cartella clinica, trasferite dalla predetta « casa di salute », considerate « ospiti » dai responsabili dell'ospedale;

che in detta struttura esiste una cucina nuovissima, ed inspiegabilmente si continuano a far pervenire i pasti da un altro ospedale, quello di Legnago (VR), lasciando totalmente inutilizzata la cucina di Cologna Veneta;

che il pronto soccorso è messo nelle condizioni di non funzionare per carenza di personale, tanto che è accaduto nel passato che persone bisognose di cure abbiano inutilmente atteso per ore qualcuno –:

1) se non ritenga opportuno di provvedere a trasferire alla regione Veneto la somma di un miliardo dal bilancio statale finalizzandola alla ristrutturazione di un'ala dell'ospedale dismesso di Cologna Veneta per permettere il trasferimento dei degenti attualmente ricoverati nell'adiacente « casa di salute »;

2) quali passi si intendano condurre presso la regione Veneto per conoscere sia le ragioni delle disfunzioni sopra denunciate, sia gli intendimenti di detta regione circa il futuro dell'ospedale di Cologna Veneta;

3) quali provvedimenti concreti intenda adottare per rendere efficiente un ospedale costato decine e decine di miliardi alla collettività. (4-13001)

NANIA. — *Al Ministro delle poste e telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

ultimamente, a Messina e provincia l'amministrazione delle poste e telecomunicazioni ha proceduto all'assunzione di personale inquadrato in varie categorie, tra le quali quella di « Operatore di esercizio » (categoria IV);

gli assunti della predetta IV categoria, non invalidi, di entrambi i sessi, esercitano nella provincia di Messina (uffici locali) le mansioni di portalettere;

nell'Ufficio A.D. di Messina Centro (per ragioni inspiegabili e comunque senza alcuna intesa con le organizzazioni sindacali), il personale idoneo al servizio portalettere, viene esonerato da tale servizio dal direttore del predetto Ufficio A.D. Messina Centro;

l'esonero di cui sopra di fatto comporta disservizi e problemi di organizzazione di lavoro;

in seguito alle direttive del direttore dell'Ufficio A.D. di Messina Centro impartite ai responsabili della sala portalettere, difatto non viene riconosciuto al dipendente personale portalettere di godere di congedo ordinario (oltre quello programmato) per casi eccezionali, con la motivazione « a seguito all'assenza non è possibile la copertura dei rioni »;

addirittura, alle richieste di un giorno di congedo ordinario per casi eccezionali, si consiglia al portalettere di aggirare il diniego di tale congedo invitandolo a chiedere l'assenza per malattia;

le direttive del predetto direttore dell'Ufficio A.D. avallate probabilmente dal direttore provinciale, determinano di fatto discriminazioni tra il personale ed il conseguente disservizio del recapito della corrispondenza –:

qual provvedimenti intenda adottare per impedire il protrarsi di quanto denunciato. (4-13002)

NANIA. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – ritenuto che:

in virtù della legge 7 luglio 1901, n. 283, e della legge 28 giugno 1928, n. 1415, i funzionari di cancelleria, per la loro comprovata esperienza, anche se non in possesso di laurea, potevano essere nominati patrocinatori legali per il patrocinio dinanzi la pretura e gli uffici di conciliazione;

sono note le difficoltà nel reperimento di persone idonee per la nomina a « giudice di pace » –:

se siano allo studio iniziative volte alla modifica dell'articolo 5 della legge 21 novembre 1991, n. 374, nel senso che possano essere nominati « Giudici di pace » anche i direttori di cancelleria, privi di laurea, con almeno 20 anni di servizio nella carriera direttiva delle cancellerie e segreterie giudiziarie. (4-13003)

BUONTEMPO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed ai Ministri degli affari esteri e dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

la società di navigazione Aquila (con sede legale a Ortona (CH) in corso Garibaldi n. 1) collega dal novembre 1992, settimanalmente, l'Italia con l'Albania e che la stessa società chiedeva ed otteneva dalle autorità albanesi l'autorizzazione per effettuare un secondo collegamento settimanale;

che in data 26 marzo 1993 la motonave Casablanca è stata tenuta al largo del porto di Durazzo dalle autorità albanesi e solo successivamente è stato permesso l'attracco alla banchina, senza però permettere lo sbarco delle merci e dei passeggeri e proibendo, addirittura, di ripartire alla volta dell'Italia, divieto che veniva ribadito al rapppresentante della società, giunto con urgenza dall'Italia dal capo del locale posto di polizia che diceva di considerare la nave praticamente sotto sequestro;

solo dopo circa 12 ore di attesa veniva concesso ai passeggeri di sbarcare;

il giorno successivo veniva vietato l'imbarco dei passeggeri e delle merci, divieto che veniva ripetuto in data 30 marzo 1993 e 6 aprile 1993 –:

se non ritengano di intervenire urgentemente presso le autorità albanesi, affinché i viaggiatori e gli operatori commerciali possano operare nella garanzia del rispetto delle norme e degli accordi vigenti anche perché negli stessi periodi ben altro trattamento è stato riservato dalle autorità albanesi alle navi greche che possono svolgere senza alcun intralcio il loro lavoro,

cosa che può far supporre ben altra tutela da parte delle autorità greche dei suoi cittadini;

se non ritengano di promuovere una protesta presso le autorità albanesi a tutela del diritto, ma anche della libertà e dignità degli italiani e come si intenda tutelare il lavoro dei nostri connazionali, della società sopraindicata e di tutte le altre che operano per rapporti di navigazione o di altro tipo con l'Albania. (4-13004)

SERVELLO, POLI BORTONE, IGNAZIO LA RUSSA, ROSITANI, GASPARRI, BUONTEMPO, MACERATINI e CARADONNA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che da più di un mese il quotidiano *Il Tempo* attraversa una fase di gravissima crisi per lo sciopero dei giornalisti dovuto a scelte editoriali che penalizzano le professionalità interne ed offuscano l'immagine del giornale, riducendone, tra l'altro l'area di diffusione da nazionale a interregionale (Lazio, Abruzzo, Molise e parte della Basilicata);

che tale situazione rappresenta un grave danno per giornalisti e lettori;

che le scelte dell'editore contraddicono gli auspici dello stesso Governo;

che nella giornata di martedì 6 aprile l'editore, nonostante i ripetuti ed espliciti appelli rivoltigli dal Sottosegretario alla Presidenza del consiglio, Fabbri, a « congelare » ogni iniziativa, ha formalizzato la designazione del direttore editoriale, dottor Canè, contemporaneamente direttore responsabile di un altro quotidiano, che è all'origine dell'inasprimento della vertenza;

che venerdì prossimo è in programma un incontro convocato dal ministro Cristofori;

che la formalizzazione della nomina del direttore editoriale rappresenta una rottura verso ogni tentativo di ricomposizione;

se non ritengano di dover verificare l'area di diffusione de *Il Tempo*, dal momento che la Sipra corrisponde all'azienda circa 27 miliardi annui di « minimo garantito » per la pubblicità su « un prodotto a diffusione nazionale ». (4-13005)

TARADASH, PANNELLA, BONINO, CICCIOMESSERE, ELIO VITO e RAPAGNÀ. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

nel 1982 il comune di Catania bandì un concorso per vigili urbani 5° livello per 103 posti;

15 cittadini, 5 donne e 10 uomini, nonostante fossero risultati vincitori del bando e gli fosse arrivata la nomina nel gennaio 1990 non furono assunti per motivi di altezza;

i 15 cittadini a quel punto presentarono ricorso e finalmente nel settembre 1991 furono assunti;

improvvisamente, dopo 11 mesi di servizio, il 26 agosto, con una telefonata di prima mattina, viene comunicato ai quindici che sono sospesi dal servizio e che debbono immediatamente riconsegnare l'arma e tutto ciò che gli era stato dato in dotazione perché altrimenti si sarebbero recati a casa loro i carabinieri;

dopo il nuovo ricorso il TAR, il 9 novembre 1992, emetteva una sentenza di revoca dei licenziamenti e di immediata riammissione in servizio;

nonostante ciò il comune di Catania aspettava il 59° giorno per notificare agli avvocati che avrebbe richiesto il parere del C.G.A. di Palermo;

nel frattempo a Milano, grazie ad una sentenza del Consiglio di Stato, venivano assunti dei vigili urbani pur non rientrando nei « limiti d'altezza » –:

1) a quale frenetica volontà di presunta « giustizia » si deve l'atteggiamento del comune di Catania nei confronti dei 15 cittadini che pur avendo vinto regolarmente il bando di concorso si sono ritrovati, da un momento all'altro, licenziati dopo ben 11 mesi di servizio;

2) se non si ritenga la sentenza del Consiglio di Stato sufficiente a far riassumere i 15 vigili urbani come ha già decretato il TAR della Sicilia;

3) per quale motivo si siano immediatamente assunti gli ultimi 15 cittadini presenti in graduatoria, oltrettutto con la delibera di assunzione che sembrerebbe essere scaduta, senza aspettare l'esito del ricorso. (4-13006)

NUCCIO. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere:

se risponda al vero:

che l'Ambasciata d'Italia in Harare (Zimbabwe) avrebbe avanzato richiesta di autorizzazione ad assumere un contrattista locale, con mansioni di concetto, da impiegare nella sezione consolare;

che la richiesta stessa, se effettivamente formulata, deve ritenersi del tutto ingiustificata, se non abusiva, essendo presumibilmente volta a favorire persona già designata;

che nella sede di Harare non sussistono particolari esigenze, tenuto conto che la collettività italiana, colà residente, è, per numero, assai modesta ed è costituita, quasi esclusivamente, da cittadini della terza età, in continua diminuzione, nella quale non si registrano ricambi generazionali;

che nella sede detta presta servizio idoneo personale di ruolo, disponibile a protrarlo, avvalendosi della norma vigente che proroga ad anni 67 il collocamento in pensione;

se sia a conoscenza:

che presso l'Ambasciata d'Italia prestano servizio ben sei impiegati a contratto, due dei quali con la mansione di concetto, e che nei locali della rappresentanza diplomatica si registra un affollamento di personale da porsi in relazione alla limitata superficie destinata ai servizi istituzionali;

che, infine, la richiesta cui si fa cenno adombrerebbe lo scopo di dar luogo ad una assunzione clientelare che non riflette le reali necessità operative, correlate ad esigenze di servizio. (4-13007)

NAPOLI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso:

che un gruppo di lavoratori della RAI denuncia che negli studi di Milano e Torino le strutture e il personale resterebbero inutilizzati a causa del dirottamento di programmi a studi privati;

che, più precisamente, sembrerebbe, secondo quella denuncia, che i programmi *Diritto di replica* e *Porca miseria* vengano realizzati negli studi romani di una società privata, la VIDEA, di tale Sandro Parenzo;

che tale dirottamento di programmi dalla RAI a ditte private provocherebbe un grande aggravio finanziario per l'azienda pubblica che già paga « i suoi lavoratori che se ne stanno con le mani in mano negli studi inutilizzati » –:

se i fatti denunciati corrispondano a verità e, in questo caso, quale sia l'aggravio per la RAI sia del mancato utilizzo delle proprie strutture sia della utilizzazione di società private, e quali interventi ritenga di dover assumere. (4-13008)

SCALIA. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

la relazione della Corte dei conti ha segnalato che l'uso per abitazione di edifici di valore monumentale storico-artistico è autorizzabile in pochissimi casi ben circo-

scritti e che comunque non deve configurare danni al patrimonio esistente o l'impossibilità di fruizione pubblica del bene culturale;

risulta invece in molti casi un uso estensivo ed arbitrario di locali appartenenti ad edifici vincolati per il loro valore monumentale storico-artistico, locali che verrebbero trasformati per farne appartamenti ad uso abitativo con modifiche rilevanti (impianti di riscaldamento, condutture per l'acqua e per il gas, ecc.) e comportanti ipotesi di danno proprio per consentire il suddetto uso: in particolare, una parte del Museo Nazionale di Villa Giulia, ospitato nella cinquecentesca villa di Papa Giulio III opera del Vignola, che accoglieva dal 1975 l'esposizione delle oreficerie Castellani, è stata smantellata per essere inglobata, con altri ambienti dell'ala destra della Villa, a residenza dell'attuale Soprintendente, con gravi alterazioni e conseguenti danni alla struttura monumentale e distruzione delle vetrine, si stiano adibendo sempre ad uso abitativo locali in Castel S. Angelo (forse il cosiddetto appartamento « Paolino ») e parimenti nel Museo Napoleonico –:

se il Ministro sia al corrente dei fatti esposti;

se abbia a disposizione o abbia ordinato un censimento dei locali demaniali appartenenti ad edifici monumentali storico-artistici (palazzi, siti archeologici, mura, ecc.) e adibiti ad abitazione per funzionari e dirigenti del Ministero da lui diretto, o eventualmente da altre persone;

se sulla base di tali informazioni o analoghe, sia in grado di avere il quadro della situazione in modo da poter escludere che si siano verificati abusi, danni o impedimenti alla fruizione pubblica di beni storico-artistici;

se, nei casi consentiti, siano state autorizzate le trasformazioni strutturali e in quali casi siano stati con i conseguenti danni arrecati danni al patrimonio dello Stato, e se tali lavori siano stati finanziati con fondi ministeriali;

quali provvedimenti il Ministro intenda prendere per ripristinare il corretto uso delle strutture e la fruizione pubblica dei beni abusivamente utilizzati. (4-13009)

CRIPPA e RONCHI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

nella serata del 6 aprile alcuni agenti della Polizia di Stato hanno fatto irruzione nel centro sociale *Officina 99* di Napoli, sito in via Gianturco;

gli agenti di polizia hanno tenuto un atteggiamento incomprensibilmente violento, hanno esploso colpi di pistola, ed hanno fermato alcuni giovani (tra cui un esponente della Lega Obiettori di Coscienza di Napoli) rei di star discutendo pacificamente tra loro;

nel centro sociale al momento dell'irruzione era presente anche il regista Salvatores, che vi si trovava per incontrare un gruppo musicale;

la violenza esercitata dalle forze dell'ordine, oltretutto nei confronti di persone che, come gli obiettori di coscienza, per scelta consapevole hanno ripudiato ogni forma di violenza risulta ancora più incomprensibile visto che le attività del centro sociale sono ampiamente pubblicizzate e consistono in assemblee pubbliche e spettacoli –:

quali provvedimenti intenda prendere per mettere in libertà immediata i giovani fermati irresponsabilmente dalle forze di polizia;

quali siano le ragioni dell'atteggiamento delle forze dell'ordine e quali provvedimenti intenda prendere nei confronti degli agenti che hanno tanto irresponsabilmente creato momenti di tensione in un luogo di dibattito politico e sociale.

(4-13010)

PALERMO. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

in data 25 gennaio 1993 gli studenti di Acquaviva delle Fonti, Cassano Murge e Gioia del Colle, in provincia di Bari, avevano organizzato una manifestazione antimafia dal titolo « Insieme contro la mafia » con la partecipazione di esponenti-simbolo della lotta al sistema criminale, quali il presidente e vice-presidente del coordinamento antimafia di Palermo;

la suddetta manifestazione si è articolata in un corteo cittadino per le strade di Acquaviva delle Fonti, ed un incontro tra gli studenti per discutere del problema della mafia che anche in Puglia ha da tempo superato il livello di guardia, che all'iniziativa hanno partecipato insegnanti, presidi e lo stesso provveditore agli studi;

l'educazione giovanile ha come punto di riferimento la scuola, e lo stesso « progetto giovani » del Ministero della pubblica istruzione indica, tra le priorità, quella di « educare i giovani alla legalità », quindi la scuola ha l'obbligo di educare i giovani a combattere l'illegalità;

alcuni presidi, ed in particolare il professor Vito Porcelli, preside dell'istituto « Liceo Classico Publio Virgilio Marone » di Gioia del Colle (BA) ed il professor Vito Leonardo Giorgio, preside dell'istituto magistrale « Don Lorenzo Milani » di Acquaviva delle Fonti (BA), hanno secondo alcuni volantini distribuiti dagli studenti delle scuole di zona, minacciato « ritorsioni » nei confronti degli studenti che eventualmente avessero preso parte alla manifestazione « Insieme contro la mafia » –:

se e quali provvedimenti intende adottare in relazione ai fatti di cui sopra, qualora vengano effettivamente accertate le suindicate condotte dei professori Vito Porcelli e Vito Leonardo Giorgio. (4-13011)

BIASCI. — *Ai Ministri dei lavori pubblici e per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

prima della fine del 1992 è stato approvato, dopo numerose reiterazioni, il provvedimento grazie al quale il Comitato per la salvaguardia della Torre di Pisa, per tutto l'anno in corso, potrà lavorare il relativa tranquillità;

la chiusura della Torre ha fatto subire alla città di Pisa un forte calo turistico;

l'Opera della Primaziale, addetta a provvedere alle spese per il mantenimento della Piazza dei Miracoli ha visto venir meno una delle sue maggiori fonti di finanziamento costituita dalla vendita dei biglietti per la visita alla Torre –:

quale sia lo stato di avanzamento dei lavori;

quanto sia stato speso fino ad oggi e quanti fondi rimangono ancora disponibili per l'anno in corso;

se si preveda di ultimare le opere entro il 1993 e, in caso contrario, se non si ritenga opportuno iniziare a predisporre le normative di supporto per il finanziamento delle opere. (4-13012)

ENRICO TESTA e SALVADORI. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

nell'estate del 1991, la Stef di Torino ha redatto in poche settimane il progetto di tangenziale ovest di Bra, che dovrebbe collegare le strade statali 661, 662 e 231 per una lunghezza di 6,5 chilometri e con una spesa di 50 miliardi di lire;

dopo il parere favorevole dei comuni di Bra e Cherasco, il progetto è rimasto pubblicato per un brevissimo periodo di tempo, dal 14 al 29 agosto, senza che venissero rispettate in alcun modo le procedure della legge n. 241;

qualche giorno dopo la pubblicazione, sono scoppiate le prime contestazioni da parte di privati cittadini che, tra l'altro, segnalano che il progetto è stato redatto su una cartografia non aggiornata e, di conseguenza, trancia di netto case, fabbriche e magazzini;

l'ANAS compartimentale di Torino, nonostante questi errori marchiani, fa pro-

prio il progetto Stef, pagato dal comune e dalla provincia di Cuneo, e il 7 novembre 1991, il Consiglio d'Amministrazione dell'ANAS approva e finanzia il progetto;

il 28 novembre 1991, la giunta comunale di Bra propone al Consiglio di affidare in concessione alla ditta INC di Torino la bretella di raccordo tra la città (via Brizio) e la tangenziale (5 miliardi rimborsabili a rate in 17 anni), ma l'opposizione costringe la Giunta a ritirare la delibera e a interpellare più ditte;

il 31 gennaio 1992, nonostante siano state interpellate 5 ditte, il Consiglio, a maggioranza, affida la concessione all'INC e, subito dopo, l'ANAS affida a trattativa privata la tangenziale di Bra alla stessa INC;

nell'inverno '92/'93, l'INC – o meglio, i suoi subappaltatori - inizia il palinamento per la realizzazione dell'opera; immediatamente dopo, diversi privati cittadini ricorrono al TAR contro gli espropri;

finalmente nel febbraio 1993 il Ministro Merloni blocca i lavori per il riesame delle procedure che, come per tante altre operazioni "d'urgenza" del suo predecessore Prandini, non appaiono convincenti –:

le motivazioni dell'ANAS per l'affidamento dei lavori all'INC;

le ragioni della mancata attivazione delle procedure della legge n. 241 da parte del comune e dell'ANAS, relativamente all'informazione dei cittadini interessati;

perché l'ANAS non abbia tenuto conto della proposta di realizzare la tangenziale con un diverso tracciato a lato nord (frazione Bandito) che si presenta più largo e arioso;

perché siano state ignorate le proposte dei progettisti dell'amministrazione provinciale per quanto riguarda il lato sud (Roreto di Cherasco);

se risulti che i progetti siano la fotocopia del progetto della Susa Rivoli, per quanto riguarda la parte letteraria, e siano stati redatti su aerofotogrammetrie e su carte non aggiornate, relativamente alla parte cartografica;

se non ritenga di dover far chiarezza sulle procedure seguite e fare apportare notevoli correzioni al progetto, visto che l'opera mette in discussione l'esistenza di case ed aziende private e sconvolge l'ordinato assetto del territorio. (4-13013)

RUSSO SPENA. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

una tranquilla e pacifica riunione che si stava svolgendo al Centro Sociale *Officina 99*, in via Gianturco a Napoli, è stata interrotta nella serata di martedì 6 aprile dall'irruzione di una pattuglia di agenti di polizia;

a causa dell'intervento ingiustificato ed immotivato della polizia la situazione si è fatta tesa e pericolosa pregiudicando anche la stessa incolumità dei tanti giovani presenti in quel momento all'interno della struttura;

gli agenti – come riportato da diversi organi di stampa – hanno esploso diversi colpi d'arma da fuoco in aria provocando un fuggi fuggi generale a conclusione del quale venivano arrestati sette giovani, tra cui due ragazze, con l'accusa di lesioni e resistenza aggravata;

*Officina 99* è una interessante e riconosciuta esperienza di aggregazione sociale e giovanile nel cuore della periferia orientale di Napoli, situata in una zona che ha visto la chiusura progressiva di quasi tutte le sue fabbriche, l'estendersi del tessuto criminale e della conseguente diffusione della realtà della droga;

è in un simile contesto di degrado sociale che i giovani di *Officina 99* si trovano ad operare svolgendo un servizio per l'intera città, diventando punto di riferimento per ragazzi e ragazze, disoccupati, soggetti che della condizione di solitudine ed emarginazione fanno un elemento di consapevolezza per opporsi alle ingiustizie della società;

l'importanza anche creativa di questa struttura è dimostrata dall'interesse del regista Gabriele Salvatores che ha inserito i ragazzi del Posse, il gruppo di musicisti nato nel centro, nel suo prossimo film « Sud ». Lo stesso Salvatores in una dichiarazione si è detto sorpreso dell'accaduto in quanto in quel momento stava tenendo un incontro con i ragazzi del centro e la situazione era tranquilla e si conversava di musica, comunicazione e poesia –:

se non ritenga di dover immediatamente disporre una indagine sul singolare comportamento della polizia, in considerazione del fatto che l'episodio oggetto dell'interrogazione è l'ultimo di una serie di attacchi subiti dalla struttura periodicamente minacciata di sgombero ma difesa da un vasto schieramento democratico e di intellettuali;

se non ritenga di dover disporre immediate indagini sulle notizie di maltrattamenti subiti dai sette arrestati da parte delle forze di polizia;

se non ritenga di dover intervenire per ripristinare un clima di tranquillità nella città di Napoli, garantendo la piena agibilità per ogni espressione sociale di critica e di protesta, anche per consentire a questa significativa esperienza di aggregazione sociale e culturale – in una Napoli proprio in queste ore smarrita ed indignata – la sua importante attività. (4-13014)

CIABARRI. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

il tribunale di Sondrio, con sentenza del 2 aprile 1993, ha ritenuto il dottor Rossi Enrico, Provveditore agli studi di Sondrio, colpevole dei reati di abuso in atti d'ufficio e di falso ideologico, condannandolo alla pena di anni uno e mesi due di reclusione ed all'interdizione dai pubblici uffici per la durata della pena inflitta;

i reati per i quali il dottor Rossi Enrico è stato condannato sono stati commessi in danno della dipendente invalida Vetti Marilena, collaboratore amministrativo, suicidatasi;

a seguito della detta condanna, e data la natura dei fatti, il permanere del dottor Rossi a capo dell'amministrazione scolastica in Sondrio è fortemente lesivo dal prestigio dell'amministrazione scolastica stessa e ne mina la credibilità e la funzione educativa –:

quali provvedimenti intenda adottare per rimuovere il dottor Rossi Enrico dall'ufficio di Provveditore agli Studi di Sondrio. (4-13015)

CELLAI. — *Ai Ministri della sanità e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

nel 1987 l'allora presidente della USL 20/A affermava che il monoblocco ospedaliero del Valdarno, previsto in località « La Gruccia », sarebbe stato costruito nel giro di pochissimi anni;

ad oggi il nuovo ospedale non è stato portato a termine ed esistono gravi interrogativi sulla opportunità della sua realizzazione e sul reperimento dei fondi atti a finanziarlo;

detta localizzazione – in sostituzione degli attuali complessi di Montevarchi, S. Giovanni e Terranuova Bracciolini – è apparsa, fin dall'inizio, rispondere solo a criteri geopolitici;

la stessa risulta insistere su area alluvionabile e congestionata, tanto che, proprio per i potenziali rischi alluvionali – dovuti al fatto che il progetto-base prevedeva l'edificazione a quota meno metri 1,90 da quella di massima piena dell'Arno – si è deciso di rialzare l'opera di oltre due metri, con una conseguente pesantissima lievitazione della cubatura nonché con un maggior onere quantificato, ad oggi, in circa 10 miliardi;

in data 17 gennaio 1993 il commissario della federazione aretina del MSI-DN, Mauro Turenci, ha presentato un

dettagliato esposto nel merito della vicenda alla procura della Repubblica di Arezzo, allegando una precisa relazione tecnica dell'ingegner Giancarlo Bellacci, all'epoca componente della commissione edilizia del comune di S. Giovanni Valdarno –:

se non si ritenga opportuno verificare la suddetta localizzazione, sia in termini di corrispondenza alle esigenze di fornire una reale struttura di servizio nei confronti delle popolazioni interessate, sia sotto il profilo di un parametro di corretto rapporto circa i costi complessivi di detta operazione;

quali siano le previsioni di spesa finali;

se non si individuino oggettive responsabilità di malagestione del danaro pubblico;

se risulti sia stata intrapresa una verifica della situazione da parte dell'autorità giudiziaria, indirizzataria dell'esposto sopracitato, e, se del caso, a che punto siano i relativi riscontri. (4-13016)

BORGHEZIO. — *Al Ministro delle finanze.* — Per sapere – premesso che:

il comune di Roma, evidentemente allo scopo di tentare di coprire almeno parzialmente i « buchi » di quella che ad avviso dell'interrogante è la poco sana e poco trasparente amministrazione capitolina, ha deliberato di estendere l'applicazione della tassa per l'occupazione di spazi e aree pubbliche anche a balconi, verande e simili infissi –:

se non ritengano di urgentemente intervenire per evitare che sulla piccola proprietà immobiliare, già gravata da troppi balzelli e ultimamente da ISI e ICI, qualche civica amministrazione aggiunga inopinatamente anche l'incredibile « tassa sul panorama », specie quando – come a Roma – il panorama offerto dall'inefficienza civica è quello di strade e piazze in stato di abbandono e di sporcizia da terzo mondo. (4-13017)

BORGHEZIO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

i recenti aumenti tariffari della linea ferroviaria Torino-Ceres (To) – nell'ordine del 15 per cento – hanno colpito una vasta fascia di pendolari (studenti e lavoratori) che da tempo lamentavano il disservizio, i ritardi, la scomodità del trasporto, l'inadeguatezza del riscaldamento di tale linea –:

quali urgenti iniziative si intendano assumere per far sì che la società di gestione SATTI, partecipata del comune di Torino, si decida a far corrispondere al « caro tariffe » un minimo di efficienza, di regolarità e di comfort nel servizio di trasporto passeggeri, attualmente costretti nelle ore di punta a viaggiare in piedi, pur pagando prezzi da servizio in *wagon-lit.* (4-13018)

FINI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

nella mattinata del 5 aprile 1993, e con riferimento alla manifestazione del primo aprile davanti a Montecitorio, agenti della Digos della questura di Roma, per ordine della procura della Repubblica hanno proceduto a decine di perquisizioni domiciliari nelle abitazioni di giovani e anziani aderenti al MSI-destra nazionale, ivi compreso il capo dell'ufficio stampa Francesco Storace, il componente la segreteria nazionale e dirigente sindacale Nazzareno Mollicone, il segretario provinciale del fronte della gioventù Luca Panariello, il consigliere regionale del Lazio, Gianni Alemanno, e molti altri ancora;

tali perquisizioni erano disposte alla ricerca, quale « corpo di reato », di magliette recanti la dicitura « arrendetevi, siete circondati » e hanno dato esito negativo;

gli agenti della Digos, in assenza delle magliette, hanno sequestrato documenti personali quali fotografie, agende e materiale propagandistico elettorale per il « no » al referendum del 18 aprile 1993;

i perquisiti, nonostante l'esito negativo delle perquisizioni, sono stati condotti al commissariato primo distretto di Roma – piazza del Collegio Romano dove sono stati ingiustificatamente sottoposti a rilevazione delle impronte digitali e foto segnaletica –:

quali siano le motivazioni di tale assurdo, ingiustificato, sproporzionato e, al limite, arbitrario comportamento degli agenti di polizia;

se obbedivano a precise disposizioni emanate dal ministro dell'interno o dai suoi organi dipendenti;

se in tutto ciò non possa ravvisarsi una illegittima violazione dei diritti politici individuali dei singoli cittadini e come una indebita prevaricazione e persecuzione contro le forze politiche che intendono votare « no » al referendum elettorale e che chiedono le elezioni politiche anticipate;

se risultino al Governo le ragioni per le quali si sia incaricato della conduzione dell'inchiesta in oggetto il sostituto procuratore della Repubblica Giovanni Salvi, fratello di un noto esponente del PDS, laddove proprio la valenza politica dell'inchiesta avrebbe consigliato una scelta diversa;

quale sia la valutazione del Governo sul carattere assunto dall'operazione in oggetto, soprattutto alla luce della perquisizione eseguita presso l'abitazione del capo ufficio stampa del partito Francesco Storace, che per le sue funzioni non ha partecipato ad alcun titolo alla manifestazione del primo aprile, limitandosi a tenere i contatti con la stampa, e se tutto ciò non configuri un grave attentato alle libertà di un partito politico. (4-13019)

TRABACCHINI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il 21 marzo 1991 fu sottoscritto un accordo presso il Ministero del lavoro che garantiva la CIGS ai lavoratori metalmeccanici e la disoccupazione speciale per i lavoratori edili della ex Centrale Nucleare di Montalto di Castro in attesa del loro reimpiego nel cantiere;

all'entrata in vigore, a marzo del 1992, della nuova legge 223/91 sulla Cassa Integrazione furono date precise assicurazioni da parte dell'allora ministro del lavoro Marini, tramite il Direttore Generale, che la CIGS riguardante i lavoratori metalmeccanici di Montalto di Castro avrebbe avuto un *iter* speciale che ne garantiva la continuità;

in contrasto con quanto sopra il CIPI, per ben 3 volte ha rinviato al Ministero del lavoro le richieste di Cassa Integrazione per « chiarimenti tecnici », che sarebbero stati regolarmente forniti;

solo pochi giorni fa le organizzazioni sindacali hanno appreso che il CIPI non approvava le richieste di CIGS se non interverranno chiare disposizioni della Presidenza del Consiglio;

si è venuta così a creare una difficile situazione che riguarda centinaia di lavoratori con le imprese che adombrano la possibilità di chiedere la restituzione dei soldi anticipati, sulla base di accordi sindacali sottoscritti, per l'erogazione della CIGS –:

se siano a conoscenza di quanto sopra;

se il Presidente del Consiglio non ritenga di intervenire tempestivamente sul CIPI affinché vengano chiariti e risolti i cosiddetti « aspetti tecnici » e venga autorizzata l'approvazione di tutte le richieste di CIGS che riguardano il cantiere di Montalto di Castro. (4-13020)

PASETTO. — *Ai Ministri dell'interno e della difesa.* — Per sapere – premesso:

che a seguito di un esposto-denuncia presentato dal consigliere comunale del MSI di Viadana (MN), signor Giacomo Bellina, veniva aperto dalla Procura della

Repubblica presso la Pretura circondariale di Mantova un procedimento penale a carico di amministratori di detto comune, *in primis* il sindaco Antonio Federici, e di alcuni imprenditori locali per vari reati, anche contro la pubblica amministrazione;

che il sostituto procuratore dottor Giulio Tamburini ordinava una serie di indagini che venivano esperite dal Nucleo operativo della compagnia Carabinieri di Viadana (MN);

che si è appreso, da notizie di stampa (*Gazzetta di Mantova* 29 gennaio 1993 e *Il Giorno* 29 gennaio 1993) che nel corso di dette indagini sarebbero emersi fatti che porterebbero ad ipotizzare i reati previsti e puniti dagli articoli 317 e 629 del codice penale da imputarsi sempre a carico di alcuni degli impiegati;

che durante la fase delle indagini preliminari sarebbe stata posta in essere un'azione di protesta nei confronti dell'operato di un ufficiale di PG dei Carabinieri di Viadana che il pubblico ministero aveva incaricato delle indagini, azione concretizzatasi in una missiva inviata, a quanto è dato di sapere, dal signor Federici Antonio (il sindaco socialista indagato), dal dottor Rosa Enzo (capogruppo consiliare DC al comune di Viadana) e dal professor Franco Rossini (consigliere comunale PSI del comune di Viadana) alle seguenti autorità: comandante la compagnia dei Carabinieri di Viadana, comandante il gruppo Carabinieri di Mantova, comandante la legione Carabinieri di Brescia, onorevole Ministro della difesa –:

1) quale sia il contenuto della missiva indicata in premessa;

2) se siano stati adottati provvedimenti a seguito di tale missiva;

3) se non ritengano indebita un'azione come quella posta in essere dai tre esponenti politici nei confronti di un ufficiale di PG operante agli ordini dell'autorità giudiziaria. (4-13021)

SOSPIRI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

*a)* che in data 1° agosto 1992 la Fondazione Cassa di Risparmio di Roma, proprietaria del Banco di Santo Spirito, acquisiva anche il Banco di Roma dando vita alla Banca di Roma SpA;

*b)* che il processo di fusione comporterà per i 13.000 dipendenti dell'Istituto incorporato (Banco di Roma) un allineamento al modello strutturale-organizzativo nonché alle procedure informatico-contabili di quello incorporante (Banco di Santo Spirito), e quindi – di conseguenza – ad uno stravolgimento delle preesistenti procedure e cognizioni in materia;

*c)* che a fronte dei prevedibili, enormi disagi che un simile processo di riconversione è certo comporterà per i suoi lavoratori, l'Azienda – per bocca del suo Vicedirettore generale Corcione – si era impegnata nei confronti delle organizzazioni sindacali a calendarizzare il tutto per i mesi di maggio, giugno, settembre e seguenti corrente anno, evitando espressamente quelli di luglio e agosto onde consentire in tale periodo un normale utilizzo delle ferie;

*d)* che in seguito, limitatamente alle nove sedi ex Banco Boma presenti nella Regione Abruzzo, la Banca di Roma – per tramite del suo locale Capo-filiale e del Dirigente centrale signor Pasqualini – provvedeva ad informare la Cisnal Credito, Sindacato localmente maggioritario, che la riconversione di queste Sedi sarebbe invece avvenuta proprio nei mesi di giugno, luglio e agosto, con conseguente blocco delle ferie dei lavoratori interessati;

*e)* che in spregio al CCNL di categoria, la locale Direzione non ha, a tutt'oggi, provveduto a fissare i turni di dette ferie, presentate dai lavoratori fin dallo scorso febbraio;

*f)* che il non usufruimento delle stesse costituisce violazione delle vigenti leggi in materia di diritto del lavoro, nonché dello specifico dettato contrattuale e di quello costituzionale –:

1) se sia a conoscenza dei fatti sopra descritti;

2) quali immediate iniziative ritenga dover assumere al riguardo. (4-13022)

ALFREDO GALASSO. — *Ai Ministri dell'università e ricerca scientifica e tecnologica e dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che il 16 gennaio si è svolta al palazzo dei congressi di Pisa la cerimonia di inaugurazione dell'anno accademico dell'ateneo cittadino in presenza del Presidente del Consiglio;

che in occasione della cerimonia, che ha richiamato molti studenti, gli agenti di polizia presenti hanno tenuto un comportamento repressivo impedendo a centinaia di studenti di entrare e partecipare alla manifestazione che era pubblica;

che richiesti chiarimenti circa tale episodio di grave ostruzionismo, una funzionaria dell'ateneo rispondeva che nessuna indicazione in tal senso era stata concordata col rettore;

che le forze dell'ordine, quindi, la cui presenza si giustificava per motivi di servizio di ordine, hanno di fatto determinato discrezionalmente chi poteva entrare alla manifestazione e chi no –:

se le circostanze riportate rispondano al vero e, nell'ipotesi positiva, se non ritengano di assumere idonei provvedimenti nei confronti dei responsabili di tale grave episodio di repressione preventiva del dissenso. (4-13023)

ALFREDO GALASSO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

ai sensi del penultimo comma dell'articolo 16 delle norme di attuazione del vigente piano regolatore di Venafro (IS), la possibilità di edificare in zona agricola è consentita sempre che la realizzazione complessiva dell'opera non superi il volume rapportato all'estensione dell'intera proprietà appartenente al nucleo familiare;

in data 22 maggio 1992 l'Assessore comunale all'urbanistica con provvedimento n. 6410 dispone che le concessioni edilizie ricadenti nelle zone « E » (agricole) potranno riguardare appezzamenti di terreno non appartenenti al nucleo familiare. È evidente, quindi, che col descritto provvedimento ha modificato le norme tecniche di attuazione, esautorando una funzione che la legge (in particolare la recente 142/1990) riserva al consiglio comunale;

da articoli di stampa, inoltre, si è appreso che in relazione al provvedimento sopra specificato, adottato « sentito il Pretore di Venafro », all'assessore è giunta una nota dello stesso Pretore che pur tacendo sulla deroga alla normativa esprime « compiacimento per l'apprezzabile sensibilità da Lei dimostrata nel risolvere un problema di rilevanza sociale » –:

se le circostanze descritte rispondano a verità e, nell'ipotesi positiva, se gli interrogati ministri, ciascuno secondo le proprie competenze, non intendano adottare idonei provvedimenti, quali, ad esempio, richieste di chiarimenti agli uffici interessati. (4-13024)

ALFREDO GALASSO. — *Ai Ministri dell'interno, di grazia e giustizia e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

con delibera del consiglio comunale di Terracina del 12 aprile 1988 è stato approvato il progetto definitivo per il completamento e l'ampliamento di un impianto di depurazione già sito in via delle cave nello stesso comune;

l'ampliamento del descritto depuratore, che sorgeva in una zona assolutamente inadatta in prossimità di una zona abitata, e la relativa delibera sono state oggetto di censura da parte del TAR del Lazio – sezione di Latina che ne ha riconosciuto l'illegittimità;

l'organo di giustizia amministrativa ha, inoltre, riconosciuto che tutti (o quasi) i consiglieri intervenuti nella discussione che aveva portato all'adozione della citata

delibera erano consapevoli dell'inopportunità del progetto, adottato soltanto per scongiurare il pericolo di perdere un cospicuo (18 miliardi) finanziamento regionale);

malgrado ciò il sindaco della cittadina, il direttore dei lavori, l'appaltatore e il Presidente del Consorzio acquedotti, tratti in giudizio per omissioni di atti di ufficio, violazioni delle leggi urbanistiche ed altro, sono stati assolti dal Pretore di Terracina. Tale sentenza, impugnata dal pubblico ministero, è stata confermata anche dalla Corte di appello –:

se le circostanze narrate corrispondano a verità e, nell'ipotesi positiva, quali provvedimenti intendano adottare ciascuno nell'ambito delle proprie competenze, per ristabilire una legalità violata che ha dato origine ad un consistente danno ambientale ed alla salute dei cittadini. (4-13025)

ALFREDO GALASSO. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

la procura della Repubblica presso il tribunale di Vicenza è attualmente impegnata in alcune delicate inchieste, ed in particolare l'inchiesta sulle tangenti pagate a politici cittadini per l'accesso alle fiere cittadine dagli imprenditori espositori, inchiesta sulle assegnazioni da parte dell'Istituto autonomo case popolari, inchiesta sulle aziende municipalizzate;

in tutti i casi descritti titolare del procedimento è il sostituto procuratore della Repubblica dottor Antonino De Silvestri, l'operato del quale ha suscitato non poche perplessità in relazione alla divulgazione di tutti i particolari delle indagini su stampa e TV locali, comportamenti che mettono in serio pericolo la prosecuzione delle inchieste e denotano quantomeno scarso rispetto per il segreto istruttorio;

anche la camera penale vicentina ha stigmatizzato tale comportamento del giudice votando un ordine del giorno e rivolgendosi al procuratore capo;

i fatti e le circostanze descritte, soprattutto in un momento caratterizzato da grandi aspettative da parte dei cittadini sull'operato della magistratura, gettano, ad avviso dell'interrogante, pesanti ombre sulla persona del giudice e sul modo col quale amministra la giustizia;

della vicenda sono stati già investiti il CSM e il Ministero di grazia e giustizia con un esposto. Il procuratore generale di Venezia ha richiesto al procuratore capo di Vicenza una relazione dettagliata sui fatti esposti –:

quali provvedimenti intenda adottare nell'ambito delle proprie competenze, in relazione ai fatti narrati, ed in particolare se non ritenga opportuno disporre una ispezione da parte del Ministero. (4-13026)

ALFREDO GALASSO. — *Ai Ministri dei lavori pubblici, dell'interno e per i beni culturali e ambientali.* — Per sapere – premesso che:

con concessione edilizia n. 42 del 12 giugno 1991, ai sensi della legge n. 457 del 1978, il comune di Formia autorizzava lavori di ristrutturazione, recupero e restauro dell'*ex* cinema-teatro « Caposele » sito nello stesso comune;

tali lavori sono stati, però, realizzati in completo spregio alla citata normativa che consente anche sostanziali modifiche rispetto al precedente immobile, fermo restando i volumi, le superfici e i caratteri architettonici esistenti. Ed infatti, l'edificio preesistente è stato quasi totalmente demolito e sostituito da una enorme costruzione completamente nuova che insiste tra l'altro, su un sito di importante valore archeologico –:

se le circostanze narrate rispondano a verità e, in caso positivo, quali provvedimenti intendano adottare prima della conclusione dei lavori, anche per verificare la

conformità dell'opera alla concessione ed agli strumenti di tutela della zona. (4-13027)

PERANI. — *Al Ministro dell'agricoltura e delle foreste.* — Per sapere – premesso che:

la provincia di Mantova è stata recentemente colpita da inusuali gelate notturne primaverili che hanno quasi totalmente compromesso le colture appena seminate;

soprattutto e particolarmente le bietole ed i meloni, colture tipiche del territorio medio padano, hanno subito danni incalcolabili e gravi;

i produttori, che già versano in situazioni precarie per concomitanti difficili ragioni di mercato non sono in grado di sopportare il peso di ulteriori danni ancorché causati dalle avversità naturali –:

se si sia attivato con urgenza per dichiarare il territorio mantovano zona colpita da calamità e se abbia previsto conseguenti provvedimenti atti a risarcire e in parte compensare il danno registrato. (4-13028)

GAMBALE. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

attraverso dichiarazioni apparse sul quotidiano *La Repubblica* - Napoli, del 16 aprile 1993, il Presidente della Associazione nazionale magistrati di Napoli, G. Vacca, ha richiesto l'intervento del Ministro di grazia e giustizia per consentire la regolare celebrazione dei cosiddetti processi di Tangentopoli nella città di Napoli;

tra le carenze tecniche lamentate per gli uffici giudiziari partenopei, risaltano quelle del personale per l'orario supplementare straordinario, dei mezzi di informatizzazione, degli addetti alla stenotipia;

per quest'ultimo servizio risulta di recente assegnato un appalto dal costo elevatissimo, superiore ad ogni media nazionale, pur essendo alquanto contenuta l'entità della retribuzione corrisposta agli operatori –:

se s'intenda adottare provvedimenti per dare funzionalità ed efficienza, anche attraverso l'informatizzazione dei servizi e la previsione di straordinari, all'attività inquirente dei magistrati;

se e quali iniziative di protezione siano state predisposte per la tutela dei giudici impegnati nelle inchieste sugli intrecci politica-camorra, sulla riservatezza delle loro conversazioni ed attività, delle fonti di prova e dei fascicoli processuali in genere;

se non sembri opportuno verificare che effettivamente non sussista alcun tipo di volontà politica ostruzionistica nei confronti dell'azione della magistratura;

se s'intenda accertare la regolarità della procedura di assegnazione dell'appalto per il servizio di stenotipia e se nella gestione di esso siano state poste in essere condotte che appaiono all'autorità amministrativa penalmente rilevanti con particolare riferimento ad ipotesi di corruzione elettorale;

se s'intenda provvedere all'immediata ed efficiente ripresa del servizio in parola con costi in linea con le medie nazionali e privo di eventuali condizionamenti politico-camorristici, strumentalmente tesi ad impedire la celebrazione dei processi;

per quale motivo, quasi in concomitanza con la sospensione del servizio di stenotipia, si siano verificate agitazioni nel servizio di pulizia degli uffici. (4-13029)

PRATESI. — *Ai Ministri dell'interno e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

il giorno 4 aprile 1993, nel comune di Godega di Sant'Urbano (Treviso), la locale Associazione ornitologica venatoria ha organizzato, con il patrocinio del predetto comune e della provincia di Treviso, una gara canora con uccelli appartenenti a

specie protette come il Prispolone, tutelato da un D.P.C.M. del 1982 (c.d. decreto Spadolini) e dalla legge 157/92, ed il Fringuello, protetto da un'ordinanza dei ministri dell'ambiente e dell'agricoltura dell'11 dicembre 1992;

durante tale fiera, sei Guardie Giurate del WWF e tre della LIPU hanno effettuato regolari controlli ravvisando degli illeciti considerati reati dalla legge sulla caccia (la 157/92);

nell'espletare i loro compiti di controllo e di segnalazione degli illeciti le guardie sono state insultate ed aggredite dagli espositori e dalla folla e nel corso dei tafferugli due persone, tra cui un carabiniere, sono state medicate in ospedale per le contusioni riportate;

se i ministri interrogati non ritengano opportuno assumere le iniziative di competenza affiché siano cancellate le edizioni future della Fiera degli Osei, manifestazione che consente ad espositori senza scrupoli di detenere e commercializzare, addirittura con il patrocinio dello Stato, uccelli protetti dalla normativa italiana e comunitaria;

se non ritengano altresì opportuno garantire un efficiente servizio di vigilanza sul rispetto della legge sulla caccia o, comunque, assicurare l'incolumità delle guardie venatorie delle associazioni, che sono troppo spesso vittime di vergognose ed inaccettabili aggressioni fisiche e verbali nell'esercizio delle loro funzioni.

(4-13030)

SCALIA. — *Al Ministro per i beni culturali e ambientali.* — Per sapere – premesso che:

nella valle di Malafede, un'area situata tra Roma e il mare, imminenti progetti edilizi del comune di Roma, prevedono la realizzazione di oltre 1.700 mila metri cubi di cemento, che aumenterebbero la densità abitativa da 0 a 120 abitanti per ettaro, con la creazione di vani per 20 mila abitanti;

la valle di Malafede è di notevole importanza archeologica, paesistica e ambientale; l'area il 21 giugno 1991 fu vincolata ai sensi della legge 1089/39 in seguito a numerosi ritrovamenti archeologici effettuati dalla Soprintendenza Archeologica di Ostia e che successivamente all'emissione del vincolo il sottosegretario di Stato ai Beni culturali e ambientali G. Astori si pentì in un'intervista al « Mondo », di aver firmato il vincolo in quanto « aveva leso interessi democristiani ed in particolare di un noto andreottiano romano... » augurandosi che il TAR gli potesse dar torto. In data 5 marzo 1992 il Tar del Lazio annullò il vincolo;

la revoca del vincolo fu fortemente richiesta anche dall'ex assessore all'Urbanistica Antonio Gerace e dall'ex assessore Corrado Bernardo, entrambi del comune di Roma;

il sostituto procuratore della Repubblica di Roma Antonino Vinci ha chiesto il rinvio a giudizio per l'ex assessore Antonio Gerace, per violazione degli articoli 81 c.p.v. e 317 c.p. « per aver costretto l'architetto Gaetano Caltagirone a versargli una somma di 200 milioni di lire » per favorire la convenzione edilizia a Malafede;

recentemente, sempre a Malafede, è stato scoperto un imponente acquedotto romano di età Augustea, che conferma l'importanza archeologica della valle;

nella valle vi sono ampie zone umide frequentate da avifauna, tra cui si possono osservare gli aironi e a volte anche le cicogne;

i programmi edilizi, se portati a termine realizzerebbero un vero e proprio scempio ambientale e archeologico che non ha precedenti nella città –:

se non reputi opportuno, alla luce degli importantissimi ritrovamenti archeologici realizzati ultimamente e per meglio salvaguardare i valori naturalistici di quest'area, considerando anche gli ultimi avvenimenti giudiziari succitati, di dover vincolare, con urgenza, la valle di Mala-

fede ai sensi della legge 1089/39, della legge 1497/39 e della lettera *m)* della legge 431/85, con l'emissione di specifici decreti. (4-13031)

ORGIANA. — *Al Ministro per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso che:

il giorno di Pasqua il giovane cagliaritano Renzo Piras, durante una escursione nelle montagne di Villasimius (CA) precipitava in un burrone rimanendo gravemente ferito;

la zona particolarmente impervia non consentiva un agevole soccorso da terra, per cui si chiedeva l'immediato intervento della protezione civile al fine di garantire al ferito le opportune cure nel modo più adeguato e rapido possibile;

solo dopo diverse ore alcuni volenterosi, atteso invano l'arrivo di un elicottero, si addentravano nella foresta aprendosi la strada con delle roncole e trasportando a spalla il ferito fino alla strada dove era in attesa una ambulanza –:

dopo circa quaranta minuti l'arrivo in un ospedale del capoluogo dove purtroppo il giovane giungeva senza vita –:

se non ritenga opportuno aprire un'indagine al fine di appurare responsabilità sul mancato soccorso da parte delle autorità preposte;

se le cause del decesso, originate dalla gravità delle ferite, non siano da addebitare in larga misura alla mancanza di un tempestivo intervento;

quali iniziative intenda intraprendere perché non abbiano a ripetersi episodi di tale gravità e per una più attenta opera di prevenzione specialmente nelle zone di maggior afflusso turistico. (4-13032)

CACCAVARI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

Mario Tommasini, consigliere regionale dell'Emilia Romagna è da sempre impegnato in prima persona nella difesa dei più deboli con un ruolo di primo piano nel movimento emancipazionista europeo. Testimonianza della sua grande umanità sono i molti riconoscimenti che gli sono giunti (come il premio Schweitzer e il premio S. Ilario) quando come Assessore provinciale lottò per la liberalizzazione dei manicomi, come Assessore comunale a fianco dei più bisognosi, come impegno civile nel volontariato;

nel 1983 Mario Tommasini ha dato inizio ad una intensa attività di promozione umana e sociale nel carcere circondariale di Parma. Con il convegno « Liberarsi dalla necessità del carcere » ha segnato per tutto il paese l'inizio di un nuovo modo di essere fra volontariato e amministrazione penitenziale;

da oltre 10 anni, a Parma e non solo, decine e decine di detenuti hanno potuto usufruire dei benefici previsti dalle leggi vigenti con l'apporto determinante delle cooperative di solidarietà sociale di cui Tommasini è ispiratore e animatore;

questo movimento, sorto su temi di grande rilevanza umana e sociale, ha dato luogo alla formazione di una cultura sviluppatasi in armonia con le linee del Ministero di grazia e giustizia e del direttore degli Istituti di Pena Nicolò Amato;

è evidente che la situazione attuale di sovraffollamento e promiscuità incontrollabile presente nelle carceri, sta determinando un aumento delle sofferenze e dell'emarginazione di un'ampia fascia di detenuti e in particolare dei tossicodipendenti;

di fronte a tale situazione è fortemente auspicabile che si intensifichi il rapporto tra istituzione carceraria e società civile, nelle diverse articolazioni istituzionali e del volontariato;

mentre in tutte le carceri dell'Emilia Romagna si favorisce e si rafforza il rapporto tra istituzione carceraria e società civile, a Parma sembrano accadere fatti

contrastanti con la tradizione di collaborazione avviata e sostenuta dal consigliere Tommassini –:

le ragioni per le quali un consigliere regionale non possa parlare durante la visita ai detenuti dovendosi limitare solo ad osservare, impedendo quel contatto e le informazioni utili a costruire collaborazioni efficaci e positive nell'interesse dei detenuti e di tutto il personale impiegato nel carcere di Parma. (4-13033)

GAETANO COLUCCI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il comune di Salerno ha annunciato che per ben sette giorni consecutivi in buona parte della città ed in alcuni centri limitrofi sarà completamente sospesa l'erogazione di acqua per urgenti lavori che interesseranno gli acquedotti che servono Salerno;

a prescindere da ogni considerazione tecnica sulla opportunità di adottare una decisione di tale gravità e sulla possibilità di studiare misure alternative a tale provvedimento che ha già ingenerato nei cittadini salernitani comprensibile preoccupazione –:

1) se siano state tempestivamente previste tutte le misure realmente idonee a soddisfare, in via di emergenza, le necessità primarie dei numerosissimi cittadini interessati dall'interruzione idrica e quali siano stati i criteri prescelti nella individuazione degli stessi;

2) in particolare quali provvedimenti si intendano adottare per evitare che l'attività di numerosi esercizi pubblici (ristoranti, bar, barbieri, parrucchieri, eccetera) venga interrotta o ostacolata con conseguente grave pregiudizio economico;

3) se sia già pervenuta notizia in merito ad arbitrari ed ingiustificati aumenti, anche in misura considerevole, dei costi dell'acqua minerale, delle taniche, dei piatti e delle posate in plastica e se non si ritenga opportuno intensificare, nei prossimi giorni, i controlli per individuare e punire eventuali tentativi di sciacallaggio. (4-13034)

PASSIGLI. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per conoscere, viste le dichiarazioni fatte dal Ministro della pubblica istruzione circa la scarsa qualità dei corsi per la preparazione degli insegnanti di sostegno, apparse su *La Repubblica* il 14 gennaio 1993:

quali siano i motivi che hanno indotto lo stesso Ministro a bloccare le autorizzazioni a corsi di questo genere;

se non ritenga necessario procedere ad un'indagine conoscitiva sul rilascio delle autorizzazioni e sulla gestione dei corsi in modo da appurare quali siano i corsi degni di avere l'autorizzazione dal Ministero;

come intenda procedere per garantire e migliorare questo servizio. (4-13035)

PECORARO SCANIO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

nei giorni scorsi, a Napoli, sono state trafugate due statue del '700 dalla seicentesca Villa Belvedere, situata nel quartiere Vomero;

nella stessa villa sono presenti importanti affreschi del pittore Luca Giordano;

questo non è che l'ultimo dei molti episodi di furti d'opere d'arte occorsi alla città di Napoli –:

quali provvedimenti la competente sovrintendenza abbia adottato o intenda adottare per una migliore salvaguardia e tutela dei beni artistici e culturali di Napoli e provincia, già di per sé lasciati irresponsabilmente all'incuria del tempo e degli uomini. (4-13036)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

come possa essere possibile l'accusa contro il dottor Corrado Carnevale, già presidente della prima sezione penale della Corte di cassazione (che anche oggi si ha notizia, pur senza Carnevale aver annullato l'accusa del PM di Reggio Emilia per i politici accusati di esser mandanti dell'omicidio Ligato) quanto è noto che la prima sezione della Cassazione, come ogni sezione di quella corte suprema, opera, agisce e decide sulla base collegiale di cinque membri;

se non sia vero che in Cassazione non può essere rilevata alcuna eccezione se non riportata dopo eccezione respinta in primo grado, riportata nei motivi di appello e respinta in secondo grado? E riportata ancora nel ricorso di legittimità avanti la Cassazione;

se non sia vero che il giudizio in Cassazione è preso collegialmente e che anche in quella sede può essere eccepito il dissenso, e se risulti che mai sia stato fatto da qualche consigliere della prima sezione durante le decisioni prese sotto la presidenza del consigliere dottor Corrado Carnevale;

se sia stata controllata la responsabilità dei PM, dei giudici istruttori, dei GIP, dei giudici del tribunale e delle Corti d'appello, che non hanno rilevato le eccepite fondate eccezioni, pur eccepite se poi hanno avuto rilievo in Cassazione;

se siano state fatte indagini sui responsabili delle nullità verificatesi in quei processi in istruttoria, nelle indagini, nei giudizi di merito, se è vero come è vero che un PM pur « schierato » contro la mafia sia arrivato al suicidio non appena avuto notizia di essere « indagato » per le sue responsabilità proprio in merito a quanto sopra esposto;

se, in merito, siano continuate le indagini, ispezioni e inchieste che si annunciavano, prima di quel giudizio « eccellente » e se, in merito siano in atto indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e doverosamente reprimere anche le responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi, omissioni, anche negli obblighi di controllo, o errori, con danno dell'erario o dei cittadini, addebitabili a pubblici funzionari, siano essi onorari (come ministri e sottosegretari), ovvero di carriera (come direttori generali, dirigenti di uffici pubblici ovvero anche magistrati);

se risulti che in merito il Consiglio superiore della magistratura abbia in corso azioni disciplinari ovvero anche attività ispettiva e indagini in genere. (4-13037)

SILVIO MANTOVANI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il signor Cherubini Baldo è titolare di assegno di invalidità dal 1° novembre 1984, in quanto cieco civile di seconda categoria con l'80 per cento di invalidità;

all'approvazione della prima scadenza triennale dell'assegno nel 1987 la Direzione INPS provinciale ha regolarmente comunicato al signor Cherubini la prossima scadenza; di conseguenza il Cherubini ha presentato domanda ed ottenuto il rinnovo dell'assegno;

alla successiva scadenza triennale dell'assegno la Direzione INPS ha omesso di avvertire il Cherubini, pare per un errore dell'apparato informatico; di conseguenza il Cherubini, al quale era stato raccomandato di attendere la comunicazione, ha omesso di presentare domanda di rinnovo e ha continuato a percepire regolarmente l'assegno;

successivamente con lettera del 9 giugno 1992 l'INPS ha comunicato al Cherubini che, avendo mancato di richiedere il rinnovo, non risultava più titolare dell'assegno ed anzi avrebbe dovuto restituire quanto riscosso indebitamente tra il 1990 e il 1992, più di 10 milioni di lire;

al Cherubini, peraltro, padre di tre figli e marito di una casalinga, è stato naturalmente riconosciuto il permanere dello stato di invalidità;

un ricorso è pendente presso gli organi preposti dell'INPS –:

quali iniziative intenda assumere per verificare le cause di un così spiacevole incidente per rimuoverne le conseguenze e per impedire che incidenti simili possano ripetersi recando danno economico ed inquietudine a famiglie di lavoratori già provati della loro condizione di invalidità. (4-13038)

PIVETTI. — *Al Ministro per gli affari sociali.* — Per sapere – premesso che:

nel centro di prima accoglienza di via Corelli a Milano si è instaurato un clima di illegalità e intimidazione ad opera di ben individuati gruppi di immigrati dediti alla delinquenza abituale;

tali gruppi esercitano le loro attività criminose anche nelle zone limitrofe al centro di accoglienza, diventato un vero focolaio di criminalità;

in detto centro la grande maggioranza degli ospiti non rispetta il termine massimo di permanenza, fissato in mesi sei;

le continue sopraffazioni verificatesi nel centro dissuadono molti immigrati che svolgono regolare attività lavorativa a utilizzare la struttura, per il timore di subire vere e proprie forme di taglieggiamento;

il criterio di accoglienza dovrebbe essere impostato su base multi-etnica, ma la totalità degli ospiti è di origine araba, venendo allontanati gli appartenenti ad altre etnie;

le autorità preposte alla sorveglianza hanno dimostrato la loro incapacità di assicurare il regolare funzionamento della struttura, la vigilanza sui permessi di soggiorno e l'applicazione delle misure di espulsione –:

se alla luce di situazioni quali quella di via Corelli il Ministro non ritenga fallimentare l'esperienza dei centri di prima accoglienza e moralmente inaccettabile un metodo di accoglienza basato su strutture ghettizzanti;

se, per i succitati motivi, non intenda ammettere l'impossibilità di dare attuazione a quanto disposto dalla legge Martelli in materia di integrazione degli immigrati extracomunitari. (4-13039)

RIGO. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

la Giunta regionale del Veneto con provvedimento del 23 novembre 1989 approva il programma di un corso straordinario di qualificazione per ausiliari socio-sanitari specializzati, teso a reperire il personale indispensabile a tamponare l'emergenza infermieristica, sollevando gli I.P. dalle incombenze non direttamente legate alla cura;

per l'acquisizione del titolo di Ausiliario Socio-Sanitario specializzato, il D.M. del 15 giugno 1987, n. 590, prevedeva corsi articolati in 200 ore di tirocinio e 110 ore di teoria per complessive 310 ore;

il corso regionale veniva regolamentato con l'ottica rivolta al già ipotizzato Operatore Tecnico Addetto all'Assistenza, prevedendo 400 ore per tirocinio ed esercitazioni e 250 ore per teoria e verifica per complessive 650 ore;

effettivamente i requisiti richiesti per l'acquisizione del titolo di Operatore Tecnico Addetto all'Assistenza, di cui al decreto del Presidente della Repubblica 384/90 articolo 40 e D.M. 26 luglio 1991, n. 295, confermano quasi in toto i criteri e le condizioni fissate per il titolo di Ausiliario Socio-Sanitario Specializzato di cui in premessa, prevedendo un percorso formativo e una verifica finale pressoché uguali;

per il combinato disposto del decreto del Presidente della Repubblica 384/90 articolo 40 e D.M. 26 luglio 1991 gli

Ausiliari Socio-Sanitari Specializzati, di cui al corso regionale in premessa, si vedono di fatto annullato il titolo conseguito in quanto inutilizzabile per assunzioni sia nel pubblico come nel privato;

si richiama l'attenzione sull'indirizzo fin qui assunto dalla normativa teso a riconoscere i percorsi formativi pregressi e precisamente:

*a)* D.M. 15 giugno 1987, n. 590, articolo 9 che prevedeva la possibilità di riconoscimento dei corsi di Ausiliario Socio-Sanitario Specializzato, istituiti dalle regioni, i cui contenuti fossero analoghi a quelli del provvedimento stesso;

*b)* D.M. 26 luglio 1991, n. 295, articolo 8 che prevede la riduzione del percorso formativo per i già dipendenti del S.S.N. con titolo di Ausiliario Socio-Sanitario Specializzato acquisito sulla base del D.M. 15 giugno 1987, n. 590 –:

se non ritenga opportuna e doverosa l'equiparazione del titolo rilasciato a conclusione del corso regionale di cui in premessa, con il titolo di Operatore Tecnico Addetto all'Assistenza. (4-13040)

MACERATINI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso:

che il giorno 30 dicembre 1992 è stato firmato il decreto legislativo n. 541, pubblicato sulla *Gazzetta Ufficiale* l'11 gennaio 1993, contenente norme per l'attività professionale degli informatori scientifici del farmaco;

che in detto decreto è prevista l'obbligatorietà, per poter esercitare detta professione, dei seguenti titoli di studio: laurea in chimica, laurea in chimica e tecnologia farmaceuti che, laurea in farmacia, laurea in medicina e chirurgia, laurea in scienze biologiche;

che nell'articolo 14 è prevista l'istituzione, presso ogni impresa farmaceutica, di un « servizio scientifico » incaricato dell'informazione sui medicinali immessi sul mercato; servizio dal quale devono dipendere gli informatori scientifici dal 1° luglio 1993;

che tale provvedimento determina una grave e ingiustificata ingiustizia, perché senza ragione alcuna vengono discriminati i titolari di lauree in chimica ed in scienze biologiche che non hanno certamente nulla a che invidiare, quanto a preparazione scientifica, cultura di base, nozioni necessarie e sufficienti, ai titolari delle lauree previste dal decreto in questione nel citato articolo 14 per il « servizio scientifico » –:

quali motivazioni il Governo adduca per giustificare che a dirigere tale servizio siano abilitati soltanto i titolari della laurea in farmacia, chimica e tecnologia farmaceutiche, medicina e chirurgia. (4-13041)

GASPARRI. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso:

che nel 1991 fu varato un decreto del Presidente della Repubblica con il quale veniva istituita a Roma la Terza università, le cui attività sono state avviate tra enormi difficoltà da sei mesi;

che tale decisione fu presa per la crescita del numero degli iscritti dell'ateneo « La Sapienza », giunto a quota 180 mila;

che presso « La Sapienza » esisteva la facoltà di Magistero con circa 20 mila iscritti, 14 mila dei quali presso i corsi di laurea in sociologia e psicologia e 6 mila presso gli altri corsi di laurea (materie letterarie, lingue e pedagogia);

che nel piano triennale 1990-1993 « La Sapienza » fece inserire la proposta di scorporo dal Magistero del corso di laurea in sociologia, da trasformare in facoltà autonoma, mentre il Magistero « ridimensionato » doveva diventare la seconda facoltà di Lettere de « La Sapienza »;

che tale ipotesi sembrava rispondere alle esigenze del professor Statera, personaggio di spicco del corso di laurea in sociologia e notoriamente legato al PSI, come l'allora ministro dell'università Ruberti;

che il ministro dell'epoca avrebbe convocato banche e imprese di costruzione, per prospettare l'ipotesi di affitto di fabbricati, con relative strutture e attrezzature per l'arredamento, da edificare sul terreno del Valco San Paolo, situato nella zona della Magliana e noto per il suo degrado, dovuto anche al fatto che tale terreno si trova al disotto del livello del Tevere, che scorre a pochi metri di distanza;

che tale accordo prevedeva il cambio di destinazione d'uso del terreno;

che chiunque potrebbe rilevare la inidoneità della zona ad insediamenti universitari o di altro genere, poiché soggetta ad allagamenti in caso di pioggia, frequentata da campi nomadi, lontana da qualsiasi mezzo pubblico, difficile da raggiungere poiché collegata solo da viottoli bui, insicuri e poco frequentati;

che il Ministro dell'università comunque decise di istituire presso l'ateneo « La Sapienza » (prima università di Roma) la facoltà autonoma di psicologia, per assecondare i progetti del socialista Statera, mentre gli altri corsi del Magistero (materie letterarie, lingue e pedagogia) per un totale di 6 mila iscritti furono trasferiti alla costituenda terza università, come facoltà di lettere (la quarta esistente nella capitale nei diversi atenei), con prospettive assolutamente incerte vista la disastrosa scelta per collocazione al Valco San Paolo;

che tali decisioni sono state formalizzate con il decreto del Presidente della Repubblica del 28 ottobre 1991 (*Gazzetta Ufficiale* del 31 ottobre 1991) che ha approvato il piano triennale per lo sviluppo delle università 1991-1993;

che all'articolo 7 di tale decreto del Presidente della Repubblica è prevista la costituzione della terza università di Roma, e al secondo comma e al quinto comma è prevista in tale ateneo l'istituzione della facoltà di lettere per lo scorporo dai « corsi di laurea attualmente funzionanti presso la facoltà di Magistero della Sapienza che viene soppressa a partire dal primo novembre 1992 »;

che in base a tali decisioni è stato stabilito di fatto il trasferimento d'ufficio al terzo ateneo dei docenti, in palese contrasto con i principi dettati dalla Costituzione e dalla legge n. 382 del 1980;

che nulla è stato previsto nel decreto del Presidente della Repubblica e nel decreto ministeriale applicativo del 29 ottobre 1991 per gli studenti già iscritti, con una notevole confusione, poiché la soppressa facoltà di Magistero rappresentava l'unico sbocco universitario per gli studenti che avessero conseguito il diploma degli istituti magistrali con un corso di quattro anni si studio, mentre per ogni altra facoltà è necessario un diploma conseguito in un quinquennio;

che un decreto del Rettore della Sapienza, Tecce, del 1° giugno 1992 prevede all'articolo 3 che gli studenti iscritti ai corsi di laurea del Magistero prima della entrata in vigore del decreto stesso continuano nei loro studi fino al completamento, facendo sì che le segreterie dell'università hanno accettato immatricolazioni al secondo, terzo e quarto anno dei corsi di laurea del Magistero, che è stato soppresso, di studenti con diploma quadriennale, il che potrebbe portare a due conseguenze: 1) questi studenti sono stati iscritti alla nuova facoltà di lettere della terza università, benché in possesso di un diploma quadriennale che dovrebbe impedire tale iscrizione; 2) sono stati iscritti al Magistero che però per legge non esiste più;

che tali studenti rischiano di vedersi contestata la validità legale del loro diploma di laurea, perché conseguito dopo l'iscrizione irregolare ad una facoltà universitaria che richiede un diploma quinquennale non in loro possesso;

che tali studenti sono stati trasferiti di ufficio, come i docenti, presso la terza

università, senza poter effettuare una libera scelta;

che vi sono dubbi circa il « gonfiamento » delle iscrizioni da parte dei cattolici popolari in vista delle elezioni studentesche per i rappresentanti nel consiglio di amministrazione del nuovo ateneo —:

se tra le ditte contattate dal Ministero per l'affitto di locali da destinare all'università vi siano state Salini, Berlusconi e Cogefar;

se risulti che all'operazione siano stati interessati gli ex assessori del comune di Roma, Gerace e Angelè e i cattolici popolari;

se risponda al vero che gli ambienti democristiani e cattolico-popolari dopo una prima opposizione al progetto Valco San Paolo per la terza università, gradito agli ambienti socialisti, si siano convertiti anch'essi a questa ipotesi, con prese di posizione in tale senso di Aldo Rivela, esponente del Movimento popolare che ha ricoperto importanti incarichi nell'amministrazione dell'università di Roma;

se risulti a quanto ammonti la spesa per l'affitto della palazzina dove ha avuto sede il rettorato della terza università in via Segre e dove ora hanno sede le facoltà di scienze, ingegneria ed economia e commercio, per la quale sarebbe pagato un ingente canone;

se risulti a quanti miliardi annui ammonti il canone di affitto pagato dalla terza università alla impresa Salini per un capannone fatiscente e inutilizzabile, adibito un tempo a fabbrica di paracadute, che secondo autorevoli esperti non è ristrutturabile in alcun modo, anche per la sua collocazione nella zona Valco San Paolo al di sotto del livello del Tevere;

se risulti a quanto ammonti il canone di affitto della palazzina di tre piani sita in via Ostiense ed utilizzata dalla terza università;

se risponda al vero e nel caso le cifre sembrino congrue, che al preside di architettura della Sapienza, architetto Docci, sia stata pagata una parcdella di lire 700 milioni quale rimborso spese per le sue progettazioni nel campo edilizio in favore della terza università (reperimento di locali per affitti, modellino del futuro ateneo, ecc.);

a quanto ammonti la spesa per la redazione e la stampa di un volume curato dallo stesso Docci e da alcuni suoi collaboratori sugli studi territoriali ed edilizi per la terza università;

quale sia stato nella vicenda il ruolo dell'ingegner Massacci, presidente della commissione bilancio della Sapienza;

se risponda al vero che alcuni docenti del Magistero abbiano segnalato al Docci, a Tecce e al preside di magistero, Belardinelli, la possibilità di utilizzare un grandissimo palazzo della zona Eur Laurentina nei pressi della stazione della metropolitana, sequestrato dal comune per abuso edilizio e quindi teoricamente destinabile a scopi di pubblica utilità a costo zero anziché alla demolizione;

se risponda al vero che la risposta degli interessati fu l'invito molto brusco ai docenti stessi di non interferire nelle scelte che si andavano compiendo, ad avviso dell'interrogante con grandissimi sperperi di fondi pubblici;

se risponda al vero che il rettore della terza università, Biancamaria Tedeschini Lalli, sia stata, per 25 anni, coordinatrice del comitato tecnico per l'università della Somalia, che il pro-rettore, Furlani, sia stato per molti anni docente nell'università della Somalia, che molti esponenti della terza università, tra i quali i professori Puglielli, Ambroso, Palma, Puja, Tessitore, Bandiera, La Salvia, Scacchi, siano stati per molto tempo in servizio presso l'università della Somalia;

quali siano state le prospettive per questo ateneo fantasma;

quanto sia stato complessivamente speso in questi mesi per tutte le attività connesse alla terza università;

quanti siano gli iscritti, divisi per facoltà, quanti siano i docenti e a quante unità ammonti il personale di vario livello. (4-13042)

PAPPALARDO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

due dirigenti della sede romana dell'Associazione professionale polizia municipale d'Italia (ANVU), Fanella Antonio e Fiordalice Roberto, sarebbero stati oggetto di contestazione disciplinare da parte dell'Amministrazione comunale, asseritamente per aver rilasciato – senza autorizzazione – un'intervista a un giornalista di un quotidiano della capitale;

nel corso di tale intervista, i predetti avrebbero denunciato, tra l'altro, alcune carenze, dal punto di vista operativo, funzionale e igienico-sanitario, riferite ai locali che ospitano alcune sedi dei gruppi del Corpo di polizia municipale di Roma;

il fatto sarebbe avvenuto in un momento in cui gli stessi erano svincolati da ogni gerarchia e subordinazione nei confronti del Corpo della polizia municipale e dell'amministratore comunale, essendo liberi dal servizio, e nell'unico *status* di responsabili locali dell'ANVU;

in particolare al Fanella sarebbe stato contestato di aver introdotto un giornalista presso i locali che ospitano il III Gruppo polizia municipale, presso il cimitero del Verano di Roma;

quest'ultimo addebito sarebbe del tutto ingiustificato, atteso che lo stesso Fanella ed il giornalista avrebbero visionato i locali trattenendosi al di fuori di essi, sui vialetti di passaggio riservati al pubblico che accede al cimitero;

tale versione potrebbe essere confermata anche dal giornalista interessato;

nel corso dell'intervista non sarebbero stati svelati segreti d'ufficio ma si sarebbe parlato solamente di problemi di carattere generale, al solo scopo di stimolare le competenti autorità a prendere i dovuti provvedimenti per porre il personale nelle migliori condizioni logistiche e infrastrutturali onde svolgere meglio i propri compiti, nell'esclusivo interesse del Corpo;

dopo alcuni giorni il comandante del Corpo avrebbe pretestuosamente contestato al Fanella degli addebiti, per non aver indossato nel corso del servizio il berretto d'ordinanza e per essersi presentato non curato nella persona e nell'uniforme;

a nulla sarebbero valse le giustificazioni dello stesso Fanella, il quale nella circostanza avrebbe rappresentato di aver chiesto da mesi, a chi di competenza, la sostituzione di alcuni capi di vestiario-uniforme, berretto compreso (dei quali era prevista per regolamento la sostituzione), ottenendo per risposta che la richiesta non poteva essere accolta per indisponibilità del materiale;

una dettagliata lettera su quanto sopra, avente protocollo 774/92-DS-I-C, sarebbe stata inviata in data 15 luglio 1992 oltre che ai Presidenti della Repubblica, del Consiglio dei ministri, della Corte costituzionale e della Commissione affari costituzionali, anche al Ministro dell'interno, al Prefetto, al Procuratore generale della Repubblica ed al Sindaco di Roma –:

se quanto sopra riportato risponde a verità;

quali siano i motivi per i quali l'Associazione professionale polizia municipale d'Italia non avrebbe una precisa collocazione giuridica, pur avendo la stessa natura giuridica dei partiti politici e di altri organismi che operano a tutela dei diritti di categoria e sono portatori di interessi diffusi;

se risulti quali siano i provvedimenti eventualmente adottati dalle competenti autorità, destinatarie della lettera sopra citata, per eliminare le carenze segnalate nell'articolo di stampa;

se i provvedimenti di carattere disciplinare a carico dei due responsabili del-

l'ANVU sono stati o meno revocati, atteso che i medesimi hanno agito, come loro diritto, quali rappresentanti, a tutela della propria categoria, senza arrecare offesa al decoro del Corpo, né denigrazione;

se non si ritenga, infine, che un simile comportamento nei riguardi di tale categoria, possa far sorgere legittimo il sospetto di un atteggiamento persecutorio ed intimidatorio da parte dell'Amministrazione di appartenenza. (4-13043)

GIANMARCO MANCINI. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

a Lampedusa, nell'arcipelago delle Egadi, a 30 metri dalla famosissima battigia della spiaggia dei conigli – zona particolarmente importante dal punto di vista naturalistico e dove, in particolare, vanno a deporre le uova le tartarughe « Caretta caretta », specie in via di estinzione in Europa – sorge una villa costruita in evidente spregio della tutela dell'ambiente circostante;

secondo quanto risulta all'interrogante la costruzione sarebbe di proprietà del cantante ed ex-parlamentare Domenico Modugno, iscritto al partito radicale, eletto nell'87 alla Camera per la lista radicale e candidatosi nelle elezioni dello scorso anno nella lista dei verdi –:

se corrisponda la vero la notizia circa l'eventuale proprietario;

se risulti che la villa in questione sia stata edificata in presenza delle necessarie autorizzazioni e concessioni oppure se risulti abbia beneficiato di condono edilizio relativo a costruzione abusiva e non rispettosa della salvaguardia ambientale del territorio;

se risulti che la villa in questione e il relativo terreno siano stati acquistati dal relativo proprietario dopo l'edificazione. (4-13044)

TASSONE. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se sia a conoscenza del fatto che, per la particolare posizione geografica della sezione distaccata della pretura di Pantelleria, collegata quotidianamente al resto del territorio della Repubblica unicamente da un volo di linea aerea, al direttore di cancelleria Crivello dottor Sebastiano – ivi trasferito d'ufficio, per incompatibilità ambientale, dal tribunale di Trapani – non è consentito, in costanza di rapporto di servizio, allontanarsi dal territorio comunale, alla stregua di sottoposto a soggiorno obbligato;

se non ritenga che la motivazione della incompatibilità ambientale con la precedente sede di servizio (Trapani), opposta alla richiesta di trasferimento avanzata dal dottor Crivello per la sezione distaccata di pretura di Alcamo – presentata in data 6 febbraio 1992 e rinnovata in data 14 febbraio 1992, a seguito di apposito interpello ministeriale, finalizzato alla ricerca di un volontario per la copertura della sede vacante di Alcamo – ad oltre un anno di distanza dall'allontanamento dalla originaria sede, costituisca distorsione applicativa dell'istituto giuridico del trasferimento d'uffico per incompatibilità ambientale, utilizzato con fini punitivi, non consentiti dal vigente ordinamento;

quali provvedimenti intenda adottare per sottrarre il direttore di cancelleria Crivello dottor Sebastiano al comportamento persecutorio adottato in suo danno e quali a carico dei responsabili degli abusi denunciati, sia in ordine alla destinazione d'ufficio in sede che per la posizione geografica e la insufficienza di collegamenti con servizi di trasporto di linea, può essere assegnata solo su espresso gradimento dell'interessato, che in ordine al rifiuto opposto alle reiterate istanze di trasferimento dell'interessato, assistito da legittima aspettativa a seguito dell'iterpello ministeriale, che equivale a pubblico concorso.

Deve aggiungersi, infine, che – come rappresentato alla dottoressa Flora Fanara,

direttrice dell'ufficio ministeriale *ad hoc*, con fax n. 54 prot. dell'ANDIG-DIRSTAT, in data 3 marzo 1993 – ad eventuali reali esigenze d'uffico per la sede di Pantelleria, in mancanza di personale volontario, l'amministrazione è legittimata a provvedere unicamente utilizzando l'istituto dell'applicazione continua e con criterio di avvicendamento a breve periodo, consentito dall'articolo 75 della legge 23 ottobre 1960, n. 1196. (4-13045)

LA PENNA. — *Ai Ministri di grazia e giustizia, dell'interno e della difesa.* — Per sapere – premesso che:

nella mattina di venerdì 2 aprile scorso il Colonnello dei Carabinieri Borchi, Comandante della Polizia Giudiziaria di Campobasso, ha comunicato ai rappresentanti del TG3 Molise, delle televisioni private di Campobasso (*Telemolise* e *Teleradio Campobasso*) e al giornale « *Roma* », che la Procura della Repubblica di Campobasso aveva inviato informazioni di garanzia all'imprenditore Morelli e all'interrogante precisando i capi di accusa;

se ritengano che nella generale inosservanza del segreto istruttorio dilagante in tutto il Paese, e di recente deplorata pubblicamente anche dal Presidente della Repubblica, si possa tollerare che il più alto rappresentante della polizia giudiziaria nella regione Molise, si impegni personalmente in azioni che costituiscono illecito in quanto violazioni del segreto istruttorio e le attui ostentando sicurezza di impunità;

quali iniziative e provvedimenti intendano adottare in riferimento alle rispettive competenze. (4-13046)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri della difesa, dell'interno, dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

come mai al distretto militare di Piacenza non sia applicata la norma di bando della chiamata alle armi che prevede la: « Assegnazione in sedi desiderate per gli arruolati interessati alla chiamata alle armi dell'anno 1993 ... per i frequentatori del dottorato di ricerca o di corso di specializzazione postlaurea ». Infatti a Piacenza non viene mandato a Pavia un laureato che sta seguendo il corso di dottorato in quella città universitaria, nonostante abbia fatto regolare domanda con la conseguenza di fargli perdere il corso;

come possa accadere che i responsabili dei distretti militari non applichino proprio le norme dei bandi di chiamata alle armi;

se, anche per avere i propri diritti, i cittadini, pur chiamati alle armi e arruolati, devono avere la solita raccomandazione;

come mai si possa verificare un caso come quello qui segnalato;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale preso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi di controllo, addebitati o addebitabili a pubblici ufficiali siano essi di carriera come responsabili di distretti militari ovvero onorari come ministri o sottosegretari. (4-13047)

LATRONICO. — *Al Ministro dell'agricultura e delle foreste.* — Per sapere – premesso:

che in data 5 febbraio 1992, la Repubblica Italiana si è dotata della legge n. 169 sulla denominazione d'origine degli oli di oliva vergini ed extra vergini;

che si prende atto della validità di questa legge per la valorizzazione della tipicità degli oli e quindi per l'economia olivicola nazionale e tenuto conto anche dei riflessi positivi che la stessa potrà

avere sugli aspetti ambientali e idrogeologici delle zone montane tipiche di alcune regioni;

che i decreti ministeriali di attuazione relativi all'articolo 17 « istituzione dell'Albo nazionale degli assaggiatori di olio di oliva » ha trovato rapida applicazione da parte del Ministero dell'agricoltura e delle foreste e altrettanto è avvenuto per l'articolo 14 circa l'istituzione del Comitato nazionale per la tutela delle D.O.C.;

che comunque entro 90 giorni dall'approvazione il Ministero dell'agricoltura e delle foreste ai sensi dell'articolo 34 della normativa avrebbe dovuto emanare il decreto ministeriale per le norme di attuazione, strumento indispensabile per l'avvio delle pratiche di riconoscimento dei disciplinari D.O.C. da adottare nel rispetto dell'articolo 17, comma 3 della legge n. 400 del 23 agosto 1988;

che si constata come i funzionari del Ministero dell'agricoltura e delle foreste hanno sottoposto in visione critica e parere una bozza del decreto stesso alle organizzazioni dei produttori olivicoli accreditate, nonché alle camere di commercio rappresentate dalla Unioncamere nazionale negli ultimi mesi del 1992 e di cui posso fornire fotocopia –:

*a)* se ad oggi il decreto ministeriale di cui all'articolo 34 sia già stato firmato dal Ministro;

*b)* in caso di risposta negativa, dovi si trovi « bloccato » in questo momento il decreto;

*c)* se non ritenga di condividere l'opinione dell'interrogante che, data la presenza di un termine fissato dalla legge per l'emanazione del decreto, la sua elusione potrebbe costituire una omissione di atti d'ufficio. (4-13048)

RUSSO SPENA. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere:

se sia vera la notizia risultante all'interrogante che nel luglio 1991 l'allora preside di scienze politiche dell'università di Teramo Giuseppe Venanzoni avrebbe presentato al consiglio di facoltà come regolare la domanda di supplenza di un docente non di ruolo, Lamberto Mercuri, pur essendo la stessa illegittima ai sensi della legge n. 382. E ove fosse vera, quali siano stati i reali motivi che avrebbero indotto Venanzoni e Mercuri a commettere tali illegittimità;

se sia al corrente che nella facoltà di scienze politiche dell'università G. D'Annunzio di Teramo una materia del Programma di studi, Storia ed Istituzioni dei paesi afroasiatici, non è stata ancora attivata con un regolare corso, nonostante una domanda di supplenza ristagni negli uffici di presidenza fin dal 29 dicembre 1992. E cosa ritiene si debba fare di fronte a questa che l'interrogante considera una omissione d'atti d'ufficio che lede peraltro i diritti degli studenti, impossibilitati a svolgere l'esame relativo nella prossima sessione estiva;

se sia vera la notizia risultante all'interrogante che il 12 dicembre 1992 il preside della facoltà di scienze politiche professor Francesco Zaccaria sarebbe stato relatore alla tesi di laurea di una studentessa della quale è, ed era anche in quel momento, fidanzato, e con cui sarebbe in procinto di unirsi in matrimonio l'8 maggio prossimo; se sia vero che per la stessa tesi di laurea il professor Zaccaria sarebbe stato anche presidente della commissione giudicatrice; se sia vero che nell'occasione sarebbero stati conferiti alla suddetta studentessa 110 punti e lode, con un avanzamento di ben 14 punti rispetto alla media. E ove quanto sopra ipotizzato fosse vero in tutto o in parte, se ritiene che questo comportamento sia legale e rispettoso della deontologia accademica di una università di Stato, quale la G. D'Annunzio è, e quali iniziative di competenza ritenga di assumere al riguardo. (4-13049)

NUCCIO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

con precedente interrogazione n. 4-05678 il sottoscritto, unitamente agli ono-

revoli Orlando e Novelli, chiedeva se il Governo era a conoscenza dell'uso irregolare fatto degli operai della forestale durante le ultime consultazioni elettorali per il rinnovo della Camera dei deputati e dell'assemblea regionale siciliana;

in dette interrogazioni si segnalava il fatto, denunciato da più parti, che dipendenti della forestale erano stati adoperati per scopi di propaganda personale di due candidati, l'onorevole Calogero Corrao e il consigliere regionale Nicolò Nicolosi, eletti poi rispettivamente deputato alla Camera e consigliere regionale all'ARS, e che operai forestali ufficialmente utilizzati a presidio dei seggi, svolgessero in realtà attività di propaganda;

a quella interrogazione il Ministro interrogato rispondeva che era possibile « escludere il coinvolgimento elettorale durante i servizi di ordine pubblico » di detti operai forestali;

in data 6 aprile 1993 il consigliere regionale Nicolò Nicolosi è stato arrestato per avere illegittimamente utilizzato operai forestali durante la propria campagna elettorale; avviso di garanzia per analogo reato è stato inviato all'onorevole Corrao;

se sia a conoscenza del contenuto delle accuse rivolte agli onorevoli Nicolosi e Corrao, ampiamente riferite dagli organi di informazione;

come ritenga conciliabili tali accuse della magistratura con il contenuto della risposta fornita all'interrogazione con il contenuto della risposta fornita all'interrogazione citata in premessa;

se non ritenga – finalmente – di dover svolgere seriamente un'inchiesta amministrativa sui fatti denunciati. (4-13050)

PATUELLI. — *Al Ministro dell'agricoltura e delle foreste.* — Per sapere – premesso che:

nelle province di Forlì, Ravenna e Rimini si rileva la più alta concentrazione di frutticoltura, con correlate attrezzature di stoccaggio e trasporto;

nel 1992 i ricavi dei frutticoltori sono crollati a circa un terzo dei ricavi del 1991 e ciò ha comportato perdite rilevanti ed indebitamento bancario eccezionale per le aziende frutticole, con conseguente minaccia alla sopravvivenza produttiva delle stesse aziende –:

1) se il Ministero abbia valutato con la dovuta attenzione il crollo dei ricavi del settore verificatosi nel 1992;

2) se non si ritenga, come è convinzione dell'interrogante, che tale effetto possa essere attribuito ad importazioni extracomunitarie provenienti per lo più dall'emisfero sud che sono assoggettate a pesanti trattamenti conservativi quasi mai conformi alla legislazione italiana, altamente nocivi per la salute dei consumatori e quali provvedimenti si intendano eventualmente adottare per porre rimedio a tale preoccupante fenomeno, anche ai sensi del recente decreto del Ministro della sanità del 23 dicembre 1992, che consente seri controlli sanitari per la frutta importata;

3) se non sia il caso, in tale quadro, di prevedere interventi in grado di attenuare la grave situazione economica delle aziende frutticole dell'Emilia Romagna. (4-13051)

PECORARO SCANIO e PRATESI. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

nel territori vincolati del comune di Torre del Greco (NA) continua il massiccio taglio di alberi;

già in passato sono state segnalate, da parte del WWF, operazioni analoghe in località Colle Sant'Alfonso facente parte del citato comune;

in localita Quarantotto, sempre nel citato comune, a monte dello stradello di

quota 600 del Vesuvio, è iniziato il taglio di una grossa porzione di lecceta, ivi compresi esemplari di alto fusto e con diametro alla base di 40/50 cm. circa;

tali zone sono tutelate dal vincolo di cui al decreto ministeriale 4 dicembre 1992 (emanazione delle misure di salvaguardia del parco nazionale del Vesuvio) nonché della legge n. 431 del 1985, la quale prevede, per i tagli boschivi, solo tagli colturali consistenti nel lasciare tre generazioni diverse di matricine e che non risulta siano stati rispettati questi vincoli;

la legge n. 394 del 1991 e successivi decreti, di attuazione indicano con estrema chiarezza le circostanze e le nuove modalità per la concessione di autorizzazioni in materia di attività agro-silvo-pastorali –:

quali provvedimenti urgenti intenda adottare per verificare quanto sta accadendo e le eventuali responsabilità e fermare in tempo lo scempio di ciò che costituisce un *unicum* floristico. (4-13052)

BUONTEMPO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

l'articolo 44 del decreto del Presidente della Repubblica n. 761 del 1979 dispone che il personale può essere comandato a prestare servizio a tempo determinato presso altra unità sanitaria locale in via eccezionale e per riconosciute esigenze di servizio;

la Regione Lazio ha più volte esortato, con circolari inviate alle USL, al rispetto di detta disposizione, pur continuando ad autorizzare comandi senza che ne ricorrano i presupposti di eccezionalità e temporaneità;

tra i numerosi casi di comandati « a lunga scadenza » clamoroso appare quello del professor Alberto Ugolini primario presso il presidio ospedaliero « A. Angelucci » di Subiaco USL RM/27 che risulta comandato presso la presidenza del consiglio della Regione Lazio dal 1982;

notevole e grave disagio sta arrecando tale comando al funzionamento della divisione di pediatria e nido della USL RM/27;

appare al sottoscritto che non possano sussistere motivate, urgenti ed eccezionali esigenze che possano giustificare un comando di 11 anni di un primario di pediatria presso la Regione Lazio –:

se non ritengano, per tutelare gli interessi della collettività, intervenire presso la Regione Lazio per porre fine a questo comando che appare del tutto ingiustificato sia nella durata che nella qualifica del comandato. (4-13053)

GASPARRI. — *Al Ministro del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che a Tangentopoli è in corso una guerra tra Agnelli e De Benedetti, poiché il gruppo torinese avrebbe sospeso forniture per un valore di 400 miliardi di servizi informatici della Olivetti, destinate sia alla *holding* Fiat che alle società da essa controllate;

che tale decisione sarebbe stata presa come ritorsione agli attacchi portati dal quotidiano *La Repubblica* e dal settimanale *L'Espresso*, di cui De Benedetti è uno dei principali azionisti, alla Fiat per il coinvolgimento negli scandali delle tangenti culminati con gli arresti di Mattioli e Garruzzo –:

se risulti al Governo che la Olivetti, in conseguenza del blocco delle forniture informatiche attuato alla Fiat, abbia deciso di collocare in cassa integrazione una parte dei propri dipendenti, che sarebbero le vittime incolpevoli della guerra tra i potentati economici sugli scenari di Tangentopoli. (4-13054)

PAPPALARDO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

a seguito dell'entrata in vigore della legge 19 marzo 1993, n. 68, si rende ne-

cessario da parte delle amministrazioni comunali interessate, che siano urgentemente attivate tutte le procedure previste affinché venga garantita presso tutti i comandi della polizia municipale la presenza effettiva ed operante di uno o più ufficiali di Polizia giudiziaria (ufficiali e sottufficiali) in base alle esigenze dei vari Corpi o Servizi e alle esigenze di erogazione dei turni di servizio dagli stessi attuati, onde poter accedere ai terminali del Centro elaborazione dati;

detto accesso deve essere attuato ogni qualvolta sia necessario portare a compimento cogenti atti di polizia giudiziaria iniziati dal personale della polizia municipale;

gli ufficiali di P.G. possono anche delegare agenti di P.G. dipendenti, addetti a particolari servizi (piantoni, fonisti, addetti a servizi di indagini di PG – CFR articolo 11/2 legge 121/1981) ad accedere al suddetto CED, in attesa di apposita previsione nel regolamento del Corpo o Servizio di PM;

la legge in questione impone che gli ufficiali ed agenti di PG siano in possesso anche della qualifica di agenti di pubblica sicurezza (requisito, questo, non posseduto da chi ha subìto particolari condanne);

gli eventuali soggetti, siano essi ufficiali, sottufficiali o agenti, che non posseggano la qualifica di agente di PS, non sono, pertanto, legittimati ad accedere ai CED;

tale personale, che in virtù dell'articolo 20, comma 2°, del DMI 145/1987 non può espletare servizi esterni perché disarmato, non può essere d'ora in poi nemmeno impiegato in servizi di piantone o fonista, perché qualora il personale impiegato nei servizi esterni chiedesse allo stesso, per momentanea mancanza di personale idoneo, dati da attingere al CED, questo, non essendo legittimato a farlo, determinerebbe o una interruzione di pubblico servizio (punita dall'articolo 340 del CP) oppure una usurpazione di pubblica funzione (punita dall'articolo 347 CP);

quali iniziative siano state intraprese a seguito dell'entrata in vigore della legge 69/1993;

se non si ritenga opportuno valutare attentamente la posizione d'impiego del personale che, a seguito di condanna subita, non è in possesso della qualifica di agente di PS, disponendo il passaggio dello stesso nei ruoli amministrativi delle amministrazioni locali, modificando lo *status* da agenti di PM a quello di impiegati amministrativi;

se presso quei comandi di PM dove non esistono ancora figure di ufficiale di PG, presenti e in forza attiva, non si ritenga di disporre che le amministrazioni interessate provvedano ad istituire simili figure con la massima urgenza, nonché inserire questo personale idoneo a svolgere i nuovi compiti, nei vari comandi, onde evitare soluzione di continuità del servizio, che comporterebbe l'applicazione delle sanzioni di cui all'articolo 328 del CP in relazione con l'articolo 40/u.c. stesso codice. (4-13055)

PAPPALARDO. — *Ai Ministri per i beni culturali e ambientali, della pubblica istruzione e dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per conoscere – premesso che:

la città di Roma è stata la prima capitale d'Europa, nel 1928, ad essere dotata di un Planetario, insostituibile centro di cultura scientifica ed umanistica, oltre che affascinante riproduzione del cielo stellato;

dal 1973, fatta eccezione per un breve periodo di apertura nel 1981 (circa due mesi), la città di Roma è l'unica tra le capitali europee a non poter usufruire di un planetario;

per tale motivo, in occasione della Giornata nazionale dei planetari, gli interessati si sono dovuti recare a Firenze, così come nel 1992 si sono recati ad Amelia, per poter assistere presso quel Planetario

ad una lezione che riguardava « La Divina Commedia e l'Astronomia »;

altra interrogazione in merito è stata presentata dal sottoscritto in data 16 novembre 1992, alla quale non è stata fino ad ora fornita alcuna risposta –:

quali siano i motivi che ostacolano la riapertura del planetario di Roma, tenuto anche conto che le richieste del pubblico sono sempre più numerose;

quali provvedimenti si intendano adottare al fine di superare le eventuali difficoltà che si frappongono all'auspicata riapertura del planetario stesso. (4-13056)

PAPPALARDO. — *Ai Ministri della difesa e del tesoro.* — Per conoscere – premesso che:

la legge 17 aprile 1985, n. 141, che sarebbe stata a suo tempo varata al fine di concedere una perequazione ai pensionati d'annata, pur elargendo un modesto beneficio agli interessati, avrebbe fortemente penalizzato il personale collocato in congedo in un determinato periodo;

infatti, per il personale collocato in quiescenza dal 2 gennaio 1973 al 1° gennaio 1976 è stato previsto un incremento del 29,90 per cento sulla pensione goduta al 31 dicembre 1981, mentre per coloro che hanno lasciato il servizio dal 2 gennaio 1976 al 30 giugno 1975 è stato concesso un incremento del 23,60 per cento e cioè inferiore del 6,30 per cento;

in conseguenza dell'anomala attribuzione dei predetti incrementi, un maresciallo maggiore « aiutante » collocato in congedo per raggiunti limiti di età in data 2 marzo 1976, con oltre 40 anni di servizio utile, percepisce una pensione inferiore di circa 180-200 mila rispetto ad un suo parigrado collocato in quiescenza anteriormente, nel periodo che va dal 2 gennaio 1973 al 1° gennaio 1976;

la tanto attesa legge 59/1991 non è servita a sanare tale evidente sperequazione, com'era nelle intenzioni del legislatore –:

quali siano, se ve ne sono, i motivi che giustificano queste assurde incongruenze;

quali urgenti provvedimenti in merito si ritenga di adottare, nella rispettiva competenza, al fine di soddisfare le legittime richieste del personale che è stato ed è tuttora penalizzato a causa di una palese carenza legislativa. (4-13057)

PAPPALARDO. — *Ai Ministri dell'interno, della difesa e delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

le leggi numero 958 del 31 dicembre 1986 (art. 38), numero 191 del 31 maggio 1975 (artt. 28, 29 e 30) e numero 121 del 1° aprile 1981 (art. 47), contemplano benefici in favore di militari volontari in ferma prolungata;

l'intento del legislatore, all'epoca, era quello di varare norme che tutelassero e riconoscessero i meriti acquisiti da questa categoria di militari volontari, collocati in congedo, senza demerito, dopo alcuni anni di servizio;

tali disposizioni legislative verrebbero frequentemente disattese dalle Amministrazioni interessate, specie per quanto attiene le riserve dei posti per l'incorporamento del personale interessato nell'Arma dei Carabinieri, nella Polizia di Stato, e nel Corpo della Guardia di Finanza;

a seguito di tali violazioni, in data 27 novembre 1992 il Governo ha varato un decreto-legge per la riforma delle Forze Armate;

detto decreto riconosce il diritto acquisito dai militari volontari in ferma prolungata e prevede l'accesso degli stessi nelle Amministrazioni delle Forze dell'ordine con la riserva totale del 100 per cento dei posti disponibili;

nonostante l'adozione di quest'ultimo provvedimento, le percentuali adottate dalle singole Amministrazioni sarebbe diversa l'una dall'altra e di gran lunga inferiore a quella prescritta;

le leggi sopra citate prevedono, altresì, l'obbligo da parte delle Amministrazioni pubbliche locali, quali comuni, province e regioni, in città superiori a 150.000 abitanti, di assumere i militari v.f.p. congedati senza demerito;

in particolare, la legge 191 del 31 maggio 1975, artt. 28, 29 e 30, stabilisce in favore dei medesimi militari il reimpiego nelle Amministrazioni dello Stato - Difeoperai e Difeimpiegati, con circa 4 mila unità annue da assumere –:

quali siano le percentuali di militari v.f.p. fin qui incorporate nelle Forze dell'Ordine, dalla data di entrata in vigore della disposizione legislativa;

quali siano, qualora non siano state raggiunte le percentuali fissate per legge, i motivi di tale inosservanza;

se non si ritenga che la scrupolosa applicazione della normativa non consenta di disporre tra le Forze dell'Ordine di personale militarmente già inquadrato, affidabile e più maturo, e quindi con i benefici facilmente immaginabili che ne deriverebbero per le rispettive Amministrazioni;

se il mancato rispetto della normativa di carattere primario non faccia sorgere legittimo il sospetto che ciò sia appositamente voluto per gestire a proprio piacimento le assunzioni. (4-13058)

MATTEJA. — *Ai Ministri dell'interno e delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

la città di Ivrea (provincia di Torino) è stata invasa ultimamente da svariate decine di venditori ambulanti extracomunitari e zingari che continuano ad importunare i cittadini;

questi venditori vanno assumendo sempre più un atteggiamento arrogante verso chi si rifiuta di acquistare la loro merce, con insulti e persino con danneggiamenti alle loro autovetture;

molti di questi venditori sono giovanissimi, ragazzi indegnamente sfruttati, palesemente in età scolare e che dovrebbero quindi frequentare la scuola dell'obbligo;

la merce che viene venduta da questi ambulanti è sicuramente di provenienza illecita, in quanto priva dei documenti previsti dalle vigenti leggi italiane. Nessuno di loro inoltre risulta in possesso di licenza di vendita;

in aggiunta a questo tipo di abusivismo, gruppi di extracomunitari si stanno organizzando nel ben più grave reato dello spaccio della droga, come chiunque può notare in molte ore del giorno e sotto gli occhi di tutti;

esiste in Ivrea un'organizzazione a carattere solidaristico (la Consulta) che offre indiscriminatamente protezione a cittadini extracomunitari;

il sindaco di Ivrea il 18 gennaio scorso, sollecitato dal sottoscritto ad intervenire per far rispettare le leggi, ha completamente ignorato il problema;

le forze dell'ordine (Carabinieri, Polizia) effettuano interventi molto ridotti ed assolutamente inadeguati alla realtà del fenomeno;

la Guardia di finanza, molto solerte ad eseguire controlli sulle attività legali (commercianti, artigiani, piccole imprese) si dimostra completamente assente nel reprimere l'abusivismo di questi individui –:

se esistano gli estremi per un commissariamento del comune di Ivrea in quanto il sindaco e la giunta stessa, non intervenendo, si adeguano a chi non rispetta le leggi della Repubblica italiana;

se non sia il caso di verificare se la « Consulta » di Ivrea ed i loro promotori operino in piena conformità delle vigenti leggi italiane;

se le forze dell'ordine in servizio ad Ivrea siano sufficientemente dimensionate

per affrontare una situazione ormai di vera emergenza. (4-13059)

CRIPPA. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

il signor Fabio Clerici, nato a Chiari (Bs) il 10 aprile 1972, presentava regolare domanda nel 1991 per essere riconosciuto obiettore di coscienza ai sensi della legge n. 772 del 1972;

l'istanza veniva rigettata dall'Amministrazione della difesa con la motivazione che « non sussistevano sufficienti motivazioni filosofiche, religiose, politiche tali da giustificare l'accoglimento »;

non è affatto chiaro il perché di tale decisione da parte dell'Amministrazione, e l'unica ipotesi che si può fare in proposito consiste in un rapporto « sfavorevole » da parte dei carabinieri della compagnia di Chiari, che avevano convocato il signor Clerici per un colloquio a proposito dell'istanza da lui presentata;

a tal proposito è da evidenziare come il signor Clerici non abbia firmato alcunché, per cui il rapporto dei Carabinieri è una risultanza di loro interpretazioni delle dichiarazioni del giovane, interpretazioni che non possono ricoprire alcuna prova per ciò che riguarda la coscienza di un cittadino;

il signor Clerici, coerentemente con le motivazioni che l'hanno spinto a dichiararsi obiettore, si è rifiutato di presentarsi al reparto cui era stato assegnato per svolgere il servizio militare, e per tale ragione sarà giudicato dal Tribunale Militare di Verona –:

se non ritenga doveroso attivare gli opportuni procedimenti perché il signor Fabio Clerici sia immediatamente riconosciuto obiettore di coscienza, in modo da porre rimedio all'errore commesso dall'Amministrazione della difesa che ha ritenuto di poter giudicare la coscienza di un cittadino sulla base di impressioni raccolte da alcuni militi dell'Arma dei Carabinieri. (4-13060)

SERVELLO. — *Ai Ministri del tesoro e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per sapere – premesso che:

l'Ilva ha chiuso il bilancio 1992 con un *deficit* di 2.309 miliardi, cioè quintuplicando le perdite registrate nel 1991, e che il gruppo per l'acciaio pubblico è sull'orlo della bancarotta per cui l'Iri dovrà intervenire con altri 6 mila miliardi;

gran parte di queste perdite sono imputabili al *management* in carica fino allo scorso anno e quindi soprattutto all'*ex* amministratore delegato Giovanni Gambardella –:

se risponda a verità che l'ingegner Giovanni Gambardella, nonostante abbia lasciato l'incarico, riceva ancora uno stipendio dall'Ilva, disponga di un ufficio sia a Genova che a Roma, che possa disporre ancora di una sua segretaria personale e che abbia a disposizione una macchina con autista. Tutte cose che non trovano alcuna giustificazione – se veramente concesse – in quanto l'ingegner Gambardella dall'inizio dell'anno nell'Ilva non ricopre più alcun incarico operativo e soprattutto perché pesano sul bilancio del gruppo pubblico per l'acciaio per diverse centinaia di milioni, visto, tra l'altro, che l'*ex* amministratore delegato dell'Ilva era tra i *manager* più pagati del gruppo Iri. (4-13061)

TREMAGLIA. — *Al Ministro per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso:

che i gruppi antincendio bresciani e in particolare quelli del gruppo Val Carobbio che si occupa della Maddalena, operano in condizioni di particolare disagio morale e materiale;

che detti gruppi ricevono scarsi e inadeguati finanziamenti, e subiscono un conflitto di competenza che riguarda regione Lombardia e Guardia forestale, pur svolgendo un servizio di grande utilità pubblica;

che non è possibile continuare con il deleterio sistema di pretendere la presenza

dei volontari quando servono, e poi dimenticarsi delle loro più elementari esigenze;

che da anni, come affermato dal presidente, il gruppo Val Carobbio non riceve nemmeno i rimborsi spese;

che i mezzi sono assolutamente inadeguati, non esistono fondi per acquistare serbatoi e grandi pompe d'acqua –:

se intenda porre in essere un deciso e immediato interessamento al fine di coordinare un intervento, di concerto con la regione Lombardia e la Guardia forestale, per venire incontro alle esigenze dei gruppi volontari bresciani, in particolare del gruppo Val Carobbio, al fine di liquidare i rimborsi spese arretrati e di dotare gli stessi dei mezzi necessari al fine di salvaguardare il ricco patrimonio boschivo bresciano. (4-13062)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso:

che il degrado ambientale della Valtrompia (Brescia) ha raggiunto limiti preoccupanti;

che soprattutto compromessa appare la situazione riguardante l'inquinamento ambientale con particolare riferimento alle qualità dei corsi d'acqua: Mella e Gobbia risultano oltremodo inquinati, a causa della massiccia immissione di rifiuti chimici e biologici riversati in questi fiumi da un enorme numero di scarichi;

che taluni tratti dei corsi d'acqua presentano una concentrazione molto elevata dei valori in cui si misura il grado di inquinamento;

che i dati rilevati sono il frutto di una costante sorveglianza esercitata dalla USL n. 38, che ha portato a sette denunce all'autorità giudiziaria per violazione della legge sugli scarichi ed altre sanzioni di carattere amministrativo –:

se intenda porre in essere un intervento al fine, di concerto con le autorità regionali, provinciali e comunali, di realizzare un collettore, di cui esiste un progetto, ma che non è mai andato in porto per la mancanza di un'adeguata copertura finanziaria. (4-13063)

TREMAGLIA. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e per i problemi delle aree urbane.* — Per sapere – premesso:

che la situazione abitativa di Bergamo si va sempre più aggravando anche in corrispondenza di una economia in difficoltà che ha ridotto ulteriormente i posti di lavoro;

che nel 1992 sono stati emessi 808 provvedimenti di sfratto, di cui 430 riguardano appartamenti nella città di Bergamo;

che sempre nel 1992 ci sono state 795 richieste di esecuzione presentate all'Ufficiale giudiziario riferiti a precedenti sfratti, che il proprietario non è riuscito ad eseguire;

che nei primi due mesi del corrente anno ci sono state 136 richieste di esecuzione e 28 procedimenti eseguiti con intervento dell'Ufficiale giudiziario;

che secondo il sindacato inquilini è possibile un ulteriore peggioramento entro il prossimo 31 dicembre 1993;

che la nuova normativa in materia di locazione ha determinato un raddoppio dei canoni, per i nuovi contratti –:

se intendano intervenire al fine di coordinare un piano, di concerto con le amministrazioni locali, per venire incontro a numerose famiglie che oltre a perdere il lavoro o trovandosi di fronte a notevoli riduzioni del tenore di vita rischiano di perdere anche l'abitazione con gravi conseguenze sul piano morale, sociale ed economico. (4-13064)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso:

che l'estrema pericolosità della statale bresciana del Caffaro nel tratto Conicchio Nave è stata purtroppo ancora una

volta confermata da due recenti incidenti con conseguenze mortali;

che l'importante arteria è percorsa quotidianamente da migliaia di vetture e centinaia di autocarri ma nel territorio di Nave c'è un solo vigile urbano a disposizione quando la pianta organica del comune ne prevede cinque;

che si rende necessario l'installazione di un secondo semaforo all'altezza dell'incrocio fra la statale del Caffaro e via Maddalena –:

se intenda porre in essere un intervento, di concerto con le autorità locali, al fine di ovviare in qualche modo ad una situazione che nel comune di Nave (Brescia) sta diventando insostenibile: maggior controllo del traffico con un adeguato numero di tutori quali prevede la pianta organica comunale e l'installazione di un semaforo al fine di limitare la velocità di transito delle auto nell'abitato. (4-13065)

TREMAGLIA. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso:

che l'ufficio postale di via S. Antonino (Bergamo) è il secondo per importanza e volume di operazioni della città (250 mila l'anno);

che il predetto ufficio si trova in condizioni particolarmente disagiate e tali da non offrire all'utenza un corretto funzionamento data la ristrettezza dell'ambiente e le condizioni igieniche;

che in 80 metri quadrati devono lavorare e muoversi più di dieci impiegati e il pubblico;

che mancano finestre e aperture, per cui l'ufficio non ha riciclo d'aria, mentre durante la stagione estiva la vivibilità si abbassa ancora per la mancanza di areazione e per il supplemento di calore prodotto dai *computers;*

che l'USSL 29 ha effettuato un sopralluogo e ha confermato che, se si trattasse di un ufficio privato e non di interesse pubblico, non sussisterebbero i requisiti per l'agibilità –:

se intenda porre in essere un intervento urgente al fine di rendere più agibile con adeguati lavori l'ufficio postale, oppure se non ritenga necessario prevedere il suo trasferimento in altri locali più idonei. (4-13066)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che in base ad una normativa della legge promulgata il 2 aprile 1885 ancora si pagano somme ingenti al Consorzio autonomo del porto di Genova;

che la provincia di Bergamo nel 1992 ha dovuto stanziare un contributo che supera i 130 milioni;

che alla provincia stessa è giunta un'altra richiesta di pagamento come contributo alle spese di 83 milioni entro l'aprile 1993, per spese riferite all'esercizio del porto nel 1991;

che come Bergamo sono costrette a pagare tutte le province del Nord –:

se condivida il mantenimento di una simile vetusta e incongruente normativa, e se non ritenga di avviare con grande urgenza un disegno di legge per nuove norme nella ripartizione delle spese in materia di porti. (4-13067)

TREMAGLIA. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso:

che con precedente interpellanza l'interrogante aveva già segnalato la precaria situazione in cui viene a trovarsi la Valcamonica e il Sebino per il fermo dei cantieri stradali;

che tale situazione di precarietà è stata ribadita in un convegno tenuto dai sindacati, dove si è sottolineato il grave pericolo di un aumento della disoccupazione;

che in alcune aziende come la Dolomite di Marone e la Riva di Sarnico non sarà facile mantenere gli attuali livelli occupazionali –:

se intendano porre in essere un fattivo intervento in difesa dell'occupazione della Vallecamonica e del Sebino, di concerto con le autorità regionali e locali, al fine di poter riattivare al più presto i cantieri bloccati anche per l'inchiesta che è stata avviata ai vertici dell'ANAS.

(4-13068)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso:

che con precedenti interpellanze nella passata e presente legislatura ho più volte rimarcato l'inspiegabile e colpevole abbandono di Bergamo rispetto ai collegamenti ferroviari, soprattutto con Milano;

che la situazione dovrebbe ulteriormente aggravarsi, se rispondono al vero le notizie della soppressione dal prossimo mese di maggio di due altri treni: quello in partenza da Bergamo delle ore 4,44 diretto a Sesto San Giovanni e quello in partenza da Milano centrale delle 23,15 diretto a Bergamo;

che i sindaci hanno preso decisa posizione contro l'eventualità della soppressione che ridurrebbe ulteriormente le comunicazioni con Milano;

che in pratica si vorrebbero sopprimere i treni « notturni » spostando anche i treni merci di giorno il che significherebbe intasamento e ritardi su tutta la linea;

che simili decisioni sono in contraddizione con la tendenza a privilegiare il trasporto collettivo su rotaia, e in particolare la cancellazione del treno delle 23,15 crea disagi gravissimi –:

se intenda fornire una risposta urgente, per accertare se nei piani immediati della direzione delle Ferrovie dello Stato esiste l'intenzione di sopprimere i treni suddetti, e in caso affermativo, un suo intervento al fine di evitare una decisione che contrasta con le necessità della gente bergamasca, pendolari e normali viaggiatori, con il rischio di arrivare in tarda serata a Milano e di non poter più proseguire per Bergamo in tempo utile.

(4-13069)

TREMAGLIA. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso:

che da tempo il personale dell'Ufficio postale di Ponte S. Pietro (Bergamo) è costretto a lavorare in spazi inadeguati, con tutte le conseguenze del caso e in particolare sugli utenti;

che una recente ispezione dell'unità operativa dell'Ussl 28 per la tutela dei luoghi di lavoro ha rilevato come l'ufficio sala portalettere si trovi « in pessime condizioni igieniche e di manutenzione con tracce di umidità permanente »;

che la sala in cui operano dieci addetti è stata ritenuta insufficiente rispetto all'attività che si richiede –:

se intenda porre in essere un intervento al fine, di concerto con la direzione delle poste provinciali, e del comune di Ponte S. Pietro, di reperire nuovi locali per l'ufficio postale idonei al notevole servizio che viene richiesto agli addetti e sin qui svolto con notevole abnegazione e sacrificio dai dipendenti in ambienti angusti e inaccettabili, anche per ragioni di ordine igienico. (4-13070)

TREMAGLIA. — *Al Ministro per i beni culturali e ambientali.* — Per sapere – premesso:

che la chiesa vecchia di Ponte S. Pietro (Bergamo), che risale al 1700, ha urgente bisogno di restauri soprattutto nella parte esterna: comprende il sagrato con nove statue (opera di Pirovano), la balaustra, la gradinata e i vasi ornamentali;

che l'intervento si è reso necessario per il degrado sopravvenuto in seguito a fenomeni di ossidazione, a fattori di ordine climatico e ad atti vandalici;

che la Soprintendenza alle belle arti, dietro i solleciti del FAI (Fondo ambiente italiano), di alcuni rappresentanti del Rotary Ovest, del comune di Ponte S. Pietro, dopo aver seguito per anni le vicende della chiesa, ha dato il benestare per l'inizio dei lavori;

che i lavori però non partono in quanto mancano i fondi;

che la Regione, a sua volta interpellata, se ne sarebbe lavata le mani giustificandosi con gli impegni assunti verso altri beni artistici –:

se intende porre in essere un intervento al fine di poter coordinare fra gli Enti interessati, Soprintendenza e Regione in particolare, un piano dei lavori da attuarsi in brevissimo tempo, perché altrimenti un altro monumento prezioso per la comunità bergamasca finirebbe nell'oblio e in un ulteriore deterioramento. (4-13071)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso:

che i dati risultanti dai controlli effettuati dai servizi e presidi delle USSL in 225 località situate lungo le sponde dei fiumi e dei laghi della Lombardia risultano allarmanti in quanto soltanto il 29 per cento delle stesse sono risultate idonee alla balneazione;

che sono stati riscontrati presenza di batteri coliformi e di streptococchi, di ossigeno disciolto, di PH superiori ai limiti di legge;

che il divieto di balneazione è dovuto anche al fatto che fiumi e laghi ricevono scarichi di acque non depurate;

che per quanto riguarda il lago di Garda non vengono considerate balneabili le seguenti località: a Desenzano Rivoltella, Spiaggia D'Oro, Madonna della Villa; a Gardone Riviera: Lido di Fasano; a Lonato: C. B. Lonato; a Manerba: Pronto Dusano, Lido Torcolo; a Moniga: Pesci; a Padenghe: Porto, S. Cassiano, a Salò: Località Cimitero, Piazza A. Bernardino, via Rive Grandi; a San Felice del Benaco: Navenago, Ghiacciaie; a Toscolano: Spiaggia Villa Adele, Spiaggia Cantieri Garda, Campeggio Toscolano;

che per quanto riguarda il Lago d'Iseo risultano non balneabili: a Iseo Barro, Teardi, Covelo, Golfo Fenice, Motecolo Sud; a Marone: Spiaggia Campo Sportivo, Spiaggia Filanda, a Monte isola Spiaggia Ere; Pisogne: Spiaggia Toline, Foce Torbiolo; a Sale Marasino: Porto nuovo, Loc. Saletto, Filanda; a Sulzano: Vertine, Porto vecchio;

che per quanto riguarda il lago d'Idro non risultano balneabili: a Idro: Loc. Cimitero, Valuna, Bocca del Re, Bagel, Liperone; a Bagolino: Loc. Torniot, Lombardi; a Idro: Spiaggia Vesta, Vantone Nord, Zona Parco Idro, Spiaggia Lemprato, Lazzano, Tre Capitelli, Grotta, Calchera, Vantone sud, Parole –:

se intenda dare un segno preciso della volontà politica di mutare indirizzo e di avviare, di concerto con le autorità sanitarie regionali e locali, un'azione assai più energica in difesa delle acque della Lombardia e in particolare di quelle zone (Garda e Lago d'Iseo) che basano sul turismo le loro maggiori risorse. Ogni ulteriore ritardo potrebbe avere pesanti conseguenze sull'economia e l'occupazione dell'intera regione. (4-13072)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso:

che più volte è stato denunciato l'isolamento di Bergamo rispetto alle comunicazioni ferroviarie con Milano, *in primis*, con Brescia e Lecco;

che con precedente interpellanza venne rilevato lo stato pietoso delle carrozze poste a disposizione dei pendolari;

che il prossimo 23 maggio sono previste misure particolarmente pesanti per

l'utenza bergamasca: tagli e soppressioni di convogli, treni sostituiti con bus, chiusura di notte del tratto Treviglio-Bergamo;

che in particolare la tratta Milano-Brescia, che serve le stazioni bergamasche della pianura, subirà una falcidia di otto treni in meno nel mese di agosto, e uno in meno al sabato senza servizio sostitutivo di autobus;

che gli stessi sindacati, hanno evidenziato una strategia delle Ferrovie dello stato tendente a sopprimere le corse ferroviarie per sostituirle sempre con autobus, senza aver verificato i costi di gestione effettivi –:

se intenda fornire spiegazioni sulla politica attuata dalla direzione delle ferrovie dello Stato in Lombardia, e in particolare sui tagli e le sostituzioni di treni che vanno ulteriormente a danneggiare le già precarie condizioni dei viaggiatori bergamaschi;

quali siano i criteri della scelta dei bus come mezzo preferenziale rispetto al treno, quando è notorio quale sia il caos e la congestione delle strade per il traffico sempre più intenso ai limiti della tollerabilità. (4-13073)

TREMAGLIA. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso:

che il consiglio scolastico provinciale di Bergamo ha diminuito drasticamente i finanziamenti a vari istituti su indicazioni del Ministro della pubblica istruzione;

che l'istituto tecnico industriale statale « Augusto Righi » di Treviglio ha subito una vera falcidia: 65 milioni per le spese di funzionamento, vale a dire il 30 per cento in meno di quanto veniva concesso sino allo scorso anno;

che tale somma è assolutamente inadeguata a coprire le esigenze di un istituto che ha tre indirizzi di specializzazione (chimica, meccanica ed elettrotecnica): non copre neanche, come ha specificato il consiglio di istituto, manutenzione, contratti di assistenza, spese telefoniche e forze motrice;

che un taglio così ingiustificato può compromettere il corretto funzionamento dell'istituto con gravi ripercussioni per studenti e insegnanti –:

se intenda fornire una spiegazione in merito al criterio di ripartizione dei fondi adottato dal Consiglio provinciale scolastico, e sui suoi stessi indirizzi programmatici;

se non ritenga di dover intervenire al fine di assicurare il miglior funzionamento, per una scuola di basilare importanza per tutta la zona che fa capo a Treviglio. (4-13074)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che a Bonate Sopra (Bergamo) la popolazione è vivamente allarmata per il continuo aumento dello spaccio della droga;

che gli spacciatori stazionano in centro all'angolo tra piazza Vittorio Emanuele e via Marconi e nemmeno tentano di nascondersi;

che a Bonate Sotto vengono a rifornirsi drogati da tutta la provincia con tutte le conseguenze del caso;

che la sera dell'ultimo giorno di carnevale c'è stato un vero e proprio *raid* nel quale sono rimasti coinvolti tossicodipendenti e persone che non c'entravano per nulla, alcuni passanti sono stati picchiati e sono rimaste danneggiate delle automobili in sosta –:

se intenda sollecitare le forze dell'ordine a intervenire con maggior energia a Bonate Sopra al fine di stroncare un indegno commercio che sta assumendo dimensioni preoccupanti e tali da suscitare possibili e incontrollate reazioni della gente, che ha paura di uscire di casa specie nelle ore serali e notturne. (4-13075)

TREMAGLIA. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso:

che le situazioni a rischio della statale 470 di Valle Brembana sono in continuo aumento;

che in particolare il tratto compreso fra Zogno e Ambria è molto pericoloso in quanto la carreggiata non supera i sei metri di larghezza e non esistono banchine e marciapiedi tanto che in caso di incrocio fra due mezzi, pedoni e ciclisti sono costretti a salire sul muretto di protezione a valle, o addossarsi al muro;

che in un punto, nei pressi delle Tre Fontane, due autocarri non riescono ad incrociare: uno dei due mezzi è obbligato a fermarsi;

che il *guard rail* in località Tiolo è fatiscente: è stato divelto e contorto dove non è stato sostituito con transenne di legno –:

se intenda intervenire presso la direzione dell'ANAS più volte sollecitata a interessarsi della statale in oggetto, ma con esito negativo, al fine di attuare un concreto programma per il miglioramento di una strada statale di capillare importanza per gli abitanti e l'economia della zona. (4-13076)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

ritarda ancora la risposta ai numerosi atti ispettivi parlamentari prodotti dall'interrogante nella X legislatura, riprodotti nella XI o in questa presentati *ex novo*, relativamente alla disinvolta gestione dell'amministrazione comunale di Mugnano (Na) –:

quali siano i procedimenti giudiziari aperti nei confronti dei sindaci, assessori e consiglieri comunali, alcuni dei quali anche arrestati e condannati;

per quali motivi, nonostante quanto precede, il prefetto di Napoli non abbia né proposto ancora lo scioglimento del consiglio comunale né ancora sospeso, con proposta di rimozione, gli inquisiti, gli arrestati ed i condannati;

quali ulteriori elementi siano emersi dopo il sequestro dei documenti e la acquisizione di elementi relativi ai singoli componenti del consiglio comunale, effettuate dalla Digos presso il municipio di Mugnano;

se intenda sollecitare il prefetto di Napoli perché, in applicazione delle leggi dello Stato, a fronte delle indagini e dei procedimenti giudiziari in corso, cessino le estese illegalità nella gestione comunale di Mugnano, sospendendo i consiglieri, assessori, sindaci coinvolti o promuovendo lo scioglimento del consiglio comunale in modo che al più presto gli autori di gravi irregolarità aventi rilevanza penale vengano posti in condizioni di non nuocere ulteriormente alla cittadinanza di Mugnano. (4-13077)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale e dell'industria, commercio ed artigianato.* — Per conoscere – premesso che:

già con l'atto ispettivo n. 4-03400 dal 15 luglio 1992, l'interrogante ha chiesto chiarimenti in ordine al trattamento di CIG applicato alla SECI SUD di Qualiano (Na) ed in ordine ad altri aspetti relativi a finanziamenti pubblici erogati alla società in questione;

al solito, nonostante la delicatezza, importanza ed urgenza della questione sollevata, il Governo non ha dato alcuna risposta ancora;

è bene a questo punto riepilogare i termini del problema così come storicamente sviluppatisi sino alla data odierna:

la SECI SUD nasce come azienda elettronica nel 1972 col marchio BETA GERI, per effetto della legge n. 134 del 1971;

l'atto costitutivo della società rappresentò per la GEPI uno dei primi inter-

venti che essa attuò in Campania a sostegno di una azienda in crisi;

in venti anni di presenza GEPI tuttavia la società non ha mai conseguito il pareggio in bilancio mentre a sostegno di effimeri piani di ristrutturazione, gli anni che vanno dal 1981 al 1992 sono stati caratterizzati dalla C.I.G;

la crisi esplose con virulenza nel 1988 quando la SECI SUD, in armonia con la proprietà GEPI avviò procedura di licenziamento per 14 lavoratori (provvedimento ritirato in seguito a dimissioni incentivate);

dopo quattro anni di relativa calma, nel 1992, l'azienda a chiusura di un periodo di C.I.G.S. attivò procedura di mobilità, ai sensi della legge n. 223 del 1991 che coinvolse 12 lavoratori;

a sostegno di codesta « risoluzione » recessiva occupazionale, la GEPI, allo scopo di agevolare il richiesto esodo volontario, stanziò un finanziamento straordinario per circa lire 600 milioni;

a conclusione della procedura di mobilità, la GEPI, tramite i suoi funzionari Musotto e Salvati, si dichiarò sostanzialmente soddisfatta per il risultato ottenuto, in quanto a suo dire, l'operazione di « alleggerimento » dell'organico si rendeva indispensabile ai fini della vendita della società così risanata da carichi eccessivi;

a trattativa di vendita oramai pressoché conclusa, CGIL, CISL ed UIL, si dichiararono favorevoli alla vendita della SECI SUD; in quella occasione, le parti contraenti, (GEPI-BELFORTE), si impegnarono per iscritto a garantire per due anni, il rispetto dei livelli occupazionali indicando il preciso numero degli occupati in organico mentre la nuova proprietà si impegnò col sindacato, a fornire in tempi brevi il piano dettagliato degli investimenti aziendali, non facendosi minimamente cenno ad ulteriore ricorso alla C.I.G.S. appunto perché come detto, appena quattro mesi prima, si erano estinti 18 mesi di C.I.G.S. per ristrutturazione aziendale; senonché a vendita effettuata la proprietà subentrata ha immediatamente avviato procedura per la richiesta di C.I.G.S. a *zero ore per tutte le 69 unità* lavorative ! ! ! in palese violazione degli accordi stipulati in sede di compravendita. Per quanto incredibile il sindacato, pur non ricevendo affatto come era stato invece promesso il piano dettagliato degli investimenti, ma un vago capitolato di intenti senza impegni precisi, espresse parere favorevole ! ! !

Inoltre alla vigilia dell'inizio della C.I.G.S. vennero sospesi ingiustificatamente i servizi mensa e trasporti aziendali. In tale occasione, fu concordato con la società, rappresentata dal proprietario dottor Emilio Gabriele, una serie di concreti impegni che restava solo da formalizzare ma che erano già vincolanti, consentendo tra l'altro a tutti i lavoratori cassintegrati, di essere periodicamente presenti in fabbrica per effetto delle rotazioni, mai sinora effettuate. La società si ostina a procedere unilateralmente, prevaricando gli accordi stipulati con la GEPI, e mettendo in serio pericolo l'occupazione.

L'azienda sta già procedendo alla individuazione delle funzioni da tagliare, tanto è vero che ha scaricato in C.I.G.S. l'addetto all'ufficio del personale, affidando al contempo, il carico di lavoro ad un consulente esterno ! ! !

Quanto precede è stato portato dalla R.S.A. alla attenzione della GEPI chiedendone l'intervento ma irresponsabilmente questa ha ritenuto di « scaricare » i lavoratori dipendenti in violazione delle intese raggiunte con la BELFIORE e soprattutto del proprio ruolo istituzionale (atteggiamenti del resto già noti alla autorità giudiziaria in altre gravissime circostanze nelle quali i responsabili della GEPI – in Calabria per esempio – hanno operato in pesantissima violazione delle leggi, secondo l'assunto della Magistratura stessa);

infatti all'appello della R.S.A. della SECI SUD la GEPI ha così risposto: « Riscontriamo la Vostra lettera del 4 marzo 1993 nella quale ribadite l'accettazione della avvenuta privatizzazione della SECI SUD.

Ciò significa che il naturale interlocutore non può che essere l'attuale proprietà come peraltro si evince dagli accordi tra azienda ed OO.SS. intervenuti negli ultimi tempi.

Fermo restando il rispetto degli impegni cui la nuova proprietà è tenuta, risulta evidente che non ci è possibile alcuna interferenza gestionale. Dottor Bruno Leonardi. » –:

quali fossero le condizioni di vendita della SECI SUD da parte della GEPI, sia quanto al valore pattuito dalle aziende sia quanto alla garanzia per l'occupazione e come mai, ove queste riguardassero la continuità dell'occupazione per due anni, la GEPI non ritenga violato il contratto da parte della BELFIORE con un nuovo ricorso alla CIG che avrebbe dovuto aver chiaramente esaurito la sua funzione con la fase conclusasi prima della vendita;

chi e perché abbia autorizzato e sulla base di quali dettagliati e concreti piani, la procedura di C.I.G.S. che sembra mancare dei presupposti e delle condizioni tutte di cui alla legge n. 223 del 11991;

se si intendano svolgere immediate indagini sugli evidenti torbidi aspetti dei rapporti GEPI-BELFIORE, sui doveri istituzionali della GEPI, sui comportamenti tenuti sinora dalla stessa, sulla regolarità delle procedure di CIGS nella SECI SUD-BELFIORE in quanto ulteriore esempio delle modalità e degli effetti perversi delle « privatizzazioni » decise e operate senza alcuna responsabilità sociale solo per privilegiare interessi di mero profitto privato con danno degli interessi pubblici.

(4-13078)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica, della sanità, per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali, dell'interno, del lavoro e della previdenza sociale e di grazia e giustizia.* — Per conoscere:

se risulti rispondente al vero che alcune direzioni sanitarie sia del I che del II Policlinico della università di Napoli abbiano immesso medici specializzandi in alcuni turni di guardia, da soli e ciò senza la contemporanea presenza di medici di altissima qualificazione professionale quali sono i medici specializzati. Si assume che ciò è previsto dalla direttiva CEE 82/76 del 26 gennaio 1982 recepita con modifiche nella legislazione italiana, a norma dell'articolo 6 della legge n. 428 del 1990;

tale legge invece prevede la sola « partecipazione » degli specializzandi ai turni di guardia e non la copertura totale a loro carico: del resto sarebbe potenzialmente omicida affidare ad uno studente del I o anche del II anno di specializzazione la responsabilità di un turno di guardia a reparti nei quali sono in cura ammalati di patologie molto specifiche. L'inopportuna decisione che sembra concretare fattispecie di reato, è stata impartita invero, facendo correre però rischi inauditi ai degenti, solo per tentare di nuocere alla categoria dei « gettonati », nel quadro di un conflitto aperto, del tutto ingiustificatamente, ed ingiustamente, dalla università nei loro confronti;

se risulti rispondente inoltre al vero che il grave fatto sia stato denunciato sia la fine del dicembre 1992 e nello scorso mese di gennaio 1993 all'INPS, all'Ispettorato del lavoro, al Gruppo antisofisticazioni e sanità, all'Ordine dei medici della provincia di Napoli, ai rettori della I e della II università di Napoli (oltre che alle direzioni sanitarie relative) e soprattutto al comando legione dei carabinieri ed alla procura della Repubblica presso la pretura circondariale;

quali accertamenti abbiano disposto e quali responsabilità abbiano riscontrato gli anzidetti destinatari delle denunce e soprattutto se siano cessati i comportamenti illegittimi assunti con gravissimo rischio per la pubblica salute affidata irresponsabilmente nelle mani ancora inesperte dei discenti delle scuole di specializzazione con atti meramente « emulativi » in odio ai « gettonati », bocciati anche dal « Tribunale per i diritti del malato ». (4-13079)

PARLATO. — *Ai Ministri del tesoro e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

le responsabilità delle società di certificazione dei bilanci delle società obbligate a tali adempimenti, e che avrebbero dovuto essere esercitate non secondo l'ordinaria diligenza ma secondo quella specifica dell'attività professionale e tecnica svolta come dei revisori dei conti e degli altri componenti dei collegi sindacali, dopo l'esplodere di « Tangentopoli » appaiono di inaudita gravità;

nessuno di loro ha mai rilevato infatti alcunché di irregolare nella contabilità e nei bilanci sociali, con enormi danni derivati tra l'altro ai piccoli azionisti e risparmiatori dall'inadempimento ad obblighi posti soprattutto in loro difesa;

a parte quanto la CONSOB sta prevedendo per il futuro e che appare insufficiente, se essa abbia, per quanto attinente alla contabilità revisionata e certificata sino al 1991 di società indagate per « Tangentopoli », quotate in borsa ed al mercato ristretto, contestato alcunché alle società di revisione –:

se risulti che la magistratura, nei confronti dei bilanci approvati dai collegi sindacali per le medesime società, abbia aperto procedimento nei confronti dei collegi dei sindaci;

se sia esatto che al momento le società coinvolte, tra quelle quotate alla Borsa di Milano, i presidenti dei collegi sindacali e le società di revisione incaricate siano le seguenti:

società quotata: ABB Tecnomasio; presidente collegio dei sindaci: Roberto Bracchetti; società di revisione: KPMG Peat Marwick;

società quotata: Ansaldo Trasporti; presidente collegio dei sindaci: Giuliano Tedeschini; società di revisione: Price W.-Coopers & L.;

società quotata: Calcestruzzi; presidente collegio dei sindaci: Lino Rondelli; società di revisione: Price Waterhouse;

società quotata: Camfin; presidente collegio dei sindaci: Filippo Tamborini; società di revisione: Price Waterhouse;

società quotata: Cogefar Impresit; presidente collegio dei sindaci: Luigi Guatri; società di revisione: Deloitte & Touche;

società quotata: Enichem-Enimont; presidente collegio dei sindaci: Luigi Guatri; società di revisione: Price W.-Coopers & L.;

società quotata: Fochi; presidente collegio dei sindaci: Stefano Romani; società di revisione: Price Waterhouse;

società quotata: Franco Tosi; presidente collegio dei sindaci: Franco Barlassina; società di revisione: Coopers & Lybrand;

società quotata: Grassetto; presidente collegio dei sindaci: Giancarlo Mantovani; società di revisione: Arthur Andersen & Co.;

società quotata: Montedison; presidente collegio dei sindaci: Lino Rondelli; società di revisione: Reconta-Price W.;

società quotata: Premafin; presidente collegio dei sindaci: Giorgio di Giuliomaria; società di revisione: Arthur Andersen & Co.;

società quotata: Saipem; presidente collegio dei sindaci: Carlo Gresta; società di revisione: Reconta Ernst & Young;

società quotata: Sasib; presidente collegio dei sindaci: Federico Gamma; società di revisione: Coopers & Lybrand;

società quotata: Wabco Westinghouse; presidente collegio dei sindaci: Mario Pia; società di revisione: Reconta Ernst & Young;

se risulti anche per altre società incappate in « Tangentopoli », e quali, quotate in diverse Borse, altri presidenti e membri di collegi sindacali e società di revisione, siano stati oggetto di iniziative della CONSOB o della magistratura sempre per il modo con il quale hanno eser-

citato il loro lavoro, non rilevando mai alcunché di irregolare;

quali compensi abbiano fatto propri le società di revisione per l'attività svolta sino al 1991 per ciascuna delle società coinvolte in « Tangentopoli »;

con quali criteri trasparenti per ciascuna società i cui bilanci fossero da revisionare, sono state scelte le società di revisione;

se risponda al vero la notizia che in molte società di revisione viga una regola interna, non scritta, secondo la quale qualora uno dei contabili dipendenti della società rilevi una qualche irregolarità, non deve assumere altra iniziativa se non quella di farne rapporto al suo superiore, al quale compete in assoluta autonomia « gestire » la questione con la società mandante. (4-13080)

PARLATO e MARENCO. *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed ai Ministri dei trasporti e della marina mercantile e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per conoscere – premesso che:

l'Autorità garante della concorrenza e del mercato con lettera prot. 10544 del 26 gennaio 1993 ha diretto al Presidente del Senato, al Presidente della Camera dei deputati, al Presidente del Consiglio dei ministri, al Ministro della marina mercantile, una lettera del seguente preciso tenore:

« In data 20 maggio e 22 giugno 1992 sono pervenute a questa Autorità due segnalazioni nelle quali si denunciava la grave distorsione della concorrenza che si verrebbe a creare nel mercato dei servizi di linea internazionale di trasporto merci a seguito della concessione di ingenti aiuti di Stato alle società Lloyd Triestino e Italia del gruppo Finmare.

Tali aiuti finanziari sono erogati in base agli stanziamenti previsti dall'articolo 3 della legge 17 dicembre 1990, n. 383, la quale ha convertito in legge il decreto-legge 18 ottobre 1990, recante interpretazioni e modifiche alle leggi 14 giugno 1989, n. 234, e 5 dicembre 1986, n. 856, in materia di benefici alle imprese armatoriali.

Nella suddetta legge n. 383 del 17 dicembre 1990 è prevista la facoltà del Ministero della marina mercantile di erogare fondi, da devolversi nel quinquennio 1991-1995, a favore dei servizi di linea internazionali di trasporto merci svolti da due società del Gruppo Finmare, per i quali è riconosciuta l'impossibilità di conseguire l'equilibrio economico della gestione e al contempo l'indispensabilità per l'economica nazionale. Il finanziamento, dell'ordine di circa 50 miliardi per ciascun anno, dovrà essere ripartito fra le società di navigazione Italia e Lloyd Triestino in proporzione del disavanzo gestionale dei singoli servizi.

Sulla base di un attento esame delle fattispecie denunciate, questa Autorità ravvisa l'esigenza di segnalare l'ingiustificata distorsione della concorrenza derivante dalla concessione dei fondi previsti dalla legge n. 383/90.

Tale alterazione concorrenziale, in primo luogo, è collegata all'applicazione della legge n. 383/90, derivante dall'erogazione di fondi statali ad esclusivo vantaggio di imprese pubbliche con il connesso effetto discriminatorio nei confronti delle imprese armatoriali private svolgenti le medesime attività imprenditoriali.

In secondo luogo, nei casi di applicazione della legislazione esaminati da questa Autorità, non paiono sussistere i presupposti che il suddetto atto normativo pone a base dell'erogazione dei fondi, cioè l'indispensabilità del servizio per l'economia nazionale e l'impossibilità di conseguire l'equilibrio economico nella gestione delle linee.

Il mercato dei servizi di linea internazionali di trasporto merci, infatti, si caratterizza per la presenza di diversi operatori, italiani ed esteri, pubblici e privati, in concorrenza tra loro. È possibile, pertanto, escludere il carattere di indispensabilità delle sovvenzioni di quelle rotte che sono comunque assicurate dal libero mercato ed

è da escludere, di conseguenza, la necessità di un intervento statale volto ad assicurare lo svolgimento di servizi regolari di linea sulle rotte medesime.

Alla stessa stregua, la circostanza che su determinate linee si registri la pluriennale presenza di operatori privati che non ottengono sussidi finanziari dal potere pubblico evidenzia la possibilità di operare su tali rotte con una redditività sufficiente a conseguire l'equilibrio economico della gestione e, dunque, l'insussistenza del presupposto dell'impossibilità di conseguire l'equilibrio economico della gestione sulla rotta, previsto dall'atto normativo.

L'utilizzo dei fondi previsti dalla legge n. 383/90 a favore delle società del gruppo Finmare comporta quindi, ad avviso di questa Autorità, una ingiustificata distorsione della concorrenza, in quanto potrebbe consentire alle società beneficiarie di offrire i propri servizi di trasporto ad un costo più basso di quanto possibile per gli altri operatori, danneggiando il corretto funzionamento del mercato attraverso la ingiustificata concessione di sussidi.

Alla luce di queste valutazioni questa Autorità ritiene che dovrebbe essere avviata una riconsiderazione dell'intera disciplina normativa di sostegno finanziario alle imprese armatoriali pubbliche.

Restano, naturalmente, fermi i poteri conferiti a questa Autorità dal titolo 1 della legge n. 287/90 al fine di perseguire ogni comportamento anticoncorrenziale eventualmente collegato con lo stanziamento dei fondi in questione.

IL PRESIDENTE. » –:

quali valutazioni abbia tratto in conseguenza di tale lettera il Governo;

quali valutazioni abbia fatto il Governo in relazione sia alla osservazione del Garante della erogazione di fondi *ex lege* 383/90 alle sole imprese pubbliche con effetti discriminatori di quelle private sia in ordine alla carenza di una indispensabilità del servizio per la economia nazionale e la impossibilità di consentire l'equilibrio economico di gestione delle linee « stanti la contemporanea presenza di numerosi altri operatori che dimostrano la esistenza comunque di linee coperte ed in evidente equilibrio gestionale »;

se risulti quale seguito abbia comunque dato il Garante alla lettera su citata;

come, nel quadro del riassetto della flotta pubblica, si voglia tenere conto delle osservazioni formulate e ciò sia in vista delle norme nazionali che di quelle europee la cui portata con il voto favorevole al Trattato di Maastricht in contrapposizione alla diversa e più cauta valutazione data dagli interroganti in mancanza di idonee garanzie, Governo e maggioranza hanno consolidato ed esteso. (4-13081)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali e ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

nel libro di Vittorio Paliotti « In Campania » (edizioni Di Mauro, 1992) si può leggere il seguente brano:

« Al latrato di un cane, portato dal vento, risponde il grido di un gabbiano. Poi anche il cane tace e il gabbiano è volato via, oltre lo strapiombo, a iniziare un tuffo di trecento metri. L'unico suono che ode, chi arriva quassù, è quello del proprio respiro affannoso. Non c'è assolutamente nulla da udire, insommma, sicché a poco a poco i sensi che più rimangono vigili sono quelli dell'olfatto e della vista. Sentori di piante: il pino, il timo, il ginepro, il rosmarino, il mirtillo, il lauro. E visioni di azzurro e di verde: a destra sopra la baia di Matromania, le rocce della costa più selvaggia dell'isola, fino ai Faraglioni, e sullo sfondo la riva di Salerno; a sinistra Sorrento con la punta Campanella, l'isolotto dei Galli con Positano e la costiera amalfitana. Il Parco Astarita è la zona più bella, più curata (o almeno lo era) e insieme più contaminata di Capri.

È di tutti e non è di nessuno questo parco a rocce e a balze, esteso su un'area di centomila metri quadrati accanto ai ruderi di quella Villa Jovis che fu una delle dimore dell'imperatore Tiberio. È di tutti perché colui che lo unificò, lo organizzò e

lo valorizzò, il banchiere Mario Astarita, nel novembre del 1978, poco prima di morire, lo donò allo Stato italiano, e per esso alla Soprintendenza archeologica, affinché venisse aperto al pubblico. Non è di nessuno perché le lungaggini burocratiche ne hanno impedito il godimento da parte della collettività: non vengono nemmeno eseguiti lavori di manutenzione sicché tonnellate di aghi di pino si accomulano su mattonelle ormai sconnesse mentre grovigli di rami insecchiti rendono impraticabili i vialetti e, in qualche caso, perfino le terrazze a picco sul mare. Simbolicamente il cancello di ingresso è ben chiuso e sbarrato e le chiavi vengono conservate dalla Soprintendenza, ma non è stata elevata nessuna rete di recinzione e quindi, in pratica, chiunque può entrarvi. "Con rischio" osserva la signora Maria Vittoria Astarita, sorella dell'ex banchiere, "che qualche visitatore clandestino possa inavvertitamente provocare un incendio, e addio parco" » —:

quali siano le cause e le responsabilità dell'abbandono totale del parco e cosa si intenda fare per garantire la custodia, la tutela e la valorizzazione di un luogo tanto incantevole come può dedursi dalla descrizione che ne ha fatto il Paliotti. (4-13082)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per conoscere:

quali iniziative concrete ed urgenti abbiano assunto od intendano assumere onde, almeno quanto all'organico ed al potenziale produttivo, non vada a segno lo squallido disegno di chiusura della FAG di Somma Vesuviana, tipico del mondialismo capitalista delle multinazionali;

la FAG, 311 dipendenti, è una importante azienda metalmeccanica che produce 30.000 cuscinetti volventi al giorno ed ha tra la clientela committenti di tutto rispetto come la BOSCH, la WOLKSWAGEN, l'ANSALDO, l'ABB, la FIAT, le Ferrovie dello Stato. La FAG ha i bilanci in attivo mentre così non è per la multinazionale cui appartiene, la tedesca KUGELFISHER che è in crisi finanziaria per duemila miliardi e che ha deciso di eliminare taluni dei suoi impianti sparsi per il mondo, tra cui quello FAG di Somma Vesuviana per trasferire le produzioni in Corea (e sembra anche in Germania Est) per sfruttare il differenziale retributivo dovuto a minori garanzie sociali assicurate ai dipendenti;

l'interrogante riguardo al problema del vagabondaggio delle aziende multinazionali alla ricerca di aree geografiche nelle quali il cosiddetto « costo del lavoro » sia minore perché non caricato degli indispensabili oneri sociali, assistenziali, previdenziali e dal doveroso rispetto di civili condizioni lavorative, ha prodotto di recente una proposta di legge per vietare l'importazione in Europa da paesi dove i diritti sociali fondamentali non sono garantiti, peraltro sul solco di una allarmata indicazione venuta da Bruxelles allorquando esplose la crisi dell'informatica europea prodotta proprio dai paesi nei quali si pratica il « dumping sociale » e che esportano nella CEE; appare quindi necessario ed indispensabile, a parere dell'interrogante, che venga acclarata la legittimità della posizione della KUGELFISHER: a parte lo spostamento della produzione in Corea, quella da localizzarsi in Germania dell'Est potrebbe essere consentita da locali condizioni di favore assicurate dal governo tedesco in violazione del principio europeo della concorrenza;

se inoltre consti che la FAG e la sua capogruppo abbiano goduto di risorse pubbliche a valere sullo intervento straordinario dello Stato nel Mezzogiorno, o abbiano goduto di commesse grazie a tale localizzazione, per verificare se la KUGELFISHER avendo violato condizioni di legge non abbia obblighi da assolvere; occorre ancora comprendere se nel passaggio della FAG dalla FINMECCANICA alla KUGELFISHER la finanziaria italiana abbia posto o meno condizioni in ordine al manteni-

mento dei livelli occupazionali od altro oppure essa se ne sia minimamente preoccupata;

se intendano chiarire con sollecitudine quanto precede al fine di un preliminare inquadramento del problema nei suoi esatti termini anche quanto alla continuità delle commesse da parte di aziende italiane dopo l'eventuale dismissione dello stabilimento FAG di Somma Vesuviana: sarebbe gravissimo se, cancellato l'impianto e licenziati i lavoratori, i committenti italiani volessero approvvigionarsi dei cuscinetti volventi da altre aziende KUGELFISHER;

se in ogni caso siano in corso, ed in quali concrete prospettive si muovano, contratti e trattative per la cessione dello stabilimento ad altri imprenditori che ne vogliano proseguire l'attività;

se il caso in questione non appaia gravemente emblematico degli effetti perversi e nocivi ed esattamente contrari alle intenzioni ed obiettivi dichiarati, delle tanto declamate « privatizzazioni ».

(4-13083)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

da anni la medioevale Torre Ranieri, alla sommità della collina di Posillipo, è restata a mezzo tra l'avvio di restauri impropri ed il più completo abbandono; proprietaria della torre è ora la Ciclamino Srl –:

quali progetti risulti che tale società coltivi per un completo restauro a norma di legge e per un riuso compatibile con la tipologia dell'antico edificio militare.

(4-13084)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere:

se risulti fondata la notizia della scoperta a Nola (Napoli) sulla collina di Cicala della casa di Giordano Bruno;

in tal caso se esistano progetti per il suo restauro e per iniziative concrete, con sede nella stessa cittadina nolana, per la valorizzazione storica e culturale del filosofo.

(4-13085)

STANISCIA, DI PIETRO e MELILLA. — *Ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

l'ACM automobili di Piazzano di Atessa (Chieti), industria produttrice di veicoli fuoristrada che attualmente occupa circa 200 dipendenti, versa in uno stato di grave crisi di liquidità che mette a repentaglio il suo futuro e quello dei dipendenti;

tale fabbrica nel giugno 1992 è stata ceduta dall'allora proprietario Livio Biagini alla Motor Holding di Dublino, che aveva predisposto un piano di ristrutturazione e rilancio per superare le difficoltà già allora presenti;

per superare il momento di difficoltà è stata chiesta al tribunale di Vasto l'autorizzazione alla procedura di concordato e a tale fine il gruppo Zanini ha prestato garanzie fideiussorie per circa 14 miliardi;

ad una parte dei lavoratori, circa 100, è stata concessa la cassa integrazione per ristrutturazione del ciclo produttivo, i restanti operai sono rimasti al lavoro per procedere alla ristrutturazione stessa;

fino al mese di novembre del 1992 il programma di ristrutturazione è andato avanti secondo il piano previsto dalla nuova proprietà;

in dicembre è intervenuta una improvvisa crisi di liquidità che ha costretto a porre in cassa integrazione 50 dei lavoratori impegnati nel programma di ristrutturazione;

il programma di ristrutturazione si è praticamente bloccato e i dipendenti non percepiscono lo stipendio ormai da cinque mesi, come nulla hanno riscosso i dipendenti in cassa integrazione;

le maestranze sono in agitazione ormai dallo scorso mese di dicembre e presidiano da allora lo stabilimento nell'orario di lavoro;

il tribunale di Vasto ha concesso al gruppo Zanini tempo fino al 21 aprile prossimo venturo per prestare le necessarie garanzie onde poter accedere alle procedure di concordato, ma il gruppo Zanini non sembra allo stato attuale essere in grado di poter fornire tali garanzie;

nel frattempo sembra si sia interessata all'ACM una cordata di imprenditori capeggiata dalla famiglia Cornacchia, che attraverso contatti epistolari con l'attuale proprietà e con il commissario giudiziale, sembra essersi dichiarata disposta a rilevare l'azienda;

la trattativa si è arenata e non se ne conosce la motivazione;

la protesta dei lavoratori monta giorno dopo giorno, e sempre più difficile ed insostenibile diventa la loro condizione;

l'attuale proprietà sembra essere intenzionata, in mancanza di acquirenti, ad iniziare la procedura di fallimento;

l'ACM automobili, pur nelle difficoltà che sta attraversando il settore automobilistico, è in grado di ritagliarsi una nicchia di mercato nella quale inserirsi con la produzione di 3 mila veicoli l'anno, un quantitativo sufficiente per la ripresa dello stabilimento;

l'ACM ha ottenuto decine di miliardi di lire di contributi a fondo perduto e di mutui a tasso agevolato ed altri diciotto potrebbe ottenere se riprendesse la produzione;

nello stabilimento c'è un fondo magazzino del valore di circa 14 miliardi;

se si perde ulteriore tempo si rischia di vanificare le potenzialità di ripresa di questa azienda, di bloccare il processo di ristrutturazione, di perdere la possibilità della cassa integrazione per i lavoratori;

questa situazione di difficoltà dell'azienda ACM sembra sia dovuta ad una « guerra » tra gruppi finanziari ed industriali per il controllo del mercato dei fuoristrada a tutto danno dei lavoratori e del denaro pubblico investito –:

se non ritengano, ognuno per la propria competenza, di intervenire per accertare le cause che hanno portato alla situazione difficile dell'azienda ACM automobili e per fare in modo che la stessa possa riprendere la produzione in modo da salvaguardare il posto di lavoro dei circa 200 dipendenti e l'investimento pubblico effettuato. (4-13086)

BORGHEZIO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia e delle finanze.* — Per sapere – premesso che:

il Procuratore Generale della Repubblica di Genova, dottor Castellano ha di recente invitato tutte le procure presso le preture del distretto della Corte d'Appello di Genova a contestare ai venditori ambulanti abusivi non solo il reato di frode in commercio, ma anche il contrabbando di prodotti contraffatti ed il reato di ricettazione;

la Procura Generale di Genova ha infatti rilevato, secondo indirizzo ed interpretazione giurisprudenziali consolidati della Suprema Corte, che i venditori di merce « con marchi e distintivi contraffatti » devono essere rinviati a giudizio per il reato di ricettazione;

incorrono parimenti nel reato gli acquirenti della merce irregolare posta in vendita dagli ambulanti abusivi, di cui non pochi sono immigrati extracomunitari –:

per quale motivo questa puntuale e rigorosa applicazione della legge vigente risulti circoscritta all'attività degli uffici giudiziari del distretto della Corte d'Appello di Genova, mentre il grave fenomeno dell'abusivismo commerciale risulta purtroppo esteso a tutta l'Italia;

se non ritenga di autorevolmente intervenire per quanto di competenza affinché vengano similmente richiamati all'os-

servanza delle norme sopra indicate anche gli uffici giudiziari degli altri distretti del Paese;

se non si ritenga necessario disporre un'approfondita inchiesta atta ad individuare altresì le organizzazioni, sicuramente collegate alla criminalità organizzata, che forniscono le merci contraffatte poste in vendita dai venditori ambulanti abusivi. (4-13087)

BOTTINI. — *Ai Ministri della sanità, dell'interno e dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

la mobilità delle persone handicappate non deambulanti è favorita anche da diverse normative che riguardano l'uso di mezzi privati nonché dalle recenti disposizioni della legge-quadro;

la nuova normativa afferma che le regioni disciplinano le modalità con le quali i comuni dispongono gli interventi per consentire alle persone handicappate la possibilità di muoversi liberamente sul territorio, usufruendone alle stesse condizioni degli altri cittadini (articolo 26, comma 1, della relativa legge);

circa la sosta in parcheggi riservati alle persone handicappate non deambulanti (circolare del Ministero dei lavori pubblici 1270/79), il cartello stradale indica un disegno di una persona handicappata seduta su una sedia a rotelle;

l'interrogante ritiene ingiusto che le persone deambulanti, che zoppicano o perché hanno una gamba corta o altro, possano sostare con la loro vettura nei parcheggi riservati –:

se si ritenga che questi parcheggi sono riservati esclusivamente alle persone handicappate con la sedia a rotelle, e/o accompagnatori per persone inabili;

se si ritenga di ritirare gli appositi contrassegni alle persone non inabili. L'interrogante ritiene che si dovrebbe dare parere sfavorevole: i parcheggi non sono riservati a tutte le persone con handicap di ogni genere. (4-13088)

BOTTINI. — *Ai Ministri dell'interno e dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

è nota la legge Regionale (Regione Lazio), del 12 gennaio 1991, n. 1, (servizi di pubblico trasporto di persone di interesse locale);

il trasporto delle persone con handicap di ogni genere compresi i ciechi e i sordomuti su tutti gli autoservizi pubblici di linea, urbani ed interurbani, ivi compresi quelli integrativi e sostitutivi di altri servizi di trasporto pubblico, servizi tranviari, filoviari, funicolari terrestri, ascensori pubblici, metropolitani e le linee di navigazione interna di competenza regionale, è di interesse estremo per la collettività –:

per quale motivo non sia garantita la « libera circolazione » dei soggetti di cui sopra;

se esistano le cosiddette agevolazioni per i medesimi soggetti e se si ritenga di fornire la documentazione dettagliata che ne attesta l'esistenza. (4-13089)

PARLATO. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per conoscere – premesso che:

la TANGENZIALE di Napoli è ai vertici della classifica della pericolosità delle autostrade italiane dato che nel 1991 è stato rilevato essersi verificati, lungo i suoi venti chilometri, 14 incidenti a chilometro, con otto morti, uno ogni duemilacinquecento metri;

inoltre costituendo essa una arteria indispensabile per l'attraversamento della città vede una domanda di traffico, inizialmente prevista in 90.000 veicoli al giorno, vicina alle trecentomila unità che – a causa del rallentamento costituito dalla esazione dell'iniquo balzello previsto per il pedaggio – rallentano enormemente la

marcia, con file di chilometri che ne rendono lunghissimo, anche un'ora, l'attraversamento;

inoltre l'inquinamento acustico è alle stelle e quello atmosferico non è da meno;

nonostante la palmare evidenza di quanto precede la società TANGENZIALE del gruppo IRITECNA, fa ricorso ad una miriade di costosissime inserzioni pubblicitarie per magnificare la propria gestione i cui limiti sono sotto gli occhi, le orecchie ed il naso di tutta la città;

in uno dei tantissimi inserti pubblicitari la mistificazione ha raggiunto lo spasimo e c'è da chiedersi se sia legittimo affermare, con pubblico danaro, cose non rispondenti affatto al vero;

ha scritto l'ineffabile TANGENZIALE tra l'altro: « Il congestionato traffico cittadino, che specie in questo periodo provoca la paralisi in quasi tutte le vie napoletane, trova una valvola di sfogo sull'arteria della società del gruppo Iritecna, che con i suoi 20,200 Km di lunghezza complessiva, consente di spostarsi da un punto all'altro della città con estrema rapidità. Il traffico defluisce regolarmente. I vertici della Tangenziale di Napoli, in collaborazione con la Capogruppo Autostrade spa nell'anno in corso hanno provveduto ad una serie di lavori in autofinanziamento. Ciò fa della Tangenziale una delle autostrade più sicure in Italia. Tutti i lavori sono stati eseguiti nel rispetto dei delicati equilibri ambientali. Logiche finalizzate allo sviluppo della principale arteria cittadina ed alla tutela di chi la percorre » –:

quanto siano costanti le mendaci inserzioni pubblicitarie della TANGENZIALE in ciascuno degli anni che vanno dal 1983 al 1992 e su quali quotidiani, periodici, emittenti televisive, compreso il costo redazionale;

cosa si aspetti ancora da parte dell'ANAS a riacquisire al patrimonio stradale italiano l'arteria, liberalizzando il percorso;

come mai, nonostante i controlli con telecamere su tutto il percorso non venga mai fermato alcun automobilista per eccesso di velocità (laddove e quando – fuori degli orari di punta – sia possibile registrarla);

come mai nonostante la « sensibilità-ambientale » della TANGENZIALE si siano diffuse molte proteste in ordine all'inquinamento acustico ed atmosferico che produce;

come mai, nonostante la pretesa sua sicurezza, l'arteria contenda con la Tangenziale di Milano il primato di incidenti e dei decessi conseguenti a chilometro, a nulla rilevando il numero maggiore dei veicoli dato che nelle ore di punta, quando la affluenza è massima, è notorio che non si verificano incidenti gravi stante la ridottissima velocità commerciale che deriva dalle file obbligate alle uscite;

come si intenda affrontare il deflusso dalla TANGENZIALE verso il Centro Direzionale che già oggi, quando il Centro non è in funzione che in minima parte, vede uno scorrimento lentissimo con file che ingombrano la carreggiata;

perché non venga liberalizzato il pedaggio avendo la TANGENZIALE recuperato la totalità dell'investimento (al netto degli sprechi e delle clientele ovviamente) e dato che non può certo parlarsi di « autofinanziamento » per opere realizzate con i danari dei trecentomila utenti quotidiani costretti all'iniquo pedaggio, di entità e misura non previste negli atti iniziali costitutivi del rapporto con l'ANAS e « novati » al riguardo con modalità gravemente censurabili;

per quali motivi la maggior parte degli atti ispettivi prodotti dall'interrogante in materia siano restati inevasi durante le varie legislature dalla VIII alla XI e se ciò non autorizzi l'interrogante a temere che nei rapporti ANAS-TANGENZIALE possa esservi alcunché di torbido;

in ogni caso se sia stato fatto il conto preciso dell'enorme risparmio che deriverebbe dalla liberalizzazione del pedaggio

sulla TANGENZIALE in termini energetici e di usura dei veicoli, di stress psico-fisico e di recupero della produttività compromessa in misura indicibile per coloro che, trattenuti per ore ai caselli, stante il rallentamento del deflusso per il pagamento (anche, si noti, in caso di possesso della tessera VIACARD) raggiungano i luoghi di lavoro in ritardo rispetto all'orario di inizio, con estesi danni per la economia nazionale e locale, del tutto evitabili con l'abolizione del balzello;

se consti che il « Giurì » del codice di autodisciplina pubblicitaria sia mai intervenuto per reprimere e sanzionare le mendaci affermazioni di autoregolamentazione pubblicitaria della TANGENZIALE, rispondenti poco o punto al vero. (4-13090)

PARLATO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, dell'industria, commercio e artigianato e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

ancora una volta a Napoli è emerso nelle scorse settimane, ad opera del sindaco arrestato e poi finalmente uscente Polese, uno spudorato tentativo di cementificazione speculativa, già condannata nel lungo e convulso *iter* che ha accompagnato la elaborazione, il dibattito, le decisioni sul Preliminare di Piano Regolatore quale presupposto di una variante generale, sin dentro le stanze della Procura della Repubblica di Napoli, anche per iniziativa dell'interrogante;

nello scorso febbraio l'*ex* sindaco Polese presentava infatti al Governo delle « note sulla riutilizzazione delle aree industriali dismesse nell'area occidentale di Napoli » in tre cartelle ed in cinque punti, in totale violazione delle decisioni che, battendo in ritirata dal primo progetto, il consiglio comunale aveva imposto alla Giunta ed alla maggioranza;

tali note, redatte dunque al di fuori ed al disopra delle scelte consiliari, illustrerebbero azioni prioritarie e strategiche, interventi di riqualificazione urbanistica della Intera area occidentale, il parco scientifico e tecnologico, con teleporto, Museo delle Scienze, alberghi, porto turistico e porto sussidiario per le isole, attrezzature commerciali e parco pubblico attrezzato, su aree di proprietà della CIMIMONTUBI e della MEDEDIL, che hanno concorso in modo evidente all'elaborazione per fini propri e privati del documento, in contrasto con le indicazioni del consiglio comunale che ne è restato estraneo;

lo stesso documento solleciterebbe il Governo, sempre tenendo estraneo il consiglio comunale, affinché l'IRITECNA presenti una proposta di intervento attraverso il Programma di cui alla legge n. 179 del 1992, ancora non deliberato quanto alla attuazione dalla regione Campania la quale – è il caso di evidenziarlo – è tuttora gravemente inadempiente su tutte le tematiche di sua competenza: piano di assetto del territorio, piano di sviluppo regionale, definizione dell'area metropolitana, con l'effetto di determinare la caduta disorganica ed a pioggia di ogni insediamento, in particolare produttivo, secondo la squallida logica del clientelismo e dell'assistenzialismo in via, grazie a Dio !, di emersione in sede giudiziaria;

le aree che sarebbero interessate dai progetti, alla cui elaborazione almeno i termini di indirizzo e di programmi l'Ente locale ha abdicato, con quelle della *ex* ETERNIT e parte di quelle dell'ILVA già ITALSIDER;

mentre il consiglio comunale ancora ignora il contenuto delle note, la ispirazione, la logica e la misura di rispondenza alla legittimità che vi presiede, il nuovo sindaco di Napoli, Tagliamonte ha annunciato come priorità quella urbanistica relativamente alla area occidentale ed a quella orientale, mentre non è nemmeno annunciato un approfondimento sulla variante al PRG, sui Piani di Area e sulla ristrutturazione delle aree dismesse e, si noti, il Governo non ha dato ancora alcun riscontro agli interrogativi posti in numerosi atti ispettivi dell'interrogante su compromessi di compravendita, ed acquisti

definitivi di aree da parte di soggetti privi di scrupoli, prima che la variante generale sia approvata, nella perspicace e profetica certezza delle nuove destinazioni e delle cubature in aumento previste dallo strumento e già note agli inquirenti di appalto delle aree –:

quale sia il contenuto preciso delle dette « note »;

in quale fase si trovino i procedimenti giudiziari aperti dal sostituto procuratore della Repubblica di Napoli dottor Salvatore Sbrizzi in ordine al Preliminare;

se si intendano richiamare la nuova amministrazione comunale di Napoli e la nuova amministrazione regionale, a far fronte finalmente ai loro sin qui disattesi doveri istituzionali, in mancanza dei quali nessuna politica del Governo, ove mai seriamente esistente e praticabile potrà essere mai realizzata sia per lo sviluppo che per l'occupazione stanti le omissioni, le contraddizioni, i tentativi clientelari e speculativi che sembrano aver suggestionato sin qui entrambe le istituzioni dovendosi porre in evidenza che la indicazione urbanistica programmatica per l'area occidentale consisteva in tutt'altra scelta: quella del potenziamento della attività di ricerca soprattutto di base, della restituzione della Mostra d'Oltremare alle sue funzioni culturali con il restauro ed il recupero, compresa l'area del Collegio Costanzo Ciano alla città e del patrimonio ambientale ed architettonico e con la realizzazione di un monumentale parco verde attrezzato inserendovi anche iniziative del tutto assenti nel progetto d'assalto in questione per il recupero paesistico del territorio. (4-13091)

PARLATO. — *Ai Ministri del turismo e spettacolo, delle finanze e di grazia e giustizia.* — Per conoscere, facendo seguito a quanto ha formato oggetto dell'atto ispettivo n. 4-11532 del 2 marzo 1993 relativo alla assicurazione supplementare « obbligatoria » voluta dalla FIGC-Lega nazionale dilettanti con la Toro assicurazioni, e tuttora in attesa di riscontro, se sia stato scoperto il percettore della lautissima « provvigione » e se risponda a verità che il pesantissimo balzello abbia avuto un « costo sportivo » e quindi « sociale » enorme, con la rinuncia alla iscrizione di oltre duemila società: le « piccole » società di terza categoria, quella minima, sarebbero infatti scese da circa cinquemila a tremilatrecento. Le società della Lega si noti – erano circa undicimila nel 1988/1989, mentre nell'anno sportivo in corso, 1992/1993 sarebbero solo novemila, contrariamente a quanto affermato dal Presidente Elio Giulivi che parla invece di tredicimila società affiliate, « confondendo » il numero delle « squadre » con quello delle società. (4-13092)

PARLATO. — *Ai Ministri del tesoro e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per conoscere – premesso che:

con decreto-legge 18 agosto 1978 n. 481, convertito con modificazioni nella legge 21 ottobre 1975 n. 641, l'Opera Nazionale Combattenti venne soppressa e furono avviate le relative operazioni di liquidazione;

singolare è peraltro la posizione attuale dei coloni compromissari della frazione Arco Felice in Pozzuoli, di Bacoli e di Giugliano;

consta infatti che fin dal 1984 (vedasi ad esempio la lettera 1° dicembre 1984 prot. 662600/p, Divisione III Patr. dell'Ufficio Liquidazioni ONC) il Ministero del Tesoro comunicò alla regione Campania che i compromissari avevano saldato prezzi ed interessi e che veniva concesso il nulla-osta per procedere alla stipula del contratto di compravendita a cura della stessa regione;

consta anche che, con lettera 7 ottobre 1986, prot. 18099, l'Ufficio *ex* ONC della regione Campania inviò una lettera al predetto ufficio liquidazioni ONC del Ministero del Tesoro nonché ai coloni promissari della vendita dei poderi, affer-

mando che la Giunta regionale aveva con delibera 6312 del 17 luglio 1986, deciso « in ordine alla titolarità dell'Ufficio Liquidazioni (ONC) di questo Ministero su quanto attiene la stipula dei rogiti notarili per il passaggio di proprietà dei poderi promessi in vendita, ponendo a disposizione del Ministero la relativa documentazione;

in questo squallido rimpallo di responsabilità e di funzioni, a pagare – come al solito – sono stati i poveri coloni che a quindici anni dalla legge e ad otto della predetta missiva, pur avendo corrisposto quanto dovuto, non si sono visti ancora trasferire la proprietà dei poderi;

a responsabilità di chi risalga il mancato adempimento pubblico alla promessa di vendita, nonostante che da tempo lunghissimo i coloni abbiano corrisposto il dovuto –:

quando si intenda far finalmente fronte agli obblighi contrattuali e di legge;

quale risarcimento dei danni per il ritardo sia stato previsto in favore dei coloni ed a carico di chi, essendo davvero intollerabile ed emblematico delle disfunzioni regionali e ministeriali e più in generale della pubblica amministrazione, quanto accaduto a danno dei cittadini aventi diritto. (4-13093)

PARLATO. — *Ai Ministri degli affari esteri e per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

come è noto l'UNESCO pone sotto la sua tutela siti e monumenti di particolare rilevanza culturale, artistica, architettonica ed ambientale;

tuttavia a sud di Roma non risulta posto sotto la tutela dell'UNESCO alcun bene culturale od ambientale meridionale;

da chi l'Italia sia rappresentata nella Commissione UNESCO che delibera l'inserimento dei beni tra quelli tutelati dalla suddetta organizzazione –:

quali diritti e doveri assuma l'UNESCO nei confronti dei beni – giunti ora nel mondo al numero di 379 – inseriti tra quelli che considera degni della sua protezione e quali vincoli per lo Stato nazionale e le sue istituzioni locali comportino la iscrizione del bene tra quelli tutelati;

se esistano proposte per inserire beni culturali del Mezzogiorno d'Italia tra quelli tutelati dall'UNESCO. (4-13094)

PARLATO. — *Ai Ministri delle poste e telecomunicazioni, della pubblica istruzione e dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

il modo con il quale la SIP intende il proprio ruolo di fornitrice di un servizio pubblico è davvero censurabile giacché l'agire in regime di monopolio la rende arrogante e sorda alle istanze della utenza;

infatti dall'abbandonato rione di Monteruscello in Pozzuoli, plesso 17, scuola materna del 5° Circolo Didattico di Pozzuoli, sito in via Marotta, insegnanti e genitori hanno rivolto la richiesta nientemeno che della installazione di una colonnina per il telefono pubblico o in alternativa di un « Rotar » all'esterno dell'edificio scolastico, non essendo possibile l'installazione di una linea telefonica;

da quattro mesi la richiesta risulta del tutto inevasa nonostante l'evidente necessità ed urgenza che la scuola possa disporre, se non altro per chiamate di emergenza, di un telefono –:

se intendano intervenire perché cessi l'intollerabile latitanza della SIP dai suoi doveri di concessionaria del servizio pubblico telefonico. (4-13095)

PARLATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per conoscere:

se dopo l'intervento di puntellamento svolto di urgenza dalla Soprintendenza, mercè l'Impresa GIGLIO, del dissestato « Palazzo dell'Imperatore » alla via Tribunali, comune di Napoli e condominio ab-

biano fatto fronte ai loro obblighi effettuando il recupero del dissesto nonché nei confronti del credito maturato dalle competenti Soprintendenze;

se al di là dell'intervento statico svolto, ci siano progetti e risorse finalizzate al completo recupero e restauro dell'antichissimo edificio – unico esempio di edilizia civile dell'epoca – già dimora di Filippo d'Angiò, imperatore di Costantinopoli e fratello di Re Roberto. (4-13096)

PARLATO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per conoscere – premesso quanto ha formato oggetto della interrogazione n. 4-04403 del 5 agosto 1992 (e che riproduceva quella n. 4-00818 del 6 maggio 1992, che a sua volta riprendeva quella n. 4-03769 del 22 gennaio 1992) riguardante la davvero inadeguata ed insufficiente risposta fornita dal Governo a quest'ultimo atto ispettivo relativamente al totale abbandono in termini di servizi ed infrastrutture del Rione Toiano, sorto a Pozzuoli dopo il bradisismo –:

se risulti – in aggiunta ai quesiti restati inevasi – che presso la regione Campania il Servizio Edilizia Economica e Popolare sia giacente dal dicembre 1991 preventivo di spesa IACP per l'eliminazione delle barriere architettoniche – (creazione accessi agli ascensori piano cantinato, impiantistica, rampe di accesso al primo livello, scivoli, adeguamento impianti ascensori) per lire 10.250 milioni, richiesto dallo stesso IACP e che tali interventi avevano formato oggetto di richiesta di un gruppo di inquilini dell'isolato E, scala C del medesimo rione, datata 20 settembre 1991;

se inoltre risponda al vero che nel rione, rete idrica e fognaria sono già fatiscenti ed ostruiti e le infiltrazioni nei terreni, e nei vari ascensori provocano dissesti della sede stradale dei marciapiedi, dei vani ascensori e che né comune di Pozzuoli né IACP intervengano se non in casi eccezionali, scaricandosi l'un l'altro le relative responsabilità;

se si intenda disporre finalmente una ricognizione completa delle carenze strutturali, di servizio e manutentive del rione Toiano, individuando le relative responsabilità, reperendo le necessarie risorse, disponendo che il rione recuperi, prima che il degrado diventi irreversibile e gli interventi insufficienti se non a costo di centinaia di miliardi, la necessaria vivibilità;

se esistano anche responsabilità dei costruttori da perseguire subito a norma di legge (come accade nel rione di Monteruscello) prima di eventuali prescrizioni. (4-13097)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale, per i beni culturali ed ambientali e dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

il celebre, secolare caffè Caflisch, in Via Toledo a Napoli, una delle vie monumentali della città e proprio davanti ad uno degli ingressi alla Galleria Umberto I, è al centro di una manovra che va smascherata perché si colloca in direzione di un grave ed irresponsabile danno ai 28 dipendenti del locale oltre che alla storia ed alla cultura della città;

proprietaria del locale è la società RINA che fa capo a tale Pasquale De Angelis, concessionario della gestione dei famigerati MCDONALD'S in Campania;

questi ha annunciato che nei prossimi giorni ventuno dei ventotto dipendenti verranno licenziati « tenuto conto – è semplicemente incredibile pensarlo possibile – dell'andamento dell'attività commerciale endemicamente in crisi »;

chiunque abbia frequentato in questi ultimi tempi CAFLISCH si sarà invece reso conto di come l'antico locale situato in uno dei più prestigiosi e frequentati luoghi della città, sia stato lasciato decadere (per far posto – in tutta evidenza – ad uno squallido, culturalmente parlando, esercizio del MCDONALD'S);

l'esercizio CAFLISCH possiede la « settima integrale », licenza che consente

la vendita di merci varie e dato che il De Angelis è proprietario anche della catena di abbigliamento UNIFORM e che nell'altro locale già CAFLISCH in Piazza Bovio è stato installato un negozio UNIFORM, le conclusioni è facile trarle;

dinanzi a questo scempio della occupazione qualificata e tradizionale di CAFLISCH e degli ambienti nei quali si vorrebbe introdurre la cultura del « fast-food » e del « casual », il moto spontaneo di ribellione deve trovare necessario supporto sia da parte della Prefettura di Napoli (alla quale i lavoratori si sono rivolti) che da parte della amministrazione comunale e soprattutto della Soprintendenza;

si noti che già in precedenza, anche a seguito di atti ispettivi dell'interrogante, si era riusciti ad evitare che MCDONALD'S, la cui sensibilità culturale appare assai dubbia visti i luoghi che senza pudore, predilige per i suoi insediamenti, si installasse oscenamente nella vicina Piazza San Ferdinando;

si noti ancora che il Soprintendente architetto De Cunzo in analoga questione, quella dell'altra oscena occupazione di locali dello storico caffè « Gambrinus » da parte del Banco di Napoli, ha affermato – in sintonia con l'interrogante – che anche la destinazione d'uso dei locali aventi rilevanza storica, è censurabile –:

quali atteggiamenti abbia assunto l'UPLMO in relazione alla posizione chiaramente strumentale della proprietà di tentare di « giustificare » i licenziamenti;

quali iniziative abbia assunto il Prefetto ed in particolare se questi sia intervenuto sull'Ente locale perché la licenza, visto che non è stata mai utilizzata per quanto consentito, decada per quel che riflette l'ampliamento integrale o non possa comunque essere utilizzata per fini commerciali diversi da quelli tradizionali di CAFLISCH;

se la Soprintendenza abbia vincolato od intenda vincolare il locale in parola, anche stante la sua ubicazione, con sede a Via Toledo e dinanzi alla Galleria ed in quello splendido Palazzo Berio dove Gioacchino Rossini compose alcune delle sue più belle musiche, e visto che CAFLISCH vi fu insediato sin dall'anno 1825;

se la Soprintendenza comunque intenda negare il nulla osta all'aberrante progetto della RINA-MCDONALD'S;

se consti che la società RINA abbia documentato analiticamente le cause della crisi in modo obiettivo ed idoneo ad escludere voluti errori di conduzione nella gestione di CAFLISCH e se anche i sindacati abbiano adeguatamente replicato, come del resto in loro potere, alla legittimità della analisi e del piano aziendale, e se – infine – l'UPLMO abbia dato giudizi di valore e quali essi siano stati al fine di consentire o di vietare alla RINA ulteriori passi nelle procedure. (4-13098)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno, dei trasporti, per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali, di grazia e giustizia e delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

come è noto la sentenza n. 5 del 30 gennaio 1980 della Corte Costituzionale ha evidenziato quali debbano essere i criteri di stima, da seguire rigorosamente, per determinare il giusto indennizzo delle espropriazioni per pubblica utilità; analogamente ha provveduto la regione Lazio con l'articolo 4 della Legge regionale n. 1/86;

nella vicenda relativa alla determinazione del valore dei terreni da espropriare per la realizzazione dell'interporto di Valmontone da parte dei periti che hanno redatto perizia giurata, nel comportamento tenuto dagli amministratori dell'Università Agraria, in quello dei pubblici ufficiali che avevano il dovere di controllare che fosse stata correttamente applicata la legge sugli espropri dei terreni e la conseguente tutela dei diritti di uso civico della cittadinanza, non sembra affatto – almeno secondo no-

tizie e documenti in possesso dell'interrogante – che sia ravvisabile il rispetto di leggi dello Stato;

infatti la stima di alcuni terreni di proprietà dell'Università Agraria di Valmontone, facenti parte del demanio civico e che quindi giuridicamente costituiscono proprietà collettiva di tutti i cittadini di Valmontone vennero sottovalutati con danno della comunità locale mentre altri terreni, di proprietà del comune di Valmontone, vennero sopravvalutati, nel quadro di una permuta tra i due enti;

la perizia relativa venne asseverata con giuramento da parte dell'Arch. Luciano Andreotti, capo dell'Ufficio Tecnico del comune di Valmontone che, prescindendo dalla legge 25 giugno 1865 n. 2359 alla quale avrebbe dovuto farsi riferimento, ebbe ad effettuare la stima, nonostante precisa e consolidata giurisprudenza, in misura chiaramente inferiore a quella dovuta, quanto ai terreni dell'Università Agraria, mentre per quelli comunali veniva omessa la descrizione delle caratteristiche dei luoghi, essenziali per determinare il valore, con l'effetto di una operazione finale di un fittizio riequilibrio dei valori della permuta –:

se siano state mai aperte indagini o se si intendano aprire oggi, in ordine alla rispondenza reale al vero della stima effettuata ed asseverata quale presupposto della permuta, anche da parte del Ministero delle finanze, potendo emergere violazioni fiscali stante il diverso valore che venisse accertato tra i suoli in permuta;

se la regione abbia mai approfondito la questione ed altrettanto abbia fatto il Ministero dei trasporti;

se consti che presso la Procura della Repubblica di Velletri sia stato mai aperto un procedimento al riguardo e quale sorte, in caso affermativo, esso abbia avuto;

se comunque nella vicenda « de quo » appaiono essere stati commessi omissioni ed errori, in buona o cattiva fede, avente comunque rilevanza amministrativa, fiscale o penale, con ingiusto profitto di alcuni ed ingiusto danno di altri. (4-13099)

PARLATO e MATTEOLI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per conoscere – premesso che:

come ha denunciato la CISNAL, la D'AVENZA SPA, società d'alta moda maschile, sita nel territorio di Massa Carrara, zona particolarmente svantaggiata per il crollo dell'occupazione, ha richiesto il ricorso alla CIG non ancora erogata;

nonostante gli accordi sindacali siglati tra le parti ed aventi impegnativo valore di obbligazione contrattuale in data 19 giugno 1992 e 17 settembre 1992 presso la sede dell'Associazione degli Industriali della provincia di Massa Carrara ed aventi ad oggetto, tra l'altro, il rispetto del principio della rotazione, la medesima non viene di fatto applicata –:

quali urgenti provvedimenti intenda adottare al fine di garantire il rispetto integrale dell'accordo e così la occupazione e le retribuzioni – sospese da circa 9 mesi – dei lavoratori della suddetta azienda;

per quali motivi il trattamento di CIG non sia stato ancora erogato;

se vogliano intervenire sulla azienda, tramite i competenti uffici periferici, perché la azienda rispetti integralmente la intesa. (4-13100)

PARLATO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia e delle finanze.* — Per conoscere – premesso che:

il funzionamento della giustizia a Napoli, specie attraverso la celebrazione di processi rapidi – requisito essenziale perché la giustizia stessa sia tale – è compromesso da mille disfunzioni parte delle quali ascendenti a responsabilità locali ma in misura ancora più consistente da responsabilità ministeriali;

gli avvocati penali sono in agitazione da un mese a causa della mancanza del

servizio di « stenotype » previsto espressamente dal nuovo codice di procedura e senza il quale affermano giustamente il processo è privato di un supporto indispensabile alla sua chiarezza, completezza e velocità;

i componenti del Consiglio Direttivo della Camera Penale hanno evidenziato due circostanze inquietanti: la prima è quella relativa alla costosissima installazione di telecamere per la ripresa filmata dei dibattimenti e la seconda relativa al fatto che sino a poco tempo fa la amministrazione della giustizia ha pagato ben 16 mila lire per ogni pagina « stenotypata » a fronte di appena 4 mila lire a pagina offerta da altra ditta all'Ufficio Tecnico Erariale –:

se risponda al vero quanto precede ed in particolare:

*a)* quanto sia costata la installazione degli impianti di ripresa televisiva nelle aule, quale ditta l'abbia effettuata ed a seguito di quale gara;

*b)* quanto sia costato il servizio di « stenotype » a pagina, quale ditta lo abbia reso ed a seguito di quale gara;

*c)* come si giustifichi un divario di spesa a pagina del 300 per cento tra il costo dei servizi resi da una ditta alla amministrazione della giustizia e quello da un'altra ditta proposto all'UTE;

se si intenda intervenire perché, in applicazione del codice di rito, venga al più presto ripristinato ed a costi più che sostenibili come è dimostrato essere possibile, il servizio di stenotypia consentendo la ripresa dei processi penali, con il crisma della legalità, a Napoli. (4-13101)

PARLATO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia, dell'interno e dell'ambiente.* — Per conoscere – premesso che:

nello scorso mese di gennaio nel comune di Calvizzano (Na), a ridosso della Via S. Maria a Cubito, per iniziativa del sostituto procuratore della Repubblica dottoressa Breda, è stata rinvenuta e sequestrata al di sotto di 37 mila mq. di terreno agricolo al quale non altro sembrava mancare che l'essere seminato, una vera e propria cittadella di sottoservizi costituita da opere idriche, fognarie, stradali, predisposte come prima urbanizzazione di una zona sulla quale, sollevati i trenta cm. di terreno che la ricopriva, avrebbero dovuto sorgere numerosi fabbricati –:

se siano state individuate e colpite tutte le responsabilità, ivi comprese quelle che si sarebbero annidate tra gli amministratori comunali che non solo non avrebbero ignorato la cosa ma stavano per predisporre – queste furono le notizie di stampa tre mesi orsono – una copertura parziale dell'abusivismo mercé l'adozione di una variante al PRG;

se gli impianti tecnologici e strutture cementizie siano stati – è il caso di dire – « sradicati », ed i responsabili – amministratori comunali, proprietari, costruttori – condannati comprendendo nelle sanzioni anche il risarcimento del danno ambientale con la riduzione dell'area agricola saccheggiata in pristino stato: invero il territorio da Marano a Calvizzano a Giugliano, a Mugnano risulta strappato alla vocazione agricola e coperto da una squallida edilizia di rapina, con una carenza di interventi tempestivi ed efficaci preventivi e repressivi dell'abusivismo che non ha risparmiato nemmeno i non pochi siti archeologici e ha caratterizzato con lo squallore urbanistico più evidente cittadine una volta ridenti ed ora ridotte a tristi e grigi dormitori. (4-13102)

PARLATO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

la Prefettura di Napoli ha richiesto lo scorso anno la documentazione dalle ditte interessate all'inserimento nell'elenco dei soggetti autorizzati alla custodia di reperti sequestrati (articolo 8 decreto del Presidente della Repubblica n. 571 del 29 luglio 1982);

per quanto incredibile non appare nell'elenco dei documenti richiesti né la *certificazione antimafia né il certificato* penale né quello dei carichi pendenti;

esiste il timore che tra i soggetti autorizzati ne risultino taluni che abbiano avuto a che fare con la giustizia, direttamente o tramite loro familiari;

inoltre consta all'interrogante che oltre a tale grave omissione i competenti uffici della prefettura facciano confusione tra custodia amministrativa di reperti sequestrati e custodia giudiziaria tant'è che circola un « elenco ditte autorizzate custodia veicoli motore » seguito dalla dizione (custodia giudiziaria) che è invece relativo alle sole ditte autorizzate alla custodia amministrativa, con l'effetto di indurre in errore in ordine al possesso da parte della ditta di « titoli » di cui invero non tutte dispongono;

e ciò per non dire della non sempre razionale ed organica distribuzione delle competenze territoriali –:

se intenda intervenire perché la Prefettura di Napoli acquisisca da tutte le ditte la documentazione idonea a tranquillizzare gli utenti in ordine al possesso da parte delle ditte e dei loro titolari e soci, dei requisiti antimafia e penali, rinnovi l'elenco con l'esclusione di coloro che non posseggono tali requisiti, dirami elenchi non equivoci relativamente alla tipologia di custodia di sua competenza (amministrativa e non giudiziaria), riveda gli ambiti territoriali incoerenti. (4-13103)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'ambiente, per i beni culturali ed ambientali e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

non è ancora nota, a poco meno di un anno dalla sua presentazione, la risposta alla *interrogazione parlamentare* n. 4-01245 del 25 maggio 1992 e relativa a due cave illegali in località Centopertose e Montecampo nel comune di Casagiove (Ce) che con le cento altre del casertano, costituiscono scempio del paesaggio, nella insensibilità culturale degli enti locali e della *regione che si sentono autorizzati a tale* politica di tolleranza della illegalità dalla mancanza di congrue iniziative del Governo;

peraltro il 9 marzo 1983, dieci anni orsono, – e questo ulteriore elemento di valutazione aggrava ulteriormente le responsabilità – la Commissione provinciale di Napoli-Caserta per la compilazione degli elenchi delle bellezze naturali di cui all'articolo 2 della legge 29 giugno 1939 n. 1497, istituita con decreto del Presidente della Giunta regionale della Campania, stabiliva quanto alla località Centopertose: « che la predetta zona del comune di Casagiove (Ce), si colloca nella fascia *pedemontana dei rilievi dei Monti Tifatini;*

che la cava in questione si colloca in detta fascia pedemontana nel tratto compreso tra il fiume Volturno e l'Appia a Nord-Ovest di Caserta;

detto rilevato montuoso costituisce una notevole presenza visiva per un lungo tratto di percorrenza lungo l'Autostrada del Sole e lungo alcuni tratti della SS. Appia, rispetto alle quali viene a trovarsi a Nord ed a distanza ravvicinata;

detta fascia pedemontana e quella dei comuni limitrofi è interessata da numerose cave consimili, di cui alcune disattivate;

tutto il rilevato montuoso, al di fuori delle profonde incisioni prodotte dalla coltivazione delle cave, si presenta ancora integro nelle sue caratteristiche idrografiche e vegetazioni;

la zona – sita nel comune di Casagiove presenta notevole interesse pubblico decide di porre vincolo ai sensi dell'articolo 1 della legge 29 giugno 1939, n. 1497 sulla zona in località Centopertose del comune di Casagiove (Ce), delimitata ad Ovest dai confini comunali di S. Prisco e Casapulla, a Nord ed ad Est dal confine comunale di Caserta, continuando a Sud dal burrone Montelupo, dalla strada comunale Cavealte, dalla comunale Mazzecca e dalla comunale S. Prisco (allegato stralcio

comunale), perché essa costituisce un contesto di notevole interesse paesistico ed ambientale. »;

il saccheggio ambientale è stato più volte denunciato anche dalla stampa, ma senza esito –:

per responsabilità di chi non siano stati aperti i procedimenti penali conseguenti alla pesante e continuata violazione delle leggi dello Stato;

comunque chi sia stato, nel tempo, preposto alla sorveglianza a tutela dei vincoli paesistici ed ambientali previsti dalla legge e chi sia attualmente;

se costoro abbiano mai denunciato e se in mancanza vi abbiano provveduto amministrazione comunale, provincia e regione, soprintendenza, l'inaudito decennale scempio perpetrato;

se risulti perché in tal caso la magistratura non sia intervenuta;

se risulti, ma posto che le denunce non siano state mai prodotte da alcuno, come la magistratura ignorava del tutto la questione e comunque se ora intenda definitivamente e rigorosamente intervenire; se il Ministero dell'Ambiente abbia promosso od intenda promuovere l'azione di risarcimento del danno ambientale comprendendovi il ripristino dei luoghi come essi erano al momento della apposizione del vincolo di legge. (4-13104)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno, del lavoro e della previdenza sociale e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

tarda la risposta all'atto ispettivo n. 4-09336 del 12 gennaio 1993, relativo a 14 donne che il comune di Pozzuoli ha confinato in attività lavorativa che devono svolgere con modalità precarie e lesive della loro dignità, l'intervento della Procura della Repubblica di Napoli e dell'ispettorato provinciale del Lavoro –:

se consti che, il 1° aprile 1993, permanendo l'intollerabile loro condizione lavorativa, le lavoratrici in questione hanno diretto all'assessore al personale del comune di Pozzuoli, un appello, caduto nel vuoto come tutto quello che si riferisce ai richiami ai doveri istituzionali e civici della amministrazione puteolana, perché vengano, dopo cinque anni di sofferenze, distaccate ad altri compiti e funzioni laddove la loro attività lavorativa possa esplicarsi senza dover subire continue mortificazioni;

se sia esatto che sino ad oggi, nonostante le denunce, gli esposti, le implorazioni, gli appelli, la « sordità istituzionale » sia stata – e permanga – totale, dando la misura del grado di sensibilità sociale che è dato riscontrare a Pozzuoli. (4-13105)

PARLATO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per conoscere – premesso che:

l'interrogante ha prodotto in questa e nella precedente legislatura centinaia e centinaia di atti ispettivi (oltre che proposte di legge), aventi ad oggetto impressionanti carenze gestionali dell'Agenzia Spaziale Italiana e la contemporanea assenza dell'esercizio della funzione istituzionale di vigilanza da parte del Ministro della Ricerca Scientifica, come del resto è dimostrato « per tabulas » dalla mancanza di risposte ai medesimi atti ispettivi –:

se quanto precede possa chiaramente essere spiegato dalle seguenti circostanze ove rispondenti a verità:

*a)* responsabile del Ministero per la Ricerca Scientifica e l'università, alla acquisizione di elementi per la risposta agli atti Ispettivi dell'interrogante relativamente all'ASI ed allo stesso Ministero, quanto ai suoi compiti di vigilanza sull'Agenzia, è il dottor Mario Bova;

*b)* il dottor Mario Bova è stato nominato dal Ministro attuale direttore del dipartimento per le relazioni internazionali e direttore dell'Ufficio Spazio con il compito del controllo sull'ASI;

*c)* il dottor Mario Bova è però anche membro del consiglio di amministrazione dell'ASI ! ! !, rivestendo dunque il duplice ruolo di controllore e controllato;

se intenda, verificate le suddette circostanze, intervenire immediatamente onde da un lato l'esercizio del sindacato ispettivo parlamentare non trovi ulteriormente ostacoli nella singolare posizione del dottor Bova e, dall'altro, non venga alterato e compromesso, a ragione della posizione dello stesso dottor Bova, la funzione istituzionale di vigilanza del Ministero sull'Agenzia Spaziale della quale, non a caso quindi, nonostante le censure parlamentari, della comunità scientifica e della stampa non asservita, se ne son viste dal luglio scorso di tutti i colori. (4-13106)

BOTTINI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

il sordomuto Di Paolo Massimo nato a Bergamo il 14 febbraio 1974, è stato sottoposto alla commissione sanitaria presso l'USSL n. 29 di Bergamo, per l'accertamento degli stati di invalidità civile, delle condizioni visive e del sordomutismo, legge regionale del 5 febbraio 1982, n 9 e del 25 marzo 1985, n. 18;

sono noti gli atti di ufficio in cui si è certificato che nella seduta del 21 dicembre 1990, hanno dichiarato che Di Paolo Massimo non è stato riconosciuto affetto da sordomutismo;

nel modello A/SAN la Commissione di prima istanza nella parte II al paragrafo 18 ha barrato che il Di Paolo ha il difetto dell'udito e del linguaggio: la commissione accertata la patologia (sordità grave bilaterale dalla nascita con difficoltà nell'eloquio), invece nella parte III al paragrafo 20, ha barrato la legge n. 118 e al paragrafo 21 sempre della parte III ha barrato la casella 03 nella misura del 75 per cento;

l'esame audiometrico, eseguito il 27 settembre 1991, presso l'ospedale maggiore di Milano registrava residui uditivi bilaterale, con ben 90-110 decibel di perdita uditiva;

lo stesso Di Paolo è stato sottoposto, un'altra volta alla visita per l'accertamento di invalidità sempre presso l'USSL n. 29 di Bergamo, con seduta del 7 aprile 1992;

nel modello A/SAN la Commissione di prima istanza nella parte II al paragrafo 18 ha barrato che il Di Paolo ha difetto dell'udito e del linguaggio: la Commissione ha accertato, la patologia (gravissime ipoacusia neurosensoriale bilaterale con turbe dell'eloquio); invece nella parte III al paragrafo 20 ha barrato la legge n. 118, al paragrafo 21 sempre della parte III ha barrato la casella 03 nella misura dell'80 per cento –:

per quale motivo sia stato dichiarato che il Di Paolo è un gravissimo portatore della sordità e del linguaggio;

per quale motivo sia stata barrata la legge 118 e non la 381;

per quale motivo in un primo tempo il Di Paolo è invalido al 75 per cento e dopo lo diventa all'80 per cento;

per quale motivo non sia stata rispettata la legge 26 maggio 1970 n. 381, articolo 3 (Accertamenti sanitari – Commissione sanitaria provinciale – Presentazione delle domande di concessione);

se si ritenga di fornire una dettagliata documentazione al riguardo. (4-13107)

BOTTINI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere — premesso che:

il sordomuto Sangalli Mauro, nato a Gazzaniga in provincia di Bergamo il 20 gennaio 1978, è stato sottoposto alla commissione sanitaria presso l'USL n. 26 di Albino provincia di Bergamo, per l'accertamento degli stati di invalidità civile, delle condizioni visive e del sordomutismo, legge regionale del 5 febbraio 1982, n. 9 e del 25 marzo 1985, n. 18;

si sono visti gli atti di ufficio in cui si è, nella seduta del 4 febbraio 1992, presenti il 1° medico Facchinetti, il 2° medico Bernini e il medico di categoria Maggio Antonio che Sangalli Mauro non è affetto da sordomutismo;

dal modello A/SAN redatto dalla commissione di prima istanza, nella parte II al paragrafo 18, risulta che il Sangalli ha il difetto dell'udito e non il difetto al linguaggio: la commissione ha però accertato, la patologia (grave ipoacusia bilaterale – residui uditivi – con disturbo del linguaggio); invece nella parte III al paragrafo 20, la commissione ha barrato la legge n. 118 e al paragrafo 21 sempre della parte III ha barrato la casella 07;

è sulla base della legge 26 maggio 1970, n. 381, articoli 3 (accertamenti sanitari – commissione sanitaria provinciale – presentazione delle domande di concessione), che la commissione sanitaria riconosce il Sangalli come affetto da sordomutismo;

l'esame audiometrico, eseguito il 3 maggio 1990, presso il Policlinico San Pietro (spa) di Ponte San Pietro provincia di Bergamo registra residui uditivi bilaterale, con ben 95-100 decibel di perdita uditiva –:

per quale motivo sia stata barrata sul modello la legge 118 e non la 381;

se si ritenga di fornire una dettagliata documentazione al riguardo. (4-13108)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, di grazia e giustizia e delle finanze.* — Per sapere:

che cosa intenda fare il Governo, anche tramite gli uffici periferici dei ministri interrogati e competenti in materia, specifica, per garantire l'esecuzione e il rispetto della legge 7 agosto 1990, n. 241 (anche in relazione alla legge 8 giugno 1990, n. 142) da parte delle pubbliche amministrazioni ancorché locali e autonome. Infatti, non nel « profondo » sud o nel dimenticato « centro » Italia, ma in Italia settentrionale sono numerosissimi gli inadempimenti delle autorità comunali nei confronti dei cittadini e della stessa loro credibilità e « immagine »: basti pensare a Rivergaro (Piacenza) ove addirittura il comune rilascia due copie autentiche di una stessa delibera con dati e numeri diversi. Così a Farini (già d'Olmo) sempre in provincia di Piacenza, ove il sindaco promette da anni la sistemazione di un rio che scende scosceso, ancorché spesso asciutto ma pericolossimo durante le improvvise piene estive, e delle stade e piazzetta della Frazione Le Moline. A Bettola addirittura il sindaco Scagnelli Celestino nemmeno risponde alle richieste documentate dei cittadini (ad esempio quelle di Alessandro Ferrari) e anche la protesta in prefettura non sembra aver indotto miglior risultato –:

se, in merito, siano in atto ispezioni o inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, doverosamente perseguire, giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, sempre, del resto conseguenti, abusi e omissioni, anche nei doveri e obblighi di controllo addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come dirigenti di uffici pubblici ancorché periferici o autonomi ovvero onorari come sindaci, presidenti, ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega. (4-13109)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, della sanità, dei lavori pubblici, delle finanze e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

che cosa faccia il Governo, anche tramite gli uffici periferici dei ministri interrogati, per controllare che cosa le amministrazioni locali facciano per gestire la cosa pubblica e far sì che ai cittadini siano garantiti il buon andamento e la imparzialità pure costituzionalmente sanzionata. In comune di Gropparello sono stati fatti due depuratori con ingenti e onerose spese per centinaia di milioni (in buona moneta degli anni addietro circa un

biennio e un lustro rispettivamente) ma nessuno dei due ha mai funzionato. In quel comune si fanno muretti a spese del comune (come in via Tre Martiri), muretti che poi devono essere demoliti (anche e a seguito di intervento per atto di sindacato ispettivo politico parlamentare perché altrimenti ogni ingiustizia, e difetto di distanze e di rispetto doveroso della cittadinanza sarebbe stato obliterato!) perché illegittimamente costruito (ma fu costruito a spese, ancorché non dovute, del comune e demolito e rifatto a distanza regolare, ancora e sempre a spese del comune: mentre, in casi del genere dovrebbe essere contestata la responsabilità ai funzionari, di carriera come il responsabile dell'ufficio tecnico o della relativa unità operativa e dell'assessore competente, personalmente!). Così nessuna contestazione di responsabilità è mai stata fatta nemmeno per la costruzione dei due depuratori ancorché riscontranti non funzionanti e inutili, anzi dannosi! Così pure, mentre viene frapposta ogni sorta di difficoltà nei confronti dei cittadini del luogo (salvo che non siano democristiani o socialisti) i soliti « milanesi » hanno ogni favore e riguardo per la costruzione della « seconda casa », anche in aperta campagna, anche al di fuori delle previsioni di piano purché i loro progetti siano firmati e presentati dai professionisti « amici » o « amici degli amici », ovvero « compagni » o « compagni dei compagni »;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e doverosamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi di controllo ovvero a errori, con danno della pubblica amministrazione o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come dirigenti di uffici periferici o centrali, direttori di unità operative o di uffici tecnici, ovvero onorari, come sindaci e assessori, ministri o sottosegretari specie se muniti di delega. (4-13110)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, delle finanze, della sanità, della funzione pubblica e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

quali controlli siano stati fatti, anche a seguito di numerosi atti di sindacato politico parlamentare, in merito, alla « vicenda » del cosiddetto « megacentralino del valore di dieci miliardi » degli Ospedali Riuniti di Parma (ancor oggi non risolta e, anzi, molto contestata) così « sostenuto » dall'amministratore straordinario dottor Fabio Pappalepore, il quale in data 7 settembre 1987 ha comunicato all'allora Presidente del Comitato di gestione Elio Giovati, la necessità di procedere mediante licitazione privata o appalto concorso e la possibile censura di illegittimità in caso di acquisizione del solo preventivo S.I.P., e, nemmeno due mesi dopo il 30 ottobre 1987 ha – in modo peraltro sibillino – affermato che la « S.I.P. proprietaria degli impianti e degli apparecchi in dotazione, potrebbe costringere questa U.S.L. a dotarsi della intera rete requisendo la propria, in caso di aggiudicazione della fornitura del centralino ad altra impresa ».

È palese la contraddittorietà di tali affermazioni, la non veridicità e il palese falso della dichiarazione 30 ottobre 1987, dal momento che la proprietà dell'intera rete telefonica era degli Ospedali riuniti, l'assurdità della procedura di trattativa privata che è poi stata concretamente seguita, illegittima dal punto di vista amministrativo così come si desume anche dal parere « *pro veritate* » espresso dal professor avvocato Merusi di Pisa, in occasione della insorgente controversia legale con la S.I.P. Del resto le affermazioni del dottor Pappalepore non pregiudicano la responsabilità dell'allora presidente del comitato di gestione Giovati e di tutti coloro che hanno disatteso le pur precise e circostanziate denunce ed eccezioni dei rappresentanti del M.S.I. di Parma tra cui il consigliere dell'U.S.L. sempre del M.S.I.; Manlio Molinari.

Inoltre deve essere considerato che la Philips non produce più da anni la produzione di qualsiasi impianto telefonico, sì

che la « tecnologia d'avanguardia » sbandierata dal Pappalepore risulta un vero fuor d'opera, posto che non potrà mai essere d'avanguardia, qualsiasi impianto o meccanismo sia stato abbandonato dalla produzione, come il SOPHO installato nell'Ospedale, così che ormai non sono neppur più disponibili i necessari e indisponibili pezzi di ricambio. Del resto questo Pappalepore è stato solo messo a fare l'amministratore straordinario dell'U.S.L. di Parma per volontà del Presidente della Regione Boselli, ed era della squadra di quell'ingegner Cortesi già arrestato a Parma, nelle indagini ultime degli scandali oggi in evidenza;

se non sia ora, vista l'inerzia dei responsabili dell'U.S.L. che gli uffici periferici dei ministri interrogati, nell'ambito della loro specifica competenza dispongano le doverose inchieste, indagini ed esami;

se, in merito, siano in atto indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti abusi, omissioni, anche nei doveri e obblighi di controllo, ovvero errori con danno dell'erario o dei cittadini, attribuiti o attribuibili a pubblici funzionari siano essi di carriera come in dirigenti di uffici delle unità sanitarie locali, o di unità operative, ovvero onorari, come presidenti di U.S.L., amministratori straordinari, sindaci o assessori, Ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega specifica. (4-13111)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, delle finanze, dell'industria, commercio e artigianato e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

che cosa intenda fare il Governo e in realtà che cosa faccia in concreto per assicurare l'applicazione delle norme di cui alle leggi n. 142 e n. 241 del 1990 da sempre e sempre più obliterate dalle amministrazioni locali segnatamente nelle parti e norme che impongono termini, comportamenti e procedimenti, nella difesa dei cittadini e dei loro diritti. Non solo nelle zone cosiddette a « rischio » per mafia, camorra e 'ndrangheta, ma anche nel « civilissimo » « progredito » e « progressista » nord d'Italia, avvengono quotidianamente fatti di quotidiana ingiustizia e illiceità ordinaria.

Un esempio è costituito dal comportamento dell'amministrazione comunale di San Secondo Parmense, comune della « bassa », in cui una cittadina, che ha tutti i requisiti, previsti dalle norme vigenti in materia, per l'esercizio dell'attività di parrucchiere, non riesce nemmeno, ancorché a distanza di dieci mesi non riesce ad avere risposta per la licenza per l'attività artigianale di « parrucchiere per donna e uomo ». La cosa è particolarmente grave, perché alla stessa è stata imposta la disponibilità del locale, completamente arredato e attrezzato, perché la USL potesse « dare i pareri igienico-sanitari » e i relativi certificati, e ora, quando tutto è ormai pronto da mesi, il comune resta chiuso in ostinato, illegittimo e illecito silenzio. È evidente che la predetta cittadina, potrà e dovrà ricorrere all'Autorità giudiziaria e amministrativa, ma sobbarcandosi le spese e i rischi delle procedure giudiziarie, mentre la predetta ha puramente e semplicemente, pieno diritto di vedere rilasciata quella licenza e il « potere », il « sistema » deve provvedere d'ufficio a farglielo rispettare. In caso contrario sarà tutto da dimostrare l'esistenza di uno « stato di diritto », di una attività amministrativa, sia centrale come periferica, sia statale e governativa, come locale e autonoma, improntata ai princìpi del diritto, della chiarezza, della trasparenza e delle leggi sopramenzionate in particolare. È evidente che, anche a San Secondo Parmense, l'amico dell'amico, o stante il « clima politico locale », il « compagno », ovvero « il compagno del compagno » sono ostili all'apertura di quell'esercizio, perché « disturberebbe » qualche « amico », qualche « amico degli amici », ovvero qualche « compagno » o qualche « compagno dei compagni »;

quali attività di controllo effettui il Governo per la corretta applicazione delle citate leggi, visto che il Governo è e resta impegnato, proprio a fronte di quelle « leggi di riforma » di riferire periodicamente al Parlamento, circa lo stato di attuazione e di esecuzione delle stesse;

se, in merito, ai fatti suindicati, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti formino oggetto di procedimenti giudiziari ancorché non semplicemente penali, e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti (tenuto conto che la commissione comunale per i pareri ha dato parere negativo per il voto determinante proprio dei « parrucchieri » nell'interno della commissione stessa, mentre il parere del « professionista », richiesto dal comune ha già confermato il diritto ad avere la sua licenza) al fine di accertare, perseguire e doverosamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori, con danno dell'erario o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari siano essi di carriera come dirigenti di uffici o di unità operative ovvero onorari come sindaci e assessori. (4-13112)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri delle poste e delle telecomunicazioni, del lavoro e previdenza sociale, dell'interno, di grazia e giustizia e per la funzione pubblica.* — Per sapere:

cosa intenda fare il Governo per rimettere un po' d'ordine nella situazione creata nelle poste e telecomunicazioni o, per meglio dire, negli uffici postali periferici come quelli emiliani, e, in genere, dell'Italia settentrionale, da sempre vittime del fenomeno dell'« emigrazione » verso il meridione di tanti impiegati, « comandati » al « rientro a casa » per *mutu proprio* ministeriali. Inoltre il vero e proprio caos è stato raggiunto allorché i concorsi provinciali, come quello del 1983 a Piacenza, sono stati « trasformati », via via, in compartimentali e addirittura in « nazionali »; sì che, coloro che avevano vinto il concorso, per la provincia di Piacenza, prima di aver assegnato il posto in quegli uffici, si videro sballottati, è giusto il termine, in ogni parte dell'alta Italia. Tra l'altro il concorso era stato vinto soprattutto da donne, che com'è logico hanno legami e doveri di famiglia ben superiori e più stretti dei colleghi maschi, con buona pace delle cosiddette norme positive per la cosiddetta « parità ». Così madri di famiglia che avevano fatto il concorso provinciale a Piacenza e lo avevano vinto, solo per i ritardi burocratici, si sono viste poi sbattute lontano da casa in località nemmeno servite da corretto servizio pubblico e, in ogni caso, spinte a una vita di pesante « pendolarismo » contraddittorio quant'altri mai con la loro funzione di mogli e madri di famiglia. La situazione è veramente caotica: i ricorsi ai tribunali amministrativi competenti, sono all'ordine del giorno; ma è assurdo che si costringa un pubblico dipendente e cittadino italiano a ricorrere ai vari TAR per avere il rispetto di quei diritti che sorgono dal fatto di aver partecipato e vinto un concorso che era stato bandito su base provinciale;

chi abbia creato con lo stravolgimento del carattere provinciale di quel concorso trasformato, via via in compartimentale e poi nazionale, la situazione caotica qui denunciata;

se, in merito, ai fatti descritti, siano in atto studi per la normalizzazione della situazione, inchieste o ispezioni amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria, procedimenti penali, e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare perseguire e doverosamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, sempre conseguenti, abusi e omissioni, anche negli obblighi di controllo, o errori, con danno dell'erario o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come direttori generali o direttori compartimentali o provinciali, ovvero onorari, come ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega. (4-13113)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'ambiente, dell'agricoltura e foreste, dell'interno e per le funzioni connessse al riordinamento delle partecipazioni statali.* — Per conoscere – premesso che:

la interrogazione n. 4-01512 del 25 maggio 1992 (che riproduceva quella n. 4-3074 del 18 dicembre 1991 che non aveva avuto risposta nella X Legislatura) relativamente alla annunciata vendita da parte della società ISA dei boschi del Faito nel tenimento dei comuni di Castellammare, Vico Equense, Pimonte, ha avuto risposta il 4 gennaio 1993 da parte del Ministro dell'Ambiente affermando quindi che nulla risultava;

l'interrogante ha fondati motivi di credere che i contenuti delle risposte non rispondano a verità, al riguardo riportando brani di due articoli di stampa: *la Repubblica*, edizione di Napoli, nel numero del 10/11 novembre 1991 aveva infatti scritto in un articolo a firma di Gabriella Cevoli: « Il Bosco del monte Faito sarà venduto. Lo ha annunciato, ieri Antonio Para, il presidente della società "Isa", proprietaria delle centinaia di ettari di vegetazione che realizza infrastrutture per conto della pubblica amministrazione e che adesso ha deciso di alienare il bosco perché ritenuto "improduttivo, di nessuna utilità per l'economia locale".

Si tratta di un secondo passaggio nella vendita del bosco staiese; di uno dei pochi monti ancora intatti e ricchi di verde, famoso per le sorgenti e la ottima qualità dell'aria. La "Isa", infatti aveva ricevuto il bosco dalla Circumvesuviana come rimborso per la realizzazione di una serie di lavori.

Ma dopo alcune operazioni fallite, ideate da Antonio Para per il rilancio del bosco, la direzione della società ha deciso di metterlo in vendita.

Un atto d'accusa verso l'incapacità della pubblica amministrazione a gestire un bene naturale. La valutazione economica del bosco, che ricade nei territori comunali di Castellammare di Stabia e Vico Equense, sarà fatta da una commissione composta dai rappresentanti degli Enti turistici e dei comuni delle due cittadine. La commissione stabilirà anche i vincoli ambientali e paesaggistici per la tutela del monte Faito, che da anni gode di una particolare protezione ».

*Il Giornale di Napoli* del 10 novembre 1991, in un articolo a firma di Rosa Benigno ha affermato: « Il Faito si vende. Un atto deliberativo approvato, ma non ancora attuato, dal Consiglio di Amministrazione della società "Montefaito" ha deciso di alienare la proprietà. A chi vendere ? E per farne cosa ? Sono le domande che hanno animato l'incontro-dibattito svoltosi nella mattinata di ieri su iniziativa dell'assessore regionale all'industria, artigianato e commercio, Gianni La Mura, Psi. Alla discussione hanno preso parte l'onorevole Antonio Pola, presidente della società "Montefaito", i sindaci dei Comuni di Castellammare, di Vico Equense e Pimonte, i rappresentanti del Corpo Forestale, dei Lions, e delle Associazioni "Protezione Verde", "Amici di Faito", "Aret", "Club Alpino Italiano", inoltre i responsabili delle aziende di Cura e Soggiorno di Castellammare e Vico Equense. Dunque, il Monte Faito passerà alle mani del migliore offerente e il rischio è che passi interamente in mano a enti privati.

Prima che ci si ritrovi davanti al fatto compiuto, La Mura ha radunato i rappresentanti degli enti locali e delle associazioni interessate affinché non venga esclusa una eventuale candidatura dei Comuni che circondano il Monte Faito o, quanto meno, che, prima di procedere alla cessione del Monte a mani di privati, fosse possibile all'ente Regione di visionare i progetti sui quali verrà avviato il futuro del Monte Faito.

Durante il dibattito, da parte di tutti i presenti sono stati sollevati i problemi più gravi ed emergenti, la necessità di arrestare in tempi brevissimi il degrado ambientale del Monte. "La necessità di rispettare l'ambiente in una delle poche zone non aggredite da grosse speculazioni, è una

responsabilità che ci investe direttamente", ha affermato La Mura.

"Il Faito ha risorse che non sono state mai utilizzate e qualsiasi progetto futuro dovrebbe essere orientato al rilancio di queste risorse". Il Faito offre spazio a numerose proposte, dal potenziamento delle culture di frutti di sottobosco e di castagneti, al ripristino della sciovia.

Il problema principale rimane il reperimento di capitali che ne consentano il rilancio auspicato. La maggioranza dei presenti ha mostrato parere favorevole ad un'ipotesi di gestione mista (pubblica e privata).

Solo da parte del sindaco di Pimonte, Labriola, è stato opposto il totale dissenso all'ipotesi di cessione del Monte a enti privati. In alternativa, Labriola ha proposto di inserire il Faito in un consorzio che unirebbe i boschi di Pimonte e dei Monti Lattari in un grande progetto di salvaguardia di queste risorse boschive » –:

se si intenda accertare meglio il fondamento del contenuto dei pregressi atti ispettivi dell'interrogante, al contempo verificando come e da chi possano esser stati predisposti per il Governo – stante il pubblico convegno tenutosi sull'argomento – elementi di risposta all'interrogante tanto inverosimili. (4-13114)

PARLATO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia, dell'interno, della sanità e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per conoscere – premesso che:

il 18 agosto 1992 un gruppo di capifamiglia residenti nel parco Penniniello, is. 2, nel degradato quartiere di « Torre Annunziata Centrale » diresse alla Procura della Repubblica presso la Pretura Circondariale di Napoli, sezione ecologia nonché al Comando della stazione dei carabinieri di Torre Annunziata (Na) una denuncia in cui affermava che: « premesso che nel decorso mese di gennaio il signor Salerno Antonio pure firmatario di questa missiva, richiedeva l'intervento dell'USL 34 presso il citato parco Penniniello is. 2, e ciò perché si erano colà verificatisi numerosi episodi di nocumento per la situazione igienico-sanitaria, tra i quali quello del vespaio sottostante lo stabile, completamente invaso da liquami di depurazione fognaria;

sotto la data del 14 gennaio 1992, il medico responsabile dottor E. Vangone procedeva a sopralluogo del predetto sito, accertando la gravità della situazione e relazionando dell'esito le competenti autorità comunali.

Inoltre che in conseguenza di tali inconvenienti si sono verificati più casi di epatite virale di tipo A e B, nei quali casi vengono maggiormente colpiti soggetti minorenni.

Considerato che la situazione a tutt'oggi non è minimamente variata e tutti i riscontrati inconvenienti continuano a presentarsi nella loro gravità, senza che alcuna delle citate autorità abbia intrapreso i dovuti provvedimenti, limitandosi ad invitare gli scriventi a pazientare e recando così ulteriore nocumento alla già grave situazione igienico-sanitaria chiedevano alla autorità giudiziaria di avviare i provvedimenti del caso, raggiungendo gli eventuali autori di siffatti ritardi ed omissioni. Allegavano fotografie riproducenti lo stato dei luoghi, nonché copia della relazione stilata dal dottor E. Vangone ed alcune documentazioni mediche inerenti i precitati casi di epatite A e B » –:

quali accertamenti siano stati svolti, anche dai carabinieri oltre che dalla autorità giudiziaria, e quali responsabilità siano emerse ed a carico di chi: è davvero preoccupante infatti che a 15 mesi dalla richiesta di intervento alla USL 34 ed alla amministrazione comunale di Torre Annunziata ed a 8 mesi dalla denuncia alla Procura, non sia stato svolto alcun intervento per eliminare i gravissimi inconvenienti denunciati, con danno alla pubblica salute che non potrà che ulteriormente aggravarsi in vista della imminente stagione estiva: le responsabilità dei costruttori del parco, della USL 34, dell'amministrazione comunale di Torre Annunziata – quest'ultima già resasi colpevole del più

totale abbandono e degrado che con la sua ignavia, ha prodotto nel quartiere periferico di « Torre Annunziata Centrale » – devono essere al più presto individuate e duramente colpite. (4-13115)

PARLATO. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso: quanto ha formato oggetto della interrogazione n. 4-12399 del 23 marzo 1993, relativamente alla « tangente comunale » pretesa dalla Giunta Municipale di Nola ed in particolare all'esposto prodotto da Antonio Napolitano, segretario della sezione del MSI di Nola, alla Procura della Repubblica di Napoli – che l'ha ricevuta il 29 marzo 1993 –:

se siano state aperte indagini, con l'urgenza del caso stante l'imminente celebrazione della Festa, e se siano state accertate responsabilità aventi rilevanza penale ed in tal caso quali ed a carico di chi. (4-13116)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno, del tesoro e dell'industria, commercio ed artigianato.* — Per conoscere – premesso che:

nel febbraio scorso si diffuse a Napoli la sconcertante notizia che l'amministrazione comunale di Napoli avesse – abdicando al proprio ruolo – affidato alla MEDEDIL l'elaborazione di uno studio relativo alla vendita di suoli comunali nel Centro Direzionale;

la questione relativa a tali suoli, già sollevata in precedenti atti ispettivi dell'interrogante, ancora privi di risposta, appare torbida e lungi dall'essere chiarita;

l'ambiguità della posizione dell'amministrazione comunale di Napoli, nelle varie giunte ed in particolare in quella che aveva a sindaco l'ingegnere Polese, precedentemente cioè all'attuale, è confermata dalla giustificazione fornita il 27 febbraio scorso alla stampa dall'avvocato Raffaele Cananzi, assessore alle gare e contratti della giunta Polese;

ha affermato il Cananzi, e la confusione e l'imbarazzo sono stati evidentissimi, che: « L'iniziativa del contatto è stata assunta dalla stessa società che ha inviato una lettera al sindaco il 26 novembre 1992, con allegato uno schema di proposta. Il sindaco ha dato copia della nota e della proposta ed ha richiesto ad alcuni assessori di esaminarla al solo fine di dare l'avvio di una indagine conoscitiva che in ogni caso sarebbe sfociata, ove avesse assunto la dimensione di una possibile proposta, in una indicazione al Consiglio comunale da tutti gli assessori ritenuta necessariamente aperta... Gli ulteriori contatti sono stati tenuti sempre nalla sfera di una indagine conoscitiva per un approfondimento degli elementi e che (il suo ruolo) è stato quello di chiedere ulteriori specificazioni e chiarimenti per predisporre una relazione sulla questione ai colleghi della Giunta al fine di stabilire se potevano considerarsi esistenti i presupposti per predisporre una proposta di sondaggio al Consiglio, riservandosi successivamente di sottoporre dopo l'avviso del Consiglio stesso uno schema di delibera alla competente commissione consiliare e, quindi, alla discussione della Giunta prima e del Consiglio dopo. »;

come è evidente la questione si pone tuttora in termini tutt'altro che chiari e trasparenti –:

cosa sia davvero accaduto nei rapporti tra comune e MEDEDIL in relazione ai suoli comunali nell'area del Centro Direzionale;

quali siano i programmi che al riguardo abbia l'attuale amministrazione;

come il Governo, essendo la MEDEDIL società a partecipazione statale, ed essendo i suoli in parola di proprietà pubblica in quanto appartenenti al comune, intenda garantire la legittimità di destinazione e d'uso dei suoli in parola, comprese tutte le operazioni connesse, con la più ampia trasparenza ed al di fuori di ogni tentativo di speculazioni immobiliari pubbliche e private, nell'interesse generale della città di Napoli e sotto il rigoroso

controllo del consiglio comunale, della stampa, delle associazioni culturali e della opinione pubblica, anche considerato l'esplosione delle vicende più giudiziarie che amministrative che hanno sinora riguardato il governo urbano. (4-13117)

TREMAGLIA. — *Al Ministro delle finanze.* — Per sapere:

come mai la CARIPLO (Cassa di Risparmio delle Province Lombarde) abbia comunicato, con lettera del 13 maggio 1992, alla Signora Di Ruggiero Anna, residente in Gran Bretagna, l'accredito sul conto corrente numero 5G2505376K presso la Bristol e West di Bristol dei ratei 1°, 2° e 3° bimestre 1993 della pensione I.N.P.S. numero 7200/16/82033554 di cui è titolare, mentre le sono stati pagati soltanto il 1° ed il 3° bimestre;

il motivo per cui la rata riferentesi al 1° bimestre 1993 pari a Lire Sterline 690,94 come da comunicazione di cui sopra, sia diventata di Lire Sterline 640,94. (4-13118)

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere, se e quando la Sede regionale dell'INPS della Lombardia, Reparto Convenzioni Internazionali liquiderà finalmente la pratica di pensione n. 213567/4900 01060619 riguardante la signora Canossi Elda nata a Castellanza (VA) il 30 gennaio 1916, residente in Argentina, atteso che la domanda risale a più di due anni fa. (4-13119)

GIANNOTTI. — *Al Ministro per i beni culturali e ambientali e dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

la strada di grande comunicazione E-78 tra Grosseto e Fano ha un grande valore strategico non solo per il collegamento tra il corridoio tirrenico ed il corridoio adriatico ma anche come *by-pass* tra l'Autostrada del sole (E-35) e la Orte-Cesena (E-45) per consentire costanche un immediato alleggerimento di traffico nell'Autostrada del sole nel tratto Arezzo-Firenze-Bologna;

il tratto Palazzo del Pero-Villa Monterchi della E-78 è il tratto decisivo che, se ultimato nella sua realizzazione, può consentire il collegamento tra la E-35 (Autostrada del sole) e la E-45 (Orte-Cesena) e può ridurre notevolmente le attuali difficoltà di collegamento di una zona come la Valtiberina, così importante sia sul piano economico che su quello ambientale e culturale, consentendo invece a questa zona di diventare uno snodo di grande interesse tra Toscana, Marche, Umbria e Romagna;

il ministro per i beni culturali, legittimamente preoccupato dell'impatto ambientale dell'opera, ha espresso parere negativo sull'approvazione del progetto del quarto lotto, determinando così di conseguenza, la necessità di una immediata revisione, ai fini della interconnessione, del terzo lotto già appaltato e in fase di esecuzione, senza valutazioni ed impegni alcuno dei danni prodotti da una prolungata sospensione dei lavori in atto nel citato terzo lotto;

l'ANAS, senza adottare strumenti di autotutela consentiti dalla normativa vigente, ha ordinato la sospensione dei lavori di tutto il terzo lotto, esponendosi così anche alle riserve della ditta appaltatrice;

il secondo lotto già appaltato e aggiudicato, causa fallimento impresa vincitrice, attende ancora, dopo molto tempo, di essere assegnato ad altre imprese per la sua esecuzione –:

se siano in grado di garantire in tempi celerissimi, come richiesto dagli enti locali aretini, il progetto di revisione del terzo lotto per consentire l'interconnessione con il quarto, nonché i progetti del quarto e del quinto lotto rivisti al fine di attutire l'impatto ambientale nella Val Cerfone;

se ritengano possibile garantire il finanziamento dei maggiori costi derivati dal fermo cantiere per il terzo lotto nonché

delle revisioni del secondo, quarto e quinto e ritiene comunque di dare certezza nella destinazione dei finanziamenti messi a disposizione dall'ANAS nella misura di 43 miliardi e 226 milioni per il quarto lotto e 35 miliardi e 576 milioni per il quinto lotto; tenuto anche conto « dell'impegno ad accelerare le procedure per il completamento dei lavori già appaltati della Due Mari » riconfermato nel protocollo d'intesa tra Governo e regione Toscana, siglato in data 20 marzo 1993;

quale previsione possano con certezza fare per il completamento dell'intera opera, in coerenza a precisi orientamenti di legge che attribuiscono priorità proprio al completamento di opere già iniziate e tenendo conto che mancano ancora di progettazione e di finanziamento tratti importanti come:

il tratto Rigomagno-Monte San Savino;

l'adeguamento a norme del tratto Monte San Savino-Arezzo;

lo snodo di Olmo, per consentire l'attraversamento della città di Arezzo;

il tratto Villa Monterchi-Selci Lama innesto E-45. (4-13120)

CARLI. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – visto che:

il disposto della legge 49/87 stabilisce precisi interventi a favore delle P.V.S.. Per il tramite delle O.N.G.;

le O.N.G. sono particolarmente penalizzate dalla attuale situazione di paralisi del settore cooperazione dello sviluppo del ministero, che riguarda sia i programmi che i progetti già realizzati sulla base di impegni precisi non ancora rimborsati, sia i progetti nuovi su cui il ministero non riesce a concludere l'*iter* burocratico;

per continuare ad operare, ma soprattutto per mantenere gli impegni con i *partners* del terzo mondo, le O.N.G. hanno dato fondo a tutte le proprie risorse e che se la situazione non si sbloccherà rapidamente moltissime O.N.G si vedranno costrette a chiudere o a ricorrere a vie legali per recuperare un'imponente mole di crediti;

in più di trent'anni di impegno per la solidarietà internazionale le O.N.G. hanno dimostrato di sapere positivamente operare utilizzando in modo encomiabile i fondi pubblici, attivando contemporaneamente un volontariato socialmente molto produttivo anche nella società nazionale oltre che nei paesi del terzo mondo, assumendo, sulla base di programmi concordati i bisogni primari delle comunità locali, sostenendo e organizzando migliaia di *partner* nei P.V.S., realizzando progetti di sviluppo sostenibile in un'attività pubblicamente riconosciuta molto qualificata e produttiva;

pertanto in base a quanto previsto dalla legge 49/87 si impegna il ministero degli Esteri affinché le O.N.G. siano considerate soggetti autonomi della cooperazione e così siano considerate soggetti degni di maggiore fiducia. Siano giudicate sulla base del loro operato e delle loro potenzialità ed operatività, valutandole sulla base dei progetti da esse realizzate anziché essere costrette a disperdere tempo ed energie in una defaticante valutazione *ex ante* sulla carta dei progetti come attualmente avviene;

la percentuale delle risorse riservate a progetti delle O.N.G. nei P.V.S. rappresentano una minima parte (circa il 3 per cento) dei fondi della legge 49/87;

se intenda rivedere sostanzialmente la percentuale dei fondi riservata alle O.N.G. raddoppiando come minimo per il 1993 la quota segnata per il 1992. (4-13121)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, delle finanze, del tesoro e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se sia noto al Governo il modo pesante di condizionamento e discrimina-

zione politica, che soprattutto in Italia settentrionale, specie nelle zone « rosse », è stato sempre esercitato e ancor è esercitato con danno dei cittadini, « non rossi », da parte delle loro associazioni e iniziative e, con il denaro pubblico, con vantaggio dei « compagni » o dei « compagni dei compagni ». Per raggiungere tale scopo e mantenere tale sistema discriminatorio, in Emilia i « compagni » hanno da sempre studiato « forme di partecipazione » aperte allo « associazionismo » (con espressione lessicale e « italiana » tipica del solito sinistrese!): come a Bologna con la « consulta Subacquea », alla cui « azione » il Comune di Bologna sottopone le varie società per la preparazione all'attività subacquea, imponendo loro di « interagire » con detta « Consulta »! Così è capitato anche alla associazione sportiva subacquea locale, che, peraltro, rea di non essere della « partita » o del « partito », viene di fatto discriminata, con « provvedimenti disciplinari » della predetta Consulta! Inutili gli interventi e i « ricorsi » o i « richiami » all'assessore « competente », con buona pace dei diritti dei cittadini, della parità di trattamento della trasparenza amministrativa, della buona amministrazione, del corretto uso del denaro pubblico! Tra l'altro è e resta evidente l'abuso dell'assessore, dell'operato del Comune e della predetta Consulta, che deve « utilizzare le strutture e le piscine per il nuoto e/o l'« agonismo » mentre la delibera iniziale prevede proprio all'atto della costituzione di detta « consulta » la esclusione di tali attività, proprio per favorire attività, più « povere » e utili, quale la subacquea –:

se, in merito siano in atto ispezioni o inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare doverosamente perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori, con danno per l'erario o per i cittadini o per gli amministrati, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come dirigenti di unità operative o responsabili di uffici periferici dello Stato, ovvero onorari come sindaci, assessori, ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega.

(4-13122)

AUGUSTO BATTAGLIA. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che alcune centinaia di ordinanze di acquisizione e demolizione sono state notificate a cittadini della periferia romana che per necessità familiari hanno realizzato alloggi abusivi nel periodo compreso tra il 1° ottobre 1983 e il 17 marzo 1985;

che la legge 47, che ha sanato gli abusi edilizi, pur approvata nel 1985 ha inspiegabilmente limitato la sanatoria agli abusi commessi fino al settembre 1983, determinando una oggettiva discriminazione tra cittadini che avevano commesso l'abuso nelle stesse condizioni normative allora vigenti;

che tali provvedimenti indiscriminati stanno determinando un forte stato di tensione fra gli abitanti della periferia romana, nonché difficoltà operative per la stessa amministrazione comunale –:

quali iniziative urgenti intenda assumere per sospendere i provvedimenti al fine di verificare la natura degli abusi ed evitare che siano impropriamente assimilati abuso di speculazione ed abuso di necessità. (4-13123)

AUGUSTO BATTAGLIA. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale, dell'industria, commercio e artigianato e dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che l'Assitalia ha posto in vendita nove complessi immobiliari per complessivi 313 alloggi a Roma ed 85 a Milano;

che la vendita per stabili o di tutto il complesso in blocco fa pensare ad un'operazione che sboccherà nella vendita frazionata e nello sfratto per gli inquilini non in grado di acquistare;

che la tensione alloggiativa a Roma è molto forte con 27 mila sfratti esecutivi e 7.000 con concessione della forza pubblica –:

quali iniziative intenda assumere per bloccare la vendita ed individuare con l'Assitalia soluzioni rispettose del diritto di proprietà ma anche del diritto alla casa di tutti i cittadini, soprattutto dei più svantaggiati. (4-13124)

TURRONI. — *Ai Ministri dell'ambiente, dell'interno e dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

con delibera 382 del 28 novembre 1980 è stato approvato il progetto di massima per la costruzione del 3° lotto ed integrazione dei primi due dell'impianto di Bologna di depurazione delle acque nere della fognatura cittadina. Con la stessa delibera si autorizza l'esperimento di un appalto-concorso per l'affidamento dei lavori: importo dell'appalto-concorso lire 15.400 milioni. I dati tecnici per l'appalto concorso vengono redatti dall'unità operativa difesa ambiente del dipartimento assetto territoriale;

con delibera 637 del 12 settembre 1981 è stata nominata una « commissione tecnico-scientifica » per l'esame del progetto composta da tecnici del Comune, dell'AMIU, dell'allora AMGA e tre tecnici esterni;

con delibera 103 dell'11 giugno 1982 viene nominata una « commissione giudicatrice dell'appalto-concorso », commissione formata dagli assessori competenti, da componenti della minoranza presenti in consiglio comunale e da una qualificata presenza di tecnici;

all'appalto-concorso vengono invitate 17 aziende e soltanto 2 si presentano: la Degremont Italia Spa di Milano e la Società Snam Progetti di Milano. La commissione giudicatrice nominata con delibera 103 sopra menzionata, dopo aver esaminato i progetti-offerta presentati, ha concluso i suoi lavori con una relazione tecnica ritenendo che « nessuno di essi sia meritevole di aggiudicazione »;

con delibera 592 del 19 dicembre 1983 si decide di superare l'impasse presentato dall'appalto-concorso non riuscito tramite una trattativa privata con le due aziende che non sono risultate idonee dalla commissione amministratrice. La delibera non motiva assolutamente il perché della trattativa privata e si appoggia tutta su il parere *pro-veritate* chiesto al professor Gianguido Sacchi Morsiani (attuale presidente della Cassa di Risparmio). Detto parere, in sintesi, afferma che è possibile fare una trattativa privata con le aziende che non hanno superato l'appalto-concorso quando: « gli incanti e le licitazioni siano andate deserte » (non è detto che la riapertura di una gara dopo anni non veda la partecipazione di altre aziende con tecnologie migliori n.d.r.), quando non viene modificata la commissione, quando viene chiesta una miglioria alle aziende, quando esistono motivi di urgenza ». Si ricorda che la Degremont Italia Spa è l'azienda che ha già costruito i due primi lotti del depuratore, lotti che presentavano allora gravi problemi di funzionalità;

la delibera viene discussa in Consiglio al termine di 120 delibere e precisamente all'1,30 di notte. Il partito di deliberazione viene messo in votazione e approvato con 29 voti favorevoli e 1 astenuto (il DC Lorenzini);

i motivi di urgenza sopra richiamati si sono rivelati strumentali in quanto oggi il depuratore, a distanza di 10 anni, non è ancora terminato. Inoltre con delibere 593 e 594 sempre del 19 dicembre 1983 si è proceduto a cambiare la commissione giudicatrice per motivi di snellezza in modo da garantire un andamento dei lavori più veloce e funzionale, commissione a cui viene tolta tutta la componente tecnica (tra i consulenti esterni rimane unicamente l'ingegner F.P. Foraboschi) mentre rimane largamente rappresentata nelle sue forze di maggioranza e minoranza la componente politica. Il gruppo DC esprime perplessità sulla scelta di un unico tecnico esterno in

quanto valuta più opportuna una valutazione collegiale e il capogruppo DC Bendinelli afferma che la maggioranza si assume tutta la responsabilità di questa scelta poi alla fine vota a favore (assieme a tutto il gruppo), solo il consigliere DC Lorenzini esprime forti dubbi che terminano con il voto di astensione. Vediamo alcuni punti dell'intervento del consigliere DC Lorenzini (attuale preside della facoltà di ingegneria): « Premesso che da un punto di vista oggettivo di serietà, di oggettività, diciamo, di come bisogna affrontare le cose, era estremamente opportuno riaprire il bando di concorso, dato che non si capisce perché debbano essere privilegiate, checché ne possano dire relazioni di avvocati inerenti al fatto che può essere lecito seguire una certa strada, dicevo, la strada corretta era quella di riaprire il bando-concorso, chiedere la partecipazione di tutte le ditte o di un numero più ampio di ditte, costruire un appalto-concorso più preciso rispetto a quello passato, perché una serie di errori commessi erano derivati proprio dagli errori insiti in questo bando » « Io mi pongo alcuni problemi: come mai non mantenere la stessa commissione, che già conosceva i problemi inerenti all'impianto di depurazione, che aveva esaminato tutte e due le offerte di cui una era sicuramente tripla e quindi aveva lavorato intensamente già su questi documenti, li si cancella con un colpo di spugna e si preferisce nominare qualcosa di nuovo o, meglio, si preferisce eliminare quei tecnici che avevano sollevato tutta una serie di obiezioni tecniche inerenti ai progetti presentati o comunque a parte dei progetti presentati. Allora questa celerità è celerità o ci sta sotto ben altro ? A mio avviso ci sta sotto ben altro »;

l'assessore Giancarlo De Angelis (PSI), presidente sia della prima che della seconda commissione giudicatrice ha presentato le dimissioni dalla carica di assessore, mantenendo però quelle di consigliere comunale e con delibera 1032 del 22 marzo 1985 viene apportata modifica alla delibera 594/83 sopprimendo la dicitura « Assessore alla progettazione e Attuazione » permettendo così al signor Giancarlo De Angelis di esser ancora presidente della commissione. Delibera 1185 del 25 marzo 1985, terminano i lavori della commissione giudicatrice e vengono approvati, in linea tecnica ed economica il progetto esecutivo presentato dalle imprese Degremont e Snam Progetti che si sono costituite in raggruppamento di imprese: capogruppo Snam Progetti. Importo complessivo lire 58.736.487.000;

il giudizio dei relatori tecnici sul progetto-offerta presentato l'11 marzo 1985 dal raggruppamento di imprese Snam Progetti-Degremont risulta positivo in quanto le imprese hanno inserito « in modo sostanzialmente accettabile le prescrizioni formulate dalla commissione giudicatrice ». Viene però riscontrato che alcuni elementi dovranno essere ulteriormente riconsiderati e riguardano in particolare: *a)* la sezione di trattamento emissioni e odori, *b)* il sistema di stoccaggio ed evacuazione fanghi disidratati. La commissione aggiunge: « In merito a queste sezioni si fa rilevare che, in sede di eventuale conferimento dei lavori, deve essere tenuto ben presente che il raggruppamento di imprese dovrà garantire la realizzazione delle sopracitate sezioni in conformità delle prescrizioni fornite, senza aumento dei costi ». Viene inoltre chiesto uno sconto del 10 per cento, sconto alla fine delle trattative accettato dal raggruppamento di imprese;

le imprese Snam Progetti e Degremont hanno subappaltato alcuni lavori del depuratore a più aziende locali (tra tutte spiccano la Frabboni Spa recentemente inquisita e la Coop. Edilter);

il 9 luglio 1986 viene stipulato un primo contratto di appalto (1° stralcio) con la Snam Progetti Spa in qualità di capogruppo, per la Snam progetti interviene il signor Annibaldi ingegner Alvaro in qualità di procuratore speciale. L'importo complessivo del contratto è di lire 31.014 milioni (di cui 30.405.882.352 per lavori e 608.117.648 per IVA). A questo contratto segue un atto aggiuntivo datato lunedì 20 luglio 1987 per lire 11.400 milioni);

il 13 gennaio 1989 viene stipulato un ulteriore atto aggiuntivo al contratto del 9

luglio 1986, atto questa volta che si intende non in completamento dell'importo complessivo del contratto ma effettivamente in aggiunta per un importo complessivo di lire 4.492.114.616 più IVA. Detto importo è finalizzato alla realizzazione di una camera di post-combustione a servizio del forno di incenerimento fanghi. Tale importo è interamente di competenza della Snam Progetti Spa. Tempo di realizzazione 440 giorni naturali. Si ricorda che la camera di post-combustione è stata resa obbligatoria dal decreto del Presidente della Repubblica n. 915 del 1982. Il progetto esecutivo è stato votato dal consiglio comunale nel 1985 (tre anni dopo la legge) e non prevedeva la realizzazione di detta camera;

il 19 aprile 1989 viene stipulato un altro atto aggiuntivo al contratto del 9 luglio 1986 finalizzato ad opere aggiuntive varie e di variante. Importo complessivo lire 1.049.894.408 più IVA. Viene chiesta una proroga di 45 giorni sul termine ultimo dei lavori previsto dal primo contratto;

il 3 giugno 1988 viene stipulato un contratto relativo al 2° stralcio sempre ovviamente con Snam Progetti in qualità di capogruppo della riunione temporanea di imprese per l'importo di lire 14.700 milioni. All'interno del contratto sembrano non esistere i dettagli delle opere da realizzare e i tempi di realizzazione;

il 5 aprile 1991 viene stipulato un atto aggiuntivo per l'importo complessivo presunto, a corpo, di lire 971.194.663 più IVA;

il 30 luglio 1992 viene presentato un secondo atto aggiuntivo sempre al contratto del 3 giugno 1988 per lire 1.072.713.247 più IVA. Il termine contrattuale per l'ultimazione dei lavori viene prorogato di 60 giorni naturali;

con deliberazione consiliare Odg 1739 del 27 luglio 1987 viene approvato il 3° stralcio per lire 13.022.487.000 successivamente aggiornato (revisione prezzi) dal punto di vista economico con Odg 95 del 23 settembre 1988 in lire 19.380 milioni;

il 13 luglio 1990 viene stipulato un contratto di appalto per la realizzazione del sub-stralcio (3° stralcio/A) importo lire 10.480 milioni. Ultimazione dei lavori 730 giorni naturali;

il 4 luglio 1991 viene stipulato un contratto di appalto per la realizzazione del sub-stralcio (3° stralcio/B) importo lire 8.900 milioni;

nel 1992 vengono deliberate 2 perizie suppletive la prima di lire 1.450 milioni e la seconda di lire 1.800 milioni, perizie deliberate dal comune ma non ancora finanziate;

la direzione dei lavori venne affidata ai seguenti tecnici:

1) coordinamento generale con incarico esterno: professor ingegner Franco Paolo Foraboschi;

2) direzione lavori opere elettromeccaniche: professor ingegner Riccardo Cenerini (ex direttore AMIU che dal 1° aprile 1987, ossia data di cessazione del suo rapporto di lavoro con la municipalizzata diventa direttore dei lavori per il depuratore);

3) direzione lavori opere civili: ingegner Giuseppe Cornelio (dell'unità operativa difesa ambiente comune di Bologna);

il 18 settembre 1989 l'ingegner Cornelio ha cessato il proprio servizio presso il comune. L'amministrazione comunale ha però, stranamente, deciso con Odg 393/89 di mantenere la collaborazione dell'ingegner Cornelio con incarico di « collaborazione professionale esterna alla direzione opere civili » avendo così una maggiore spesa di lire 72.828.000 per il 1° e 2° stralcio e lire 48.552.000 per il 3° stralcio. Si ricorda, a motivazione della parola « stranamente » sopra riportata che l'ingegner Cornelio Giuseppe ha elaborato a suo tempo il progetto di massima dell'intervento in base al quale è stato esperito il successivo appalto-concorso (come anche

ricordato nel testo della delibera), progetto di massima che presentava errori (come sostenuto dal consigliere Lorenzini nel dibattito sull'Odg 592 del 19 dicembre 1983), errori che hanno contribuito a far fallire l'appalto-concorso;

i compensi dei professionisti sono lievitati notevolmente. Vediamo alcuni esempi:

ingegner Riccardo Cenerini:

Odg 836 del 13 febbraio 1987: lire 329.256.977 (importo 1° stralcio);

Odg 1310 del 20 giugno 1988: lire 118.369.556 (2° stralcio);

Odg (giunta) 4454 dell'11 dicembre 1990: lire 122.800.000 (per le due perizie supplementari);

Odg 619 del 18 febbraio 1992: lire 200.803.417 (3° stralcio A e B);

Odg 695 del 21 febbraio 1992: lire 84.719.076 (integrazione spesa per revisione prezzi su 1° e 2° stralcio e perizia suppletiva 2° stralcio);

professor F.P. Foraboschi:

Odg 285 del 10 febbraio 1987: lire 228.684.000 (importo 1° stralcio);

Odg 1311 del 20 giugno 1988: lire 106.638.960 (2° stralcio);

Odg (giunta) 694 del 21 febbraio 1992: lire 56.717.292 (integrazione spesa per revisione prezzi su 1° e 2° stralcio e perizia suppletiva 2° stralcio);

Odg 114 del 2 marzo 1992: lire 109.725.258 (3° stralcio A e B);

i tempi iniziali previsti sono completamente saltati e a 7 anni dalla stipulazione del primo contratto il depuratore è ancora in fase di realizzazione creando gravi danni ambientali per la mancata depurazione delle acque di una larga parte del territorio attorno a Bologna. Dalla cifra di preventivo per spese accessorie (direzione lavori, collaudi, controlli eccetera) attestata intorno a lire 800 milioni si è passati ad un costo attuale di circa 2 miliardi. Dalla cifra di lire 58.736.487 mila iniziale si è passati a quasi 100 miliardi di costo con il depuratore non ancora terminato;

sono tantissimi gli inconvenienti e le situazioni di disfunzionalità che presenta il depuratore. Ultimo tra i tanti è testimoniato dalla protesta dei residenti per l'elevata rumorosità del forno di incenerimento, protesta che ha costretto l'USL a proporre un'ordinanza sindacale nei confronti del direttore di AMIU Fernando Lolli. Lolli in una lettera del 16 marzo 1993 protocollo 5060 indirizzata all'assessore Ugo Mazza, all'ingegner Tassoni, alla direzione lavori opere elettromeccaniche 3° lotto e al presidente del quartiere Navile, parla di ritardi nell'esecuzione dei lavori di allacciamento della camera di post-combustione da parte della ditta appaltatrice (ricordiamo che il contratto per la realizzazione di detta camera risale a gennaio 1989, ossia tre anni prima), di totale disinteresse della ditta appaltatrice e minaccia la chiusura del forno se l'intervento non verrà eliminato in breve tempo. Parla di altri inconvenienti sottolineati da AMIU (compressori della linea di produzione di ossigeno puro, ritardi nella esecuzione dei lavori con conseguenti fermate del forno, eccetera) –:

se le procedure adottate per la scelta delle ditte per l'affidamento dei lavori ed ogni altro atto preliminare e/o conseguente siano da ritenersi regolari e corretti dal punto di vista amministrativo e formalmente ineccepibili;

quali siano stati gli avvisi degli organi di controllo in ordine alla regolarità dei medesimi atti, anche in considerazione delle numerose anomalie riscontrabili negli elementi indicati in premessa;

se sia da ritenersi legittimo il ricorso alle procedure d'urgenza in considerazione degli incredibili ritardi che ancora oggi impediscono ad una gran parte del territorio bolognese di vedere depurati i propri liquami, con grave pregiudizio per le falde idriche e per l'ambiente;

i motivi per cui i costi sono saliti ad oltre 100 miliardi e se tale impiego di denaro pubblico abbia o meno comportato danni alle finanze pubbliche;

quali siano i motivi in base ai quali si sono determinate così alte spese per prestazioni professionali di tecnici incaricati dei collaudi e della direzione lavori;

se vi siano e quali i contributi statali per la realizzazione dell'opera in parola e se l'erogazione dei medesimi sia stata effettuata in conformità con i tempi previsti ed autorizzati di esecuzione dei lavori;

se fra i collaudatori vi siano magistrati ed altri componenti di pubblici uffici, soprattutto dello Stato, aventi competenze nella concessione di finanziamenti e nel rilascio di autorizzazioni per l'opera in oggetto;

se sia legittimo l'assegnazione della direzione lavori ad un dirigente dell'azienda municipalizzata competente nella realizzazione dell'opera dal 1° giorno successivo al suo collocamento a riposo. (4-13125)

TREMAGLIA. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per conoscere:

i motivi per cui il Presidente del Comitato degli Italiani all'Estero (COMITES) di Monaco di Baviera ha inviato, su carta intestata del COMITES, a tutte le associazioni italiane della Circoscrizione Consolare materiale propagandistico del « Comitato promotore dei Referendum elettorali » malgrado avesse ottenuto, su sua specifica richiesta, anche materiale informativo dai sostenitori del « NO ».

A seguito delle proteste del Comitato Tricolore per gli Italiani nel Mondo (CTIM) e dei rappresentanti delle liste di « Alleanza Italiana » e di « Sinistra unita » di Monaco, il Presidente del COMITES, anche su sollecitazione del Console Generale, ha « finto » di rimediare alla evidente iniziativa discriminatoria, censurando il materiale informativo richiesto al rappresentante del MSI-DN, cancellando la fonte di quello fornito dal CTIM e non dando loro la stessa diffusione riservata alla propaganda del « Comitato promotore dei Referendum »;

quali provvedimenti si intendano prendere nei confronti del Presidente del COMITES di Monaco di Baviera che, responsabile di una Istituzione dello Stato, ne ha fatto un uso discriminatorio e fazioso, venendo meno alla imparzialità richiesta alla sua carica in consultazioni elettorali di così grande importanza. (4-13126)

TREMAGLIA. — *Ai Ministri degli affari esteri e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per sapere – premesso che:

il signor Lenoci Domenico residente in Germania da diciassette anni in Pivitsheiderstr. 127, 4936 Augstdorf è divorziato da una cittadina tedesca dalla quale ha avuto due figlie;

è titolare di un ristorante nella stessa località e si è sempre comportato correttamente nel Paese che lo ospita;

improvvisamente la *ex* moglie ha cambiato residenza, senza comunicarlo al signor Lenoci, portandosi via le bambine impedendogli così di vederle e comunicare con loro;

da quel momento le competenti Autorità locali sembrerebbe stiano creando ogni possibile ostacolo al nostro connazionale onde impedirgli di rivedere le figlie –:

se le nostre Autorità diplomatico-consolari in Germania siano a conoscenza del fatto e se sì, quale assistenza abbiano dato al nostro connazionale, e quali interventi abbiano effettuato presso le Autorità tedesche per permettere ad un padre disperato di rivedere le proprie figlie. (4-13127)

MATTEOLI. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

l'interrogante in data 17 dicembre 1992 ha presentato un documento di sin-

dacato ispettivo (4-08953) atto ad acclarare il modo di assunzione dei lavoratori stagionali dalla società « Labronica Corse di Livorno » che gestisce l'Ippodromo comunale Caprilli e che sempre ad avviso dell'interrogante, avvengono, le assunzioni stesse quanto meno in deroga alla legge n. 223 del 1991;

il Presidente della Labronica Corse di Livorno ha informato il Consiglio di Amministrazione che si dimetterà da Presidente nei prossimi giorni e che: « La Questura di Livorno ci ha fornito in via riservata la relazione sull'argomento inviata al Ministero dell'Interno a seguito della interrogazione dell'on. Matteoli; la suddetta relazione è molto positiva ed accoglie pienamente le nostre tesi » –:

quale giudizio diano della Questura di Livorno che trasmette « in via riservata » una nota alla Labronica Corse di Livorno prima, addirittura, che l'interrogante riceva risposta dal ministro dell'interno. (4-13128)

MATTEOLI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

l'amministrazione comunale di Borgo a Mozzano (Lucca) ha sorprendentemente deliberato di non svolgere la « biennale Azalea 93 » fonte che ha contribuito in passato ad aiutare l'asfittica economia della zona;

tale decisione ha mortificato i produttori locali –:

se risulti che l'assurda decisione del comune di Borgo a Mozzano sia stata concordata per favorire iniziative di privati;

se sia vero che la festa dell'azalea sarà gestita, quest'anno, dalla struttura ricettiva de « Il Ciocco »;

se alla regione Toscana siano pervenute richieste di finanziamenti. (4-13129)

SCALIA e MATTIOLI. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

con legge regionale 28 settembre 1982, n. 47 è stata istituita la Riserva Naturale del Lago di Vico, la superficie protetta è di 3.300 ha e l'ente gestore è l'amministrazione comunale di Caprarola (VT);

le sponde, in gran parte intatte del Lago di Vico, sono protette dall'istituzione della riserva naturale che include anche parte dell'antico cinto craterico con i rilievi del Monte Venere e del Monte Fogliano. Le pendici dei rilievi sono ricoperte da una bellissima faggeta, da cerrete da boschi decidui con acero, orniello, carpino e roverella;

le sponde dove si sviluppa una rigogliosa vegetazione riparia con saliceti, canneti e giuncheti, e le acque del lago sono frequentate da numerosissime specie di uccelli quali il tarabusino, la cannaiola, il porciglione, la garzetta, l'airone cenerino, lo svasso maggiore, la folaga e molte anatre;

recentemente è stata segnalata la presenza di liquami, dall'apparenza estremamente dubbia e maleodorante, che affiorano in superficie da una spiaggetta del lago di Vico;

in prossimità del campo giochi della « Bella Venere », complesso turistico sito nel comune di Caprarola, è presente una pozza che dista pochi metri dalla sponda lacustre dove è stata segnalata la presenza di liquami –:

se le acque nere del centro sportivo « Bella Venere » o di altri impianti limitrofi siano depurate a norma di legge;

se non ritenga di dover disporre attraverso il NOE, un accurato monitoraggio delle acque del lago di Vico;

quali provvedimenti verranno presi per la tutela e la salvaguardia della riserva naturale del lago di Vico. (4-13130)

SCALIA e MATTIOLI. — *Ai Ministri dell'ambiente e per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso che:

in territorio di Sarroch la Saras S.p.A. Raffinerie intende realizzare una unità di processo integrata di gassificazione di residui pesanti e di produzione di energia elettrica con ciclo combinato per la potenza complessiva di 595 M;

si prevede di alimentare l'impianto con tar di visbrearing (2900 t/giorno);

la Saras motiva la richiesta con l'esigenza di adeguamento alle nuove normative ambientali della produzione di energia elettrica della raffineria;

solo 140 MW dovrebbero essere utilizzati per usi interni ed esportare i restanti 455 MW in rete Enel;

l'ubicazione della centrale è ipotizzata all'interno dell'area impiantistica dell'attuale raffineria già assoggettata al decreto del Presidente della Repubblica 175/88 (Direttiva Seveso), in quanto l'impianto è classificato ad elavato rischio, tanto che lo stesso abitato di Sarroch potrebbe essere interessato da eventuali incidenti negli impianti;

risulta che nonostante tale contesto la Saras ha presentato domanda formale per essere esentata dalla procedura di VIA per la progettazione della centrale –:

se i Ministri siano a conoscenza di quanto in premessa;

se non ritenga, il Ministro dell'ambiente, di prescrivere alla Saras una rigorosa Valutazione d'Impatto Ambientale così come peraltro previsto dalla normativa vigente;

se siano stati approntati i piani di evacuazione e di emergenza così come previsti dal decreto del Presidente della Repubblica 175/88, anche per far fronte ai primi soccorsi ai feriti in caso di incidente;

quali provvedimenti siano stati presi per la sicurezza dell'area di Sarroch;

se non ritengano i Ministri interrogati, valutando il rapporto costi benefici, stabilire una diversa localizzazione o la chiusura degli impianti di cui in premessa. (4-13131)

SCALIA. — *Ai Ministri dell'ambiente, della sanità e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

con il trascorrere del tempo la situazione dello smaltimento dei rifiuti a Roma e nel Lazio diventa ogni giorno più drammatica e incontrollabile, come risulta del resto dagli studi e dalle denunce presentate dal WWF e dalla Legambiente del Lazio, così come dall'europarlamentare dei Verdi Gianfranco Amendola. Insieme alla ormai decennale inadempienza della regione Lazio nel predisporre e rendere efficiente il sistema regionale di smaltimento dei rifiuti, assistiamo alla sempre maggiore influenza dell'impresa privata nel medesimo settore, tanto che si teme che l'inattività dell'ente territoriale (pubblico) competente sia strettamente connessa alla frenetica attività dei privati, con l'unica differenza che mentre la regione dovrebbe tutelare l'interesse generale i privati, naturalmente, si occupano esclusivamente dei propri interessi commerciali.

Il gruppo che fa capo all'avvocato Cerroni, in particolare, controlla l'intero sistema di smaltimento dei rifiuti nella provincia di Roma ed è a vario titolo coinvolto in ciò che anche nelle altre province della regione (molto poco per la verità) si fa in tale settore.

Il Co La Ri (Consorzio Laziale Rifiuti) presieduto dall'avvocato Cerroni, gestisce la discarica di Malagrotta insieme alla ditta Giovi Srl, proprietaria dei terreni della discarica, e riceve pertanto dal comune di Roma circa 40.000 lire per ogni tonnellata di rifiuti solidi urbani stoccata, per un totale complessivo di oltre 50 miliardi l'anno. Lo stesso gruppo è presente, inoltre, nella Ecoitalia Srl che gestisce la discarica di Guidonia, nella Ecologia 2000 Srl che gestisce la discarica di Viterbo e nel consorzio che ha realizzato

l'impianto di preselezione e trattamento di Colfelice, il Co La Ri ha inoltre un consigliere d'amministrazione in comune con la SLIA SpA che gestisce l'impianto di compostaggio di Terracina. Vale la pena ricordare che alcune delle citate società sono risultate coinvolte nei recenti scandali connessi con il trattamento dei rifiuti in Campania. A Roma in particolare ogni volta che soprattutto da parte degli ambientalisti si è richiesto l'impiego di moderne tecniche di smaltimento e riciclaggio dei rifiuti ci si è sempre scontrati contro un muro di indifferenza alzato da parte delle autorità comunali come se le stesse non volessero far diminuire in qualche modo l'enorme massa di rifiuti che quotidianamente giunge alla discarica di Malagrotta insieme alle immense risorse economiche che finiscono per tale motivo nelle casse dell'avvocato Cerroni –:

se non ritengano opportuno utilizzare i poteri sostitutivi di cui, ai sensi delle vigenti disposizioni di legge in materia, dispongono, nei confronti della regione Lazio che da oltre un decennio ritarda l'applicazione del piano regionale per lo smaltimento dei rifiuti;

se non reputino doveroso stimolare gli enti locali e gli altri enti territoriali all'osservanza delle leggi in materia, che raccomandano l'utilizzo della discarica solo per smaltire i rifiuti che avanzano dai processi di termodistruzione o riciclaggio e non per smaltire tutti i rifiuti, come purtroppo avviene in tutto il Lazio ed in particolare a Roma;

se non reputino quanto meno rischiosa la situazione di monopolio di un gruppo privato in un settore così importante per la salute dei cittadini e la salubrità dell'ambiente;

quali iniziative saranno poste in essere per garantire il controllo pubblico nelle attività di raccolta, smaltimento e riciclaggio dei rifiuti;

se non reputino doveroso svolgere le ispezioni di propria competenza al fine di chiarire le motivazioni che spingono gli enti territoriali pubblici a disinteressarsi, ad esclusivo vantaggio di pochissimi privati, dello smaltimento dei rifiuti solidi urbani così come dei rifiuti industriali e di quelli tossico-nocivi nel Lazio. (4-13132)

PASETTO. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso:

che il dott. Caruso Orazio, medico chirurgo, dal dicembre 1979 risulta essere titolare di incarico a tempo indeterminato presso la USL 25 della Regione Veneto in qualità di specialista ambulatoriale nella branca di ostetricia e ginecologia;

che nell'ambito di detta sua attività lo stesso dott. Caruso ebbe a riscontrare la persistente omissione da parte della USL 25 nel predisporre idonei strumenti previsti dal D.P.R. 316/90 finalizzati a consentire al dott. Caruso di poter svolgere concretamente ed al meglio la propria attività di assistenza professionale;

che tale carenza di mezzi ha comportato per il dott. Caruso la impossibilità di erogare i servizi richiesti dall'utenza, cosa tempestivamente denunciata alla stessa direzione sanitaria dell'USL 25;

che, per tutta risposta, la direzione dell'USL 25 anziché andare incontro alle giuste richieste del dott. Caruso ha adottato nei suoi confronti provvedimenti intimidatori, quali il trasferimento in vari ambulatori ex-ONMI sparsi nella provincia di Verona, con sospensione dello stipendio in casi di rinuncia;

che tale trasferimento è stato studiato con molta attenzione, in quanto gli ambulatori indicati saranno chiusi, così come deciso nella seduta del Comitato Zonale della USL 25 del 16 dicembre 1992, con la ovvia conseguenza della perdita del posto da parte del dott. Caruso;

che tutto quanto sopra appare quantomai assurdo –:

quali passi intenda muovere presso la competente USL 25 della Regione Veneto per evitare un simile abuso di potere, e per

garantire e tutelare il dott. Caruso, persona che ha come unica responsabilità quella di avere richiesto di poter adempiere alla propria missione professionale nel modo migliore. (4-13133)

VENDOLA. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

il giorno 2 marzo 1993 il quotidiano *La Gazzetta del Mezzogiorno* informava che la Procura della Repubblica di Bari ha chiesto il rinvio a giudizio per truffa ai danni dello Stato e violazioni fiscali per 13 tra presidenti e commissari degli esami di maturità 1992 poiché per arrotondare il rimborso spese facevano figurare attraverso le ricevute fiscali, rilasciate dall'Amministrazione dello Sheraton Nicolaus Hotel di Bari, di aver pernottato in albergo;

viceversa, in relazione ai presunti pernottamenti in albergo, i Carabinieri della Compagnia di Bari Centro accertarono che per alcuni giorni le stanze che « sulla carta » erano occupate da presidi e insegnanti in trasferta erano in realtà libere o occupate da altre persone –:

se il competente Ufficio scolastico provinciale e per esso il Provveditore degli studi avesse provveduto a concedere l'autorizzazione di legge a risiedere a Bari, sede di svolgimento delle prove di esame;

se tale eventuale autorizzazione, trattandosi prevalentemente di commissari e presidenti con sedi di titolarità e di servizio nell'ambito della stessa provincia di Bari fosse stata concessa nel rispetto della vigente normativa e delle fattispecie minuziosamente contemplate e previste dalle leggi, Ordinanze Ministeriali e Circolari attuative;

se il Ministero e per esso il Provveditorato agli Studi si siano costituiti come parte civile, per il tramite della Avvocatura dello Stato, in giudizio o se intendano farlo;

se l'Ufficio scolastico provinciale abbia provveduto, per competenza, a trasmettere l'elenco dei 13 inquisiti per gli opportuni provvedimenti ministeriali di cautela e autotutela nella imminenza della formazione delle commissioni di esame 1993. (4-13134)

GAMBALE. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per sapere – premesso che:

il rettore dell'Ateneo Federico II di Napoli, Carlo Ciliberto, in un editoriale pubblicato su *la Repubblica*-Napoli del 14/15 marzo 1993 appoggiava le liste col motto « Agorà », composte dal Movimento Giovani Socialisti di Napoli;

il Rettore medesimo ha revocato agli Studenti della Sinistra Universitaria l'autorizzazione all'uso dell'Aula De Sanctis per un incontro da tenersi il 5 aprile 1993, facendo inoltre dare smentita al TGR dell'incontro in parola, tenutosi poi davanti l'aula vietata;

esiste incontestabilmente nell'Ateneo napoletano una situazione di inadeguatezza dei servizi e delle strutture messe a disposizione dall'Università, a fronte di inammissibili sprechi di denaro pubblico di cui la rivista « Diritto allo studio », edita dall'Opera Universitaria, costituisce un chiaro esempio;

le carenze che qui si lamentano riguardano soprattutto il nuovo polo universitario di Monte S. Angelo – malamente servito dai mezzi pubblici, circondato per larga parte da parcheggi abusivi e mancante di una mensa propria – e più in generale la situazione degli studenti fuori sede, per i quali l'Ateneo federiciano dispone di meno di duecento posti letto –:

come si intenda migliorare i servizi e le strutture del polo di Monte S. Angelo;

cosa si intenda fare per agevolare le attività ed il soggiorno degli studenti fuori sede;

se s'intenda disporre misure dirette a chiarire le spese sostenute e previste per la rivista « Diritto allo Studio »;

se si ritenga corretto il comportamento del Rettore Ciliberto che si è schierato apertamente per una parte, in danno di un'altra, in piena campagna elettorale ed ha negato agli studenti l'uso di strutture universitarie. (4-13135)

PIERONI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

una motivata disputa, che il Ministro ben conosce anche attraverso una sua visita *in loco*, oppone i cittadini del Comune di Pergola (Ps) e la loro municipalità alla regione Marche – il cui Piano Sanitario regionale prevede la soppressione dell'ospedale locale di recente costruzione e di eccellente funzionalità strutturale – e ad alcuni funzionari responsabili dell'Usl 7 di competenza che, nell'assolvimento dei propri incarichi, avrebbero incentivato una situazione concorrenziale fra lo stesso ospedale di Pergola e quello del Comune limitrofo di Cagli, coincidente con una vecchia struttura di cui il Piano Sanitario Regionale non prevede la soppressione, ma la risistemazione con costi assai onerosi per la finanza pubblica;

detta situazione concorrenziale risponde ad interessi politici locali, logiche di preferenze e di dispute che prevaricano gli interessi del servizio pubblico e che hanno condotto – tramite lo smantellamento del personale e dei servizi – alla inattività di uno dei presidi ospedalieri meglio attrezzati della regione;

risulta amministratore straordinario della Usl 7 il dottor Bruno Grasso nominato con delibera n. 3597 del 2 luglio 1991 dalla Giunta Regionale delle Marche;

tale delibera appare formalmente corretta ma induce effetti assai viziati: infatti la nomina avviene in sostituzione del dottor Corrado Ferdinando, già amministratore straordinario dell'Usl 7 e trasferito nello stesso ruolo all'Usl 4 di Fano. Va però notato come il dottor Corrado Ferdinando fosse stato nominato amministratore della Usl 7 solo il 10 giugno 1991, con delibera n. 3111, e abbia quindi ricoperto il suo mandato per meno di un mese prima essere trasferito il giorno stesso e con delibera immediatamente precedente (n. 3596) a quella della nomina del dottor Grasso. Di fatto la Regione Marche è riuscita a nominare amministratore straordinario della Usl 7 un funzionario non incluso nella terna formulata dal Comitato dei garanti ai sensi di legge e a destinare ad altro mandato due dei componenti di quella terna. Va peraltro aggiunto che all'interrogante non risulta che il nominativo del dottor Grasso fosse incluso in altre terne –:

quali controlli il Ministro intenda porre in essere per verificare la situazione della struttura gestionale della Usl 7 di Cagli, al fine di verificare tanto la regolarità sostanziale della nomina del dottor Bruno Grasso nelle funzioni di amministratore straordinario, quanto la regolarità del fatto che in essa sia ricoperto il ruolo di coordinatore sanitario. (4-13136)

PIVETTI. — *Al Ministro per gli affari sociali.* — Per sapere – premesso:

che nel carcere minorile milanese « Cesare Beccaria », sono attualmente detenute più di cento persone;

che la struttura, che ha una funzione prevalentemente di recupero sociale dei minori, ha la capacità di garantire attività educative per non più di quaranta/cinquanta ragazzi;

che si registra un'impennata degli ingressi di cittadini italiani rispetto a quelli stranieri, verificandosi così un'inquietante inversione di tendenza rispetto al periodo precedente che si vedeva invece una grande maggioranza di detenuti stranieri;

che gli adolescenti italiani che vengono arrestati ultimamente provengono nella grande maggioranza da ben individuate zone cittadine, note per le accentuate caratteristiche di degrado socio-culturale –:

se il Ministro non ritenga di approfondire la conoscenza di questi dati per di

capire quali potrebbero essere i motivi che hanno portato al configurarsi di questa preoccupante situazione;

se non ritenga il caso di progettare strutture in grado di farsi carico di ragazzi con situazione personale e familiare particolarmente difficile almeno nei territori in cui è stata individuata una maggiore predisposizione al fenomeno, secondo il modello di altri Paesi comunitari e degli Stati Uniti. (4-13137)

PIVETTI. — *Al Ministro per gli affari sociali.* — Per sapere – premesso che:

secondo numerosi esperti i giochi elettronici provocano in alcuni soggetti fotosensibili delle crisi epilettiche;

sono venute a conoscenza dell'opinione pubblica notizie di malori e svenimenti e persino decessi di bambini davanti al videogioco;

fonti anche mediche sostengono che il videogioco può indurre nei bambini in età scolare degli stati d'ansia e di insonnia –:

se il Ministro non ritenga opportuno rendere obbligatoria l'avvertenza al pubblico consumatore circa i pericoli per la salute, che possono essere causati da un uso prolungato di giochi elettronici, mediante segnalazione sulla confezione dei suddetti articoli, secondo quanto già in studio di realizzazione in altri paesi CEE. (4-13138)

TREMAGLIA. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – premesso che:

si è svolta recentemente a San Paolo del Brasile una riunione del Comitato degli Italiani all'estero cui hanno partecipato i rappresentanti dei Consolati d'Italia di Porto Alegre, Curitiba e San Paolo;

i suddetti Consolati hanno giurisdizione sui quattro Stati meridionali del Brasile Rio Grande do Sul, Santa Catarina, Paranà e San Paolo, la parte del paese con più forte presenza di nostri connazionali e con circa 18 milioni di cittadini di origine italiana;

l'esponente del COMITES di San Paolo e componente del Comitato di Presidenza del Consiglio Generale degli Italiani all'Estero (C.G.I.E.) Luigi Barindelli, nel corso della riunione ha sottolineato la gravissima situazione in cui si trovano ad operare i tre Consolati impossibilitati a soddisfare le esigenze di milioni di connazionali e dei loro discendenti, sia per le dimensioni della rete consolare sia per la impossibilità di svolgere un servizio di minimo livello per il riconoscimento della cittadinanza e l'immissione dei dati anagrafici per coloro che già sono in possesso di passaporto;

i tempi previsti per il riconoscimento della cittadinanza che, dato il numero delle pratiche giacenti, il signor Barindelli stima in nove mesi per i nuovi richiedenti di Porto Alegre e in due anni per Curitiba per cui, se tutti gli aventi diritto ne facessero richiesta, procedendo con lo stesso ritmo odierno, valuta in 300 anni il tempo necessario per evaderle, mentre sempre il rappresentante del Consiglio Generale degli Italiani all'Estero afferma che la situazione del Consolato di San Paolo è inoltre aggravato dal fatto che in quella circoscrizione sono 400.000 i possessori di passaporto italiano, anche se i recenti dati ufficiali del Ministero degli Interni indicano in 65.000 gli iscritti all'A.I.R.E. –:

considerata la drammatica situazione delle nostre strutture consolari in Brasile che dispongono degli stessi mezzi del passato e la cui informatizzazione degli uffici è del tutto insufficiente, se non si ritenga urgente utilizzare in Brasile e in tutti gli altri paesi dove si riscontrano gli stessi problemi, i servizi di imprese di informatica per sopperire alle difficoltà e di incrementare adeguatamente il personale. (4-13139)

TREMAGLIA. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere se non si ritenga

urgente provvedere con uno stanziamento di fondi alla riparazione della Sala riunioni dell'Istituto Italiano di Cultura di Colonia (R.F.G.).

La Sala che può ospitare fino a 300 persone è inagibile, in quanto non può più sostenere pesi, fin dal giugno del 1992 e mette in stato di pericolosità l'intero stabile. (4-13140)

TREMAGLIA. — *Ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato, per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali e degli affari esteri.* — Per conoscere:

i motivi per cui le industrie italiane di semilavorati non possono esportare in Germania, alle oltre 5 mila gelaterie artigianali italiane, prodotti per gelato con grassi vegetali. Le norme comunitarie che regolano l'interscambio delle merci non ammettono preclusioni quando il prodotto non è nocivo alla salute come nel caso dei grassi vegetali;

nel caso i motivi andassero ricercati nell'opposizione del Governo di Bonn a causa delle pressioni della *lobby* tedesca dei produttori di grassi animali, considerato il fatto che la R.F.G. ha dovuto accettare l'importazione da altri paesi di birra prodotta con additivi chimici così come l'Italia ammette la libera circolazione di pasta prodotta in Germania con l'impiego di grano tenero, quali passi siano stati fatti o si intendano effettuare presso il Governo Federale affinché tolga ogni ostacolo alla importazione dei prodotti semilavorati italiani per gelati, contenenti grassi vegetali. (4-13141)

GAETANO COLUCCI. — *Ai Ministri dell'interno, di grazia e giustizia e per i beni culturali e ambientali.* — Per conoscere – premesso:

che in data 2 giugno 1989 con provvedimento n. 1937/89 il Sindaco del comune di Agropoli, cittadina turistica alle porte del Cilento – in provincia di Salerno – rilasciava al signor Santimone Cosimo concessione edilizia per la realizzazione in via Pio X di un fabbricato per civili abitazioni composto da un piano interrato, un piano seminterrato da adibire per la parte retrostante (completamente interrata) a depositi e per la parte antistante a negozi, un primo piano destinato ad uffici ed un secondo piano da adibire ad abitazioni con una previsione di copertura del fabbricato a terrazza in piano;

che, a fabbricato pressocché completato, in data 4 febbraio 1993 il Santimone Cosimo chiedeva il rilascio in corso d'opera della concessione per la realizzazione in variante della copertura del fabbricato « così come riportato nei grafici allegati »;

che dagli stessi risulta con palmare chiarezza l'intenzione del concessionario di realizzare ulteriori volumi, in parte già abitabili, con la previsione progettuale di apertura di vedute dirette a finestra; che l'Assessore all'urbanistica del comune di Agropoli, delegato a presiedere la Commissione Edilizia e da quest'ultima irritualmente ed illegittimamente delegato in via generale a decidere « motu proprio » sulle istanze di copertura, rilasciava in data 18 febbraio 1993 con provvedimento n. 1884, senza il prescritto parere obbligatorio della Commissione Edilizia, concessione – peraltro gratuita – a realizzare quanto richiesto, considerando le modifiche come una pura e semplice « copertura » architettonicamente in variante a quella prevista nel progetto originario;

che in sede istruttoria il responsabile dell'Ufficio Tecnico comunale, anche se in maniera non chiaramente comprensibile, sembra abbia espresso parere negativo pur senza rilevare che dalla lettura dei grafici si desume che non trattasi di una pura e semplice variante della copertura del fabbricato;

che in data 25 marzo 1993 un cittadino di Agropoli inoltrava istanza-denunzia al Sindaco del comune chiedendo l'annullamento in sede di autotutela della concessione in variante perché viziata da grossolane illegittimità, evidenziando con

puntualità fatti e circostanze costituenti violazione della normativa urbanistica vigente;

che l'Assessore all'Urbanistica, in luogo dell'annullamento richiesto, si limitava a sospendere la concessione edilizia predetta « per acquisire parere della B.A.A.S. di Salerno »; che l'intera vicenda, di per sé gravissima, non costituisce per Agropoli – il cui territorio per la maggior parte è sottoposto a vincolo ambientale – un fatto isolato, ma si inserisce in un clima di tolleranza e permissivismo –:

1) se i Ministri interrogati, ciascuno per quanto di competenza, non intendano adottare sui fatti evidenziati e denunziati, procedure ispettive;

2) se il Ministro di grazia e giustizia non intenda assumere le iniziative di competenza affinché la competente Magistratura, previa acquisizione degli atti innanzi indicati, accerti la eventuale sussistenza di fatti penalmente rilevanti al fine di riportare legalità su un territorio deturpato dalla speculazione e da anni sottoposto ad un indiscriminato saccheggio;

3) se i Ministri interrogati non ritengano opportuno sollecitare, in considerazione delle indubbie irregolarità degli atti concessivi, la immediata revoca e/o annullamento della concessione in variante, nonché accertare eventuali difformità del fabbricato realizzato rispetto alla concessione originaria, sussistendo dubbi anche in ordine a tale ipotesi. (4-13142)

DE SIMONE. — *Al Ministro del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per sapere – premesso che:

la Chiesa di Santa Maria degli Angeli nel comune di Contursi Terme (SA) è stata gravemente danneggiata dal sisma del 23 novembre 1980;

a tutt'oggi nessun intervento è stato attuato, né nei programmi di ricostruzione ai sensi della legge 219/81 è previsto il suo recupero –:

i motivi per i quali nella programmazione degli interventi di ricostruzione è stata esclusa la Chiesa di Santa Maria degli Angeli e quale azione intende svolgere per il recupero dell'importante edificio sacro. (4-13143)

MARENCO. — *Ai Ministri dell'interno, della sanità e per la funzione pubblica.* — Per sapere – premesso che:

con la chiusura del centro di assistenza ai tossicodipendenti di Finale Ligure (SV), la USL 5 ha avviato in questi giorni lavori per la realizzazione di un nuovo sportello, che verrà aperto entro l'estate nelle adiacenze della portineria dell'ospedale Santa Corona di Pietra Ligure (SV);

l'iniziativa non ha trovato però pareri favorevoli fra gli abitanti della cittadina che, anzi, si sono uniti in un comitato promuovendo una raccolta di firme per una petizione alla USL competente, alla quale le adesioni sono dell'ordine di più di cento persone al giorno;

esattamente l'opposizione alla realizzazione di detto sportello, secondo i promotori del comitato, non è, come naturale, verso l'assistenza per i giovani che fanno uso di droghe, bensì all'idea di istituire un centro per la somministrazione del metadone in una zona molto frequentata dalle persone – anche anziani e bambini – vicino alla fermata del bus, allo sportello del Bancomat, al servizio taxi ed a numerosi esercizi pubblici;

la petizione chiede alla USL che lo sportello venga realizzato in una zona idonea, magari a monte dell'ospedale o comunque lontana dal centro abitato –:

se non intedano sensibilizzare la competente USL, per i motivi di ordine pubblico e di sicurezza facilmente comprensibili, a recepire le legittime richieste della popolazione di Pietra Ligure. (4-13144)

MARENCO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

è stato presentato in data 5 aprile 1993 dal sindacato provinciale CISNAL-Credito di Genova al capo dell'Ispettorato provinciale del lavoro, esposto avente ad oggetto l'esistenza di impianti audiovisivi per il controllo a distanza dei lavoratori nei *caveau* della banca CARIGE Spa di via G. D'Annunzio 41 e via Cassa di Risparmio 15 in Genova;

tali controlli sono espressamente vietati dalle leggi sindacali, e specificamente agli articoli 2 e 4 della legge n. 300 del 1970 –:

quali valutazioni esprimano in merito a questo fatto e se non intendano predisporre un rapido intervento su un simile contesto lavorativo, volto a rimuovere le cause di illiceità e a stabilire eventuali responsabilità connesse. (4-13145)

MARENCO. — *Ai Ministri della sanità, dell'interno, per la funzione pubblica e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

la 8ª U.S.L. del ponente della provincia genovese, dopo quanto già segnalato dall'interrogante a proposito del presidio ospedaliero di Pratozanino (Cogoleto - GE), si pone ora in evidenza per altri due casi di « ordinario non-senso »;

l'Ospedale San Michele Arcangelo di Campo Ligure (GE), totalmente e recentemente rinnovato, dispone di due sale operatorie nuove di zecca, costate circa due miliardi, che sono del tutto inattive, perché il presidio sanitario in questione non ha l'autorizzazione ad operare, anche se ha già il primario chirurgo;

la vicenda del San Michele (8ª U.S.L.) sta suscitando nella popolazione della valle Stura, che ne è la diretta utente, via via maggiori perplessità e sospetti: dopo i recenti ammodernamenti, la struttura campese, avendo meno di 120 posti letto, finirà tra quelle che verranno chiuse, o, per prendere in prestito l'ambiguo linguaggio politichese usato dalla Regione Liguria, competente in materia, rientrano tra le « strutture da disattivare o trasformare »;

viceversa l'ospedale « Colletta » di Arenzano (8ª U.S.L.), pur essendo abilitato a svolgere operazioni non le effettua per mancanza di una sala operatoria;

circa l'ospedale di Campoligure – che ora è utilizzato per lungodegenti, e poi rischia di chiudere o divenire una succursale di quello di Voltri – le amministrazioni locali del suo potenziale bacino di utenza (Valle Stura) stanno studiando azioni congiunte di pressione nei confronti degli organi competenti dello Stato, tra cui la Regione Liguria –:

quali iniziative intendano assumere al fine di garantire, attraverso un servizio sanitario più decentrato – là dove risiede la popolazione – pronte cure mediche agli utenti, e in particolare in merito ai due problemi sollevati: la continuità e le potenzialità tecniche (operatorie, diagnostiche, analisi, ecc..) dell'Ospedale San Michele (destinato alla chiusura) e « Colletta » di Arenzano (mancante di sala operatoria). (4-13146)

MARENCO. — *Ai Ministri della pubblica istruzione e per la funzione pubblica.* — Per sapere – premesso che:

il Provveditore agli studi di Genova ha richiesto al Ministero della pubblica istruzione l'accorpamento della scuola media di Genova-Quezzi « Gilberto Govi » all'altra scuola media genovese « Luca Cambiaso »;

all'accorpamento amministrativo, con la scuola « Gilberto Govi » trasformata in un primo momento in succursale del « Luca Cambiaso », potrebbe seguire facilmente e con alta probabilità l'accorpamento fisico ai locali della scuola-sede;

contro tale provvedimento – che priverebbe un quartiere come quello di Quezzi, con 15.000 abitanti, nonostante l'attuale calo di iscrizioni, di una struttura fondamentale come la scuola pubblica media inferiore, costringendo i ragazzi a pren-

dere due autobus per raggiungere la nuova sede – si sono già espressi, oltre lo stesso preside dell'istituto « Gilberto Govi », il consiglio di istituto, il collegio docenti, il distretto scolastico competente, il consiglio scolastico provinciale, varie forze sociali del quartiere, come il comitato « Quezzi Viva », tutti intenzionati a portare avanti iniziative di sensibilizzazione e di protesta –:

se, in considerazione degli interessi reali e legittimi della popolazione del quartiere di Genova-Quezzi, non si ritenga respingere la richiesta avanzata dal provveditore. (4-13147)

MARENCO. — *Ai Ministri della difesa e della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

in data 3 aprile scorso si è tenuta a Genova la cerimonia di consegna della bandiera di combattimento alla corvetta « Sibilla » da parte dell'Associazione Nazionale Marinai d'Italia di Lovere (BG) –:

se a tale cerimonia siano state invitate tutte le autorità civili e politiche genovesi, ivi compresi i parlamentari;

se, in considerazione dell'alto significato morale della manifestazione, siano state invitate, attraverso il Provveditorato agli Studi della Provincia di Genova, una o più scolaresche in rappresentanza degli istituti cittadini di ogni ordine e grado. (4-13148)

MARENCO. — *Ai Ministri della sanità, dell'interno, di grazia e giustizia e per la funzione pubblica.* — Per sapere – premesso che:

un documento della Confederazione dei centri liguri per la tutela dei diritti del malato ha posto in rilievo lo stato di degrado in cui versano le strutture del presidio sanitario di Pratozanino (Cogoleto - Genova), ospedale psichiatrico, e conseguentemente le condizioni precarie di vita in cui versano i degenti, in tutto 550 malati psichici;

tale documento – inoltrato al Ministro della sanità, all'assessore regionale per la sanità, al presidente della commissione regionale per la stessa, all'amministratore straordinario della USL competente (8ª), al sindaco di Cogoleto – riporta i dati emersi da una visita di rappresentanti della confederazione ai reparti del presidio di Pratozanino dell'8 marzo 1993 e in esso si evidenzia uno stato di abbandono dei malati in un contesto di vetustà e fatiscenza tale da far usare nella redazione del rapporto toni da « inferno dantesco », con i degenti per terra nei corridoi, scalzi e sporchi, o accatastati uno sull'altro, perché piove e non esistono posti dove sedersi, il tutto in una realtà di disperazione che viene definita « inumana »;

nel documento, oltre ad evidenziare diversità qualitative tra i reparti (dignitosi i nn. 1 e 3, spaventosi i nn. 4, 7, 9, 11, 15, 16), si propongono iniziative concrete per migliorare la qualità della vita dei ricoverati, come l'istituzione di spazi di socializzazione dove sistemare sedie e panche, affinché essi non siano costretti a giacere per terra, adoperando spazi utilizzati solo parzialmente, attualmente riservati agli operatori, nella parte superiore dei reparti; garantire, attraverso il fondo mensile di lire 200.000 a loro destinato, gestito dai familiari o dai tutori, scarpe e indumenti adatti; menu variati; forme, anche minime, di riabilitazione motoria e fisica; ripristino dei servizi igienici ora intasati e in condizioni di abbandono per gran parte dell'anno;

a determinare questa situazione parrebbe contribuire in misura rilevante la mancanza di risorse economiche e la carenza di personale: vi sarebbero reparti sovraffollati, con 65 pazienti e due soli infermieri, con i sindacati che denunciano come su 123 infermieri siano 40 quelli che mancano e 30 gli ausiliari, e come le cucine versino in cattive condizioni, e si teme vengano chiuse definitivamente, pas-

sando così l'appalto dei pasti a privati, quindi ai precotti –:

quali iniziative urgenti intendano assumere al fine di accertare la realtà dei fatti e predisporre i necessari provvedimenti amministrativi ed eventualmente giudiziari, volti a tutelare i diritti dei ricoverati e degli operatori sanitari, e individuare le responsabilità correlate. (4-13149)

MARENCO. — *Ai Ministri dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

la Commissione Toponomastica del Comune di Genova, incaricata di scegliere i personaggi di rilievo per la vita e storia nazionale, a cui intitolare le nuove strade genovesi;

nella sua ultima sessione tra i candidati respinti vi erano, tra altri, l'ammiraglio Durand De La Penne, medaglia d'oro al valor militare, eroe dell'impresa di Alessandria d'Egitto, Libero Grassi, il primo commerciante che ebbe il coraggio di opporsi alla mafia e per questo fu assassinato, Enzo Tortora, emblema delle contraddizioni della amministrazione dello Stato Italiano e simbolo della lotta per una « giustizia giusta »;

il requisito del fatto che siano morti da almeno 10 anni può essere superato attraverso una istanza da presentare al Ministero dell'Interno, a condizione della loro fama a livello nazionale e che abbiano meriti per la nazione;

sembrerebbe che la sopracitata commissione non abbia presentato tale istanza non ritenendo presenti questi due ultimi requisiti –:

se la mancanza dei due requisiti in questione – notorietà e meriti per la nazione – non appaia valutazione priva di fondamento e se dunque siano stati applicati altri criteri, di natura soggettiva, nella valutazione di coloro ai quali andassero intitolate le strade. (4-13150)

MARENCO. — *Ai Ministri dell'interno, dell'ambiente, della sanità, dell'industria, commercio e artigianato e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

nuovamente i corsi d'acqua che affluiscono al torrente Polcevera, nell'omonima valle genovese, hanno a che fare con scarichi misteriosi, di non individuata natura e origine;

è stata notata infatti recentemente una sostanza bianca e vischiosa che galleggiava nelle acque del torrente Riccò, nel tratto che scorre vicino al centro abitato del Comune di Mignanego (GENOVA), a poca distanza da alcune aziende, e con poco più avanti pesci ormai morti, galleggianti;

è stato richiesto dagli ambientalisti polceveraschi, avvertiti dagli abitanti di Mignanego, l'intervento degli uffici competenti della Provincia e della U.S.L. 10;

si rende urgente ed evidente la necessità di determinare prontamente natura ed origine di questi scarichi, i danni arrecati, le iniziative di bonifica, i provvedimenti giudiziari verso i responsabili, iniziative volte a scongiurare il ripetersi di simili episodi, dopo il recente allarme ecologico di due settimane fa, con la perdita di vernice idrosolubile nel torrente Verde –:

quali urgenti provvedimenti siano stati assunti o si intenda assumere al fine di verificare l'accaduto, limitarne i danni, evitarne il ripetersi. (4-13151)

MARENCO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri della sanità, della difesa e per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso che:

originariamente la Croce rossa italiana era un « corpo morale » – come definita dal regio decreto 7 febbraio 1884, n. 1234 – per poi essere inserita – con la legge 20 marzo 1975, n. 70 – tra gli enti pubblici e più precisamente nella categoria degli enti di assistenza generica;

la legge 23 dicembre 1978, n. 833, istitutiva del servizio sanitario nazionale, all'articolo 70 conferiva una delega al Governo per riordinare la struttura associativa della CRI sulla base dei seguenti princìpi:

1) carattere volontaristico;

2) determinazione dei compiti in relazione alle finalità statutarie e agli adempimenti derivanti dalle vigenti convenzioni e risoluzioni internazionali;

3) articolazione delle strutture su base regionale;

4) elettività e gratuità delle cariche;

nell'esercizio della predetta delega è stato emanato il decreto del Presidente della Repubblica 31 luglio 1980, n. 613 – prima dando, all'articolo 1, una nuova configurazione giuridica alla CRI, denominandola « ente privato di interesse pubblico », poi abolendo tale connotazione con il decreto-legge 20 luglio 1992, n. 343, articolo 1 comma 3 – vincolando il riconoscimento della CRI all'approvazione dello Statuto (che, a norma dell'articolo 3 della predetta legge n. 343 avrebbe dovuto essere approvato entro il 30 giugno 1981, con decreto del Presidente della Repubblica, su proposta del Presidente del Consiglio dei ministri, di concerto con i Ministri della sanità e della difesa, previa adozione da parte del Consiglio di Stato, in adunanza generale, del relativo parere;

a tutt'oggi tale Statuto non è stato adottato – il che ha comportato, tra l'altro, il perdurare della gestione commissariale – anche per la difficoltà, in mancanza di una disciplina generale della materia, di definire le caratteristiche degli enti privati di interesse pubblico (specie prima del decreto-legge n. 343 del 1992), qualificazione, peraltro, non accettata dalla CRI, che ha sempre evidenziato come la propria attività sia di rilevante interesse generale e di accentuata natura pubblicistica (si veda ad esempio la possibilità per essa di avvalersi della consulenza e del patrocinio dell'Avvocatura dello Stato;

già una proposta di legge del Ministro della sanità (15 luglio 1985) evidenziava nella presentazione come il decreto del Presidente della Repubblica n. 613 del 1980 aveva « di fatto immobilizzato l'associazione nell'espletamento delle originarie attività istituzionali » e con l'intento di ridisegnare il modello giuridico dell'associazione secondo « le reali ed effettive indicazioni contenute nell'articolo 70 della legge n. 833 del 1978 », ed esattamente di ripristinare la natura di ente pubblico della Croce rossa italiana –:

quando si intenda emanare lo Statuto della CRI e quali siano le ragioni del gravissimo ritardo nella sua emanazione.

(4-13152)

PRATESI. — *Ai Ministri dell'ambiente, per i beni culturali e ambientali e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il Consorzio Torino-Sud intende realizzare, senza un preventivo studio di valutazione d'impatto ambientale, per 20 miliardi e 891 milioni una discarica di 1ª categoria in località La Motta tra Vinovo, Piobesi e Candiolo del tutto inidonea a tale scopo, poiché troppo vicina all'acquedotto comunale e in una zona considerata di alto valore paesistico;

detta zona dove dovrebbe sorgere la discarica è un sito che con una certa frequenza viene raggiunto dalle piene;

detta discarica autorizzata dalla regione Piemonte, in assenza sia di piani regionali per la raccolta differenziata dei rifiuti che di impianti pubblici di recupero e riciclaggio e compostaggio, con D.G.R. n. 350-8516 del 2 agosto 1991, se ultimata così come si evince dal progetto dovrebbe contenere circa 380 mila metri cubi di rifiuti;

in sede di Conferenza *ex* articolo 3-*bis* legge 441/87 l'amministrazione provinciale di Torino ha espresso parere negativo in quanto « gli elaborati tecnici non chiariscono alcuni aspetti fondamentali del sistema di gestione c.d. TANA. In particolare

sussistono dubbi sulla reale possibilità di creare il vuoto all'interno dei vari settori della discarica, sull'omogeneità della distribuzione dei rifiuti, sulla realizzazione dei camini del biogas, sulla stabilità del complesso rifiuti-TANA, sul recupero ambientale finale dell'area collegato a tale struttura », sottolineando l'opportunità di procedere a fasi di sperimentazione del sistema TANA, allo scopo di poter pervenire all'espressione di idonei giudizi, sulla base di risultati probanti e certi;

nel progetto, come peraltro prescritto dal punto 4.2.2, lettere *f)* ed *i)*, della Deliberazione del Comitato Interministeriale del 27 luglio 1984, manca la prevista esecuzione di prove di mungimento per la determinazione dei parametri idrodinamici della falda, al fine di localizzare i pozzi di spurgo dell'impianto;

la competente USL n. 33 e i rappresentanti dei comuni di Vinovo, Nichelino e Piossasco hanno espresso parere negativo alla realizzazione della discarica in quel sito;

l'« Acquedotto di Torino » è preoccupato dei problemi derivanti da tale collocazione ed ha iniziato un'opera di monitoraggio dei pozzi che servono di acqua potabile Vinovo per verificare la quantità di cloro da immettere in caso di inquinamento delle acque in considerazione delle vicinanze ai pozzi della futura discarica;

anche l'Unione Agricoltori protesta vivacemente poiché l'area che dovrebbe ospitare la discarica è intensamente coltivata ed è a forte vocazione agricola;

nonostante le numerose richieste non è mai stato sciolto l'interrogativo su come mai la scelta del sito sia caduta su una zona non approvata dal comune di Vinovo;

le locali associazioni ambientaliste e migliaia di cittadini hanno sottoscritto una petizione popolare che chiede di rivedere la collocazione del sito;

non del tutto chiaro è stato l'*iter* amministrativo che ha autorizzato la discarica e le compravendite di terreni mediate dal progettista della Servizi Ecologici e si ipotizzano tangenti per più di un miliardo. Su questi aspetti è stato presentato un circostanziato esposto alla competente autorità giudiziaria —:

se i ministri siano a conoscenza dei fatti esposti;

se il ministro dell'ambiente non ritenga di far sottoporre il progetto di discarica a preventivo studio di V.I.A.;

se il ministro dell'interno non ritenga di dover avviare una indagine amministrativa per verificare la correttezza e la rispondenza alla normativa vigente sull'*iter* amministrativo dell'individuazione del sito e del progetto presentato dal consorzio Torino Sud;

quali siano stati i motivi alla base della scelta del sito e come mai su tre siti individuati dal Consorzio Torino-Sud se ne sia scelto un quarto mai da nessuno indicato;

a quanto ammonti la reale cifra dell'esproprio e quali soggetti hanno fatto da intermediari;

come mai si è proceduto a trattativa privata e non a gara pubblica per una cifra superiore ai 20 miliardi;

quanto sono costati i tre progetti Trofotronc, Tasca e Tana. (4-13153)

RONZANI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere — premesso che:

1) nei confronti della Cooperativa Capi di Vercelli era stata avviata in data 14 giugno 1989 la procedura di Liquidazione Coatta Amministrativa;

2) il Ministero del lavoro aveva provveduto a nominarvi i Commissari Liquidatori nelle persone del dottor Pierfranco Risoli, dottor Giovanni Coletti Moglia e dottor Francesco Dallera;

3) dopo aver fatto periziare i beni di proprietà della Cooperativa i tre Commissari hanno richiesto ed ottenuto dal Mini-

stero del Lavoro l'autorizzazione a porre in vendita gli alloggi, secondo le modalità di legge e cioè mediante asta pubblica;

4) il 29 febbraio 1992 il Ministero del Lavoro autorizzava i Commissari a procedere alla vendita dei suddetti immobili ai prezzi di perizia;

5) tale autorizzazione conteneva espressamente una clausola sulla base della quale nella vendita degli alloggi la priorità doveva essere riconosciuta agli occupanti;

6) tale autorizzazione doveva ritenersi valida soltanto se fosse risultato vano il tentativo volto a realizzare un intervento da parte della regione Piemonte;

7) naufragata la possibilità di risolvere la questione mediante un intervento della regione il 9 luglio 1992 veniva indetta a Torino la prima asta;

8) all'asta partecipavano la Cooperativa « Quadrifoglio » e i condomini degli stabili di Vercelli, Via Loncavallo (lotto 1) e la cooperativa La Pineta per lo stabile di S. Germano (lotto 5);

9) la Cooperativa « Quadrifoglio » veniva costituita il 18 gennaio 1990 e che a tale Cooperativa hanno aderito parte dei soci della ex Capi;

10) dopo la prima asta la Cooperativa « Quadrifoglio » rappresentata dal Presidente del Consiglio di Amministrazione, signor Roberto Cardano, si aggiudicava il lotto 4;

11) in seguito, il 4 dicembre 1992, veniva indetta la seconda asta con le stesse modalità della prima;

12) stando a ciò che hanno comunicato i tre Commissari Liquidatori al comune di Vercelli, con la seconda asta si sarebbero concluse le operazioni di vendita di tutti gli alloggi disponibili –:

1) come si è svolta la seconda asta; nonché l'elenco degli aggiudicatari dei singoli lotti;

2) se i pagamenti delle quote relative a ciascun lotto e la stipula degli atti di trasferimento sono avvenuti entro il termine indicato dal bando d'asta e cioè entro il 3 marzo 1993;

3) se risulta che per un lotto e specificatamente per il lotto D tali operazioni siano avvenute dopo tale data;

4) se non ritiene di dover accertare se tutti i soci della Cooperativa « Quadrifoglio » abbiano i requisiti per accedere ad un alloggio di edilizia popolare, al fine di verificare se non siano state compiute delle vere e proprie speculazioni, tanto più che buona parte degli aggiudicatari hanno richiesto di affittare gli alloggi agli *ex* soci della Capi; considerato che gli alloggi in questione sono stati realizzati in aree di proprietà comunale, soggetti ad apposita conversione *ex* legge 865/71;

5) se la Cooperativa « Quadrifoglio » non sia in realtà una vera e propria immobiliare che si è aggiudicata gli alloggi per poi venderli a terzi;

6) se non ritenga di dover intervenire sui Commissari affinché vengano concluse le operazioni di recupero anche dei crediti per morosità tanto più che tra coloro che si sono aggiudicati l'alloggio vi sono proprio quei soci Capi nei confronti dei quali era avviata procedura per recuperare tali crediti;

7) se non ritenga di dover assumere una iniziativa in collaborazione con il comune di Vercelli affinché sia garantito il rimpasto delle finalità sociali delle convenzioni connesse agli interventi abitativi Capi realizzati con il contributo dello Stato. (4-13154)

ALFREDO GALASSO. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

il consiglio di amministrazione dell'INAIL con apposita delibera ha accorpato lo specifico profilo e le relative mansioni di ispettori e di funzionari di vigilanza con i

profili e le relative mansioni di funzionario amministrativo e funzionario socio-educativo;

tale provvedimento di fatto vanifica completamente la specifica ed elevata professionalità confondendo tali mansioni con generiche competenze amministrative. Ciò anche con effetti immediati e diretti sul controllo e sull'attività di vigilanza e di lotta all'evasione contributiva cui tali funzionari sono preposti. Ciò malgrado l'istituzione della c.d. « vigilanza integrata », condotta da funzionari INPS, INAIL e dell'Ispettorato del lavoro e della Guardia di finanza abbia dato risultati del tutto positivi –:

se risultino le suesposte circostanze e, nell'ipotesi positiva, se non ritenga di adottare idonei provvedimenti per far sì che l'INAIL riconsideri e modifichi la propria decisione ripristinando gli originari specifici profili professionali al fine di consentire l'efficace svolgimento dei propri compiti istituzionali nell'interesse generale dei lavoratori. (4-13155)

PIERONI, RUTELLI, APUZZO, BETTIN, BOATO, CRIPPA, DE BENETTI, GIULIARI, LECCESE, MATTIOLI, PAISSAN, PECORARO SCANIO, PRATESI, RONCHI, SCALIA e TURRONI. — *Ai Ministri dell'interno, per il coordinamento della protezione civile e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

a Massa D'Albe (AQ) la società Snam ha in progetto la realizzazione incipiente di un metanodotto di I specie che, a differenza delle piccole reti di distribuzione urbana, risulta a massimo carico di pressione (di circa 100 BAR, normalmente in esercizio nelle campagne isolate, superiore di almeno sei volte il carico in aree urbane) e di dimensioni considerevoli;

tale opera comporterebbe, se realizzata, grave situazione di pericolo per i cittadini dal momento che la tubazione verrebbe ubicata a circa trenta metri da civili abitazioni;

il decreto del Ministero dell'interno del 24 novembre 1984 prescrive la distanza da civili abitazioni di opere simili;

non esiste alcuna valida e indifferibile motivazione per cui il metanodotto debba passare in prossimità delle case, se non il perseguimento dell'obiettivo di un modesto risparmio economico;

si considera la geomorfologia dei luoghi e sulla base dell'esito di una perizia geologica commissionata da privati, esiste la possibilità di un tracciato alternativo a sud-ovest, a debita distanza dalle case. Il Comune di Massa D'Albe con delibera 43 del 29 gennaio 1990, ratificata dal Coreco dell'Aquila in data 28 marzo 1990, ha chiesto la modifica del progetto ai fini di uno spostamento del tracciato a sud-ovest;

la Snam ha sempre rifiutato di fornire delucidazioni tecniche e risposte alle obiezioni formulate;

i cittadini di Massa D'Albe hanno già interessato il Governo, perché temono il possibile verificarsi di incidenti simili ad altri già avvenuti in Abruzzo a Feltrino Lanciano nel 1978, a Cupello S. Salvo, a Bucchianico;

il professor Orlando Veggetti, geologo, docente dell'Università « D'Annunzio » di Pescara, ha svolto un'accurata perizia geologica ravvisando non solo la assoluta pericolosità, ma anche la disponibilità di terreni molto più favorevoli e idonei –:

come il ministro dell'interno intenda intervenire per tutelare il diritto alla sicurezza e alla salute dei cittadini e quali iniziative intenda intraprendere nei confronti della regione Abruzzo e della Snam perché sia rivisto e spostato a sud-ovest il tracciato del metanodotto Ciciliano-Vastogirardi, nel tratto che attraversa la strada provinciale XXIV a Massa D'Albe;

se e quali norme tecniche, secondo quanto prevede il Titolo I del decreto del Presidente della Repubblica 29 luglio 1982, n. 577, per la prevenzione degli incendi,

siano state adottate dal Ministero dell'interno sul caso in questione;

se il ministro della protezione civile fosse al corrente di tale progetto e quali provvedimenti intenda assumere contro i rischi di una simile realizzazione;

se il ministro dell'ambiente non ritenga necessaria, ai sensi delle norme vigenti, una valutazione di impatto ambientale. (4-13156)

PASETTO. — *Al Ministro per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per sapere – premesso:

che la regione Emilia Romagna concede ad aziende commerciali, tali a tutti gli effetti, fondi e contributi per tali attività;

che grazie a tali contributi queste aziende (per tutte si indica la « Spazio Libri »), pur in un momento di grave difficoltà del settore della diffusione libraria, si permetono il lusso di espandere la propria rete commerciale, anche in altre regioni, e ciò a danno delle piccole attività esistenti nelle varie città nelle quali arrivano dette iniziative;

che sembra all'interrogante che tale operazione condotta dalla Regione Emilia Romagna sia in contrasto con le normative vigenti, e si potrebbe addirittura ravvisare un'ipotesi di abuso ed una distrazione dei fondi di bilancio in relazione a detti contributi –:

quali iniziative intenda adottare per verificare quanto sopra denunciato;

se ritenga corretto tale agire da parte della Regione Emilia Romagna;

quali iniziative intende adottare e se intenda farlo per porre fine a tale situazione. (4-13157)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale e del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno e della difesa.* — Per conoscere:

di quali agevolazioni e finanziamenti pubblici, anche a valere sull'intervento straordinario dello Stato nel Mezzogiorno, abbia eventualmente goduto la CONSUD di Nola;

di quali commesse da parte del Ministero della Difesa, per quali importi e per quali anni e se gli affidamenti siano cessati o proseguano e per quale consistenza, abbia beneficiato la medesima CONSUD che produce divise militari;

quali siano la consistenza, la situazione economica e finanziaria dei soci della CONSUD e del gruppo TAURISANO del quale fa parte;

quali crediti vanti la CONSUD e/o il gruppo TAURISANO nei confronti del Ministero della Difesa e di altri enti pubblici;

quali siano state le tesi sostenute dall'azienda e l'opinione al riguardo dell'Ufficio regionale del Lavoro, nella vertenza che contrappone l'azienda ai lavoratori dipendenti;

se risulti esatto che questi vantino a loro credito la 13ª mensilità e gli stipendi di dicembre '92, gennaio e febbraio 1993 e nonostante ciò abbiano continuato a prestare la loro opera sulla duplice base: quella di un impegno, successivamente più volte non rispettato dalla azienda sul pagamento degli arretrati a scadenze inutilmente poi maturate e quella del « ricatto morale » di perdere, altrimenti, il posto di lavoro;

se sia vero che i dipendenti siano in « assemblea permanente » dopo aver dimostrato estremo senso di sensibilità, di disponibilità e di responsabilità, mentre nulla di nulla al riguardo ha dimostrato la azienda;

se intendano intervenire per assicurare la continuità produttiva ed occupazionale della CONSUD richiamando dirigenti e soci all'adempimento dei loro doveri, anche tramite l'intervento del Prefetto di Napoli che, per approfondire i lati oscuri e

torbidi della vicenda, la CISNAL ed il MSI hanno richiesto, ponendosi a fianco dei dipendenti. (4-13158)

PARLATO. — *Ai Ministri per i beni culturali ed ambientali, dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

con atto ispettivo n. 4-27596 del 4 settembre 1992 l'interrogante pose la questione della salvaguardia delle mura preelleniche di Capri che cingevano circa tremila anno or sono l'abitato di Capri, in particolare dal Colle di San Michele, al Colle del Castiglione, anche perché esse risultano oltre che abbandonate ed interrotte per lunghi tratti, anche grazie all'edilizia d'assalto, traforate da finestre moderne con infissi in alluminio, squarciate da varchi, ricoperte di intonaci e comunque celate alla vista mentre dovrebbero essere restaurate e poste in buona evidenza, anche come antidoto ad ulteriori attentati.

Rispose il Ministro per i beni Culturali ed Ambientali con nota 5219 del 18 novembre 1991 affermando che: « la competente Soprintendenza archeologica di Napoli, dato che l'annosa questione delle mura preelleniche di Capri è stata più volte sollevata, ha interessato il comune di Capri ed il Pretore perché venisse sospeso ogni abusivismo: agli atti della predetta Soprintendenza la documentazione in merito risale già al 1930;

non è stata però mai emessa dal comune di Capri ordinanza per un ripristino dello stato dei luoghi, nonostante i numerosi sopralluoghi e solleciti da parte del predetto ufficio di questo Ministero. »;

l'8 gennaio 1993 l'Associazione Ambientalista « MAREVIVO » dirigeva la seguente lettera alla Soprintendenza Archeologica di Napoli, alla Soprintendenza per i Beni Culturali ed Architettonici di Napoli, al Ministro per i Beni Culturali ed Ambientali, al comune di Capri, al sottoscritto interrogante ed alla Stazione dei Carabinieri di Capri: « Oggetto: tutela mura preelleniche – località Capri. Questa Associazione ha sostanzialmente iniziato la propria attività nell'estate del 1984 proprio a Capri dove, successivamente e frequentemente, ha organizzato manifestazioni culturali, pulizia dei fondali, incontri con Amministratori locali tesi a responsabilizzarli e stimolarli maggiormente in difesa di un ambiente unico ed irripetibile. Abbiamo accolto, quindi, favorevolmente la notizia che sia intervenuta una condanna giudiziale nei confronti di un trasgressore della legge 1089/39 che tutela le "mura greche" di Capri; ciò proprio in seguito ad un sopralluogo di un funzionario di codesta spettabile Soprintendenza.

Seguiamo con altrettanto interesse gli interventi alla Camera dei Deputati dell'On. Parlato in difesa delle medesime mura preelleniche, per ora senza risultato alcuno.

Le suddette circostanze ci rendono inspiegabile il mancato intervento di codesta spettabile Soprintendenza, del comune di Capri e della stessa Stazione dei Carabinieri nei confronti dei proprietari di un manufatto sito in via Longano prospiciente le mura interessate dal giudizio sopra richiamato: manufatto che di certo non può avere ottenuto le autorizzazioni previste dalle vigenti leggi.

Nello spirito di reciproca collaborazione con le Pubbliche Autorità questa Associazione chiede ai destinatari in indirizzo di porre in essere le azioni previste dalla legge per la rimessa in pristino dello stato dei luoghi sopra indicati gravemente danneggiati dall'abusivo manufatto.

In attesa di un cortese sollecito riscontro si porgono i saluti più cordiali. » –:

quali sviluppi, sia in sede amministrativa che giudiziaria, ci siano stati in ordine alla vicenda che dura, per ammissione del Ministro, addirittura dal 1930 ! ! ! e se siano state svolte indagini, accertate responsabilità, imposte sanzioni, disposti interventi in danno per il recupero e restauro dell'antichissimo manufatto;

quale sia la legittimità amministrativa dell'edificio richiamato nella lettera di « MAREVIVO ». (4-13159)

PARLATO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per conoscere – premesso che:

l'interrogante sin dall'VIII Legislatura e poi nella successiva ha chiesto al Governo di chiarire cause e responsabilità delle carenze del depuratore di Cuma, nel comune di Pozzuoli;

nonostante le decine di miliardi spesi sinora l'insopportabile lezzo che si sprigiona da sempre dall'impianto rende invivibile il territorio circostante, soprattutto nella frazione puteolana di Licola e, quando girano i venti, nella frazione di Monteruscello –:

quanto è costato sinora l'impianto;

quali progetti vi siano, e quale il loro costo per completarlo;

se sia esatto che esistono 11 miliardi di fondi FIO non utilizzati per precise responsabilità, oltre che della regione, del comune di Pozzuoli e della ditta che gestisce il depuratore, la MAPI, dell'Ente provincia di Napoli;

quali energiche iniziative intenda urgentemente assumere il Governo onde tutti i livelli istituzionali facciano la loro doverosa parte e i gravi inconvenienti citati possano finalmente e definitivamente essere eliminati. (4-13160)

PARLATO. — *Ai Ministri di grazia e giustizia e dell'interno.* — Per conoscere:

se risulti al Governo che risponda a verità che la Magistratura stia indagando sulle legittimità di opere edilizie su un fabbricato in Via E. Fermi nel comune di Baia e Latina, e che lo abbia anche posto sotto sequestro;

se in caso affermativo sia rispondente al vero che l'azione penale sia stata promossa in relazione all'illegittimo utilizzo di risorse pubbliche *ex lege* 219/81, non applicabile alla fattispecie;

in quale fase si trovi il procedimento e quali responsabilità ed a carico di chi siano state sinora accertate;

considerato che sulla gestione del territorio comunale di Baia e Latina pendono ancora gli atti ispettivi del 9 dicembre 1992, n. 4-08570, n. 4-08571, n. 4-08572, n. 4-08582, in attesa di risposta, se sia configurabile un complessivo andazzo amministrativo censurabile ai sensi della legge n. 142 nel comune di Baia e Latina, meritevoli di interventi della Prefettura di Caserta. (4-13161)

PARLATO. — *Ai Ministri della sanità, per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali e dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

a Pozzuoli la distribuzione del metadone ai tossicodipendenti ha luogo, per quanto incredibile, nella frazione decentrata di Licola e a valere per tutta l'area di competenza della USL 22, in un vecchio fabbricato appartenuto all'ONC ed ora della regione;

la frazione di Licola, già ampiamente degradata dal totale abbandono nel quale è stata lasciata dalla amministrazione comunale, dalla presenza massiccia di prostituzione di colore e dalla criminalità connessa all'immigrazione, con uno scarso presidio delle forze dell'ordine, soffre pesantemente di questa ulteriore emarginazione essendo noti i comportamenti tenuti dai tossicodipendenti prima, durante e dopo la distribuzione del metadone, tant'è che il terreno è infetto, coperto com'è da siringhe usate; i presidi per i tossicodipendenti in tutta Italia sono normalmente localizzati presso gli ospedali per ovvii motivi funzionali ed a Pozzuoli, località « La Schiana », esistono le strutture ospedaliere – molte delle quali vuote – della USL 22 –:

per quali motivi non si delocalizzi il presidio per i tossicodipendenti di Licola presso l'ospedale della USL 22 nel medesimo comune di Pozzuoli, come da quanto

precede, appare, più che opportuno, necessario ed urgente. (4-13162)

PARLATO. — *Ai Ministri della sanità e per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per conoscere:

se risponda al vero ed appaia essere assolutamente legittimo che nella USL 18 della Campania (Santa Maria Capua Vetere):

*a)* il dottor Aniello Pascarella sia stato trasferito, nell'agosto 1990 dalla USL 16 in qualita di primario ostetrico con delibera poco chiara e mai resa perfetta nei termini di legge e che lo stesso sia stato nominato direttore sanitario anche se fornito di titoli inferiori nei confronti di altri sanitari più anziani della stessa USL nonostante che il concorso ad un posto di direttore sanitario non sia stato ancora ultimato, benché bandito anni orsono;

*b)* i dottori Tartaglione, Tremante, Fusco, rispettivamente primario, chirurgo ed aiuto chirurgo siano trasferiti nel 1991 dalla USL 17 senza che si sia provveduto all'avviso di trasferimento pubblico;

*c)* il dottor Gennaro Raimondo, assistente ostetrico sia stato trasferito, non si sa come, nel novembre 1980, alla stessa USL, per ricoprire un posto già messo precedentemente a concorso, con delibera non legittima mentre a tutt'oggi è in fase di espletamento il concorso a n. 2 posti di assistente ostetrico presso la divisione di ostetricia e ginecologia della stessa USL mentre uno di questi due posti sia ovviamente occupato già dal sanitario in questione compromettendo la sorte dei probabili vincitori;

*d)* la dottoressa Rosalba Gallo sia in servizio presso il consultorio familiare della stessa USL da circa due anni in qualità di ginecologo senza titolo, dato che mai è stato bandito concorso o avviso pubblico;

*e)* l'amministratore straordinario professor Luigi Buonpane, in possesso di laurea in storia e filosofia sia in possesso di una esperienza di dirigenza presso un non meglio noto istituto Lucarelli di Santa Maria Capua Vetere e sia stato scelto da un elenco regionale a dirigere l'USL 18 senza possedere i requisiti necessari;

*f)* il dottor Ugo Palladino trasferito da anni dalla USL 14 in qualità di aiuto chirurgo svolga da allora ininterrottamente le funzioni di primario, mentre non venga portato a termine il concorso pubblico per occupare il posto di primario chirurgo vacante tenendosi congelato così un posto vacante, come del resto per il concorso a tre posti di assistente anestesista che in corso da circa otto anni, così come quello ad un posto di aiuto O.R.L.;

tutti i medici sopra menzionati gravitino nell'area democristiana, egemone anche elettoralmente nella zona e quindi trasferimenti ed irregolarità conseguenti, ove mai in tutto od in parte, venissero confermate come rispondenti al vero, sarebbero state e sarebbero ancora funzionali al voto di scambio e comunque al consolidamento del perverso rapporto tra maggiorenti del partito di maggioranza relativa (ed in qualche caso anche assoluta) nel Casertano e l'ambiente sanitario pubblico;

nell'ipotesi che la risposta sia affermativa quali iniziative il Governo e la Regione Campania vorranno assumere per riportare la legalità, largamente compromessa da squallidi giochi di potere a danno degli aventi diritto, nella USL 18 della Campania. (4-13163)

RIGO. — *Ai Ministri della sanità, del lavoro e previdenza sociale, dell'università e ricerca scientifica e tecnologica e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per sapere – premesso che:

l'azienda farmaceutica Fidia di Abano Terme si è recentemente trovata al centro di una vicenda che ha visto 6 specialità a base di gangliosidi, da essa prodotte, prima ingiustificatamente sospese e poi riammesse sul mercato dal Ministero della sanità;

l'azienda ha deciso di controbilanciare i negativi effetti economici di questi contraddittori provvedimenti intraprendendo la strada della cassa integrazione straordinaria per circa 700 dei suoi dipendenti;

come risultato di questa scelta, l'attività di ricerca costituita da 250 addetti è stata azzerata;

i laboratori di ricerca Fidia rappresentano una realtà di rilievo scientifico non solo nel panorama veneto, ma anche in quello nazionale ed internazionale;

vale la pena ricordare che dal 1975 Fidia è sempre stato sinonimo di ricerca;

i laboratori di ricerca Fidia rappresentano un esempio di alto livello scientifico per il loro impegno nel campo non solo delle neuroscienze, ma anche nel settore della biologia vascolare, dell'immunologia, della riparazione tissutale e delle biotecnologie. Inoltre la valenza di questi laboratori si è estrinsecata attraverso la creazione di collaborazioni con i migliori laboratori del mondo e le più prestigiose università, attraverso la promozione di corsi di formazione per scienziati di tutto il mondo e con lo scambio di esperienze e di informazioni scientifiche;

questo patrimonio di cultura e professionalità rischia di essere disperso con un enorme spreco di potenzialità economiche ed ingegno in aree come quelle biomediche e biotecnologiche che dovrebbero rivestire importanza strategica nel mantenere l'Italia competitiva rispetto agli altri Paesi avanzati;

invece si assiste allo smantellamento o alla cessione delle poche strutture di ricerca qualificata esistenti in ambito privato. Vale a questo punto ricordare l'altro caso recentemente accaduto della cessione della Farmitalia-Carlo Erba ad un gruppo multinazionale svedese;

se da un lato i ricercatori della Fidia rischiano di perdere un posto di lavoro e di trovarsi di fronte ad un difficile reinserimento nel mondo del lavoro senza alternative adeguate, d'altra parte la provincia di Padova e la regione Veneto vengono a perdere una realtà economica trainante, capace di coagulare energie e potenziali umani;

l'imprenditoria italiana rischia di perdere un componente che l'aveva contraddistinta nel settore farmaceutico internazionale e che aveva rappresentato un punto di riferimento per tanta parte della ricerca italiana. La ricerca italiana rischia di perdere a sua volta un interlocutore preparato e sensibile ed un promotore di iniziative di sviluppo tecnologico e biomedico;

l'Italia, rischia di perdere l'ennesima opportunità di valorizzare le proprie risorse scientifiche e culturali in un campo di applicazione dai rilevanti risvolti economici –:

quali provvedimenti intendano prendere per cercare di far fronte a questo problema occupazionale a breve termine, conseguenza del provvedimento di sospensione decretato dal Ministro della sanità;

quale politica intendano perseguire per lo sviluppo del settore farmaceutico e più in generale della ricerca;

se intendono affiancare ai finanziamenti diretti (programmi nazionali di sviluppo, progetti innovativi) aiuti indiretti più incisivi (agevolazioni fiscali, incentivazioni allo scambio e collaborazione tra industria, università, enti pubblici e privati, creazione di parchi scientifici, eccetera) ed operare un più attento esame della ripartizione dei finanziamenti ai parchi scientifici ed al CNR, affinché le risorse economiche ed occupazionali possano essere equamente distribuite su tutto il territorio. (4-13164)

RUSSO SPENA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

in data 19 ottobre 1988 il Consiglio comunale di Camerata Cornello ha espresso parere favorevole sul progetto

della S.S. 470 di Valle Brembana, Tronco Bergamo – Lenna, Lavori di completamento costruzione galleria Cornello km 30+100 – km 31+800;

in data 12 giugno 1990 la regione Lombardia ha manifestato favorevole volontà di intesa in merito ai lavori indicati in oggetto;

in data 25 ottobre 1990 il Ministero per i Beni Culturali e Ambientali ha autorizzato l'esecuzione dei lavori medesimi;

in data 21 gennaio 1991 il Ministero dei Lavori Pubblici ha deliberato l'esecuzione dei lavori di completamento costruzione della galleria Cornello facente parte del progetto relativo ai lavori di somma urgenza e ripristino della viabilità tramite n. 5 gallerie naturali da realizzare tra il km 26+000 e il km 31+800;

l'impresa Collini ha raggiunto l'importo contrattuale dei lavori ma che a fronte della lievitazione dei costi e di imprevisti è stata presentata e approvata dal Consiglio di Amministrazione dell'Anas la Perizia di variante dell'importo di circa 14 miliardi;

sino ad oggi il Ministero dei lavori pubblici non ha ancora provveduto a finanziare detta perizia per cui dal settembre 1992 i lavoratori occupati sul cantiere (un centinaio circa) sono stati prima posti in Cassa Integrazione e poi licenziati;

gravi sono i pericoli insistenti sul territorio comunale a causa dei lavori in abbandono interni al centro abitato di Camerata Cornello;

perché il Ministro dei Lavori Pubblici non abbia finanziato la perizia di variante necessaria per il completamento della galleria Cornello e per la sicurezza dell'abitato di Camerata Cornello. Chiede altresì che vengano immediatamente ripresi i lavori. (4-13165)

RUSSO SPENA, RAMON MANTOVANI, RENATO ALBERTINI, BOGHETTA, DORIGO, MANISCO, GALANTE, GARAVINI e CAPRILI. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – premesso che:

sono sempre più gravi le notizie sulla violazione di diritti umani in Marocco: in particolare secondo Amnesty International sono in aumento il numero degli oppositori « *scomparsi* »;

le testimonianze degli *ex* « scomparsi », alcuni di essi per oltre 18 anni, rivelano l'esistenza di un sistema basato sulla detenzione segreta senza accusa né processo e in condizioni disumane. Molti « *scomparsi* » *muoiono e vengono sepolti* nei cortili delle prigioni. Coloro che vengono rimessi in libertà sono costretti al silenzio, pena l'ulteriore « sparizione ». Nel 1991, a seguito di una campagna internazionale, le autorità del Marocco hanno liberato circa 300 « scomparsi »;

la maggior parte degli « scomparsi » sono persone del Sahara occidentale, arrestati nel 1975 quando il Marocco s'impossessò del territorio. Nel 1991 circa 300 di essi sono stati liberati dopo aver trascorso lunghi anni in centri clandestini di detenzione situati a Laayoune e Qal'at M'Gouna (un rinomato centro turistico !). Amnesty International ritiene che centinaia di altri sahrawi siano detenuti in centri segreti a Rabat, nei monti dell'Atlante e in edifici, la cui struttura esterna non rivela la loro reale utilizzazione, situati al centro delle città e in località turistiche;

tra gli « scomparsi » figurano inoltre almeno 100 marocchini, di 30 dei quali Amnesty International non riesce ad avere più notizie: si tratta di sindacalisti arrestati negli anni '60 e '70, di membri delle forze armate implicati in tentativi di colpo di Stato e di *ex* guardie carcerarie che hanno aiutato altri « scomparsi » a recapitare i loro scritti al di fuori delle prigioni;

quasi la metà del Rapporto pubblicato da Amnesty International contiene testimonianze di « scomparsi » tornati in libertà;

Mohamed Nadrani, un artista detenuto in segreto per nove anni e poi espa-

triato, racconta come è riuscito a sopravvivere all'isolamento per 18 mesi disegnando sul cemento della cella con un'inchiostro fatto di caffè e fango: « Ma con un occhio guardavo il disegno, con l'altro la porta, giacché era vietato disegnare: ogni tanto, appena sentivo dei passi, cancellavo tutto velocemente per evitare di essere picchiato. »;

un sahrawi, Kenti Sidi Balla, « scomparso » dal 1987 al 1991, descrive la sua prigionia in un centro segreto situato a Skoura: « Ci picchiavano senza alcuna ragione, quando andavamo al bagno dovevamo passare in mezzo a quattro o cinque guardie che ci bastonavano sia all'andata che al ritorno »;

« Eravamo denutriti, trattati in maniera disumana, costantemente malati », ricorda Brahim Mallagh, un sahrawi detenuto a Qal'at M'Gouna. « Molti dei nostri amici sono morti e successivamente siamo venuti a sapere che erano stati sepolti in fosse comuni. »;

un altro scomparso, Moulay el-Hassan el-Leili, fu costretto a lavare i corpi di due prigionieri morti a Agdz e Qal'at M'Gouna. È morto il giorno dopo il rilascio, il 22 giugno 1991, ma prima di morire ha riferito i nomi dei morti e la data del loro decesso. In appendice al Rapporto, Amnesty International pubblica la lista di 48 « scomparsi » sahrawi deceduti nei centri segreti di prigionia di Agdz, Qal'at M'Gouna e Laayoune;

gli *ex* « scomparsi », recentemente liberati, sono sottoposti a gravi restrizioni della libertà di movimento e quelli che si trovano ancora in Marocco non possono parlare apertamente della loro esperienza; non hanno mai ottenuto alcun risarcimento per gli anni di isolamento né cure mediche, le autorità non hanno mai aperto alcuna indagine sulle ragioni che li hanno costretti a stare per anni in condizioni disumane, senza accusa né processo, in carceri segrete, né sono mai state disposte indagini sui decessi avvenuti nei centri segreti di detenzione;

seria preoccupazione desta la sorte di centinaia di « scomparsi » sulla cui sorte non si riescono ad avere notizie. Tra questi figurano Soukeina Jneibila, una sahrawi madre di due figli « scomparsa » a Tantan nel dicembre 1975; il Colonnello Mohamed Allouch, arrestato tre giorni dopo il tentativo di colpo di Stato del 1971; e Belgacem Ouezzane, membro delle forze ausiliarie, arrestato il 30 agosto 1973 perché sospettato di aver dato ospitalità a oppositori di sinistra —:

quali iniziative sul piano internazionale il Ministro intenda assumere nei confronti del Marocco affinché in quel paese siano rispettati i diritti umani;

se intenda assumere una forte iniziativa nei confronti dei casi emblematici riportati nella premessa della presente interrogazione;

se non intenda promuovere, a livello internazionale una Commissione d'inchiesta composta da giuristi e personalità al fine di accertare la veriticità del rapporto diffuso da Amnesty International, e di obbligare il Governo del Marocco a risarcire le vittime della repressione e a liberare i detenuti illegalmente trattenuti.

(4-13166)

RUSSO SPENA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere — premesso che:

il dottor Sergio Castellari, già direttore generale del Ministero delle Partecipazioni statali, coinvolto nelle inchieste su tangenti e corruzione avviate dalla magistratura romana, è stato trovato ucciso da un colpo di arma da fuoco senza che la Magistratura abbia ancora potuto giungere ad una conclusione certa se si sia trattato di omicidio o suicidio;

risulta che il dottor Castellari, nella sua qualità di dirigente superiore del Ministero delle partecipazioni statali, abbia fatto parte sin dalla costituzione del Comitato consultivo presso il Ministero del Commercio con l'estero per il parere sui

trasferimenti all'estero di valuta per il pagamento di compensi di intermediazione;

la nomina del dottor Castellari quale membro supplente in rappresentanza del Ministero delle partecipazioni statali è stata formalizzata con decreto del 14 giugno 1980 del Ministro del commercio con l'estero *pro tempore*, Manca;

nello stesso decreto viene indicato quale membro effettivo il Direttore generale del medesimo Ministero, il che fa ritenere che il dottor Castellari avesse la titolarità di fatto della rappresentanza delle Partecipazioni statali ed in tale veste abbia effettivamente e concretamente partecipato alla formulazione dei pareri del Comitato stesso e proprio per questo abbia potuto e dovuto interessarsi di tutti gli affari conclusi dalle aziende a partecipazione statale, comprese evidentemente anche tutte o quasi le transazioni per la vendita di armi italiane all'estero;

il Comitato aveva come compito di autorizzare le aziende italiane a trasferire valuta all'estero per il pagamento dei cosiddetti « compensi di intermediazione » a mediatori stranieri non identificati o quando le banche incaricate del trasferimento ritenevano non sufficientemente probante la documentazione, oppure quando i compensi medesimi si discostavano troppo dagli usi commerciali;

si trattava spesso di somme molto ingenti, come ad esempio quelle pagate per la vendita all'Iraq di quattro fregate, sei corvette e una nave rifornitrice da parte di un consorzio di aziende italiane facenti capo alla Fincantieri e alla Oto Melara, entrambe a partecipazione statale; in quell'occasione il presunto mediatore ricevette una cifra vicina ai 180 miliardi su un contratto che aveva un valore complessivo di circa 1500;

la trasparenza, la regolarità, nonché la reale destinazione finale dei compensi portati all'attenzione di tale comitato erano di per sé per lo meno dubbi visto che proprio di quest'area grigia ed incerta nella definizione e nella finalizzazione dovevano occuparsi i suoi membri;

ciò nonostante il sottosegretario *pro tempore* Baldassarre Armato, – così egli stesso ha riferito alla Commissione d'inchiesta parlamentare sulle commesse di armi e mezzi militari istituita con legge 596/77 – arrivò addirittura a rinunciare alla presidenza del Comitato per « scrupoli personali » legati alla difficoltà di formarsi un pieno convincimento sulla regolarità delle autorizzazioni concesse, a significare che le mediazioni portate all'attenzione del comitato dovevano presentare margini di dubbio ed incertezza molto vasti, tanto da far sospettare della loro stessa liceità e probabilmente anche sulla loro effettiva destinazione –:

fino a quando il dottor Sergio Castellari abbia fatto parte del Comitato;

a quali sedute abbia partecipato, quali affari vi siano stati effettivamente trattati e quali fossero stati invece inseriti all'ordine del giorno;

l'elenco dei compensi di intermediazione sottoposti all'esame del comitato per affari conclusi da aziende a partecipazione statali o per vendite di armi, indipendentemente dal venditore, dal 14 giugno 1980 e fino alla cessazione dall'incarico in seno al comitato del dottor Castellari;

se tali elementi siano già all'esame della magistratura. (4-13167)

ELIO VITO, TARADASH, CICCIOMESSERE, RAPAGNÀ, BONINO e PANNELLA. — *Al Ministro dell'interno*. — Per sapere – premesso che:

dal 21 aprile prossimo il Commissario di Governo per la città di Torino perderà le competenze del Consiglio comunale, entrando in vigore le norme previste dalla legge elettorale che sottraggono dal suo potere le competenze consiliari;

è *in itinere* il Progetto preliminare del Piano Regolatore Generale comunale, a tutt'oggi ancora all'esame dell'amministra-

zione comunale che non ha ancora terminato l'esame delle Osservazioni, il cui accoglimento o rifiuto è di competenza del Consiglio comunale;

il Commissario Dottor Riccardo Malpica ha dichiarato alla stampa nei giorni scorsi che non adotterà il Piano non essendo ancora concluso l'esame da parte degli uffici comunali delle Osservazioni, vagliate esclusivamente dai progettisti del Piano stesso;

in data odierna alcune forze politiche ed economiche torinesi hanno annunciato iniziative a tutti i livelli affinché il Commissario firmi entro la data del 21 aprile, compreso un intervento presso il Ministro dell'interno perché eventualmente consenta al Commissario il superamento della scadenza dei 45 giorni precedenti lo svolgimento delle elezioni amministrative;

appare grave ed indebita questa pressione nei confronti del Ministro per fini opinabili e ampiamente contestati da un larghissimo arco di forze politiche, economiche e sociali che a Torino attende al più presto il ripristino degli organi elettivi –:

1) se e quali pressioni ha ricevuto in questi giorni sulle vicende relative al Commissario di Governo di Torino ed all'*iter* del PRGC di Torino;

2) se non ritenga che occorre garantire il pieno rispetto della legge, senza concedere alcuna deroga ai termini previsti. (4-13168)

PASETTO. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

all'interrogante è giunta notizia che sul finire dell'estate del 1992 l'allora Ministro per l'Agricoltura, Giovanni Fontana, veronese, avrebbe utilizzato un aereo militare per trasferire la propria famiglia, assieme a un amico particolare della figlia, dall'aeroporto di Verona-Villafranca ad una località della Sardegna per ivi trascorrere un periodo di riposo (sono di quel periodo i primi avvisi di garanzia per uno dei più noti collaboratori dell'ex Ministro, il signor Carlo Olivieri);

tale fatto, se risultasse vero, sarebbe estremamente grave, in quanto non è dato di comprendere a quale titolo un Ministro debba, per ragioni familiari, utilizzare mezzi dell'Aeronautica militare –:

quali indagini intenda condurre per accertare la veridicità del fatto sopra denunciato, e se risultasse rispondente al vero, quali iniziative di competenza intenda adottare. (4-13169)

BERSELLI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

gli ispettorati regionali del lavoro raccolgono dalle aziende le segnalazioni per il riconoscimento della decorazione comportante il titolo di « Maestro del lavoro », a favore dei loro collaboratori di ciò meritevoli;

gli ispettorati regionali del lavoro istruiscono le relative pratiche, le selezionano e quindi le trasmettono alla commissione di cui all'articolo 9 della legge 5 febbraio 1992, n. 143 per l'accertamento dei titoli di benemerenza al fine del conferimento della predetta decorazione;

in tale attività istruttoria, per prassi consolidata, gli ispettorati regionali accettano per ogni anno soltanto una segnalazione da parte di ogni azienda;

invece, il 2 maggio prossimo il Ministro del lavoro e della previdenza sociale sarà a Bologna per il conferimento di tali decorazioni per l'anno in corso e mentre, come già detto, ogni azienda si è vista accogliere (quando c'è riuscita) una sola segnalazione, per la Cooperativa braccianti di Rimini ne sono state accolte dieci per altrettanti pensionati e nove per la Enichem Polimeri di Ferrara;

le segnalazioni della Cooperativa braccianti di Rimini e della Enichem Polimeri di Ferrara non sono peraltro transitate per l'ispettorato regionale del lavoro

di Bologna ma sono state catapultate direttamente alla sopradetta commissione di cui all'articolo 9 legge 5 febbraio 1992, n. 143, che le ha accolte senza alcuna previa istruttoria a livello locale;

essendo il Ministro del lavoro e della previdenza sociale residente a Ferrara ed essendo egli da sempre candidato per la Camera dei deputati nel collegio che comprende oltre a Ferrara anche Rimini, l'interrogante si chiede se a tali decisioni non abbiano concorso scelte di carattere clientelare –:

per quale motivo siano state favorite tali richieste in spregio alla prassi che consente come massimo l'accoglimento di una segnalazione per azienda e che prevede comunque la previa istruttoria da parte degli ispettorati regionali del lavoro. (4-13170)

BERSELLI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il 1° aprile 1993 su *Il Resto del Carlino* è stato pubblicato un articolo dal titolo « Viados, bomba infettiva » in cui viene descritta la situazione di un transex brasiliano ora in carcere a Rimini;

in tale città convivono criminalità a tutti i livelli, nomadi e « viados » brasiliani;

tali situazioni non sono più sostenibili dai cittadini riminesi;

il caso del « viados Carlos » potrebbe non essere l'unico fra tutti questi disgraziati individui che animano le notti delle città emiliano-romagnole;

il capogruppo MSI-DN alla regione Emilia-Romagna, Stefano Morselli con interpellanza in data 1° aprile 1993 ha richiesto alla Giunta di sollecitare un incontro urgente con tutti i prefetti delle province emiliano-romagnole e i direttori dei carceri per fare il punto di una situazione che può diventare esplosiva anche perché il viados in questione non solo è sieropositivo, ma ha anche l'epatite, la TBC e la sifilide –:

se non ritenga di disporre un urgente intervento di controllo su tutti questi soggetti al fine di verificare se abbiano i requisiti per poter soggiornare sul territorio nazionale, disponendo in caso contrario alla loro espulsione, anche perché si tratta di vere e proprie « bombe batteriologiche ». (4-13171)

BERSELLI. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

la strada statale « via Emilia » da Bologna verso Modena all'altezza della località Lavino di Mezzo presenta un traffico molto intenso e durante tutto l'arco dell'anno avvengono incidenti in cui sono coinvolti innumerevoli autoveicoli;

circa tre anni fa venne progettata dall'ANAS una strada che doveva essere parallela alla via Emilia e quindi alleviare notevolmente il traffico per un tratto della stessa;

l'ANAS però non tenne conto che esistevano lungo il percorso, al centro della strada, dei tralicci delle Ferrovie dello Stato che dovevano venire spostati;

tale problema sorse non al momento della progettazione ma quando ormai il fondo stradale era già stato praticamente eseguito e comportò un conseguente blocco dei lavori;

per due anni la strada è rimasta abbandonata a se stessa in attesa che venissero eseguiti i lavori di cui sopra da parte delle Ferrovie dello Stato;

tali lavori si sono trascinati nel tempo per « imprevisti » di tutti i tipi, il più eclatante dei quali è accaduto quattro mesi fa quando, finalmente, i nuovi tralicci erano pronti da montare nei loro insediamenti. Venne infatti scoperto un « errore » (chiamiamolo così) nelle fasi che avevano

portato agli espropri dei terreni, il che ha comportato un'ulteriore notevole perdita di tempo;

la strada ad oggi si presenta in pessime condizioni di degrado, che si intensificano con il passare dei giorni; sembra che le Ferrovie dello Stato abbiano finalmente iniziato i lavori prendendo tempo per la loro ultimazione fino al 31 dicembre 1993, sempre se tutto procederà senza problemi; nel frattempo l'ANAS ha precisato che non interverrà fino a che questi lavori non saranno stati completati;

considerando i tempi burocratici che valgono sia per le Ferrovie dello Stato che per l'ANAS si può supporre che i lavori per adeguare la strada inizieranno non prima di un anno da oggi, cui dovranno aggiungersi tempi ulteriori per rifare *ex novo* quasi completamente una strada, che era già stata costruita –:

quale sia il suo pensiero in merito a quanto sopra e se non ritenga di aprire un'inchiesta per accertare cause e responsabilità per questo ennesimo episodio di sperpero di denaro pubblico. (4-13172)

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno, dei lavori pubblici, del tesoro, delle finanze e di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

non risulta esservi risposta all'atto ispettivo n. 4-28677 del 23 ottobre 1991 (che sono i primi tre di questo atto) relativo alla sciagurata ipotesi di abbattere e ricostruire anziché restaurare il complesso edilizio delle « Vele » nel quartiere napoletano di Scampia e all'atto ispettivo n. 4-01958 del 17 giugno 1992 con il quale si riproduceva il testo del precedente –:

se sia noto che il 13 febbraio 1993, come risulta all'interrogante, l'onorevole Paolo Cirino Pomicino, avrebbe ribadito in un incontro svoltosi presso la circoscrizione napoletana di Scampia, con il consenso dei presenti e con quella dell'onorevole Mastrantuono, la tesi aberrante dell'abbattimento e della ricostruzione del complesso, partendo da una disponibilità di 40 miliardi di lire per un triennio: 120 miliardi in tutto: molto meno di quanto occorre per abbattere e ricostruire e comunque, in tale assurda ipotesi, gettando via con l'abbattimento il valore attuale del complesso stimato oggi in 150 miliardi;

se consti che il professor architetto Gerardo Mazziotti il 15 febbraio 1993 avrebbe denunciato alla Procura della Repubblica di Napoli l'insano progetto di abbattimento delle Vele argomentando in ordine alla opportunità a alternativa della costruzione di un altro complesso abitativo per gli inquilini delle « Vele » ed al restauro di quest'ultimo, evitando un depauperamento del patrimonio edilizio pubblico dell'ordine di oltre centocinquanta miliardi;

se consti che siano state avviate indagini da parte della Procura della Repubblica di Napoli ed a che punto siano;

se consti che la Facoltà di architettura designata dal comune di Napoli ad elaborare ed indicare la soluzione più opportuna, abbia compiuto l'opzione di sua competenza ed in quale delle due possibili direzioni, una delle quali – quella dell'abbattimento – a parere dell'interrogante è assolutamente inaccettabile e dovrebbe vedere non acquiescenti o comunque silenti, ma vigorosamente contrari i ministeri competenti sul patrimonio edilizio pubblico. (4-13173)

SORIERO. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere – premesso che:

in data 4 novembre 1992 era stata presentata dall'interrogante un'interrogazione riguardante il comportamento dei vertici della Cassa Rurale ed artigiana di Cittanova, sollecitando un intervento del Ministero;

il Consiglio di amministrazione di questa banca aveva proceduto alla chiusura, con effetto immediato, del c/c di deposito del signor Girolamo Demaria, per via di un articolo da questi scritto per il

periodico « Cittanova » nel quale si commentavano notizie riguardanti inchieste aperte da parte della Procura della Repubblica di Pali;

in data 13 aprile 1993 la Procura della Repubblica di Palmi ha inviato tre avvisi di garanzia al presidente signor Giulio Cosentino, al vicepresidente signor Giuseppe Pronesti ed al signor Antonio Mesiti componente del consiglio di amministrazione della Cassa rurale ed artigiana di Cittanova;

i reati ipotizzati sono quelli della violazione degli obblighi di amministratori, la falsità in scrittura privata e la falsità in fogli in bianco, commessi in concorso ed in continuazione;

l'inchiesta, condotta dal procuratore dottor Cordova e dal sostituto dottor Neri, si riferisce alle elezioni del Consiglio di amministrazione della banca Cittanovese, avvenute nell'aprile del 1992, durante le quali gli indagati con il loro comportamento avrebbero determinato una maggioranza in loro favore;

è stata convocata l'assemblea ordinaria dei soci in data 24 aprile 1993 in prima convocazione ed in data 25 aprile 1993 in seconda convocazione per l'approvazione del bilancio e per il rinnovo di tre dei sette componenti il Consiglio di amministrazione;

tra i candidati vi è il vicepresidente uscente signor Giuseppe Pronesti, che figura tra gli indagati –:

quali interventi urgenti intenda assumere affinché:

*a)* venga sospesa l'assemblea dei soci convocata per i giorni sabato 24 aprile e domenica 25 aprile pp.vv.;

*b)* vengano sospesi dalle proprie funzioni il Presidente ed il Consiglio di amministrazione della banca;

*c)* venga nominato un Commissario che abbia il compito di dirigere la Cassa rurale ed artigiana di Cittanova del periodo che intercorre fino alla data della nuova convocazione dell'assemblea dei soci. (4-13174)

MARONI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri degli affari esteri e del commercio con l'estero.* — Per sapere – premesso che:

un articolo apparso sul settimanale *Panorama* del 18 aprile 1993 a firma Stefano Mensurati riferisce di due inchieste giudiziarie, una in corso in Albania, e l'altra appena iniziata a Roma, in cui sarebbero coinvolti la società barese Levant Co., la società albanese Iliria Holding, la presidenza albanese e i vertici dei due governi di Tirana, quello guidato da Adil Carcani sino al 22 febbraio del 1991 e quello di Fanos Nano, attuale numero uno del Psa, partito socialista albanese;

al centro delle inchieste emerge in particolare il ruolo svolto dalla Levant Co., a cominciare dalla scelta immediata di questa società da parte delle autorità albanesi a scapito di tutte le altre società agroalimentari italiane;

la scelta della Levant Co. per il rifornimento degli aiuti – e della « Iliria » per la loro distribuzione – sarebbe infatti stata comunicata alla Farnesina da parte del ministro degli esteri albanese, Reis Malile, il giorno stesso in cui il ministro del commercio estero, Shane Korbeci, aveva consegnato a Carcani la lista dei beni necessari all'Albania, il 14 febbraio del 1991;

sempre secondo quanto si legge sul settimanale, l'amministratore delegato della Levant Co., Giuseppe Perniola, è amico del figlio del presidente albanese, Arben Alia, e di Fanos Nano, con il quale ha partecipato al congresso di Bari del Psi, ed in Italia sarebbe in ottimi rapporti con Gianni De Michelis, in quel momento ministro degli esteri; in passato avrebbe fatto affari con la Iliria per un volume nel 1990 di un miliardo e 200 milioni;

in merito alla lista stilata da Korbeci, dopo che il Governo italiano aveva stabi-

lito una prima parte di aiuti per il valore di 10 miliardi di lire, il premier Nano diffuse un elenco diverso da quello del suo ministro degli esteri, comprendente succhi di frutta, piselli in scatola, marmellate e confetture: alimenti di secondaria importanza, mentre mancano generi di prima necessità come farina, zucchero, burro e formaggio;

questa seconda lista l'8 marzo del 1991 è stata trasmessa all'ambasciata italiana a Tirana che a sua volta la gira alla Farnesina, la quale, infine, la passa alla Levant Co.;

secondo quanto si legge su *Panorama* soltanto due giorni prima, il 6 marzo 1991, Perniola aveva inviato un fax al suo amico Ben, figlio del presidente albanese, pregandolo di far inoltrare alle autorità competenti un messaggio e aggiungendo di « non mutare la lista dei prodotti »; inoltre nella seconda pagina del fax, si legge ancora sul periodico, c'era la lista delle merci suggerite da Perniola: esattamente quelle che, due giorni dopo, il premier Nano manda in Italia;

subito dopo l'invio delle merci il ministero del commercio estero albanese analizza i prezzi e calcola che se gli stessi aiuti fossero arrivati a prezzi di mercato la spesa complessiva sarebbe stata di 6,6 anziché di 10 miliardi di lire –:

se corrispondano al vero le notizie di stampa che la ditta italiana sarebbe stata quasi « imposta » al governo albanese da Alessandro Grafini, attuale ambasciatore italiano a Vienna, che si sarebbe recato due volte a Tirana in qualità di vice capo di gabinetto dell'allora ministro degli esteri De Michelis, per caldeggiare la scelta della Levant Co. da parte delle autorità albanesi;

se rispondano al vero le notizie di stampa che, dopo le contestazioni da parte del ministero albanese del commercio estero, De Michelis avrebbe sostenuto che gli accordi erano stati presi con il corrispondente ministero degli esteri in Albania, che l'interrogante considera un vero e proprio complice nell'affare;

se è vero che la Levant Co. è una società di copertura usata per oscuri traffici da Hajdin Sejda, arrestato in Svizzera nell'ottobre scorso con l'accusa di truffa e corruzione;

se è vero che la Levant Co. ha proseguito nelle forniture all'Albania anche durante l'operazione « Pellicano » di assistenza alla popolazione albanese;

se è vera la notizia di stampa che il dottor Grafini sarebbe stato nominato ambasciatore a Vienna dal ministro degli esteri dopo le nozze di uno dei figli di De Michelis con una nipote del Grafini stesso, con ciò avvalorando lo scandalo sulle nomine ad ambasciatore e configurando questo incarico quasi come un « regalo di nozze »;

se non ritenga di avviare una inchiesta per verificare l'attendibilità delle notizie sopracitate, anche alla luce dei possibili sviluppi che il « giallo » dei prezzi gonfiati potrebbe avere in Albania.

(4-13175)

ZOPPI e MOIOLI VIGANÒ. — *Al Ministro dell'industria, del commercio e dell'artigianato.* — Per sapere – premesso che:

l'ENEA in seguito al referendum sul necleare del 1987 è entrato in una profonda crisi determinata da una incertezza di direttive politiche e da una confusione programmatica e finanziaria;

il qualificato patrimonio di risorse umane dell'Ente, fatto di competenze ed esperienze dei ricercatori, dei tecnici e degli amministrativi da allora ha cominciato a deteriorarsi, in conseguenza sia della mancanza di articolati programmi operativi che dal crescere della sfiducia nelle capacità di buona parte della dirigenza dell'Ente di uscire da questa situazione di sbandamento;

con la legge di riforma dell'Enea del 1991, dopo anni di dibattiti e polemiche

sul futuro dell'Ente, si è giunti finalmente a definire un punto di partenza concreto per il rilancio delle attività di ricerca e sviluppo tecnologico nei settori dell'energia, dell'ambiente e delle nuove tecnologie;

ad oltre 14 mesi dall'insediamento del nuovo C.d.A. non è stata ancora definita la struttura interna dell'Ente alla quale assegnare la responsabilità di realizzare le linee programmatiche approvate nel dicembre del 1992;

in questo quadro di lentezza esasperante, parte dell'apparato dirigenziale ha preferito adagiarsi in una posizione di comodo tenendo atteggiamenti rinunciatari e di deresposabilizzazione –:

se, considerato il ruolo importante dell'Ente su tematiche di grande rilevanza per il paese come l'energia, l'ambiente e le nuove tecnologie, e valutata la situazione attuale, si intende intervenire presso la Presidenza dell'Ente per sollecitare l'adeguamento dell'Ente al disposto della legge di riforma in modo che possa diventare operativo al più presto e per allontanare quella parte di dirigenza che da anni dimostra incapacità professionale e scarso interesse sul futuro dell'Ente, mentre pare attentissima a mantenere l'inamovibilità del proprio *status* funzionale e retributivo. (4-13176)

TERZI. — *Ai Ministri dell'interno, delle finanze e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

in Bergamo, veniva fondato nel 1265 il Pio Luogo della Misericordia Maggiore (MIA) avente come scopo il mutuo soccorso ai bisognosi. Che tale scopo veniva confermato con statuto reso pubblico con l'autorizzazione del Regio Decreto del 2 novembre 1902, firmato da Vittorio Emanuele III e controfirmato dal primo ministro Giolitti. Successivamente l'Opera Pia veniva assoggettata alle norme I.P.A.B. sottoposta perciò alle normative che regolamentano i beni patrimoniali, i lasciti, le donazioni, i bilanci e l'eleggibilità delle cariche amministrative e gestionali;

in violazione alle normative statutarie e regolamentari dell'ente, presso la Procura di Bergamo, nei mesi di marzo, luglio, ottobre 1990, venivano depositati esposti e relazioni inerenti gravi irregolarità gestionali ed amministrative, lesive delle finalità dell'ente MIA, con conseguenti e pesanti ripercussioni sul consistente patrimonio immobiliare;

dal 1990 ad oggi, sono stati depositati presso gli organismi competenti circa 35 tra esposti e relazioni riguardanti illeciti amministrativi e attività lesive di tali finalità benefiche, per citarne alcune: dal 1982 al 1990 è risultato facente parte del consiglio di amministrazione, nonché presidente dell'ente per altri due anni, il direttore generale della Banca Popolare di Bergamo, la quale notoriamente era ed è la tesoriera dell'Opera Pia, ciò in palese contraddizione, ad avviso dell'interrogante, con quanto previsto dalla legge n. 6972 del 17 luglio 1890 articolo 11 che sancisce l'ineleggibilità nel consiglio di amministrazione di un ente, di persona presente anche nel consiglio di amministrazione dell'istituto di credito preposto a tesoreria dell'ente stesso. Non risulterebbe allegato ai bilanci presentati almeno nelle ultime sette gestioni, lo stato patrimoniale e l'inventario dei beni dell'ente in oggetto, come prescrive la legge n. 6972 del 17 luglio 1890 articolo 18. Tale mancanza sottrae agli organi preposti al controllo della gestione la reale situazione patrimoniale dell'ente, e la possibilità di determinare eventuali mutamenti del patrimonio stesso. Risulterebbero inoltre nulli, secondo quanto risulta all'interrogante, parecchi atti di vendita riguardanti cessioni di importanti aree, in quanto il nominativo di persone e/o società che è menzionato sul contratto di compravendita immobiliare, non coincide con quello espressamente deliberato dal consiglio di amministrazione; a tale proposito, l'interrogante ritiene singolare che il Notaio interessato non abbia rilevato una così evidente discrepanza tra le indicazioni delle delibere e l'effettivo acquirente;

risulterebbero ceduti terreni e cose nell'arco di 10 anni a prezzi costantemente decrescenti. Con decrementi del 60 per cento del valore di analoghi terreni ceduti 10 anni prima, nonostante il valore degli immobili avesse subito negli anni Ottanta un forte incremento;

secondo quanto risulta all'interrogante, sembrerebbero certe e verificate le continue e ripetute violazioni della legge n. 6972 del 17 luglio 1890 articoli 26-36 riguardante l'obbligo di segnalare ogni volontà di acquisto e quindi l'acquisto stesso di qualsiasi bene immobiliare da parte dell'ente, alla Prefettura prima, alla regione ora;

all'interrogante consta che risulterebbe inoltre una serie di mancanze nella gestione immobiliare riguardante la riscossione degli affitti (reale fonte di autofinanziamento dell'ente). Tali affitti infatti, non superano nel maggiore dei casi il 10 per cento dei valori effettivi di mercato –:

quali iniziative di competenza intendano intraprendere per una verifica rigorosa dei fatti, al fine di evitare il depauperamento dei beni dell'ente in questione e la conseguente compromissione degli scopi benefici assistenziali dell'ente medesimo. (4-13177)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri del turismo e spettacolo, dell'industria, commercio e artigianato, dei trasporti, delle finanze, del tesoro e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

che cosa osti a che – come per le isole Canarie o per le Seycelles, o per le Maldive – l'Alitalia provveda a offrire viaggi a prezzo facilitato e conglobato, come per quelle zone turistiche straniere, a favore delle isole d'Italia: Sicilia, Sardegna, Lampedusa, Egadi, Eolie, al fine di rilanciare il turismo anche per quelle isole così « benedette da Dio » per le meraviglie naturali di quelle bellissime zone;

come mai sia stato tollerato sino ad oggi che certe situazioni di favore proposte dalla compagnia nazionale per il volo cioè l'Alitalia, siano state predisposte e pubblicizzate da anni solo per quelle località straniere, addirittura extracomunitarie;

se, in merito, a questo vero e proprio esempio di insipienza e di incapacità di gestione della stessa attività della compagnia di volo nazionale siano in atto studi, ispezioni o inchieste amministrative ovvero indagini di polizia giudiziaria o tributaria perché è evidente che certe « promozioni » a favore degli operatori stranieri, addirittura extracomunitari, non possono che nascere da qualche operazione « promozionale » tangentaria altrimenti resta inspiegabile, come siano state escusse da quelle posizioni di favore, proprio le nostre isole e gli imprenditori e le strutture turistiche nazionali. (4-13178)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, di grazia e giustizia, delle finanze, del tesoro, per la funzione pubblica e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per sapere:

che cosa intendano fare il Governo e i ministri interrogati, nell'ambito delle loro competenze specifiche, anche dei loro uffici periferici, per far sì che riprenda a funzionare normalmente la cosiddetta « giustizia civile », se può succedere come al tribunale di Chiavari che cause importantissime sotto il profilo economico, finanziario, sociale, turistico e ambientale, riguardanti il problema e la questione della Cala dei genovesi, cioè il nuovo porto turistico di Lavagna, in numero di oltre cento, siano di fatto congelate da oltre dieci anni, perché i grandi potentati che hanno assunto la detenzione di quelle strutture e di quelle società che sono interessate e che reggono il porto preindicato, godono della « rendita di posizione » dello stato di fatto;

se anche su queste forme di vera e propria tangentopoli, o comunque sperperopoli, ancorché indirette, ma nemmeno per questo meno gravi e pericolose, per

l'economia, la finanza e la società, non sia caso di intervenire con la decisione necessaria;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria e se i fatti siano noti al Consiglio Superiore della Magistratura, e alla procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori, con danno per l'erario o per i cittadini, addebitabili o addebitati, a pubblici funzionari siano essi di carriera come dirigenti di uffici statali periferici, ovvero di unità operative, ovvero onorari, come sindaci, assessori, ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega. (4-13179)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri delle finanze, dei lavori pubblici, dell'interno e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se sia noto al Governo, anche tramite la doverosa opera di controllo degli uffici periferici dei ministri interrogati che i lavori e le opere dell'AUTOCISA SPA, sono sempre controllati dalla SINA spa corrente a Milano via Felice Csatai, 1, ma nell'esecuzione degli stessi, si sono appalesati, ormai in maniera inconfutabile, gravissimi mende e vizi, a costituire una vera e propria truffa ai danni del pubblico erario, sicché, addirittura un ponte deve essere rifatto e già un'arcata è stata fatta abbattere;

come mai una società di ingegneri abbia « controllato » in modo « tale » da poter consentire che le opere fossero costruite talmente male da dover comportare l'abbattimento di un'intera arcata e il necessario rifacimento del ponte Taro 1. È stata necessaria la sostituzione del controllo tecnico e statico di quella s.p.a. SINA per poter rilevare e appalesare la miliardaria truffa in danno dell'erario, ma soprattutto la gravità del rischio per l'incolumità pubblica di coloro che circolavano su quella autostrada il cui ponte Taro 1 avrebbe potuto cedere in qualsiasi momento, se non altro nell'arcata già sostituita. Del resto la SINA spa è la stessa società che riuscì anche in Valle d'Aosta a imbrogliare la Regione Autonoma facendole costituire una società per azioni, la SAPL, che avrebbe dovuto finanziare e costruire la circonvallazione d'Aosta, ma che poi vide il « ritiro » della predetta SINA spa con la riduzione della sua quota, mentre alla Regione Val d'Aosta così venne di fatto « caricato » l'intero onere dell'opera. La SINA spa aveva il 35 per cento del capitale iniziale di quella SAV spa e poi, quando dovettero « spendere » veramente i « soldi » fu solo compito della Regione provvedere agli « investimenti » veri e propri: cioè quando veramente ci fu da impegnare denaro il compito restò solo alla Regione. All'epoca era presidente della regione quell'uomo politico che poi si « costituì » dopo un mese di latitanza, perché perseguito da ordinanza cautelare di custodia in carcere;

se questi fatti siano stati valutati in quel procedimento e se siano stati riferiti dagli uffici periferici dei ministri interrogati;

se in merito, ai fatti soprariferiti siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria e soprattutto finanziaria e valutaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le responsabilità contabili, sempre conseguenti, abusi e omissioni, anche negli obblighi di controllo, o errori, con danno del pubblico erario o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari siano essi di carriera come direttori generali o dirigenti di uffici periferici, ovvero onorari come ministri o sottosegretari, specie se muniti di delega. (4-13180)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri di grazia e giustizia, dei lavori pubblici, dell'interno e delle finanze.* — Per sapere:

se sia noto che nel comune di Voghiera (FE) nell'anno 1980 il signor Rapini Armando ha acquistato due lotti di casa colonica, costituita da cinque lotti, rimanendo gli altri tre di proprietà di Forlani Ninto Alessio. È accaduto che il signor Rapini intenzionato a edificare e ricostruire parte dell'immobile acquistato, comunque ad intervenire su parti del fabbricato, fu vincolato a mantenersi fedelmente conforme alle disposizioni urbanistiche del comune stesso. Successivamente nell'anno 1983 il signor Forlani decise di ristrutturare gli altri tre lotti della casa colonica, di sua proprietà, e così fece, in totale disprezzo dei vincoli urbanistici esistenti nel comune di Voghiera (FE), addirittura il Forlani ha fatto ricostruire la propria abitazione alzando il piano della corte stessa, nonché dei marciapiedi, favorendo lo scolo delle acque « direttamente in casa » del Rapini. Nonostante tutto questo il comune ha manifestato il silenzio, aderendo alle operazioni dallo stesso eseguite. Del resto il sindaco, nonostante fosse informato dallo stesso Rapini, insisteva circa la perfetta conformità delle opere del Forlani, agli strumenti urbanistici del luogo. Successivamente il Forlani ha posto in essere altre irregolarità, che sono state puntualmente riferite all'amministrazione del comune di Voghiera (FE), in particolare al signor sindaco, ma ogni intervento veniva effettuato solo nella certa impossibilità di evitare l'intervento; pare all'interrogante che l'amministrazione comunale del comune di Voghiera manifestasse molto zelo e « cura » per la posizione del Forlani;

se in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti anche per il doveroso accertamento delle responsabilità contabili di funzionari pubblici per gli evidenti abusi e omissioni, anche di controllo, commessi dai predetti, siano essi di carriera o onorari. (4-13181)

TASSI e MARENCO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri del lavoro e previdenza sociale, della sanità, delle finanze, del tesoro e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

come sia possibile che alla ostetrica in pensione signora Pippia Adriana, nata a Santo Stefano d'Aveto il 13 febbraio 1928, residente a Cogorno (Ge) corso Risorgimento n. 222 percepisca un trattamento di quiescenza di sole lire 132.000 pur avendo versato per ben 33 anni i contributi: esattamente dal 1950 al 1983, quale ostetrica di Santo Stefano d'Aveto e, in zone della provincia di Genova. Il certificato di pensione è il n. 9002782 codice sede INPS 3401 sede zonale di Sestri Levante (quella che è nota per inviare mandati di pensione a cittadini defunti, anche da anni !), con decorrenza dal luglio 1990. Appare evidente un errore addebitabile a quella « sede zonale » che è davvero inaffidabile per quanto risulta all'esponente;

se, in merito, siano in atto ispezioni, o, inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire doverosamente e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti ogni abuso o omissione, anche negli obblighi o doveri di controllo, ovvero errori, con danno dell'erario o dei cittadini e amministrati, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari siano essi di carriera come i dirigenti degli ispettorati regionali e provinciali del lavoro ovvero onorari come ministri, o sottosegretari con delega, ovvero presidenti di enti anche previdenziali. (4-13182)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, del tesoro e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se risponda a verità e sia noto al Governo che « L'assessore regionale al turismo dell'Emilia-Romagna ha compiuto favoreggiamenti ed atti illegali nella distribuzione di fondi per progetti televisivi dell'ente pubblico.

L'assessore al turismo Sandri, d'accordo con il suo assistente Beppe Caschetto ha dato la totalità dei fondi in suo potere all'impresario televisivo Bibi Ballandi. Negli anni novanta, novantuno, novantadue il suddetto agente ha percepito la somma complessiva di lire 5.707.000.000 dalla Regione Emilia-Romagna senza aver mai partecipato ad una gara d'appalto. Mai un privato ha percepito nel settore della promozione turistica una tale cifra.

La maggior parte dei contributi è stata versata su di un programma « Stassera mi butto » che promuoveva un locale dello stesso Ballandi, il "Bandiera gialla" di Rimini.

L'assistente dell'assessore, il signor Beppe Caschetto, è stato assunto nel giugno del novantadue da Bibi Ballandi in una Società costituita apposta a San Marino con uno stipendio di lire 20.000.000 mensili ». La notizia sopraestesa è stata comunicata a molti deputati a mezzo di plico postale ordinario;

se, in merito, siano in atto ispezioni o inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria e, sopra tutto tributaria, trattandosi di uso e abuso di denaro pubblico, procedimenti giudiziari ancorché non soltanto penali, e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, doverosamente perseguire, e giustamente reprimere, le evidenti responsabilità, anche contabili, del resto sempre conseguenti ogni abuso o omissione, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori, forieri di danno all'erario o ai cittadini o agli amministrati, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come direttori generali, dirigenti di uffici periferici statali, ovvero di unità operative, ovvero onorari, come sindaci o presidenti di enti pubblici, assessori, ministri o sottosegretari specie se muniti di delega. (4-13183)

GAETANO COLUCCI, AGOSTINACCHIO e PATARINO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro dell'agricoltura e delle foreste.* — Per conoscere – premesso che:

la direttiva della commissione CEE 92/103 dicembre 1992 NL 363 all. III punto 18: « Importazione piantine di fragola » propone di fatto agli Stati membri d'impedire il libero approvvigionamento delle piantine di fragola al di fuori dei confini della Comunità salvo alcuni Stati privilegiati, come quelli dei Paesi del Mediterraneo, dell'Australia, della Nuova Zelanda, del Canada e continentali degli USA –:

1) se non ritenga il Governo che quanto deciso dalla Commissione CEE rappresenti una palese e iniqua azione di puro stampo commerciale, mal celata sotto un aspetto fitosanitario, mirante a favorire alcuni Stati e operatori del settore impedendo la libera concorrenza ed il libero approvvigionamento dei fragolicoltori italiani, particolarmente meridionali, di piantine di fragola da impianto sul mercato mondiale che per varietà, qualità e prezzo rispondono di più alle loro necessità;

2) se non ritenga il Governo che i fragolicoltori italiani abbiano diritto a approvvigionarsi della materia prima (piantine da impianto dei fragoleti) ove ritengano più conveniente ai fini di ottenere un prodotto che – per qualità e prezzo – consenta di abbassare i costi di produzione rendendoli più competitivi sui mercati esteri dove è diretto l'80 per cento del loro prodotto nei confronti di altri Paesi fornitori che non subiscono simile restrizione;

3) premesso, altresì che l'Olanda e la Gran Bretagna hanno richiesto alla Commissione deroga per l'entrata in vigore della direttiva, se non ritenga il Governo, nel recepire la direttiva in oggetto, di richiedere anch'esso una deroga che consenta ai fragolicoltori, fatti salvi i requisiti fitosanitari, di importare le piantine da ogni Paese, ma almeno dal Sud America, che, per l'inversione delle stagioni, offre un prodotto fresco con limitata conservazione, che consente una produzione quantitativa e qualitativa migliore e di conseguenza più bassi costi unitari di produzione;

4) se, infine non ritenga il Governo che la fragolicoltura italiana, che richiede un alto impiego di manodopera, vada

incoraggiata, e sostenuta sottraendola agli impedimenti innanzi indicati. (4-13184)

GAETANO COLUCCI. — *Ai Ministri dell'interno e dei lavori pubblici.* — Per conoscere – premesso che:

come già evidenziato dal sottoscritto interrogante in precedenti atti di sindacato ispettivo della X Legislatura (atti n. 4-29491 e 4-29492 del 27 novembre 1991, n. 4-29615 del 3 dicembre 1991), i cittadini dell'area cilentana, in provincia di Salerno, da tempo lamentano una pessima manutenzione delle strade di collegamento primario ed una loro conseguente disagevole percorribilità;

in particolare le doglianze riguardano la strada provinciale 447 che, soprattutto tra Ascea e Pisciotta, presenta numerosi tornanti, una sede stradale piuttosto stretta e – in numerosi tratti – addirittura mancanza di parapetti, tanto da rendere sempre più difficile oltre che rischiosa per l'incolumità degli automobilisti gli spostamenti su tali arterie;

la mancata attuazione di un organico piano di adeguamento stradale e la in parte conseguenziale insufficienza del servizio di trasporto pubblico hanno notevolmente penalizzato negli scorsi anni il movimento dei turisti, pregiudicando lo sviluppo turistico del Cilento con grave nocumento per le attività commerciali ed artigianali della zona –:

quali provvedimenti i Ministri interrogati, ciascuno per quanto di competenza e di concerto, intendano adottare per sollecitare da parte degli enti preposti alla manutenzione di tali vie di comunicazione un urgente intervento al fine di renderle praticabili e sicure. (4-13185)

GAETANO COLUCCI e PATARINO. — *Al Ministro dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica.* — Per conoscere – premesso che:

nato lo scorso anno come fiore all'occhiello dell'Università di Salerno, il Corso di laurea in scienze della comunicazione, primo in assoluto ad essere istituito in Italia, rischia di diventare l'ultimo per la qualità degli studi;

infatti la mancanza di aule, la totale inesistenza di mezzi didattici, le inefficienze organizzative ed informative, a fronte di un numero di iscritti che supera le 1100 unità, hanno – nel giro di pochi mesi – portato al collasso un corso di laurea istituito con l'ambizioso proposito di fornire agli iscritti una preparazione teorico-pratica che consentisse loro di essere assorbiti da un mercato del lavoro, quello delle comunicazioni di massa, in continua evoluzione;

invece gli studenti annaspano tra difficoltà di ogni tipo che rischiano di compromettere seriamente il loro rendimento: corsi iniziati con enorme ritardo, testi adottati che non sono ancora in commercio, mancata comunicazione degli ormai prossimi appelli per gli esami, per non parlare della mancanza di aule che costringe gli studenti a fare la spola tra la sede di Fisciano ed il polo scientifico di Lancusi dove è stata individuata un'aula, inutilizzata da anni, semiabbandonata, fatiscente e non riscaldata –:

1) se il ministro interrogato non intenda sollecitare le competenti autorità accademiche affinché intervengano sollecitamente per porre rimedio ad una situazione che già da tempo ha ampiamente oltrepassato i limiti della tollerabilità e che rischia di gettare altre ombre sulla Università di Salerno, da sempre in un mare di difficoltà;

2) se siano da individuare responsabilità in ordine al troppo precipitoso avvio del nuovo corso di laurea senza che ne esistessero i presupposti logistici ed organizzativi. (4-13186)

BIASCI. — *Al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

con provvedimento CEE del 7 aprile 1993 è stato esteso a tutti i paesi facenti

parte della CEE il divieto all'importazione di bestiame aftosensibile e dei suoi prodotti, tra cui le pelli per uso conciario;

tale provvedimento per l'Italia è stato fatto proprio dalla Direzione Generale servizi veterinari del Ministero della Sanità, nonostante che, lo stesso Ministero, con nota 10 febbraio 1987, avesse riconosciuto le pelli grezze esenti da afta epizootica, in virtù del trattamento di salagione a cui vengono sottoposte ai fini della loro conservazione;

esistono, in materia, anche qualificati pareri tecnici che danno analoghe assicurazioni;

la misura adottata dalla CEE, la cui validità è prevista per un mese, salvo eventuali proroghe, rischia di provocare effetti devastanti sui prezzi delle pelli per uso conciario, in particolare di quelle di produzione CEE;

per le concerie del comprensorio toscano del cuoio, tale divieto va ad aggravare la situazione di un settore già messo a dura prova dal temporaneo sequestro degli impianti consortili di depurazione avvenuto nel febbraio scorso –:

se non si ritenga di dover intervenire urgentemente presso la CEE per la rimozione di tale divieto che risulta tecnicamente ingiustificato e che rischia di incidere pesantemente sulla capacità competitiva del settore conciario. (4-13187)

BIASCI. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e dell'industria, commercio e artigianato.* — Per sapere – premesso che:

i lavoratori dello stabilimento di Livorno della BORMA da più di tre anni sono in C.I.G. ed il forno fusorio è fermo;

lo stabilimento ha subito una lunga fase di ristrutturazione, pagando un prezzo occupazionale non indifferente: la proprietà aveva assunto un impegno volto a rendere lo stabilimento competitivo e, nonostante tutti gli investimenti non siano stati completati, l'impianto risulta attualmente produttivo e competitivo sul mercato;

a suo tempo la C.I.G. a zero ore e la fermata del forno, di fronte ad una crisi del mercato dei contenitori di vetro cavo, fu motivata con l'esigenza di far funzionare quegli stabilimenti del gruppo saturati al 100 per cento, assegnando ad essi la produzione di quelli che venivano fermati, con l'impegno di favorire un'alternanza tra i vari stabilimenti;

fino al momento attuale non è stata ancora affrontata una Programmazione produttiva del gruppo AVIR che preveda, concretamente, l'alternanza –:

se non si ritenga opportuno intervenire per arrestare il processo di deindustrializzazione che ha pesantemente investito la provincia di Livorno, in difesa dell'occupazione e dell'apparato industriale, difendendo questa importante unità produttiva. (4-13188)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per conoscere – premesso che:

con decreto ministeriale 6 novembre 1992 è stata disposta la corresponsione del trattamento di integrazione salariale a favore dei lavoratori della Spa Somepra - Gruppo FIAT in servizio presso gli stabilimenti di Pomigliano d'Arco (Napoli) dal 7 febbraio 1992 al 6 agosto 1992 per « ristrutturazione aziendale - CIPI 13 ottobre 1992 » –:

quali siano i problemi evidenziati dalla crisi aziendale, anche quanto all'organico ed i modi individuati per risolverli;

se alla scadenza della CIG ne sia stata richiesta la proroga e – ove tutto sia tornato alla normalità – se il numero dei lavoratori in servizio, dopo la conclusione della CIG, sia aumentato o diminuito;

se la Spa Somepra - Gruppo FIAT abbia mai richiesto ed ottenuto agevolazioni, incentivi o finanziamenti pubblici a valere sulle leggi per l'intervento ordinario o per quello straordinario dello Stato nel Mezzogiorno e per quali importi. (4-13189)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per conoscere – premesso che:

con decreto ministeriale 6 novembre 1992 è stata disposta la corresponsione del trattamento di integrazione salariale a favore dei lavoratori della Spa FIAT auto in servizio presso gli stabilimenti di Pomigliano d'Arco (Napoli) dal 1° novembre 1991 al 30 aprile 1992 per « ristrutturazione aziendale - CIPI 13 ottobre 1992 » –:

quali siano i problemi evidenziati dalla crisi aziendale, anche quanto all'organico ed i modi individuati per risolverli;

se alla scadenza della CIG ne sia stata richiesta la proroga e – ove tutto sia tornato alla normalità – se il numero dei lavoratori in servizio, dopo la conclusione della CIG, sia aumentato o diminuito;

se la Spa FIAT auto abbia mai richiesto ed ottenuto agevolazioni, incentivi o finanziamenti pubblici a valere sulle leggi per l'intervento ordinario o per quello straordinario dello Stato nel Mezzogiorno e per quali importi. (4-13190)

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e del bilancio e programmazione economica e per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno.* — Per conoscere – premesso che:

con decreto ministeriale 26 ottobre 1992 è stata disposta la corresponsione del trattamento speciale di disoccupazione a favore dei lavoratori della Sas Tecnomecar in servizio presso gli stabilimenti di Arzano (Napoli) dal 1° settembre 1989 al 31 dicembre 1989 per « casi del settore - CIPI 8 aprile 1987: dal 27 ottobre 1986 » –:

quali siano i problemi evidenziati dalla crisi aziendale, anche quanto all'organico ed i modi individuati per risolverli;

se alla scadenza del provvedimento ne sia stata richiesta la proroga e – ove tutto sia tornato alla normalità – se il numero dei lavoratori in servizio, dopo la conclusione del detto trattamento, sia aumentato o diminuito;

se la Sas Tecnomecar abbia mai richiesto ed ottenuto agevolazioni, incentivi o finanziamenti pubblici a valere sulle leggi per l'intervento ordinario o per quello straordinario dello Stato nel Mezzogiorno e per quali importi. (4-13191)

PARLATO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

in data 30 marzo 1993 Salvatore Ronghi, Segretario della UPL CISNAL di Napoli e membro della Assemblea del CTP, si è dimesso da tale ultima carica con una lettera diretta al Presidente della Giunta provinciale di Napoli ed inviata in copia anche al Prefetto;

la lettera così recita: « La grave crisi del trasporto pubblico locale, oltre che alla deficitaria e insufficiente gestione delle Aziende, va senz'altro attribuita, in larga misura, alle gravi e pesanti responsabilità degli Enti proprietari che sono venuti meno ad ogni forma di controllo e agli impegni previsti dalle leggi vigenti.

Ancora più grave è la situazione del CTP e dell'Azienda ACTP che oltre a dover affrontare i problemi connessi al disavanzo finanziario è, da tempo, alle prese con un vero e proprio vuoto dirigenziale. L'Assemblea del Consorzio da oltre un anno non è in grado di esercitare il proprio ruolo atteso le continue assenze dei Consiglieri della maggioranza che sistematicamente, nell'ultimo anno, hanno fatto venir meno il numero legale.

Detta situazione si è particolarmente aggravata con la mancanta nomina dei venti Consiglieri da parte del comune di Napoli.

Valutata, infine, l'assurda posizione assunta dalla Giunta della provincia di Napoli in ordine al mancato ripiano dei debiti di propria competenza, in palese contrasto con la legge 151/81, il sottoscritto nel ritenere ormai superato l'attuale assetto giuridico del CTP, rimette il proprio mandato di consigliere dell'Assemblea conferitogli dal Consiglio provinciale di Napoli ed invita il Presidente a predere debita nota della presente per i provvedimenti del caso. » –:

se e quali interventi siano stati disposti o si intendano disporre a fronte delle gravi carenze denunciate essendo ormai il CTP e l'Azienda ACTP al collasso, anche per precise responsabilità delle amministrazioni provinciale e comunale di Napoli come da una serie di atti ispettivi pregressi il cui mancato riscontro, presupponendo la mancanza degli accertamenti ed interventi richiesti, costituisce un grave presupposto del collasso medesimo documentando inequivocabilmente che il Governo non ha mai ritenuto di assumere iniziative per prevenirlo, anche mercé opportuna ricognizione periferica e la diffida a comune, provincia a recuperare legittimità nella politica svolta nei confronti del CTP quanto agli obblighi a carico di tali Enti locali. (4-13192)

SARTORI. — *Al Ministro della pubblica istruzione.* — Per sapere – premesso che:

in seguito all'alluvione che colpì la provincia di Varese in data 2 giugno 1992 le scuole di via Gramsci in Tradate (VA) hanno subìto danni ingentissimi e tali da renderne inagibili le palestre e numerose aule dell'edificio;

in data 14 ottobre 1992, durante un sopralluogo dell'USL competente, veniva rilevata la non idoneità delle strutture prefabbricate usufruite in particolare dagli alunni dell'Istituto tecnico per ragionieri e geometri, revocando conseguentemente il parere favorevole espresso al momento dell'installazione e che comunque avrebbe dovuto avere una durata non superiore ad un anno;

per chiedere che venisse risolta al più presto la precaria situazione, il 22 ottobre 1992 scendevano per la prima volta in piazza gli studenti dei vari istituti, indignati per il comportamento degli organi competenti;

il giorno 3 novembre 1992 la direttrice professoressa Maria Platè comunicava ad alunni e docenti, con il consenso del Provveditorato e delle Autorità provinciali, una turnazione nei prefabbricati obbligando così gli studenti ad usufruire di strutture già dichiarate inagibili e in condizioni inaccettabili;

il 19 novembre 1992 scendevano una seconda volta in piazza gli studenti dei vari Istituti per contestare l'inamovibilità degli organi competenti;

il 25 novembre 1992 il sindaco di Tradate emetteva ordinanza di sgombero, ordinanza mai eseguita che provoca, da parte di alcuni cittadini, una richiesta per un nuovo sopralluogo da parte dell'USL;

la risposta dell'USL chiama in causa gli enti locali e provinciali, accusati di non aver ottemperato alla propria ordinanza del 14 ottobre, e comunica di essere oltretutto in attesa degli accertamenti compiuti anche dalla Procura della Repubblica di Varese;

il complesso scolastico di Via Gramsci risulta di notevole importanza in quanto ospita le scuole medie, l'Istituto tecnico industriale statale, il liceo scientifico « Maria Curie » e l'Istituto tecnico per ragionieri e geometri –:

come intenda intervenire per trovare soluzione al problema sopra esposto. (4-13193)

GIANMARCO MANCINI e FRAGASSI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

il quotidiano *la Repubblica* in data 7 aprile 1993 ha pubblicato una notizia

secondo la quale 1.300 alberghi toscani, relativi al comprensorio di Montecatini e della Val di Nievole, sarebbero stati collegati, via computer, con le centrali operative delle forze dell'ordine;

tale collegamento, che sostituisce l'attuale registrazione dell'identità dei clienti negli alberghi per mezzo delle tradizionali « schedine » – compilate a mano e poi consegnate per legge agli uffici della pubblica sicurezza – consentirà l'invio in tempo reale dei dati dei clienti per prevenire possibili infiltrazioni della malavita tra i turisti;

l'iniziativa è stata presa dal Comitato provinciale per l'ordine e la sicurezza pubblica e allargato agli amministratori locali e ai presidenti dell'associazione albergatori –:

se, a fronte della necessità di arginare l'infiltrazione mafiosa di cui è stata accertata la presenza nel territorio toscano, non si ritenga opportuno adottare lo stesso metodo anche nella Lucchesia, e soprattutto in Versilia, altra area della regione ad alta densità alberghiera e di cui la cronaca ha registrato una incipiente penetrazione della criminalità organizzata.

(4-13194)

SESTERO GIANOTTI, PRATESI, AZZOLINA, DOLINO e LARIZZA. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

il preliminare al Piano Regolatore di Torino, approvato dal Consiglio comunale, ha ricevuto circa 1200 Osservazioni da cittadini Torinesi;

il Commissario del comune di Torino ha correttamente comunicato di voler rinviare l'approvazione definitiva del Piano al Consiglio comunale che si eleggerà a giugno;

il 21 aprile il Commissario perderà i poteri del Consiglio: l'approvazione del Piano è possibile fino al 31 dicembre, quindi con nuovo Consiglio;

l'Assessore all'Urbanistica della regione Piemonte, cui spetta l'approvazione definitiva del Piano, è stato recentemente sostituito, perché sottoposto ad inchiesta giudiziaria;

i soggetti maggiormente interessati al Piano, perché proprietari di aree strategiche, sono la FIAT, l'IRI e le Ferrovie, tutti coinvolti in inchieste per corruzione;

associazioni di imprenditori e professionisti stanno, in questi ultimi giorni, svolgendo un'azione terroristica, utilizzando strumentalmente la necessità di posti di lavoro, per ottenere sul Piano Definitivo la firma del Commissario –:

se non ritenga di dover sostenere la decisione del Commissario di non procedere all'approvazione, sulla base della necessità che a varare il Piano Regolatore, determinante per il futuro di Torino, sia un'assemblea democraticamente eletta e non una decisione affrettata a poche ore dalla scadenza dei poteri affidatigli.

(4-13195)

DOSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che in data 5 aprile 1993 circa seicento rappresentanti della Polizia Stradale davano attuazione ad una manifestazione di massa per le vie principali del centro cittadino di Parma, ottenendo ampio riscontro sulle pagine di cronaca della *Gazzetta di Parma;*

che la manifestazione indetta dal Sindacato Autonomo di Polizia, ed alla presenza dei Segretari Nazionale e Regionale, con l'adesione di altre rappresentanze dei lavoratori, veniva, con divulgazione di stampato, motivata ufficialmente con:

che i dipendenti della Sezione Polizia Stradale di Parma, subiscono « da quattordici mesi soprusi ed intimidazioni di ogni genere da parte del Dirigente della

Sezione che ignora i diritti dei poliziotti riconosciuti dalla legge di riforma della Polizia »;

che si sono abbattuti i metodi intimidatori ed arroganti del Dirigente, « su tutto il personale ed in particolare sui rappresentanti sindacali che hanno subito trasferimenti e punizioni e sono stati sottoposti a gravosi turni di servizio non previsti dagli accordi sindacali »;

che il personale dipendente è stato « costretto a lasciare la Polizia perché ingiustamente trasferito in altra sede ed in altra specialità »;

che non vi è dubbio che « il clima di terrore instaurato dal Dirigente della Sezione ha finito per ripercuotersi negativamente sul morale di tutto il personale e, quindi, sulla produttività che è caduta verticalmente »;

che vi è « Il biasimo nei confronti del comportamento delle autorità provinciali della Polizia le quali non hanno saputo fare di meglio che prendersela con i rappresentanti sindacali invece di intervenire nelle sedi opportune per sanare una situazione che mette in cattiva luce tutta la Polizia operante sul territorio parmense »;

che vi è « L'attribuzione della maggiore responsabilità al Ministero dell'Interno che, seppur più volte informato, ha fatto numerose promesse mai mantenute »;

che « L'irresponsabile disattenzione e l'intimidatoria gestione del personale della Sezione Polistrada di Parma, ha demotivato gli operatori parmensi al punto da rendere inefficiente il loro servizio in favore della collettività »;

il grave danno sociale derivante da situazioni di tale natura;

che già la Lega Nord ha richiesto in questa sede chiarimenti e prese di posizione da parte del Governo attraverso le apposite strutture in ordine alla situazione sussistente da oltre un anno presso la Sezione Polizia Stradale di Parma, non ottenendo ad oggi alcuna replica –:

se sia al corrente dei fatti ed in quali canoni;

e contestualmente se intenda farsi parte attiva al fine di individuare i precisi contorni dell'intera vicenda;

se intenda adottare provvedimenti idonei a restituire credibilità ed efficacia alla struttura rigenerando fiducia tra gli operatori stessi. (4-13196)

DOSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso:

che a Strettara (MO), in pieno Appennino modenese, tra Pavullo e Pievepelago, prima l'amministrazione locale, poi l'ANAS, sono riuscite a creare una galleria in Appennino che non porta da nessuna parte;

che l'opera costata ben cinquantadue miliardi, doveva essere parte integrante della costruenda arteria « nuova Estense », interrotta nella costruzione dopo un primo tratto di circa cinquanta chilometri a partire dal capoluogo, e terminante nei pressi di Pavullo (MO);

che la sospenzione dei lavori derivata da problematiche insormontabili tali da lasciare incompiuto il progetto di comunicazione tra Modena e la Toscana, non inibisce la successiva attuazione della costosissima quanto inutile galleria;

che il progetto « nuova Estense » rientra negli atti di indagine sviluppati recentemente dalla Procura della Repubblica romana sui lavori ANAS, mentre pare non farvi parte la realizzazione della galleria;

la tematica è stata recentissimamente affrontata dalla stampa locale e nazionale, destando forte sdegno e preoccupazione tra la popolazione;

la contestuale necessità di elargire chiarezza ad oltranza da parte della pubblica amministrazione, ormai ridotta nella

stragrande maggioranza dei casi a semplice associazione di indagati per i fatti a tutti noti –:

se il Governo sia a conoscenza dei fatti sopra richiamati, ed in quali termini;

quali ulteriori procedure intenda avviare per conoscere i risvolti politici implicanti, ed in quali tempi;

come si intenda riparare il danno arrecato alla comunità interessata ed in quali forme. (4-13197)

MENGOLI, ZAMBON e FRASSON. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

domenica 18 aprile 1993 Giancarla Matteuzzi si è recata a votare presso il seggio n. 165 di Bologna ubicato nei locali dell'istituto E. Manfredi V.le Filopanti 3;

la Matteuzzi nata a Bologna nel 1946 è invalida per il 75 per cento agli arti inferiori per esiti di poliomielite, ma autosufficiente con tutori e stampelle;

il seggio n. 165 era ubicato al primo piano dell'edificio non servito da ascensore;

la Matteuzzi in possesso del certificato che attestava il suo grado di invalidità civile non poteva accedere ad un seggio situato al piano terra dello stesso edificio;

solo col certificato medico dell'ufficio d'igiene comunale l'interessata avrebbe potuto votare in altro seggio dello stesso plesso scolastico –:

quali iniziative il Ministro intende assumere per facilitare ad handicappati e disabili l'esercizio del diritto di voto. (4-13198)

MENGOLI, ZAMBON e FRASSON. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso che:

con decreto n. 533 del 31 ottobre 1992 del Ministero dell'interno si prevede che gli invalidi civili che abbiano un reddito superiore a lire 4.400.000 ed una invalidità tra il 74 ed il 99 per cento non hanno più diritto alle prestazioni economiche erogate dalle Prefetture;

Raggi Gabriele, nato a Bologna il 3 giugno 1941, in conseguenza dell'azione del forcipe, è handicappato, fin dalla nascita, di difficile classificazione, e attualmente gli è riconosciuta una invalidità del 74 per cento; è orfano e vive in casa di sua proprietà a Bologna (al 50 per cento) in comunità con altri due handicappati, sotto l'egida di « Solidarietà Famigliare » alla quale l'interessato ha dato in comodo d'uso gratuito l'altro 50 per cento della proprietà (Solidarietà Famigliare è una Cooperativa di Solidarietà Sociale); frequenta da 28 anni il Centro di Addestramento professionale per handicappati di Bologna, diretto da Don Aquilano, con presenze saltuarie in funzione dello stato psico-fisico del momento; è stato ricoverato due volte in strutture psichiatriche (nel 1985 e nel 1992) per forme depressive ed oligofreniche; tutti i mesi viene controllato dal S.I.M.A.P. della U.S.L. 29 di Bologna; ha un reddito complessivo lordo annuo inferiore a lire 15.000.000 che viene versato totalmente alla Cooperativa di Solidarietà Famigliare nella quale vive; avendo quindi un reddito lordo annuo superiore a lire 4.400.000, gli è stato tolto il sussidio della Prefettura di lire 366.000 mensili –:

se siano allo studio misure dirette, in situazioni analoghe a quella descritta, ad elevare il reddito lordo annuo che dia diritto al mantenimento del sussidio della Prefettura da lire 4.400.000 ad almeno lire 20.000.000 lordi annui, stante le forti spese di mantenimento che gli interessati e le rispettive famiglie debbono sostenere. (4-13199)

MENGOLI, ZAMBON e FRASSON. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il decreto del Presidente della Repubblica n. 1403 del 31 dicembre 1971 dà la

possibilità ai familiari che assistono a domicilio invalidi civili riconosciuti, di essere considerati prestatori di lavoro domestico e quindi autorizzati al versamento di contributi INPS per la costituzione di una futura pensione;

anche altre persone, con altri motivi, sono stati autorizzati ad effettuare versamenti volontari di contributi INPS;

i commi 1 e 2 dell'articolo 6 del decreto-legge 12 settembre 1983 n. 463 convertito con modificazioni dalla legge 11 novembre 1983 n. 638, concedevano l'integrazione al trattamento minimo delle pensioni a carico dell'assicurazione generale obbligatoria a tutti coloro che non raggiungevano limiti di reddito annui personali prestabiliti e varianti negli anni, non indiscriminatamente e quindi ma bensì soltanto a chi si trovasse in una reale condizione di bisogno;

il comma 1, paragrafo b, dell'articolo 4 del Decreto Legislativo del 30 dicembre 1992 n. 503 dice invece che l'integrazione dal 1° gennaio 1993 NON spetta ai soggetti che posseggono redditi cumulati con quelli del coniuge per un importo superiore a tre volte il trattamento minimo (in pratica lire 22.532.250);

è da ritenersi moralmente e giuridicamente ingiusto questo trattamento nei confronti di coloro che decisero di costituirsi una futura forma di reddito (o pensione) con delle regole che mai avrebbero supposto potessero venire cambiate, anche per la differenza di un solo giorno. La restrizione infatti non riguarda chi era già in pensione il 31 dicembre 1992 ma coloro che in pensione sono andati il 1° gennaio 1993;

è ancor più moralmente ingiusto nei confronti di coloro che hanno sacrificato la propria esistenza nell'assistenza di familiari invalidi od handicappati;

tutto ciò, unito anche ai problemi che la riforma sanitaria ha procurato e procura, può essere un chiaro invito a far sì che si creino situazioni familiari anomale (separazioni di legge ma non di fatto, unioni non legalizzate per le giovani coppie ed altro) –:

se siano allo studio urgenti correttivi diretti a modificare con equità quelle parti delle leggi di riordino del sistema previdenziale ed anche della disciplina in materia sanitaria varate nel dicembre scorso, che hanno creato forti squilibri in seno alle famiglie meno abbienti. (4-13200)

MENGOLI, ZAMBON e FRASSON. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed al Ministro della sanità.* — Per sapere – premesso che:

con il Decreto Legislativo recante « Riordino della disciplina in materia sanitaria » si è venuta a creare una situazione di enorme disagio per tutti i cittadini che debbono districarsi tra bollini, ticket ed autocertificazioni cercando di scegliere la forma non più conveniente ma meno punitiva;

è certo che questa situazione è particolarmente sentita da 10 milioni circa di pensionati sociali o di invalidità con non più di 16 milioni di reddito (22 se cumulati con il coniuge);

l'assegnazione dei « bollini », oltre ad aver sottoposto tutti gli interessati ad estenuanti *iter* burocratici, non è ritenuta sufficiente non solo dagli interessati medesimi, ma anche da larghi strati dell'opinione pubblica se si considera che gli aventi diritto sono nella quasi totalità persone anziane e quindi, per loro sfortuna, maggiormente soggetti a problemi di salute;

l'integrazione di ulteriori 8 bollini in caso di estremo bisogno rischia di creare ancor più confusione;

sull'integrazione promessa, ma della quale ancora nulla di ufficiale è stato scritto, sorgono anche non trascurabili perplessità da parte degli organi tecnici preposti alla questione poiché l'integrazione medesima non sarà distribuita con criteri semplici ed automatici a tutti coloro che

sono a basso reddito, ma invece soggetta a certificazione di medici specialistici i quali dovranno accertare l'effettiva necessità da parte dell'anziano di ricevere altri bollini;

si viene così a creare, tra l'altro, una spiacevole selezione all'interno della medesima categoria di bisognosi, con inevitabili e conseguenti malumori tra coloro che con queste selezioni vengono esclusi e possono pensare a chissà quali furberie e favoritismi –:

se il Governo non ritenga opportuno, giustificato ed equo, modificare urgentemente quelle parti delle leggi già in essere o in via di preparazione che possono andare incontro, almeno in parte, alle effettive necessità delle categorie più bisognose in attesa di una revisione radicale di tutta la materia. (4-13201)

TURRONI. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

da notizie apparse sulla stampa l'8 aprile 1993 si è appreso che a Cervia ed a Rimini, negli aeroporti di Pisignano e Miramare sono stati schierati 20 aerei da guerra, di cui 10 *Mirage* dell'esercito francese, per interventi a garanzia della « zona di non volo » in Bosnia, secondo un piano predisposto dalla NATO per conto dell'ONU;

poco più di un mese fa, in un incontro presso il Ministero della difesa, i sindaci di Cervia, Cesena e Rimini e alcuni dei verdi e del PDS furono informati delle decisioni del ministero relative alle due basi e della opposizione del Ministro ad un utilizzo degli aeroporti di Cervia e di Rimini per scopi legati al conflitto nella ex Jugoslavia;

al Ministro che comunicava l'intenzione di togliere i caccia da Rimini e di utilizzare solo la base di Cervia, fra l'altro, venne anche richiesta la verifica della possibilità della chiusura di Cervia. Il Ministro invece di mantenere coerentemente le posizioni assunte, senza comunicare alcunché ai sindaci del luogo ha deciso infine di consentire a Cervia il dispiegamento degli aerei sotto l'egida NATO;

senza entrare nel merito sul tipo di intervento, che comunque si manifesta tardivo e probabilmente di scarsa efficacia, la decisione di non informare la popolazione ha causato allarme e tensione sociale in una zona che costituisce il più grande bacino turistico d'Europa;

la popolazione romagnola, che pure è preoccupata per la presenza di armamenti e basi nel proprio territorio, è in grado di valutare con compostezza e maturità le situazioni che si possono essere venute a creare mentre il sindaco, che pure non è stato avvertito, riveste anche il ruolo di ufficiale di governo;

il 13 aprile 1993 durante la prima misssione aerea della NATO (denominata « Deny Fligth ») sui cieli della Bosnia per far rispettare la « no fly zone » un caccia *Mirage 2000* è precipitato, inabissandosi nell'Adriatico, per un guasto meccanico al motore –:

quali motivi abbiano indotto ad utilizzare come basi operative gli aeroporti di Cervia e di Pisignano;

per quale ragione non abbia ritenuto di dover informare le autorità del luogo, al fine di dissipare gli eventuali timori e le preoccupazioni per i rischi che potrebbero essere provocati dalla presenza degli armamenti NATO nel più grande bacino turistico d'Europa;

se vi siano state modifiche nelle determinazioni del Ministero della difesa in ordine al futuro delle due basi in parola;

se non ritenga di dover smantellare le due basi aeree di Cervia e di Rimini in considerazione dell'altissimo rischio e per l'incompatibilità chiaramente dimostrata con l'intera economia della zona;

quali garanzie intenda fornire alla popolazione locale per la salvaguardia della sua incolumità in considerazione del reale pericolo derivante dall'attività di volo degli aerei. (4-13202)

TURRONI e SCALIA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro per i beni culturali e ambientali.* — Per sapere – premesso:

che da notizie di stampa si apprende che il progetto di restauro per l'edificio demaniale ubicato nel centro storico della città di Roma in largo di Santa Susanna 13, palazzo che da oltre un secolo costituisce la sede del Servizio geologico nazionale, è stato approvato all'unanimità dalla commissione consiliare urbanistica del comune di Roma;

che il restauro è stato affidato « in concessione » alla società Italposte del gruppo Iritecna e finanziato dallo Stato per circa 54 miliardi;

che la convenzione relativa è stata stipulata il 5 luglio 1990 tra la Presidenza del Consiglio dei ministri e la società Italposte con l'utilizzo della « concessione di committenza »;

che in tale convenzione di concessione sembrano emergere numerose anomalie sia sotto l'aspetto amministrativo che giuridico contabile, in particolare:

sulla durata dei lavori;

sul meccanismo della revisione dei prezzi;

sul compenso spettante alla società Italposte pari al 15 per cento, mentre il gruppo Italstat pratica normalmente il 12,7 per cento;

sulle modalità di appalto dei lavori da parte della concessionaria;

sull'eseguità delle garanzie fidejussorie richieste alla Italposte;

sull'onere di locazione dei locali da utilizzare da parte del personale per il mantenimento del servizio;

la possibilità che il costo finale dell'opera risulti molto più elevato rispetto ai 54 miliardi preventivati;

che per lavori di ordinaria e straordinaria manutenzione del palazzo di largo Santa Susanna sono stati già sostenuti, a carico del bilancio dello Stato, ingenti oneri di spesa finalizzati a rendere l'edificio sempre più idoneo al normale svolgimento dei compiti d'istituto;

che, sulla base della normativa vigente, va verificata con controllo annuale la permanenza dei requisiti oggettivi e soggettivi che hanno consentito l'aggiudicazione dell'appalto alla società Italposte, anche alla luce dell'avvenuta incorporazione della Italposte nella Edil Pro;

che, mentre tangentopoli dilaga nel Paese sugli appalti, la pubblica opinione reclama nuove regole di trasparenza e rigore;

che proprio un sistema come la concessione, offrendo ampia discrezionalità all'Amministrazione, molto spesso in passato è stato fonte di illeciti e di tangenti –:

quali siano gli importi anticipati alla concessionaria ed in quale data siano stati erogati;

quando è previsto l'inizio dei lavori e, se del caso, non sia auspicabile la revoca della concessione;

tenuto conto che scopo fondamentale di questa costosa operazione è quello di dotare il Servizio geologico nazionale di una sede funzionale e moderna, e non certamente di dilapidare il pubblico denaro, se non si ritenga opportuno, sulla base del citato importo, effettuare una preventiva ed esauriente valutazione dei costi-benefici dell'operazione progettata e soprattutto verificare se i restauri, gli sbancamenti ed altre opere nel sottosuolo non compromettano una parte importante del tessuto storico del centro di Roma;

quali pareri siano stati espressi da parte del competente Ministero per i beni culturali ed ambientali in ordine agli interventi sul citato palazzo che essendo proprietà demaniale è *ope legis* sottoposto ai vincoli della legge n. 1089 del 1939.

(4-13203)

AUGUSTO BATTAGLIA. — *Al Ministro dell'interno e per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso che:

presso il Villaggio Pergolesi ad Aprilia (LT) sono ospitate in condizioni precarie cica 400 persone di nazionalità somala, rifugiate in Italia in conseguenza delle note e drammatiche vicende belliche che interessano quel Paese;

per dette persone le organizzazioni sindacali ed organismi locali di volontariato avevano elaborato un programma di inserimento per piccoli nuclei nei comuni circostanti, che aveva già portato all'inserimento di circa 150 persone;

tale programma è inspiegabilmente bloccato, privo di risorse, e si è arrivato persino al blocco dell'erogazione di energia elettrica negli stabili occupati, mentre non sono state prese in considerazione proposte tendenti a facilitare l'uso dei trasporti ferroviari e l'inserimento sociale e lavorativo dei rifugiati;

riunioni presso la Prefettura di Latina non hanno portato ad alcun risultato –:

quali iniziative urgenti intendano assumere per attivare tutti quegli interventi necessari a trovare una dislocazione più adeguata ai rifugiati somali in conformità con il progetto di inserimento iniziale, nonché per il rilascio delle iniziative previste dal programma regionale. (4-13204)

AUGUSTO BATTAGLIA e CACCAVARI. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

sono stati consegnati a tutti i pensionati invalidi civili modelli di dichiarazione di responsabilità per indicare la propria situazione reddituale;

in detti moduli si chiede di indicare redditi che sono normalmente esclusi dalle dichiarazioni in quanto soggetti a ritenuta alla fonte a titolo di imposta o a imposta sostitutiva come BOT, CCT, depositi bancari o alla specificazione di altri redditi esenti;

si tratta di moduli di difficile compilazione ed oltretutto superflui in quanto i cittadini italiani, e tali gli invalidi devono essere considerati anche dal Governo, hanno tutti un codice fiscale e compilano il modello 740, e pertanto l'amministrazione dello Stato è già in possesso di tutti i dati richiesti e non può, ai sensi della legge 241, nuovamente richiederli;

ritenendo inaccettabile un atteggiamento di fiscalità che meglio si adatterebbe agli evasori fiscali e che pare sproporzionato per pensionati a lire trecentomila al mese –:

se il Ministro non ritenga opportuno bloccare tale procedura che sta creando tra gli invalidi disagio e preoccupazione;

se risponda a verità la notizia che il Ministero degli Interni intenda modificare in senso restrittivo la normativa vigente, imponendo limiti di reddito per le indennità di accompagnamento che la legge riconosce al titolo della minorazione. (4-13205)

BOATO. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

prima dell'entrata in vigore del nuovo Codice della strada, con decreto legislativo del 30 aprile 1992, n. 285 e del successivo decreto del Presidente della Repubblica del 16 dicembre 1992, n. 495, riguardante il regolamento di esecuzione e di attuazione del nuovo Codice della strada, tutta una serie di veicoli erano esentati dal pagamento del pedaggio autostradale, tra questi:

1) autoveicoli e motoveicoli targati POLIZIA;

2) E.I. (Carabinieri);

3) G.d.F. (Guardia di Finanza);

4) V.F. (Vigili del fuoco), nonché quelli targati TN e BZ in dotazione del Corpo Permanente dei Vigili del Fuoco delle province autonome di Trento e Bolzano;

5) C.F.S. (Corpo Forestale dello Stato), A.d.C. (Agenti di Custodia, ora Polizia Penitenziaria);

6) autoambulanze di Enti Assistenziali a carattere pubblico, comprese le autoambulanze militari e della C.R.I. (Croce Rossa Italiana);

7) autoveicoli dell'A.N.A.S (Azienda Nazionale Autonoma Strade), oltre ad alcune categorie di funzionari addetti all'A.N.A.S;

8) Ministero dei Lavori Pubblici, Genio Civile, Ispettorato della Motorizzazione, Ministero dell'Interno (Polizia Stradale);

da quando è entrato in vigore il nuovo Codice della strada, la materia riguardante i pedaggi è stata modificata nella parte 6ª – Circolazione sulle autostrade (articoli 175-176 Codice della strada) – con l'articolo 373 (articolo 176 Cod. Str.) che stabilisce quanto segue:

« al pagamento del pedaggio, quando esso è dovuto, e degli oneri di accertamento previsti dall'articolo 372 sono obbligati solidalmente sia il conducente che il proprietario del veicolo. Per il recupero degli importi dovuti all'ente proprietario dell'autostrada si applicano le norme del Testo Unico approvato con Regio Decreto 14 aprile 1910, n. 639 e successive integrazioni e modificazioni.

Sono esentati dal pagamento del pedaggio:

*a)* i veicoli della Polizia di Stato targati « Polizia » e dell'A.N.A.S. muniti di segni contraddistintivi;

*b)* i veicoli dell'Arma dei Carabinieri con targa E.I. muniti di libretto di circolazione del Ministero della Difesa con annotazione di carico all'Arma dei Carabinieri;

*c)* le autoambulanze con targa C.R.I;

*d)* i veicoli con targa V.F;

*e)* i veicoli con targa G.d.F;

*f)* i veicoli con targa C.F.S.;

*g)* i veicoli delle Forze Armate adibiti a soccorso (autoambulanze, autosoccorso, ecc.) nell'espletamento dello specifico servizio al seguito di autocolonne);

*h)* i veicoli delle Forze armate negli interventi di emergenza e in occasione di pubbliche calamità;

*i)* i veicoli dei funzionari del Ministero dell'Interno, dell'A.N.A.S., della Direzione generale della MCTC, dell'Ispettorato generale per la circolazione e la sicurezza stradale, del Ministero dei Lavori pubblici, autorizzati al servizio di polizia stradale »;

ne consegue che ora le autoambulanze di Enti Assistenziali a carattere pubblico (veicoli di soccorso del 118-Trentino Emergenza diretto dalla USL di Trento Valle dell'Adige, della Croce Bianca ed analoghe) ed i veicoli del Corpo Permanente (e Volontario) dei Vigili del Fuoco delle province autonome di Trento e Bolzano (targate TN e BZ) devono pagare il relativo pedaggio;

è necessario sottolineare che detta disposizione legislativa e regolamentare comporta ulteriori aggravi di spese a queste Associazioni e/o Enti che operano per la maggior parte gratuitamente e con un forte apporto di personale volontario –:

1) se il Governo non ritenga necessario intraprendere le opportune iniziative per fare modificare le disposizioni contemplate dall'articolo 373 del decreto del Presidente della Repubblica 16 dicembre 1992, n. 495;

2) se il Governo non ritenga utile attivarsi nei riguardi della Società autostradale del Brennero (A 22) affinché sia comunque garantita l'esenzione dal pedaggio autostradale ai veicoli di soccorso ed antincendio sprovvisti di targa C.R.I. o V.F. (4-13206)

PERINEI e COLAIANNI. — *Al Ministro per i beni culturali e ambientali.* — Per conoscere – premesso che:

il Ministero per i Beni Culturali e Ambientali – Ufficio Centrale per i Beni A.A.A.A.S. – in data 10 aprile 1991, con

contratto di compravendita ha acquistato dagli eredi Jatta, per un importo di circa 14 miliardi di lire, la collezione vascolare denominata « Museo Jatta », allocata nell'omonimo Palazzo sito nel comune di Ruvo di Puglia (Ba);

qualificati studiosi asseriscono che la straordinarietà della collezione consiste, oltre che nel pur notevole pregio dei singoli reperti, nell'attuale collocazione museale e la stessa Soprintendenza Archeologica della Puglia, condividendo tale valutazione sottolinea l'opportunità che si avvii sollecitamente la procedura di acquisto del Palazzo Jatta al fine di non interrompere l'azione di tutela e di valorizzazione avviata con l'acquisto della collezione vascolare che solo nello stesso Palazzo di famiglia potrà trovare una sistemazione adeguata dal punto di vista culturale;

è in corso di stipula una convenzione tra l'Amministrazione per i Beni Culturali e Ambientali e l'Amministrazione comunale di Ruvo di Puglia per l'apertura ed il funzionamento del Museo Jatta, convenzione con la quale l'Amministrazione comunale si è impegnata ad integrare il personale di custodia della Soprintendenza con tre unità di personale;

il comune di Ruvo di Puglia, non disponendo di personale idoneo, intende privatizzare tale servizio attribuendo allo stesso oltre che i compiti di custodia, « soprattutto » competenze di promozione turistica e di gestione diretta di attività commerciali connesse all'attività culturale del museo;

il gruppo consiliare del P.D.S. del comune di Ruvo di Puglia ha già provveduto ad evidenziare alcune perplessità circa la validità ed opportunità di detta operazione con propria nota del 3 aprile 1993 inviata a mezzo fax al Ministero per i Beni A.A.A.A.S. – Divisione IV -, alla Soprintendenza Archeologica della Puglia ed al Sindaco del comune di Ruvo di Puglia –:

quali iniziative si intendano avviare per concretizzare l'acquisto della sede ove è attualmente allocata la collezione vascolare, portando così a compimento una corretta operazione culturale;

se non ritenga opportuno che la Soprintendenza gestisca direttamente e complessivamente il museo, anche avvalendosi delle procedure previste dalla legge 14 gennaio 1993 n. 4, al fine di garantire una più corretta ed efficace azione di tutela e valorizzazione del museo stesso. (4-13207)

POLI BORTONE. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso:

che il consiglio comunale di Gallipoli è stato sciolto per mafia con decreto del 1° ottobre 1991;

che a norma dell'articolo 1, comma 3 della legge n. 221 del 1991 il suddetto comune non potrebbe rientrare nella tornata elettorale del 6 giugno prossimo, a causa di una restrittiva interpretazione della citata legge n. 221, non essendo trascorsi esattamente i 18 mesi previsti dalla legge;

che, comunque, interesse prevalente deve esser considerato quello dei cittadini che debbono esser posti in condizione di avere un governo della città democraticamente eletto e secondo la nuova legge sulla elezione dei sindaci –:

se non ritenga di dover inserire nell'elenco dei comuni soggetti a rinnovo del consiglio nella tornata del 6 giugno anche il comune di Gallipoli (Lecce). (4-13208)

LUCARELLI. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

il cambio favorevole della nostra moneta fa prevedere un crescente afflusso di turisti stranieri nel nostro Paese;

ciò consente (e nello stesso tempo impone) di valorizzare finalmente il nostro immenso patrimonio culturale, che costituisce senz'altro il motivo più caratterizzante dell'offerta turistica italiana;

*i prodromi di un consistente aumento* di visitatori si sono registrati nei giorni delle recenti festività pasquali, quando – grazie anche all'apertura straordinaria – nei musei e nei siti archeologici si è verificato un incremento di presenze pari quasi al 50 per cento rispetto alla Pasqua dell'anno precedente;

tali benefici, però, non si sono potuti avvertire nella stessa misura nelle zone archeologiche più importanti della provincia di Napoli, dal momento che gli scavi di Pompei ed Ercolano sono rimasti chiusi al pubblico il 12 aprile per timore di un'invasione non controllabile di persone, mentre per i Campi Flegrei – malgrado gli sforzi della Sovrintendeza competente – manca una gestione unitaria dei resti antiche e, di conseguenza, un'adeguata promozione –:

quale politica il Ministro intenda adottare per la salvaguardia e la valorizzazione dell'immenso patrimonio culturale della provincia di Napoli;

le cause della chiusura degli scavi di Pompei ed Ercolano nei giorni di Pasqua e se esse non fossero superabili attraverso la collaborazione delle autorità locali;

se ritenga di intraprendere iniziative, anche di carattere straordinario, per la tutela e la valorizzazione dei giacimenti culturali presenti nei Campi Flegrei. (4-13209)

TEALDI. — *Al Ministro delle finanze.* — Per conoscere – premesso:

che la *Gazzetta ufficiale* del 30 settembre 1991 ha pubblicato le tariffe di estimo delle unità immobiliari;

che – come è noto – tali tariffe hanno sollevato generali proteste per evidenti gravissime sperequazioni di valutazione fra un comune e l'altro dovute ad omesse od incomplete valutazioni dei redditi da accertare;

che merita particolare attenzione la situazione emersa nel comune di Saluzzo dove è coltura prevalente la frutticoltura;

che – infatti – gli estimi catastali previsti per tale comune sono esageratamente superiori a quelli di altri comuni in analoghe situazioni in Piemonte (in provincia di Torino: S. Mauro Torinese, Bricherasio – in provincia di Alessandria: Serravalle Scrivia, Greminasco, Arquata Scrivia – in provincia di Novara: Novara, Verbania, Viguzzolo, Tortona – in provincia di Asti: S. Damiano d'Asti – in provincia di Vercelli: Vercelli, Gattinara, Dorzano) e in altre regioni (in provincia di Verona: Verona, Ronco all'Adige – in provincia di Forlì: Forlì, Cesena – in provincia di Ferrara: Ferrara, Cento, Formignana, Masi Torello, Voghiera);

che nei citati comuni con ben più modesti redditi catastali gli operatori frutticoli sostengono le stesse spese di produzione di Saluzzo e ricavano gli stessi importi per il prodotto ottenuto mentre – per contro – dovranno versare tributi ben minori di quelli dovuti dai contribuenti del comune di Saluzzo e aree circostanti;

che ciò crea una ingiustificata ed intollerabile sperequazione che ha sollevato vibrate proteste da parte degli operatori agricoli interessati e delle amministrazioni comunali che li rappresentano le quali hanno convocato appositamente il consiglio comunale approvando a voti unanimi ordini del giorno per richiamare l'attenzione del Ministro competente sulla sperequazione inopportuna sopra rappresentata;

che, pertanto, appare indispensabile procedere a una revisione di tali redditi catastali –:

quali provvedimenti intenda adottare il Ministro adito per ottenere la rettifica dei valori di estimo tanto errati. (4-13210)

TEALDI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che l'articolo 11 della legge 2 agosto 1990, n. 233, ha previsto la possibilità per i coltivatori diretti iscritti negli elenchi nominativi SCAU dal 1957 al 1961 che non avevano versato i contributi minimi (IVS) in tutto o in parte, di riscattare i contributi mancanti per tali periodi agli effetti pensionistici;

che, di conseguenza, numerosi soggetti si sono avvalsi di tale norma per chiedere il riscatto dei predetti contributi loro mancanti e, debitamente autorizzati, hanno versato gli importi cospicui determinati dall'INPS per acquisire il diritto alla pensione;

che però, successivamente, è stato emanato il decreto-legge 18 settembre 1992, n. 384, convertito in legge 14 novembre 1992, n. 438, che ha bloccato le liquidazioni delle pensioni aventi decorrenza compresa tra il 19 settembre 1992 e il 31 dicembre 1993;

che in molti casi coloro che si sono avvalsi delle norme predette hanno versato i contributi per il riscatto ritenendo di poter essere collocati in pensione nel periodo intercorrente tra il 19 settembre 1992 e il 31 dicembre 1993 mentre per l'intervenuto blocco, saranno collocati in pensione solo dopo il 1° gennaio 1994 quando cioè avranno maturato anche senza riscatto totale o parziale, il diritto alla pensione per vecchiaia o anzianità;

che di conseguenza gli stessi percepiranno la pensione pur avendo inutilmente versato i contributi previsti dalla citata legge n. 233 del 1990;

che ciò appare penalizzante per coloro che hanno effettuato il pagamento totale del riscatto prima dell'emanazione del decreto-legge n. 384, sopra citato, in quanto otterranno la pensione con quindici mesi di ritardo con un minor introito di circa dieci milioni, quando si tratta di pensione liquidata al minimo;

che appare pertanto necessario prevedere il rimborso delle somme versate in più per i casi sopra menzionati –:

quali provvedimenti intenda adottare il Ministro adito per porre rimedio a quanto sopra evidenziato. (4-13211)

TEALDI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che in base alle leggi vigenti fino al 31 dicembre 1992 per coloro che avessero raggiunto l'età pensionabile con una documentata dimostrazione di aver versato almeno 15 anni di contributi veniva concessa la pensione di vecchiaia tenendo conto dei soli redditi singoli e propri agli effetti della integrazione al trattamento minimo;

che successivamente è stato emanato il decreto legislativo n. 503 del 30 dicembre 1992 il quale agli effetti della integrazione al trattamento minimo, prevede invece il cumulo dei redditi del richiedente con quelli del coniuge;

che, di conseguenza, ciò ha comportato in sede applicativa, la riduzione delle pensioni eliminando l'assegno integrativo poiché il reddito cumulato col coniuge supera i limiti previsti dalla legge 12 giugno 1984 n. 222 e legge 11 novembre 1983, n. 638;

che ciò crea disparità di trattamento fra quanti hanno avuto la concessione della pensione prima del 1° gennaio 1993 e quanti invece l'hanno ottenuta dopo l'entrata in vigore del citato decreto legislativo –:

se non ritenga il Ministro adito di proporre il necessario provvedimento di modifica onde superare le attuali inaccettabili sperequazioni. (4-13212)

TEALDI, PAGANELLI e DELFINO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso:

che nel Piemonte sud-occidentale e, segnatamente, nella Provincia di Cuneo si sono verificate abbondanti ed eccezionali nevicate nel periodo 28 febbraio-2 marzo

1993 che hanno assunto il carattere di autentiche calamità naturali;

che per l'eccezionalità del fenomeno, molte aziende sono state costrette a chiudere le loro attività con conseguente licenziamento dei propri dipendenti accentuando così il fenomeno della disoccupazione specie nei territori montani;

che, infatti, le nevicate stesse hanno provocato numerosi cedimenti e crolli di capannoni agricoli, industriali ed artigianali con conseguenti necessità di sgomberi e difficoltà a volte insormontabili, per il ripristino dei manufatti e la sollecita ripresa delle attività;

che parrebbe, pertanto, opportuno intervenire per ottenere:

*a)* la Cassa integrazione per i dipendenti delle aziende colpite e la fiscalizzazione degli oneri sociali;

*b)* i finanziamenti straordinari per gli specifici programmi di investimenti;

*c)* la sospensione del contributo diretto lavorativo (Minimum tax) per i comuni colpiti;

*d)* immediate contribuzioni agli Enti locali per il finanziamento dei servizi d'emergenza straordinari sostenuti –:

quali investimenti si intendano adottare per porre rimedio con immediati interventi a quanto sopra succintamente segnalato. (4-13213)

CICCIOMESSERE. — *Al Ministro degli affari esteri, della difesa e del commercio con l'estero.* — Per sapere – premesso che:

nella risposta all'interrogazione 4-02871, il Ministro della Difesa ammette che per le Filippine è stata autorizzata l'assistenza tecnica su velivoli già forniti in precedenza, rispettivamente gli SF-260 e S-211 della società Agusta;

nella stessa risposta il Ministro della Difesa ammette che verso le Filippine non sussistono controindicazioni di ordine politico per l'erogazione di tali prestazioni –:

se non ritengano che anche le autorizzazioni all'assistenza tecnica di velivoli da guerra verso paesi « a rischio » debbano essere comunque negate;

quali iniziative intendano assumere per realizzare controlli più seri e più severi in ordine all'esportazione di armi verso paesi « a rischio » e in generale verso quei paesi, come le Filippine, dove sono registrate consistenti violazioni dei diritti umani, come denunciato nei vari rapporti di Amnesty International. (4-13214)

TEALDI, PAGANELLI e DELFINO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per conoscere – premesso che:

ai sensi degli articoli 268, 269 e 170 del testo unico per la finanza locale approvato con regio decreto 14 settembre 1931, n. 1175, e successive modificazioni, è prevista l'applicazione della tassa raccolta e smaltimento dei rifiuti solidi urbani in favore dei comuni che hanno istituito il relativo servizio;

con risoluzione ministeriale numero 4/3716 del 18 marzo 1981 della direzione generale della finanza locale è stato precisato che la tassa in questione è dovuta quando il servizio di raccolta sia stato istituito e venga regolarmente svolto;

si apre sovente contenzioso per l'irregolarità nello svolgimento del servizio di raccolta;

infatti, spesso i comuni delimitano la zona nella quale il servizio di raccolta è istituito, ma dotano la zona stessa dei cassonetti di raccolta in misura insufficiente o a distanza ecessiva dalle case di abitazione incluse nella zona in cui si effettua il servizio (a volte oltre a mille metri di distanza lineare);

ciò giustamente fa ritenere – da parte dei contribuenti – che il servizio non venga regolarmente svolto e ciò nel silenzio della maggior parte dei regolamenti comunali che disciplinano la raccolta dei rifiuti e non precisano affatto le distanze di posizionamento dei cassonetti di raccolta;

appare, pertanto, necessario indicare con apposita circolare ministeriale a quale distanza massima dalle case di abitazione deve essere collocato il cassonetto di raccolta ai fini della regolarità del servizio e ciò per evitare inopportuni contenziosi –:

quali provvedimenti intenda adottare il Ministro interrogato per far chiarezza in ordine alla questione succintamente sopra descritta. (4-13215)

TEALDI, PAGANELLI e DELFINO. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso:

che i collegamenti ferroviari tra le città di Cuneo e Torino, capoluogo regionale, sede di università, uffici amministrativi e di importanti aziende e attività terziarie sono assai utilizzati dai pendolari che ogni giorno devono raggiungere la metropoli piemontese e il suo hinterland sia per motivi di lavoro che per motivi di studio;

che l'azienda ferroviaria sulla linea Cuneo-Torino recentemente ha affrontato cospicue spese di investimento (rifacimento della massicciata, della linea aerea di alimentazione, controllo automatico della tratta Limone-Cuneo-Fossano progressiva eliminazione di passaggi a livello mediante sovrapassi, quadruplicamento della tratta Trofarello-Lingotto ... ecc.) mentre i tempi di percorrenza sono rimasti inalterati se non, addirittura peggiorati;

che per alcuni convogli sono stati via via inserite fermate originariamente non previste penalizzando così i pendolari cuneesi studenti e lavoratori;

che, pertanto si appalesa l'opportunità di una radicale revisione degli orari di percorso per rendere più rapidi i collegamenti tra Cuneo e Torino;

che appare necessario a tal fine il determinante intervento ministeriale –:

quali urgenti provvedimenti ed interventi ritiene utili il ministro adito per risolvere il problema succintamente indicato in premessa. (4-13216)

TEALDI, PAGANELLI e DELFINO. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per conoscere – premesso:

che l'azienda Ferrovie dello Stato da qualche tempo adotta provvedimenti punitivi per la provincia di Cuneo e, segnatamente per la linea Cuneo-Ventimiglia;

che infatti sono state sospese su detta linea alcune corse nei giorni festivi (sostituite da pullman) e disabilitati ben sette scali merci sulla linea stessa;

che tale disimpegno delle Ferrovie è stato inoltre accentuato dalla notizia della regionalizzazione delle tariffe adeguandole a quelle praticate dai servizi su gomma con soppressione dal 1° aprile 1993 della tariffa « 22 » per abbonamenti ridotti già previsti e praticati per studenti ed operai;

che un siffatto provvedimento non corrisponde ai propositi di acquisire maggiore utenza ma contribuisce a disincentivare l'uso dei trasporti su rotaia anche tenendo conto dei minori servizi resi;

che inoltre tale comportamento non tiene conto della necessità di inserire validamente il Piemonte meridionale nell'Europa comunitaria per il quale inserimento si stanno attivando invece con gravi sacrifici gli Enti Locali per la realizzazione di importanti infrastrutture nel settore della viabilità;

che appaiono carenti i necessari contatti tra l'Azienda ferroviaria e le realtà politiche amministrative locali –:

quali provvedimenti intende adottare il Ministro adito per porre rimedio a quanto succintamente sopra lamentato. (4-13217)

TEALDI, PAGANELLI e DELFINO. — *Al Ministro delle finanze.* — Per sapere – premesso:

che il decreto del Presidente del Consiglio dei ministri 18 dicembre 1992 regola la: « Determinazione del contributo diretto lavorativo per il periodo di imposta relativo al 1992, a norma dell'articolo 11, comma 5, del decreto-legge 2 marzo 1989, n. 69, convertito, con modificazioni, dalla legge 27 aprile 1989, n. 154 »;

che l'articolo 3 del sopracitato Decreto, norma il computo del contributo diretto lavorativo facendo riferimento alla tabella A allegata al Decreto stesso prevedendo diversa casistica per la moltiplicazione dei valori indicati in tale tabella;

che il punto 4 ancora del precitato Decreto recita testualmente: « Ai fini dell'applicazione delle disposizioni di cui ai commi 1 e 2 si considerano svolte in aree montane e rurali le attività esercitate in comuni con un numero di abitanti non superiore a 20.000 e quelle del commercio ambulante; si considerano svolte in aree urbane minori le attività esercitate in Comuni con un numero di abitanti maggiore di 20.000 e minore di 100.000. Con Decreto del Ministro delle Finanze verranno individuate le aree di particolare rilievo urbane ed extraurbane in regioni diverse da quelle di cui alla tabella B » allegata al Decreto stesso;

che, pertanto, il Ministro delle Finanze dovrà individuare le aree di particolare rilievo urbano ed extraurbano in regioni diverse da quelle indicate nella tabella B sopracitata;

che tale circostanza preoccupa giustamente gli operatori economici e gli Amministratori dei Comuni considerati turistici che però versano in condizioni di grande disagio per effetto del ridimensionamento dell'attività turistica attribuibile alla crisi economica in atto da qualche anno che ha reso l'utenza immobiliare-turistica in notevole regresso quantitativo e qualitativo;

che una paventata errata valutazione potrebbe peggiorare la situazione di tali Comuni e penalizzare gravemente il rilancio dell'attività per il quale vengono compiuti sforzi notevoli pubblici e privati –:

quali criteri utilizza il Ministro adito per individuare le aree di cui sopra tenendo conto dell'accertabile degrado di molte zone a vocazione turistica colpite però – come sopra detto – da ristagno del mercato degli immobili e con le attività turistiche in costante progressiva riduzione. (4-13218)

COLAIANNI, PERINEI, TRUPIA ABATE e POLLASTRINI MODIANO.— *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per conoscere – premesso che:

le indennità retributive – poiché fanno parte del reddito (come dimostra l'esplicita affermazione dell'Avvocatura dello Stato, ripresa dal Dipartmento Funzione Pubblica della Presidenza del Consiglio) – devono essere devolute, per diritto, nel corso dei congedi obbligatori;

a questa norma si sottrae il Ministero di Grazia e Giustizia che si è più volte rifiutato di retribuire con la indennità giudiziaria le impiegate, dipendenti del Ministero medesimo, in congedo per maternità;

va considerato che l'indennità giudiziaria rappresenta circa il venticinque per cento del reddito netto per tali lavoratrici, per cui, attualmente, negli Uffici giudiziari si è determinata una vera e propria « sindrome di maternità », per cui la scelta libera e consapevole delle donne viene gravemente condizionata dalla decurtazione – per almeno cinque mesi – dello stipendio;

molte impiegate, inoltre, sono detentrici dell'unico reddito fisso e garantito nel proprio nucleo familiare, in quanto coniugate con *ex* operai ora in cassa integrazione, con piccoli commercianti colpiti dalla crisi economica, con rappresentanti di aziende in via di chiusura definitiva;

pertanto, la decisione del Ministero di Grazia e Giustizia – impugnata, tra l'altro, dalle stesse lavoratrici-madri che richie-

dono il rimborso pregresso, si rivela fortemente discriminatoria e anticostituzionale –:

se non ritenga che coloro le quali, tra il 1991 e il 1993, non abbiano percepito le indennità giudiziarie quando erano in congedo per maternità, debbano immediatamente essere rimborsate;

se non ritenga, altresì, di dover rassicurare le impiegate dipendenti del Ministero di Grazia e Giustizia che, a partire da oggi, la propria maternità non comporterà assolutamente la gravosa decurtazione del proprio stipendio. (4-13219)

TRABACCHINI. — *Ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato, del lavoro e previdenza sociale, dell'interno e dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

è in atto nel comune di Fiumicino (Roma) una vertenza dei lavoratori della azienda Euroresina che presidiando lo stabilimento si oppongono al pratico tentativo della direzione aziendale di smantellare l'impianto produttivo;

la società Euroresina circa due anni fa pervenne alla acquisizione dello stabilimento dopo la messa in liquidazione della precedente gestione CPL *ex* CHRIS-CRAFT per la cifra iniziale di 300 milioni circa sottoscrivendo un accordo alla regione Lazio, in data 27 luglio 1990, che prevedeva la riammissione dei 53 lavoratori impiegati e il ricorso alla CIGS per i tre anni occorrenti alla ristrutturazione dell'Azienda;

sulla base di tale accordo fu possibile all'Euroresina accedere al contributo regionale di circa 800 milioni concesso con la Delibera regionale n. 10669 del 18 dicembre 1990;

sempre sulla base dell'accordo la Giunta regionale, con Delibera n. 12294 del 23 dicembre 1991, concedeva all'Euroresina il contributo di 108 milioni per un corso di formazione professionale che riguardava 15 lavoratori;

è da tenere presente che lo stabilimento in questione ha occupato fino a 500 lavoratori e che aveva, ed ha, una capacità produttiva notevole;

la società Euroresina, specializzata nella fabbricazione di imbarcazioni a motore, è presieduta dalla signora Silvia Fausti, figlia dell'onorevole Fausti, ma tutte le trattative e le vicende che si sono susseguite sono state seguite direttamente dall'On. Franco Fausti che non appare peraltro affatto tra i titolari dell'Azienda;

la suddetta Euroresina, lungi dal rispettare gli accordi sottoscritti con le organizzazioni sindacali, ha fatto deperire volutamente la produzione rifiutando anche commesse già acquisite e con lettera del 1° febbraio 1993 e del 4 marzo 1993 ha proceduto al licenziamento di 35 lavoratori;

nel corso della vertenza i tentativi di giungere ad un accordo sindacale sono stati vanificati dal rigido e inspiegabile comportamento negativo della Euroresina, che ha rifiutato di chiedere la proroga della CIGS e che, con comportamenti antisindacali, ha cercato di dividere i lavoratori in tutti i modi;

negli incontri e nei contatti avuti dall'On. Franco Fausti con i lavoratori si sarebbe fatto più volte riferimento ad un accordo possibile se fossero usciti dalla produzione alcuni dirigenti sindacali, e l'On. Fausti non avrebbe mancato di adoperarsi, secondo quanto risulta all'interrogante, affinché intervenissero le Forze dell'ordine nello stabilimento, forse messe a disposizione dalle autorità con una immediatezza e con uno spiegamento che l'interrogante considera quanto meno discutibile, visto lo svolgimento della vertenza che non ha dato adito ad alcuna forzatura o a particolari drammatizzazioni da parte dei lavoratori. L'On. Fausti avrebbe davanti ai cancelli addirittura dichiarato, secondo quanto risulta all'interrogante, che piuttosto che far rientrare i lavoratori in fabbrica avrebbe dato fuoco allo stabilimento;

è da aggiungere che il corso di F.P. finanziato dalla regione non sarebbe stato affatto effettuato, mentre i lavoratori interessati sarebbero stati utilizzati per la normale attività produttiva;

si tenga, infine, presente che lo stabilimento Euroresina sorge su una vasta area demaniale, concessa per attività produttive a cifra irrisoria, tra il Tevere e il mare e si presta a possibili riusi prettamente commerciali e speculativi –:

se i Ministri interessati sono a conoscenza di quanto sopra;

se il Ministro della Marina Mercantile non ritenga doveroso intervenire nella vicenda in quanto proprietario effettivo dell'area e dello stabilimento, in modo da impedire qualsiasi intento speculativo;

se il Ministro dell'interno non ritenga di appurare se vi è stato nella vicenda Euroresina un uso improprio delle Forze dell'ordine, di verificare le ragioni dell'intervento dell'On. Franco Fausti e di effettuare, un'indagine, sui fondi erogati dalla regione;

se i Ministri dell'Industria e del Lavoro non intendano verificare l'uso che è stato fatto dalla Società Euroresina dei finanziamenti ad essa concessi a qualsiasi titolo, e comunque condizionati a uno sviluppo e a una continuità produttiva e occupazionale;

se il Ministro del Lavoro non ritenga di riconvocare le parti, le OO.SS., Società Euroresina e regione Lazio per verificare tutte le possibilità per la sopravvivenza di un impianto produttivo la cui difficoltà non è certo imputabile ai lavoratori o alla mancanza di commesse. (4-13220)

MARENCO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, del lavoro e previdenza sociale, della marina mercantile e di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

risulta all'interrogante che è stato trasmesso al Procuratore Generale della Repubblica di Genova, a data 29 marzo 1993, un esposto contenente gravi contestazioni di illeciti ad amministratori pubblici, e nel quale, tra l'altro, si paventano « spiacevoli conseguenze » in cui potrebbero incorrere gli estensori – che parrebbero conoscere da vicino certi meccanismi – « sia per l'arroganza del Consorzio Autonomo del Porto, sia per il clima di intimidazione che tuttora regna in porto, in virtù della riserva di lavoro di cui continua a godere la CULMV-Compagnia unica Lavoratori Merci Varie nonostante la sentenza della Corte di Giustizia della CEE e i pronunciamenti della comunità Europea. Il tutto col beneplacito del suddetto Consorzio del Porto e del Ministero della Marina Mercantile »;

nell'esposto si evidenzia come della veridicità delle affermazioni ci si può rendere facilmente conto, ottenendo i necessari riscontri con semplici accertamenti, e si pone un parallelismo tra porto di Genova e quanto successo nel porto di Trieste – viene a tal proposito allegato un articolo de *La Repubblica* in data 11 marzo 1993 che ne riassume i fatti – dove sono stati arrestati il Console della Compagnia unica e il Oirettore del Consorzio, insieme a loro collaboratori, per truffa aggravata avente ad oggetto un trattamento economico privilegiato dei soci della locale Compagnia unica rispetto gli altri lavoratori portuali;

gli estensori dell'esposto ravvisano anche nel porto di Genova gli estremi per analoghi provvedimenti ascrivendone le ragioni al fatto che il Consorzio Autonomo del Porto, Ente Pubblico – i cui dirigenti rischierebbero non solo l'imputazione di truffa aggravata ma anche quella di abuso in atti d'ufficio, se venisse provata l'illecità dei loro provvedimenti – continuerà a pagare alla Compagnia unica i gravosissimi importi forfettari, « fuori mercato » e ingiustificati, dell'accordo della fine del 1990, i quali fissati « provvisoriamente per tre mesi » per avere il tempo di affrontare e definire l'argomento, sono tuttora in vigore dopo quasi tre anni;

tale accordo è indicato nell'esposto come una delle cause dei cronici, elevatis-

simi, disavanzi del Consorzio, che continua a riconoscere tali somme esclusivamente per « non urtare i portuali », così consentendo loro di mantenere il monopolio escludendo qualsiasi altro lavoratore;

gli estensori sottolineano opportunamente come questa situazione si traduca, in questo momento di grave crisi economica, in una offesa agli altri cittadini, molti dei quali disoccupati; in una perdita di competitività e di lavoro per Genova; in una perdita secca per il Consorzio Autonomo del Porto di diverse decine di migliaia di lire per ogni contenitore imbarcato o sbarcato a Genova, perdita che, in quanto ripianata dall'erario;

si configurerebbe in pratica una forma illecita di finanziamento, con distrazione di fondi pubblici a vantaggio di una « casta » di privilegiati, mantenuta tale in spregio alle disposizioni comunitarie, col beneplacito del Consorzio e del Ministero della Marina Mercantile;

non appare dunque strano che il *deficit* degli ultimi anni degli Enti Portuali di Genova, Venezia, Savona e Trieste superi i 1200 miliardi;

tra l'altro si evidenzia nell'esposto come una così scandalosa situazione non appaia tale per i « burocrati del Ministero che durante il periodo di servizio presso l'Amministrazione sono, di massima, i migliori difensori e consiglieri occulti delle Compagnie, per diventare veri e propri "consulenti" al momento di lasciare il servizio, grazie agli occhi ripetutamente chiusi, anche dove sono presenti come "componenti dei Collegi Sindacali" »;

si pone altresì in evidenza come la Compagnia unica di Livorno, nota nel mondo portuale per le sue iniziative non attinenti al lavoro dei porti, ora presenti, per il ripianamento, i propri conti all'erario, con un *deficit* di decine di miliardi;

a proposito del Ministero della Marina Mercantile, si segnala nell'esposto in oggetto la contraddizione, non corretta e inaccettabile, che il Direttore Generale del Lavoro Marittimo e Portuale (che in materia controlla – o dovrebbe controllare – tutta l'Amministrazione periferica) sia, quanto meno a Genova, contemporaneamente controllore e controllato, in quanto tale Direttore è altresì Presidente della Società Porto Petroli, controllata dal Consorzio Autonomo del Porto, Ente a sua volta soggetto al controllo del Ministero (del suddetto Direttore), che grazie a tale incarico usufruirebbe di appannaggi e agevolazioni varie operando a vantaggio del partito che lo ha colà designato per i meriti acquisiti ... durante la normale attività di direttore di una delle amministrazioni statali ... ! »;

l'esposto si conclude con l'esortazione a combattere l'ingerenza indebita sulla vita del paese « dei burocrati di estrazione e provenienza politica che con arroganza e presunzione fanno male i burocrati mentre continuano a fare politica di parte a spese dell'erario » e con un ulteriore riferimento specifico alla privatizzazione del porto: « dando il "tutto" a pochi compagni-amici ed escludendo i molti che non possono vantare analoghi collegamenti ? E già che ci siamo, perché non dare pure un'occhiata allo scandalo del porticciolo (quello nei paraggi della Fiera Internazionale) indagando su come si è fatto posto, a scapito di altri, a "compagni" amici degli amici, ben collegati con importanti personaggi milanesi ? » –:

quali provvedimenti intendano prendere al fine di verificare la veridicità dei gravi fatti elencati nell'esposto in oggetto e assumere, se verificati, i relativi provvedimenti giudiziari e amministrativi, volti a tutelare gli interessi della collettività e individuare le responsabilità correlate, politiche e giudiziarie. (4-13221)

IVO RUSSO. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

con decreto legislativo n. 88 del 27 gennaio 1992 il Governo ha recepito le direttive comunitarie in materia di Revisori dei conti istituendo in Italia il « Registro dei revisori contabili »;

per incertezze relative al regolamento di attuazione e alla prima formazione del suddetto registro si sono rese necessarie più proroghe, varate a mezzo delle decretazioni d'urgenza, per consentire a tutti i cittadini interessati di presentare apposita domanda di iscrizione al costituendo registro;

da notizie apparse di recente sulla stampa specializzata si apprende che sarebbero 125.000 le domande di iscrizione presentate dagli aspiranti revisori contabili;

nulla è stato fatto per adeguare la Commissione di valutazione delle domande, che risulta composta da 18 membri (nove componenti effettivi e nove supplenti);

la predetta Commissione si riunirebbe al massimo 2 volte alla settimana gratificando i propri componenti con un gettone di presenza di lire 5.000;

la Commissione avrebbe in arretrato l'esame delle domande delle due sessioni precedenti, per l'iscrizione al vecchio Registro dei revisori ufficiali dei conti;

tutti gli ordini professionali e le associazioni interessate hanno già informato e sollecitano il Governo comunicando quanto su esposto, evidenziando che anche con ritmi serrati di lavoro da parte della Commissione sarebbero necessari anni per esaminare le 125.000 domande pervenute penalizzando, al contempo, coloro i quali avendo maturato i titoli al 28 febbraio 1992 dovranno attendere la formazione del registro per poter chiedere l'iscrizione in seconda istanza –:

se le notizie riportate corrispondono al vero ed in particolare:

*a)* con quali criteri e quando si è pervenuti alla nomina dei componenti la Commissione;

*b)* se non intende il Ministro, verificata la situazione esposta, integrare la Commissione, ovvero autorizzare la nomina di un adeguato numero di sottocommissioni, in modo da consentire un sollecito esame delle domande presentate, incentivando i commissari anche attraverso la corresponsione di un adeguato gettone di presenza;

*c)* se non ritenga opportuno e necessario fissare un termine perentorio, eventualmente il 31 dicembre 1993, per la conclusione di detto esame e la pubblicazione del nuovo Registro dei revisori contabili. (4-13222)

IVO RUSSO. — *Ai Ministri dell'università e della ricerca scientifica e tecnologica, di grazia e giustizia e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il TAR Sicilia con ordinanza di sospensione n. 140 del 31 marzo 1993 ha sospeso l'ordinanza del Ministero della università relativa al bando per gli esami di abilitazione all'esercizio della professione di dottore commercialista indetti per le sessioni di aprile e novembre 1993;

il TAR Sicilia ha ritenuto che il bando per gli esami emanato dal Ministero dell'università sia in contrasto con le disposizioni della legge n. 206 del 1992 (modificative all'articolo 2 del decreto del Presidente della Repubblica n. 1067 del 1953) che ha istituito il tirocinio triennale obbligatorio quale requisito di accesso all'esame di abilitazione;

il TAR Sicilia ha ritenuto che la legge n. 206 del 1992 sia entrata in vigore con la pubblicazione sulla *Gazzetta Ufficiale* e abbia esplicato pertanto tutti i suoi effetti giuridici, compreso l'obbligo di aver svolto un tirocinio triennale per gli aspiranti dottori commercialisti;

la legge di riforma n. 206 del 1992 ha reso obbligatorio il requisito dei tre anni di tirocinio per poter accedere all'esame di riabilitazione, rimandando però le modalità di effettuazione di detto tirocinio ad un regolamento da emanarsi entro tre mesi dall'entrata in vigore della legge stessa;

detto regolamento non è stato ancora emanato e sarebbe al vaglio del Consiglio

di Stato, del Ministro di grazia e giustizia, del Ministero del lavoro la bozza di tale provvedimento;

opinione prevalente era che, in mancanza del regolamento attuativo, si continuava a ritenere vigente la normativa preesistente, che consentiva lo svolgimento della prova per l'abilitazione alla professione di dottore commercialista senza il tirocinio professionale triennale obbligatorio;

autorevoli fonti giornalistiche riferiscono che il presidente del TAR Sicilia avrebbe *dichiarato*:

*a)* che l'ordinanza n. 140 del 31 marzo 1993 è stata emessa a tutela degli stessi candidati per evitare un danno grave ed irreparabile quale quello di svolgere degli esami a vuoto infatti, nel caso di decisione di merito del TAR circa l'annullamento dell'ordinanza relativa al bando di concorso in parola per contrasto con la legge n. 206 del 1992, la sessione di esami di aprile sarebbe nulla;

*b)* la sospensione è stata quindi necessaria per motivi di interesse generale;

*c)* circa l'efficacia territoriale del provvedimento non vi è dubbio che abbia valenza nazionale, in quanto sospende un atto avente valore su tutto il Paese, quale è il bando di esame del Ministero dell'università, in caso contrario si avrebbe una discriminazione dei candidati siciliani rispetto agli altri aspiranti dottori commercialisti del resto d'Italia;

sia l'ordinanza di sospensione che la sua applicabilità su tutto il territorio nazionale hanno già provocato contrasti e perplessità da parte di tutti gli ordini e categorie professionali interessate, tanto che l'Avvocatura generale dello Stato avrebbe già presentato ricorso al Consiglio di Stato;

da stime informali ed approssimative si apprende che i cittadini interessati agli esami per l'abilitazione della professione di dottore commercialista nelle due sessioni in parola ed oggetto dell'ordinanza di sospensione, sarebbero circa 10.000 –:

se tutto quanto esposto in premessa corrisponde al vero;

quali siano i contenuti del ricorso presentato dall'Avvocatura generale dello Stato al Consiglio di Stato;

quali siano le cause ostative ad un'immediata, ma comunque tardiva, emanazione del regolamento di cui alla legge n. 206 del 1992;

quali siano le iniziative che il Governo intenda assumere per dare definitiva chiarezza alle norme previste in materia di accesso alla professione di dottore commercialista;

se il Governo non ritenga necessario ed opportuno dirimere le paradossali controversie in atto, proponendo un'adeguata normativa che salvaguardi i diritti sin qui acquisiti dagli aspiranti dottori commercialisti prevedendo una compiuta disciplina del periodo transitorio. (4-13223)

* * *

**MOZIONE**

La Camera,

considerato:

che i pubblici poteri si interessano alle condizioni di vita delle famiglie e cercano di migliorarle con tutta una gamma di misure che vanno dal settore della sicurezza sociale al diritto di famiglia passando per i regimi fiscali;

che gran parte della letteratura sulla cosiddetta « crisi della famiglia » ha espresso due tendenze opposte per cui, da un lato, la crisi è stata sopravvalutata come se la famiglia stesse scomparendo mentre, dall'altro, è stata negata, con l'asserzione che la famiglia ci sarà e sempre, ma senza rendersi conto di ciò che stava cambiando, tanto che diventa urgente affrontare la crisi della famiglia come un problema sociale e non solo di opinioni, di aspetti culturali o stati psicologici;

che il numero totale delle famiglie aumenta notevolmente (dal 1971 al 1981 c'è stato un incremento del 16,6 per cento), mentre la popolazione indica che la diminuzione numerica nella composizione media della famiglia non va interpretata tanto o soltanto come un deficit quanto piuttosto come moltiplicazione delle famiglie multiple;

che rispetto alle forme familiari, l'ISTAT ha adottato una classificazione basata sul concetto di nucleo familiare, in quanto la classificazione delle famiglie secondo la tipologia di censimento non è più in grado di cogliere il fenomeno della crescente differenziazione delle forme familiari;

che la diversa classificazione permette una migliore osservazione sulle effettive situazioni di coabitazione;

che nel nostro Paese, risulta esserci un numero ancora limitato di famiglie unipersonali, di nuclei monogenitore ed anche di unioni libere, mentre i cambiamenti più vistosi si hanno nella stratificazione sociale in rapporto alla condizione professionale del « capofamiglia » o della persona principale di riferimento, tanto che si può rilevare che, nell'arco di tempo compreaso tra il 1951 ed il 1983, sono cresciute le famiglie della borghesia (imprenditori, liberi professionisti, dirigenti) e le famiglie di classe media urbana (impiegati pubblici e privati, artigiani, negozianti eccetera), mentre le famiglie di classe operaia (operai, industriali agricoli e salariati) sono diminuite e sembrano stabilizzarsi. Per contro decrescono rapidamente le famiglie rurali (coltivatori diretti), e si ha uno « spostamento verso l'« alto » della stratificazione sociale;

che molte modificazioni e problematiche della questione « famiglia » si possono individuare nel divario crescente tra famiglie borghesi che sono emergenti, con il loro tenore di vita privatistico centrato sul successo, e famiglie di classe « bassa o marginale » che « restano indietro » rispetto ai processi di modernizzazione o di aggancio alle nuove opportunità di vita;

che rispetto agli orientamenti di valore, la famiglia italiana ha accentuato le sue « preoccupazioni » economiche a scapito di quelle comunicative e relazionali, con conseguente affievolimento delle motivazioni sociali, di etica e di servizio solidaristico, ma divenendo più sensibile al tema dell'educazione dei figli, con la ricerca di nuove forme di gestione di strutture educative, specie di quelle per l'infanzia, in cui i genitori assumono un ruolo più attivo sia in termini di imprenditorialità sia di cogestione e cooperazione di servizio per cui, nonostante la crisi dello Stato sociale, le famiglie italiane chiedono utilizzazioni crescenti nell'uso dei servizi sociali e sanitari e, dove il settore pubblico non è sufficiente, si sviluppa il ricorso al privato tanto che l'aumento di complessità sociale ha significato per la famiglia, nel campo dei servizi alla persona, la ricerca

di soluzioni alternative ai servizi pubblici, per poter far fronte ai bisogni di vita quotidiana;

che si deve prendere atto del cambiamento dell'approccio alla salute ed alla domanda sociale relativa per cui, mentre nella famiglia italiana si registra un miglior livello di salute fisica e contemporaneamente crescono le patologie relazionali derivanti da rapporti sociali ed intersoggettivi deboli o comunque problematici, il sistema sanitario continua a ignorare la famiglia come soggetto di salute-malattia;

che non può essere ignorato che la famiglia, al di là della tendenza a darsi delle regole proprie di privatizzazione e di isolamento, tuttavia continua a svolgere una ampia gamma di funzioni sociali per cui le risposte di chi cerca soluzioni nella direzione della famiglia, devono essere trovate attraverso una valorizzazione democratica e pluralistica della famiglia, stessa riconoscendole la necessità di essere soggetto di reciprocità nei rapporti con un'amministrazione pubblica efficiente equa, razionale e non di essere beneficiaria di sola assistenza, per cui il problema che si pone è quello della giustizia sociale, distributiva e redistributiva verso le famiglie, a seconda della loro composizione e delle funzioni sociali che assumono per autonoma decisione. In tal modo i sistemi di intervento sociale per la famiglia non possono più essere quelli sin qui seguiti, ma occorrono interventi di « guida relazionale » e la creazione di condizioni per l'affermarsi di un concetto sociale favorevole all'incontro, al dialogo, alla solidarietà familiare, attraverso organizzazioni di comunità e forme associative al fine di realizzare programmi di « guida relazionale »;

che la funzione sociale che la famiglia è andata assumendo nel corso degli anni dimostra che il rapporto familiare rappresenta anche strumento per la tutela di interessi superindividuali;

che la Convenzione dei diritti dell'uomo all'articolo 8 tutela il diritto al rispetto dell'unità familiare come un diritto di libertà e l'articolo 16 della Dichiarazione universale dei diritti dell'uomo regola il diritto della famiglia ad essere protetta dalla società e dallo Stato;

che l'articolo 29 della Costituzione italiana riconosce: « i diritti della famiglia come società naturale fondata sul matrimonio »;

che l'articolo 2 della Costituzione italiana « riconosce e garantisce i diritti inviolabili dell'uomo sia come singolo, sia nelle formazioni sociali »;

che l'articolo 31 prevede « la Repubblica agevola con misure economiche ed altre provvidenze la formazione della famiglia »;

che, in questa ottica, va affrontato qualsiasi problema riguardante la famiglia per cui lo Stato non può rimanere insensibile alle continue variazioni del costume e pertanto si:

impegna il Governo

a considerare:

che la famiglia fondata sul matrimonio è soggetto giuridico ed e pertanto titolare di diritti e destinataria di tutela da parte dello Stato;

che lo Stato riconosce la famiglia come entità originaria e ne regola e rispetta l'autonomia giuridica, etica, sociale ed economica;

che lo Stato riconosce altresì nella famiglia un elemento necessario per la propria esistenza e stabilità;

che la famiglia, nella propria integrità, ha un ruolo strumentale rispetto agli individui che la compongono;

che lo Stato rimuove gli impedimenti sociali ed economici che ostano al godimento dei diritti sia alla famiglia d'origine, sia alla famiglia non originaria;

che lo Stato promuove la omogeneità della famiglia, riconoscendo e tutelando la necessità della compresenza nell'ambito della compagine familiare di più genera-

zioni, intervenendo con azioni positive nei confronti degli anziani;

che occorre definire, attraverso chiare linee di politica economica e sociale:

*a)* interventi in favore del lavoro casalingo, della tutela della maternità, degli assegni familiari, del minimo vitale per l'infanzia;

*b)* il diritto della famiglia a garantire ai minori un adeguato sviluppo fisico e morale, sia attraverso sostegni economici, sia attraverso sostegni mirati (consultori, asili nido, eccetera);

*c)* il diritto della famiglia ad essere supportata in presenza di situazioni patologiche (minori handicappati, deviati, tossicodipendenti), con l'obiettivo di evitare al massimo l'istituzionalizzazione come risposta ai problemi;

*d)* revisione delle norme sul collocamento e, più in generale, sul diritto al lavoro finalizzato a garantire l'unità familiare (garanzia di almeno uno stipendio, regolamentazione del *part-time*, sedi di lavoro, congedi parentali, ferie familiari);

*e)* revisione delle norme sui consultori esaltando di questi la funzione etico-sociale;

*f)* definizione degli interventi di sostegno del privato sociale;

*g)* revisione della politica per il diritto all'abitazione;

*h)* attenzione alla creazione di rapporti integrati fra la famiglia, la scuola e gli enti locali;

*i)* il controllo sui *mass-media* per adeguare i programmi radiotelevisivi a tutte le esigenze generazionali, nel rispetto costante della dignità della persona; a tal fine il controllo va esteso alla stampa ed alla cinematografia;

*l)* individuazione di nuovi strumenti fiscali anche in previsione di diversi criteri di valutazione della famiglia come unità impositiva (defiscalizzazione delle spese per educazione ed istruzione, eccetera);

che deve essere adeguata la politica dei trasporti, del turismo e dello spettacolo, delle nuove esigenze di conoscenza e di crescita culturale della famiglia;

che bisogna procedere all'educazione al risparmio attraverso programmi concertati fra istituzioni, enti, associazioni;

che occorre individuare, analogamente ad altri Paesi della Comunità europea, un Ministero *ad hoc* per coordinare le azioni programmatiche, di controllo e vigilanza della politica per la famiglia.

(1-00167) « Poli Bortone, Gasparri, Ignazio La Russa, Martinat, Patarino, Agostinacchio, Conti, Mussolini, Lo Porto, Marenco ».

* * *

## INTERPELLANZE

Il sottoscritto chiede d'interpellare il *Ministro dell'agricoltura e delle foreste*, per sapere – premesso:

che l'industria di trasformazione agrumaria rappresenta per la agrumicoltura calabrese un importante canale di collocamento del prodotto; tenute in debito conto: la vocazione tipicamente industriale della maggior parte dagli impianti, nonché la difficoltà incontrata dai nostri agrumi sul mercato del prodotto fresco;

che numerose maestranze, tra dipendenti fissi e stagionali, e dipendenti dell'indotto, vengono annualmente occupate nel settore;

che una grave crisi finanziaria colpisce, in questo momento, le industrie agrumarie che rischiano di chiudere, con conseguenti gravi problemi per l'occupazione e danni reali per gli agrumicoltori, che perderebbero gran parte del loro reddito;

che, al contrario degli altri settori, per l'industria agrumaria le cause non sono da ricercare nel persistente ritardo tecnologico o nell'insufficente formazione del personale o nella scarsa integrazione sui mercati europei, poiché gli agrumari hanno investito notevoli risorse ed oggi vantano impianti sicuramente ad avanzata tecnologia ed esportano, quasi interamente, la propria produzione spesso mediante importanti accordi di *joint venture* internazionali;

che la crisi in questo settore è da ricercare nel profondo squilibrio dalla struttura finanziaria delle imprese, che presentano persistente sottocapitalizzazione ed indebitamento a breve distanza di notevole rilevanza, con pesanti ripercussioni sui conti economici a causa degli elevati tassi di interesse praticati dalle banche;

che tale squilibrio è stato provocato negli anni dai notevoli ritardi con cui lo Stato, attraverso l'AIMA, eroga le somme destinate agli agricoltori e dalle industrie anticipate;

che si considera l'importanza economica e sociale che assume la salvaguardia dell'occupazione attualmente presente nel comparto –:

quali iniziative intenda assumere atte a garantire:

la urgente erogazione degli aiuti pregressi (risalenti alla campagna 90/91) e il puntuale rispetto delle scadenze per il prosieguo da parte dell'AIMA;

l'astensione del credito agrario al comparto agroindustriale onde garantire il consolidamento dell'indebitamento a breve o eccessivamente oneroso;

l'aggregazione agroindustriale, eventualmente, mediante concessione di contributi alle associazioni agricole, finalizzati alla partecipazione di queste ultime al capitale di rischio delle industrie, ottenendo, per altro, la ricapitalizzazione a favore del mondo agricolo.

(2-00673) « Romeo ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Ministro per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali, per sapere – premesso che:

il consiglio regionale della Lombardia ha approvato nella seduta del 16 marzo 1993 la legge intitolata « norme in materia di controllo sugli atti degli enti locali »;

all'articolo 3.1. la legge reca la seguente disposizione: « L'organo regionale di controllo ha sede nel capoluogo della regione ed è articolato in tre sezioni specializzate per materia, che esercitano le loro funzioni in modo autonomo »;

codesta disposizione sopprime le sezioni del comitato finora aventi sede nei capoluoghi di provincia;

per quanto è a conoscenza dell'interpellante, la ragione addotta consiste nella necessità di contenere le spese dell'ente;

l'intento della regione Lombardia di contenere le spese è altamente lodevole, ma lo sarebbe ancora di più se si indirizzasse ad altri oggetti, ispirandosi, in particolare, alla norma dell'articolo 118 della Costituzione;

la soppressione delle sezioni provinciali è di grave nocumento alla funzionalità ed economicità dei rapporti tra gli enti locali della provincia di Sondrio e l'organo di controllo (ad esmpio, il comune di Livigno dista da Milano ben 235 Km.);

in particolare, con quest'atto si aggrava ulteriormente il processo, instauratosi con l'istituzione dell'ente regione, di appesantimento degli oneri amministrativi a carico degli enti locali, anche per effetto del numero e dell'onerosità delle trasferte cui gli amministratori sono costretti;

in ogni caso, oltre a violare lo spirito della Costituzione (articoli 118 e 130), la norma in esame viola anche nella lettera lo Statuto della regione Lombardia che all'articolo 45 recita: « La regione assume il decentramento come carattere essenziale della propria organizzazione » e all'articolo 70: « Il controllo sugli atti adottati dagli enti locali è esercitato dalla regione in forma decentrata » –:

se non giudichi necessario negare il visto governativo e assumere le iniziative conseguenti *ex* articolo 127 della Costituzione.

(2-00674) « Tarabini ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri e i Ministri delle finanze, dell'interno e di grazia e giustizia, per conoscere:

i motivi politici della evidente colpevole e dolosa copertura data dagli uffici finanziari, nonché dai nuclei della Guardia di finanza, sia tributario come valutario, a favore del gruppo FIAT, nonché dell'ENI, ENEL, SNAM, SAIPEM, AGIP, in merito al fatto che, pur acclarate responsabilità gravissime di quei gruppi, così come di tutte le grandi imprese coinvolte in « Tangentopoli », non siano state immediatamente disposte le doverose, necessarie e obbligatorie per legge verifiche fiscali, sia tributarie come valutarie, visto che da mesi è accertato che tutti quei gruppi, avendo « fondi neri » per poter pagare corruzioni, concussioni, cioè tangenti, funzionari, deputati, senatori, segretari di partiti e amministrativi, a centinaia e migliaia di miliardi, per decenni a questa parte avevano tutti una contabilità ufficiale falsa, così tutti hanno redatto, pubblicato e depositato nelle cancellerie dei tribunali competenti, bilanci falsi per anni e decenni;

per quali motivi e per quali protezioni politiche, e a quale livello, la Guardia di finanza non si sia mossa nemmeno dopo oltre dieci mesi fa, dopo che lo scrivente aveva proposto atti di sindacato politico ispettivo parlamentare che segnalavano la evidente, a parere dell'interpellante, menzogna nelle dichiarazioni di uno dei responsabili del gruppo FIAT, l'*ex* senatore democristiano Umberto Agnelli, che a *TG 1*, *TG 2* e *TG 3* aveva dichiarato, alle prime avvisaglie del coinvolgimento della Cogefar Impresit SpA del gruppo FIAT, nelle indagini per « mani pulite », che « le accuse non potevano che essere infondate » e, « in caso che si fosse verificato qualche caso isolato non poteva che essere cosa di poco conto altrimenti (esso Umberto Agnelli) lo avrebbe saputo ». Ora, a parte che il dì appresso a quelle impegnative dichiarazioni (forse fu l'ultima volta che il predetto *ex* senatore democristiano Umberto Agnelli fece dichiarazioni publiche alla televisione di Stato per la FIAT, ma forse non ne fece più nemmeno per la Juventus !), resta pur sempre certo e fermo il fatto che il dì appresso venne arrestato il suo « braccio destro » Papi, e poi Costa, e poi venne accertato che il gruppo FIAT aveva addirittura una società finanziaria (la Ydrocarbo AS) e una banca a Lugano, in confederazione elvetica, per poter fare i

« grossi pagamenti » ai partiti politici e ai loro referenti, con maggiore facilità e con maggiore garanzia di incolumità e impunità. La scoperta di quei canali avrebbe dovuto immediatamente imporre l'intervento massiccio della Guardia di finanza che, peraltro, per suo dovere avrebbe dovuto intervenire sin dalla estate 1992, per ordine del Ministro, sollecitato appunto dall'atto ispettivo politico-parlamentare dello scrivente in proposito;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte dei conti, al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori con danno dell'erario o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera (come segretari generali del Ministro delle finanze o direttori generali) o onorari (come ministri o sottosegretari).

(2-00675) « Tassi ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Ministro dell'interno, per conoscere – premesso che:

in data 15 marzo 1993 e 29 marzo 1993, dieci consiglieri comunali su venti assegnati del comune di San Pietro in Cariano (Verona) hanno rassegnato le dimissioni dalla loro carica, come da atti al protocollo comunale, rispettivamente ai numeri 3401 del 15 marzo 1993 e 4029 del 29 marzo 1993;

il sindaco del comune di San Pietro in Cariano con nota 4129 in data 30 marzo 1993, ha trasmesso al signor Prefetto di Verona copia delle lettere di dimissioni della metà dei consiglieri comunali;

che il Prefetto di Verona con nota del 30 marzo 1993, protocollo n. 358.13.12 ha trasmesso a tutti i consiglieri comunali di San Pietro in Cariano la nota informativa dell'avvenuta ricezione degli atti delle dimissioni della metà dai consiglieri, in relazione al disposto dell'articolo 39, c. 1, lett. *b)* della legge n. 142 del 1990;

in data 5 aprile 1993, la metà non dimissionaria dei consiglieri comunali di San Pietro in Cariano ha ritenuto di poter surrogare l'altra metà dai consiglieri dimissionaria, in virtù dell'articolo 64 della legge n. 142 del 1990 che al comma 1, lett. *b)* fa salva l'abrogazione dell'articolo 127 testo unificato n. 148 del 1915;

la fattispecie di cui al succitato articolo 127 è certamente diversa da quella prevista dall'articolo 39, c.1, lett. *b)*, n. 2 della legge n. 142 del 1990. Infatti, la norma del testo unico del 1915 regolamenta l'ipotesi di assenza (naturalmente fisica) della metà dei consiglieri e consente che il Consiglio possa deliberare, se non si tratta di particolari argomenti; mentre l'articolo 39, comma 1, lett. *b)* legge n. 142 del 1990, regolamenta l'ipotesi delle dimissioni di almeno la metà dei consiglieri che sono causa di impossibile funzionamento dell'organo e quindi di scioglimento del Consiglio comunale;

l'errata ed arbitraria interpretazione di cui sopra ha portato la metà dei consiglieri non dimissionari a surrogare illegittimamente l'altra metà dimissionaria e nella stessa seduta, alla nomina di un nuovo assessore nella persona di un surrogante.

La tesi dell'illegittima surroga della metà dei consiglieri da parte dell'altra metà à suffragata dalla circolara esplicativa del Ministro dell'interno n. 17102/127/1 Uff. 3° del 7 giugno 1990, che al punto 1, n. 5 su relativo a: « Dimissioni e decadenza di almeno la metà dei consiglieri » afferma: « ... La norma nulla dice circa la necessità e meno, della contestualità delle dimissioni e delle decadenze. È da ritenere, nel silenzio, che continuino a valere i princìpi consolidatisi sulla base dell'articolo 8 del decreto del Presidente della Repubblica n. 570 del 1960, secondo

cui, *nei comuni con popolazione superiore* a 5 mila abitanti, può farsi luogo alla surrogazione, fatta salva l'ipotesi della simultaneità della vacanza »;

per evitare che si creino situazioni di incertezza sulla validità degli atti amministrativi dal comune di San Pietro in Cariano i consiglieri comunali dimissionari hanno chiesto al Prefetto di Verona con nota in data 8 aprile 1993, la sospensione del *Consiglio comunale* « per *motivi di* grave e urgente necessità », ai sensi dell'articolo 39, comma 7, della legge n. 142 del 1990;

vi è fondata possibilità che gli organi amministrativi del comune di San Pietro in Cariano, così irregolarmente costituiti, possano deliberare illegittimamente su importanti argomenti prossimi alla discussione (adozione L.R.V. 11/87, varianti al PRG; approvazione regolamenti comunali; affidamento lavori pubblici; eccetera) –:

*a)* quali urgenti provvedimenti si intendano adottare ai fini dell'applicazione dell'articolo 39, c. 1, lett. *b)* della legge n. 142 del 1990;

*b)* se non ritenga che, nella fattispecie, sussistono « motivi di grave ed urgente necessità » che suggeriscono la sospensione del *Consiglio comunale*, ai sensi dell'articolo 39, comma 7, della legge n. 142 del 1990, per le possibili gravi conseguenze negative che possono derivare da deliberazioni illegittimate assunte dagli organi amministrativi del comune di San Pietro in Cariano a danno dei cittadini, sia come singoli che come comunità.

(2-00676) « Bonato ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Ministro delle finanze, per sapere – premesso che:

le cronache giudiziarie relative alle inchieste su fatti relativi a tangenti hanno più volte evidenziato, oltre all'entità delle somme versate, anche il tenore di vita parimenti « miliardario » dei protagonisti di queste vicende –:

se l'amministrazione finanziaria non abbia ritenuto o non ritenga di dover disporre un accertamento dei redditi di tutte le persone fisiche dei soggetti inquisiti per reati di peculato e peculato d'uso (articolo 314 del codice penale), peculato mediante profitto dell'errore altrui (articolo 316 del codice penale), malversazione a danno dello Stato (articolo 316-*bis* del codice penale), concussione (articolo 317 del codice penale), corruzione per un atto d'ufficio (articolo 318 del codice penale), corruzione per un atto contrario ai doveri d'ufficio (articolo 319 del codice penale) e abuso d'ufficio (articolo 323 del codice penale).

(2-00677) « Borghezio ».

Il sottoscritto chiede di interpellare i ministri dell'interno e di grazia e giustizia, per sapere – premesso che:

è assai grave e preoccupante la situazione generale della criminalità in Italia, sulla base delle statistiche elaborate dal Ministero dell'interno specie per quanto si riferisce ai collegamenti tra politici, amministratori e criminalità organizzata –:

1) quale sia la effettiva consistenza dei crimini consumati in Italia e soprattutto di quelli più gravi (omicidi, rapimenti, stupri ecc.);

2) quali siano i crimini collegati allo spaccio della droga ed ai presumibili effetti di una sua eventuale liberalizzazione, in base agli esiti del "referendum" specifico;

3) a proposito del sovraffollamento delle carceri, quale sia la percentuale di recidivi, di detenuti comunitari ed extra comunitari oltreché di latitanti e quali, per questi ultimi, i maggiori capi di imputazione;

4) a quali livelli sia giunta la prostituzione maschile e femminile nel nostro Paese e quali misure siano state prese per impedire l'introduzione in Italia di soggetti destinati alla prostituzione maschile e femminile e se esistano e quante e quali organizzazioni collegate alla criminalità organizzata per esperire questi particolari compiti, e quali la prevenzione e la repressione per reati contro il buoncostume;

5) a quanto ammontino le somme bloccate e seguestrate nelle azioni di Polizia contro il riciclaggio del denaro sporco e contro i beni dei mafiosi e quali siano i risultati delle verifiche bancarie non solo in Italia, ma anche per quanto riguarda gli eventuali collegamenti con gli istituti bancari stranieri;

6) quanti siano gli stranieri indesiderabili espulsi dal nostro paese e quali siano le misure per attuare i controlli necessari ad impedirne il rientro clandestino;

7) quanti siano i comuni, le UUSSLL, gli enti locali commissariati perché in odore di mafia e quanti gli ammoniti per lo stesso motivo;

8) quali siano le misure di pubblica sicurezza adottate per bloccare le attività illecite e spesso criminose di alcune particolari frange di gruppi stranieri nomadi;

9) se il Ministro dell'interno e quello di grazia e giustizia non intendano valutare l'opportunità di riferire periodicamente e a date non troppo distanti tra loro alla Camera circa lo stato della criminalità in Italia, circa le misure di prevenzione e la loro efficacia e circa le variazioni degli indici di criminalità specie nelle « zone a rischio », e le misure cautelari previste dalla legge penale.

(2-00678) « Luigi Rossi ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri e i Ministri delle finanze e del lavoro e previdenza sociale, per sapere:

se siano a conoscenza delle forti e negative reazioni dei ceti produttivi e sociali, Aziende industriali, commerciali, cooperative e sindacati dei lavoratori, in seguito alla pubblicazione del decreto 31 marzo 1993, e di cui alla *Gazzetta Ufficiale* del 7 aprile 1993, riguardante il recupero dei crediti previdenziali e dei tributi sospesi in seguito al terremoto del dicembre 1990, nelle province di Catania, Siracusa e Ragusa. La durata della rateizzazione e l'imposizione degli interessi sembra non soltanto un trattamento ingiusto ma soprattutto inadeguato a interpretare la drammaticità della crisi delle imprese, le quali ai danni del terremoto vedono cumularsi le conseguenze di una crisi strutturale e congiunturale per l'attuale situazione economica del nostro paese. Sorprendono anche le modalità del decreto, l'assenza di una discussione con le parti sociali e la delusione di attese che erano maturate in precedenti incontri in occasione delle quali era sembrato che il Governo si fosse reso conto della gravità della situazione e della esigenza di provvedimenti di ben altra natura e consistenza. È sembrato, poi, contraddittorio il decreto in questione con l'attuale necessità ed urgenza di trovare nuove fonti di occupazione e con l'adozione di misure di forte ammortamento sociale.

Il decreto, così come è stato congegnato, provocherà altri licenziamenti e nuova disoccupazione, poiché aggrava la crisi delle aziende interessate.

Per tali motivi l'interpellante chiede alle S.V. se non ritengano opportuno ed urgente, previa convocazione delle parti sociali, revocare e modificare il decreto suddetto, nella parte relativa alla durata e alla sua onerosità per interessi.

Si chiede la trattazione dell'interpellanza con urgenza.

(2-00679) « Lombardo ».

Il sottoscritto chiede d'interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri e i Ministri, delle finanze, del tesoro, della

pubblica istruzione, dell'industria, commercio e artigianato – per sapere:

per quali motivi il Governo non abbia assunto iniziative presso i giornali e la federazione italiana editori di giornali circa il rispetto del dovere di pubblicazione della lettera aperta al garante dell'editoria dei responsabili delle televisioni libere e private, in merito alla questione della pubblicità così detta indiretta, tramite le cosiddette « sponsorizzazioni » di rubriche, trasmissioni e spettacoli, in radio e televisione, che consentono l'arricchimento dei programmi, nel rispetto delle norme limitatrici della pubblicità imposte a programmi radiotelevisivi;

perché sia consentito ai giornali, che ricevono finanziamenti di denaro pubblico, di adempiere il loro obbligo di pubblicazione di messaggi a pagamento, e, quindi di tipo pubblicitario, mentre proprio i giornali gabellano intere pagine di carta stampata come servizi che poi sono veri e propri messaggi e azioni pubblicitarie, ancorché surretiziamente « vestiti » da articoli « tecnici » o addirittura « scientifici »;

per quali motivi il Governo e i Ministri interpellati nell'ambito delle loro competenze non siano finora intervenuti al riguardo prima che, come al solito, sia la magistratura penale a dover provvedere in sede reppressiva, lasciando così che la cosa si aggravi i fatti illeciti proseguano, chi li commette continui a profittarne, e sempre aumenti il discredito delle istituzioni e il crollo della possibile fiducia del cittadino nello Stato e nelle sue azioni;

se, in merito ai fatti esposti, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte di conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le eventuali responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti ed abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo, o errori, con danno dell'erario o dei cittadini, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari, siano essi di carriera come direttori generali o dirigenti di unità operative, ovvero onorari come ministri o sottosegretari specie se muniti di delega.

(2-00680) « Tassi ».

I sottoscritti chiedono di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri e il Ministro degli affari esteri, per conoscere:

la linea che il Governo italiano vuole tenere per appoggiare la ricostruzione dell'Eritrea, legata all'Italia dalla storia e da vincoli speciali e straordinari di dedizione e di amicizia; una Eritrea che, per la prima volta, diviene sovrana e indipendente attraverso la celebrazione del referendum popolare e, memore della profonda eccezionale collaborazione con l'Italia, aspira oggi ad una intesa economica e politica di forte rilievo e di grande impegno;

se, per dare prova tangibile dell'interesse italiano, l'Italia intenda mantenere la promessa di un contributo di 19 miliardi di aiuti sottoscritti nel febbraio 1992 durante la visita dell'allora Ministro dell'immigrazione Boniver ad Asmara e successivamente confermati durante la missione del Presidente del Governo eritreo Afeworki durante la visita alla Farnesina col nostro Ministro degli esteri. I 19 miliardi promessi un anno fa all'Eritrea costituivano un fondo di emergenza: per attrezzi agricoli, per la riparazione delle strade, per sementi e fertilizzanti e per la riparazione dell'acquedotto di Massaua. Si deve stabilire concretamente il nuovo corso della cooperazione italiana, che nel passato si è preoccupata di dare al dittatore etiopico comunista Menghistu oltre 1.000 miliardi e, come purtroppo è ben noto, si è dimenticata per decenni dell'Eritrea ed è stata coinvolta in spaventose operazioni illecite di lottizzazione e di tangenti; avrebbe quindi un significato altamente positivo, di trasparenza e di intelligente e giusta iniziativa politica « l'operazione Eritrea » con il versamento immediato dei 19 miliardi già impegnati e di un piano

generale e settoriale di finanziamento e di investimenti, a favore del nuovo Stato eritreo;

quali siano le decisioni del Governo italiano e a tale proposito quali siano i tempi esecutivi della nostra iniziativa di cooperazione e di sviluppo.

(2-00681) « Tremaglia, Fini, Berselli ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri e i Ministri della sanità, dell'agricoltura e foreste, dell'industria, commercio e artigianato, delle finanze, del tesoro, di grazia e giustizia e dell'interno, per sapere –:

per quali motivi politici, o « protezioni » a favore dell'industriale Tanzi di Parma, il Governo abbia sempre obliterato e ignorato il gravissimo problema relativo alla distruzione del latte e dei prodotti agricoli danneggiati dalla caduta delle polveri di cui alla nube radioattiva prodotta dallo scoppio della centrale nucleare di Cernobyl (allora in URSS) al punto da ignorare anche specifici interventi di sindacato ispettivo politico parlamentare dell'odierno interpellante;

se sia nota la situazione emiliana e della provincia di Parma, in particolare come segnalato con enorme risalto dalla *Gazzetta di Parma*, per cui si sono triplicati dal 1986 i casi di « leucemia mieloide » proprio per gli « effetti Cernobyl »;

se siano confermate le notizie relative alla « eliminazione » di parte del latte contaminato dalla « nube di Cernobyl » con il versamento nella discarica di Solignano per iniziativa della ditta incaricata della eliminazione di quel prodotto reso così pericoloso;

come sia possibile che non vengano resi pubblici dati relativi alle procedure e alle certificazioni delle distruzioni con le garanzie ovvie di salute e di igiene di quel prodotto;

se, dopo la diffusione di quella allarmante e allarmata notizia sulla *Gazzetta di Parma*, del 2 aprile 1993 non sia caso che la competente USL 4 di Parma divulghi i dati;

se, nel frattempo, siano state avviate indagini da parte degli uffici, anche giudiziari, competenti, per controllare che la eliminazione sia stata fatta, come doveroso, secondo i criteri e con le garanzie di incolumità e di igiene volute dalla legge:

se i fatti siano stati controllati anche dal Ministero dell'ambiente e allo stesso siano state fatte le doverose relazioni e segnalazioni;

se la Guardia di finanza, abbia controllato che sotto il profilo fiscale e tributario tutte le operazioni di acquisizione del latte contaminato e della sua eliminazione siano state correttamente operate;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e giustamente reprimere le evidenti responsabilità contabili, del resto sempre conseguenti abusi e omissioni, pure negli obblighi di controllo, o errori, con danno dell'erario o della popolazione, addebitabili o addebitati a pubblici funzionari siano essi di carriera come direttori generali o dirigenti di uffici periferici o di unità operative di amministrazioni locali, ovvero onorari come ministri, sottosegretari, sindaci, presidenti o assessori.

(2-00682) « Tassi ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri per conoscere:

per quali motivi politici si sia tollerata l'omissione dei doveri e atti d'ufficio dei responsabili degli uffici finanziari e della Guardia di finanza di Torino, e dei vari ministri delle finanze che hanno avuto l'attenzione loro richiamata da ripetuti atti di sindacato politico parlamentare dello

scrivente sin dalla primavera 1992 in merito al doveroso intervento sulla contabilità e bilanci del gruppo Fiat, se non altro da quando era certo che qualche « tangente » miliardaria, prima dalla COGEFAR IMPRESIT Spa poi da altre aziende del gruppo Fiat, era stata versata a politici corrotti o concussori; quando era anche certo che tali notevoli esborsi e spese, non risultavano, ovviamente, né in contabilità, né nei bilanci;

come sia possibile che tale fatto sia avvenuto quando è ovvio che le società per azioni sono tenute alla contabilità formale a partita doppia, sì che non potrebbe essere consegnato uno spillo di materiale o effettuata una spesa di una sola lira senza che risultasse nella doverosa contabilità « ordinaria » e, conseguentemente, nei bilanci depositati. La cosa è ancora, se possibile, particolarmente grave, dopo le dichiarazioni formali e pubbliche date da Umberto Agnelli in TG1, TG2 e TG3, dopo l'arresto del primo funzionario del gruppo Fiat della Impresit Cogefar spa: « la Fiat non fa certe cose », anche se quelle « cose » oggi dopo che sono state accertate sono note a tutti e notorie, vengono ammesse anche dai « vertici » massimi del gruppo Fiat; « se è successo qualcosa deve essere di poca importanza, altrimenti lo avrei saputo ». È poi stato accertato che c'era a disposizione addirittura una finanziaria internazionale acquistata in Argentina poi « portata » in Svizzera e, quindi, sostituita addirittura con uno sportello bancario a Lugano! Il tutto, per meglio distribuire le miliardarie tangenti da interi lustri!;

se, in Italia, paese che dovrebbe essere e rimanere la « culla del diritto », in cui dalla Costituzione della Repubblica dovrebbe essere stato restituito lo « Stato di diritto » esistano dei soggetti come il « gruppo Fiat » avulso dai controlli della Guardia di Finanza, così pronta ad agire anche per l'acquisto di una gomma da masticare da parte di un bimbo senza lo « scontrino » fiscale o di un pasticciere che assaggia una pasta di sua produzione, nel suo negozio!;

di quali protezioni, abbia potuto « godere » il gruppo Fiat fino ad oggi, e, comunque chi siano i responsabili degli uffici delle imposte dirette di Torino, dell'Ufficio imposta sul valore aggiunto di Torino e il comandante della Guardia di finanza di Torino;

se sino ad ora, nei confronti di quei funzionari altissimi dello Stato, in delicatissimi posti di responsabilità, come quelli soprarichiamati, sia stata iniziata, quanto meno, azione disciplinare e di responsabilità, se non altro, per omisssione dei loro elementari doveri di ufficio;

se, in merito, siano in atto ispezioni o inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria, e se i fatti siano noti al Consiglio superiore della magistratura, perché solo da qualche settimana il PM di Torino sembra aver richiesto ai colleghi di Milano gli atti relativi alle « tangenti Fiat », si spera per il controllo delle responsabilità penali in merito alle norme di cui alla nota legge « manette agli evasori » che, sino ad oggi ha creato solo la disperazione dei poveri piccoli commercianti e artigiani, spesso vittime di vere e proprie truffe, non sanzionate, di altri;

se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e doverosamente reprimere le evidenti responsabilità contabili sempre conseguenti abusi e omissioni, anche negli obblighi e doveri di controllo addebitabili e addebitati a pubblici funzionari siano essi dirigenti di uffici periferici o centrali dei vari Ministeri o ministri o sottosegretari, cioè onorari.

(2-00683) « Tassi ».

Il sottoscritto chiede di interpellare il Presidente del Consiglio dei ministri, per sapere – premesso che:

da numerose fonti è emerso che nella ripartizione dei fondi stanziati dalla legge 1° marzo 1986, n. 64, per gli interventi straordinari nel Mezzogiorno, vi sono state indebite pressioni ed interferenze –:

se il Governo sia al corrente del fatto, ormai accertato dalla stessa autorità giudiziaria, che una parte almeno dei finanziamenti agevolati al Mezzogiorno è stata direttamente gestita da Cosa Nostra;

se non intende, pertanto, disporre un'inchiesta atta ad accertare a chi e per quali tramiti sono stati realmente distribuiti i fondi di cui alla legge n. 64/86.

(2-00684) « Borghezio ».

* * *

## INTERROGAZIONI A RISPOSTA ORALE

FLEGO. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale e della difesa.* — Per sapere – premesso che:

le vicende dell'*ex* Jugoslavia stanno sempre più coinvolgendo il nostro paese, che per disposizione dell'Onu è stato scelto per operazioni di controllo dello spazio aereo della Bosnia "*no fly zona*";

la base aerea di Villafranca Veronese, è stata predisposta per questo scopo, anche se esclusivamente per ospitare e dare supporto a forze aeree internazionali, oltre che militare, è anche un importante scalo aereo civile "Catullo" –:

se questa attività militare, anche se per scopi umanitari, imponga restrizioni al traffico aereo civile di questo scalo: ciò perché il Catullo svolge un ruolo di tutto rispetto in campo nazionale, grazie alla sua posizione geografica vicino al bacino del Garda, ai piedi delle Dolomiti sull'asse di due importanti autostrade del nord "la Serenissima e la Brennero" e, con la imminente stagione turistica incrementa la grande manifestazione aregnana e vari spettacoli culturali. Una eventuale restrizione al traffico aereo civile penalizzerebbe con gravi conseguenze questo scalo. (3-00916)

PELLICANÒ e MODIGLIANI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso:

che, in un'ampia intervista concessa a Paolo Guzzanti sulla « *Stampa* » del 14 aprile scorso, il Ministro dell'interno, a proposito dell'autorizzazione a procedere nei confronti del senatore Giulio Andreotti richiesta dalla procura di Palermo, ha espresso « l'impressione, la sensazione, che contro Andreotti esista da tempo, animosissimo, un grande fronte che non ha digerito le sue posizioni in politica estera, e sul Medio Oriente in particolare »;

che nella stessa intervista il Ministro Mancino ha detto di pensare che « al mondo ci siano delle potenti *lobbies* che non vedevano l'ora di saldare il conto a Giulio Andreotti »; e, pur negando di pensare ad una « congiura », ha specificato che tali *lobbies* sarebbero « di genere finanziario e massonico » e che sarebbero « scese in campo contro di lui delle potenti concentrazioni dell'alta finanza che lo avevano nel mirino per le sue posizioni filoarabe, filo-olpiste »;

che tali affermazioni, anche e soprattutto perché provenienti dal Ministro dell'interno, e perché riecheggiano inquietanti assonanze, rivestono ad avviso degli interroganti aspetti di particolare gravità –:

1) se il Governo condivida le suddette « impressioni » e « le sensazioni » del Ministro dell'interno;

2) e, nel non creduto caso affermativo, se intenda spiegare su quali elementi si fondino le dichiarazioni del Ministro dell'interno. (3-00917)

MACERATINI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso:

che la stampa di Frosinone ha dato notizia con grande evidenza di gravi contrasti che sarebbero insorti tra i Magistrati della Procura della Repubblica del capoluogo ciociaro circa i provvedimenti da adottare a seguito delle rivelazioni contenute nel memoriale dell'*ex* sindaco democristiano Giuseppe Marsinano;

che, in particolare, i contrasti avrebbero riguardato l'emissione o meno di alcuni provvedimenti di custodia cautelare;

che il fatto ha lasciato e lascia gravi perplessità e notevole sconcerto nella opinione pubblica del Frosinate che attende per contro dalla Magistratura un comportamento lineare, rassicurante ed equilibrato senza timori reverenziali di sorta –:

quali provvedimenti il Governo intenda assumere per intervenire adeguatamente sul caso evidenziato inpremessa e, in particolare, se non ritenga il Ministro di grazia e giustizia di dover disporre una immediata spezione ministeriale presso la Procura della Repubblica di Frosinone per accertare la regolarità del funzionamento di quell'ufficio e l'assenza di qualsiasi condizionamento nell'operato dell'ufficio medesimo. (3-00918)

VALENSISE. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per conoscere:

quali immediate misure intenda adottare in favore della città di Reggio Calabria, in relazione al gravissimo, efferato, episodio dell'assassinio del vigile urbano Giuseppe Marino e del ferimento del maresciallo degli stessi vigili Orazio Palamara, entrambi in servizio di viabilità in pieno centro cittadino, attinti da numerosissimi colpi di pistola sparati a tradimento da un ignoto immediatamente dileguatosi, essendo il sanguinoso episodio collegato evidentemente al delicato servizio dei due benemeriti appartenenti al corpo dei vigili urbani;

in particolare, se possa considerarsi adeguato alle necessità di Reggio Calabria l'organico modestissimo dei vigili urbani, assolutamente insufficiente soprattutto in relazione alla situazione in cui versa il territorio dell'intero comune;

ancora, se i provvedimenti per il ripristino del rispetto delle disposizioni sul traffico nel centro storico sono stati coordinati con le autorità e le forze di polizia, come sarebbe non soltanto opportuno, quanto indispensabile e doveroso;

se le indagini in corso in ordine all'agghiacciante episodio delittuoso abbiano raggiunto qualche risultato;

soprattutto, gli intendimenti concreti del Governo per fronteggiare la gravissima situazione della città di Reggio Calabria, afflitta da criminalità comune e organizzata e da illegalità diffusa sul territorio, in un pesantissimo quadro di crisi socio-economica e occupazionale. (3-00919)

PIVETTI. — *Al Ministro per gli affari sociali.* — Per sapere – premesso che:

nell'ultimo anno a Milano sono stati denunciati 100 casi di stupri nei confronti dei bambini;

è notorio che il numero dei casi denunciati è molto minore di quelli che effettivamente si verificano;

dati di questa entità configurano una vera e propria situazione di emergenza;

dati precisi sono ricavabili perché presso la questura di Milano funziona da un anno una sezione specifica che si occupa di reati sessuali contro i bambini –:

quali misure il Ministro intenda adottare per far fronte a questo grave fenomeno;

se il Ministro non ritenga di adoperarsi presso il Ministero dell'interno perché si istituisca in tutte le questure una sezione analoga a quella di Milano che si occupi specificamente di abusi sessuali nei confronti dei bambini. (3-00920)

PIZZINATO, MATTIOLI, RAMON MANTOVANI, POLLASTRINI MODIANO, MARTE FERRARI, PREVOSTO, REBECCHI e STRADA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato, del tesoro, per le funzioni connesse al riordinamento delle partecipazioni statali e del lavoro e previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

la regione Lombardia, nel corso di un'Assemblea Consigliere, ha denunciato la grave crisi e le drammatiche ristrutturazioni che investono in particolare il settore industriale che ha visto, nei primi tre mesi del '93: la chiusura di 7.000 aziende artigiane con 20.000 addetti, l'aumento della disoccupazione dello 0,7 per cento, oltre 40.000 lavoratori in cassa integrazione ed

oltre 7 milioni di ore di CIG, 20.000 in mobilità e un tasso di deindustrializzazione – nell'ultimo decennio – pari all'8,6 per cento;

negli scorsi giorni la Falck ha chiuso il forno T5 dell'acciaieria dello stabilimento Concordia di Sesto S. Giovanni, con una capacità produttiva di circa 750.000 tonnellate annue, contemporaneamente la Direzione aziendale ha annunciato l'esubero di 1.009 lavoratori;

il Gruppo Canelli per l'indebitamento è sull'orlo della liquidazione volontaria che coinvolge gli stabilimenti *ex* Ercole Marelli di Sesto S. Giovanni (da molti mesi i lavoratori non percepiscono il salario);

questi episodi di crisi industriale non sono che gli ultimi di un processo di dismissione che ha investito l'intero assetto industriale di Sesto S. Giovanni e del Nord Milano con la pratica scomparsa, o drastici ridimensionamenti di grandi complessi come: Breda, Magneti Marelli, Ercole Marelli, Falck, Pirelli, Ansaldo, Ilva ed altre decine e decine di stabilimenti medi e piccoli; si calcolano in circa 50.000 unità la riduzione dei posti di lavoro industriali su un'area ove risiedono 350.000 abitanti;

i Ministri interessati non hanno risposto alle precedenti interrogazioni in modo particolare a quelle del 2 febbraio 1993 n. 5-00778, del 18 febbraio 1993 n. 5-00721 e del 18 febbraio 1993 n. 5-00857 –:

quali iniziative intendano assumere a fronte della situazione determinatasi alla Falck ed Ercole Marelli;

se il Governo e i Ministri interessati non ritengano che l'area del Nord Milano (Bicocca, Crescenzago, Sesto S. Giovanni, Cologno, Cinisello etc.) costituisca – stante i processi di deindustrializzazione sopra richiamati – una « area di declino industriale » da inserire nei programmi straordinari di intervento e reinsediamento di attività produttive del Governo come proposto dal comune di Sesto S. Giovanni e dalla regione Lombardia;

quali iniziative il Governo e i Ministri competenti intendano assumere nei confronti della Comunità europea e della CECA al fine di includere l'area del Nord Milano in quelle europee di declino industriale;

se i Ministri per le Privatizzazioni, dell'Industria e del Lavoro, non intendano assumere l'area del Nord Milano come realtà pilota nella quale realizzare, in raccordo con la regione Lombardia: reinsediamenti di attività economiche e produttive, formazione e riqualificazione professionale, attività di ricerca e sperimentazione;

se non intendano convocare congiuntamente la regione Lombardia, i comuni interessati, gli imprenditori e le organizzazioni sindacali, per definire le linee di intervento, i tempi di realizzazione anche al fine di salvaguardare i livelli occupazionali. (3-00921)

LUCCHESI, BIASCI, MACCHERONI e FARAGUTI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere:

se sia vero che il Ministro dei Lavori pubblici, nel corso di una riunione tenutasi presso la Camera di Commercio di Grosseto, avrebbe affermato – come riportato dai giornali locali – la propria intenzione di non procedere alla realizzazione dell'Autostrada Livorno-Civitavecchia, nella tratta Grosseto-Civitavecchia, procedendo, viceversa, all'ammodernamento della statale Aurelia per la stessa tratta « con caratteristiche autostradali »;

se il Ministro dei Lavori Pubblici ritenga ciò compatibile con le leggi della Repubblica che hanno espressamente previsto la realizzazione di tale infrastruttura autostradale (articolo 9, Legge 12 agosto 1982 n. 531, articolo 8 Legge 3 ottobre 1985 n. 526) stanziando un primo finanziamento (600 miliardi) e prevedendo anche quelli successivi (articolo 7 Legge 22 dicembre 1986, n. 910);

se il Ministro dei Lavori Pubblici ritenga compatibili le sue « decisioni » con il Piano Generale dei Trasporti che, nella sua più recente stesura, prevede la realizzazione dell'autostrada e non l'ammodernamento dell'Aurelia per questa tratta e con il Master Plan della C.E.E. che considera l'autostrada Livorno-Civitavecchia fra gli interventi di preminente interesse europeo;

se il ministro dei lavori pubblici abbia valutato che questa sua decisione è in contrasto con la convenzione di concessione stipulata con la Società Autostrada Tirrenica e relativa all'intera autostrada Livorno-Civitavecchia, sulla cui base è stato già realizzato il tratto Livorno-Rosignano prossimo ad entrare in esercizio;

se il ministro dei lavori pubblici abbia valutato che la somma necessaria (1.000/1.200 miliardi) – secondo le sue dichiarazioni – per realizzare l'ammodernamento dell'Aurelia per la tratta in questione sarebbe sufficiente a coprire il contributo statale per il corrispondente tratto autostradale;

se il ministro ritenga essere coerente la sua affermazione del pronto ammodernamento dell'Aurelia con la sua stessa ammissione, fatta nella citata riunione di Grosseto, che il totale dei fondi A.N.A.S. di cui potrebbe disporre per tutta l'Italia sarebbe di tremila miliardi spendibili dal 1995;

se il ministro dei lavori pubblici ritenga legittimo e coerente prospettare finanziamenti per opere non comprese nei programmi perché non ricadenti nel Piano Decennale della Grande Viabilità;

se il ministro sia in grado di fornire assicurazioni sui tempi di realizzazione di questo ammodernamento dell'Aurelia, in mancanza sia del finanziamento che financo dei progetti di massima, dei progetti esecutivi e soprattutto rispetto al progetto autostradale che sarebbe stato aggiornato con la collaborazione degli Enti Locali interessati nella tratta toscana, in modo da corrispondere alle esigenze di tutela dell'ambiente e, quindi, poter superare la V.I.A.;

se corrisponda a verità che in un documento recentemente trasmesso dall'A.N.A.S. ai ministri del tesoro e del Bilancio e della Programmazione Economica per dare attuazione all'articolo 11 della Legge 23 dicembre 1992 n. 498, fra gli investimenti prioritari siano stati compresi tutti quelli indicati dalle citate leggi tuttora in vigore, con l'unica eccezione dell'autostrada Livorno-Civitavecchia, sostituita d'iniziativa dell'A.N.A.S. con il collegamento Asti-Cuneo;

se corrisponda a verità che, viceversa, in un altro documento collegato con il precedente si parla dell'autostrada Livorno-Civitavecchia come di infrastruttura « di preminente interesse nazionale », in evidente contrasto con l'eliminazione sopra segnalata;

se il Presidente del Consiglio ritenga tutto ciò compatibile con il proprio Decreto del settembre 1991, emanato per superare le difficoltà insorte nella valutazione dell'impatto ambientale dell'opera, con la dichiarata intenzione di procedere alla realizzazione dell'autostrada stessa.

(3-00922)

FINI, TATARELLA, VALENSISE, SERVELLO, TREMAGLIA, GASPARRI, IGNAZIO LA RUSSA, LO PORTO, MACERATINI, MATTEOLI, MARTINAT e NANIA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per conoscere:

se ritenga compatibile con la normativa che disciplina la propaganda prima e durante le operazioni di voto, la sua partecipazione alla trasmissione televisiva di Enzo Biagi nella serata di domenica 18 aprile insieme al Segretario della democrazia cristiana on. Martinazzoli con espli-

citi e positivi riferimenti alle tesi del « SI » al Referendum sulla legge elettorale per il Senato;

altresì, quali valutazioni possa dare in ordine alla violazione del dovere di imparzialità previsto dalle leggi in vigore per la RAI-TV, concessionaria del servizio pubblico radiotelevisivo, dovere di imparzialità clamorosamente violato con la trasmissione di cui sopra. (3-00923)

* * *

## INTERROGAZIONI A RISPOSTA IN COMMISSIONE

CICCIOMESSERE. — *Al Ministro della difesa.* — Per sapere – premesso che:

nel 1986 il Ministro della difesa aveva emesso una direttiva nella quale si disponeva l'avvicendamento dopo 3/4 anni degli ufficiali delle direzioni generali tecniche che ricoprivano incarichi a « rischio » amministrativo;

nell'autunno scorso il Ministro della difesa ha richiesto ai vertici interforze e delle Forze armate l'ottemperanza alla richiamata direttiva –:

1) se siano stati avvicendati tutti i Direttori generali dei quali è scaduto o è in via di scadenza il termine massimo dei quattro anni previsti dalla citata direttiva;

2) se e quando sarà avvicendato il Direttore generale della DGCAAAS, atteso l'alto « rischio amministrativo » di tale incarico (gestione contrattuale di non meno di 2.000 miliardi l'anno), il raggiunto limite dei 4 anni nel mandato e la disponibilità, per quanto è dato di sapere, di ufficiali che per grado, qualifiche e *curriculum* sono in grado già da subito di assumere tale incarico. (5-01094)

GRILLI, PETROCELLI, GIORDANO ANGELINI, IMPEGNO, BIRICOTTI GUERRIERI, RONZANI, FREDDA e CHIAVENTI. — *Ai Ministri del tesoro e delle poste e telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

su iniziativa del Direttore generale delle poste, in data 23 marzo 1993, sono stati effettuati gli studi di fattibilità e tutti gli atti amministrativi conseguenti (compreso il decreto ministeriale) per la costituzione di una società per la Filatelia, la pubblicità e il *marketing* che prenderebbe il nome di « Publipost » SpA, la quale dovrebbe svolgere in concessione esclusiva le seguenti attività per conto della stessa amministrazione postale:

*a)* gestione degli abbonati al servizio filatelico;

*b)* iniziative per la diffusione della filatelia;

*c)* gestione e sviluppo del museo postale;

*d)* gestione della propaganda dei servizi d'istituto ed amministrazione delle relative campagne promozionali e pubblicitarie;

*e)* gestione per conto terzi della pubblicità acquisibile negli stabili, sui beni e relative pertinenze e su ogni altro mezzo idoneo della Amministrazione delle poste e delle telecomunicazioni;

*f)* organizzazione e allestimento di mostre e fiere;

*g)* *marketing* e relazione con la clientela;

*h)* ideazione e progettazione di mezzi di comunicazione orientati all'interno o all'esterno della Amministrazione delle poste e delle telecomunicazioni;

*i)* altre attività di studio e operative complementari ai servizi d'Istituto;

la suddetta società, sempre secondo la determinazione del Direttore generale, dovrebbe avere un assetto proprietario con la riserva del 5 per cento alle PT e il 5 per cento ai nuovi soci pubblici e privati, mentre assumerebbe le seguenti caratteristiche gestionali:

« 1) il capitale sociale per un ammontare di 5 miliardi di lire;

2) il personale è in prevalenza di provenienza dall'Amministrazione PT selezionato su basi attitudinali;

3) la sede è prevista in locali arredati di proprietà pubblica (Amministrazione pt o demanio) con oneri di locazione a carico della società;

4) il consiglio si amministrazione è costituito da 7 membri di cui uno designato dall'amministrazione pt, e uno dal Tesoro. Almeno 3 dovranno avere deleghe operative assumendo direttamente la dirigenza della società;

5) il collegio sindacale è costituito da 3 membri effettivi e due supplenti;

6) le funzioni di consigliere delegato e di direttore generale sono assunti da un'unica persona;

7) il rapporto con l'amministrazione pt è in forma di « concessione »;

8) il canone di concessione dovuto all'amministrazione pt è pari al 2 per cento del fatturato;

9) la società potrà svolgere anche attività per conto di altre amministrazioni pubbliche o primarie aziende private non in concorrenza con i servizi pt »;

le organizzazioni sindacali e il personale dell'Ufficio principale filatelico hanno più volte lamentato la mancanza di approfondimenti, di chiarezza e di scarsa tutela dei contratti e dei livelli occupazionali, rilevando in particolare che:

« *a)* le missioni della società sono strettamente riferite ad attività che si ritengono non gestibili con l'attuale organizzazione pubblica dell'amministrazione ma vengono di fatto trasmesse in eredità anche ad un eventuale rapporto con una SpA PT di tipo privatistico;

*b)* non sono a nostra conoscenza i piani economici produttivi di questa società e quindi il rapporto tra capitale azionario, fatturato previsto, costi ricavi prevedibili dell'azienda. Vieppiù agli articoli 7 e 8 si fa riferimento espressamente ad una concessione e al relativo canone senza chiarire l'oggetto e l'eventuale corrispondenza patrimoniale della concessione;

*c)* non è chiaro il motivo che, a fronte di un capitale al 95 per cento PT, induce a prevedere un consiglio di amministrazione di sette membri di cui uno designato dall'amministrazione PT ed uno dal Tesoro;

*d)* non viene fornita la previsione di una struttura aziendale ma nel contempo si precisa, senza addurre motivazioni, il superamento di una presenza del ruolo esecutivo manageriale data dalla fusione delle funzioni di direttore generale e di amministratore delegato in un'unica figura;

*e)* al punto 2 relativo al personale sembrano superarsi le motivazioni contenute nei paragrafi 1, 2 e 2.4 prevedendo la prevalenza di personale PT, selezionato su basi attitudinali;

*f)* la costituzione di una nuova società non può non prevedere la definizione di un idoneo contratto di lavoro che consenta tra l'altro l'assunzione del personale necessario »;

la copertura finanziaria non risulta iscritta al Cap. 540 del bilancio di previsione 1993 delle PT, bensì è prevista dalla legge n. 412 del 1991, la quale giustamente richiede la preventiva approvazione di un programma poliennale d'intervento;

da notizie di fonte ufficiale risulta che l'argomento della costituzione della « Publipost » SpA è stato inserito nell'ordine del giorno della seduta del 6 aprile 1993 —:

1) se non ritengano, ognuno per la propria competenza, di rinviare tale decisione in attesa che tutta la materia venga affidata alla piena ed autonoma valutazione della futura società postale;

2) se non valutino l'inopportunità di un tale provvedimento che è in palese contrasto con l'esigenza di affrontare con urgenza, ma in modo organico, le cause che sono alla base dell'attuale disgregazione dei servizi postali e telegrafici;

3) se non ritenga il Ministro delle PT di venir meno con tale iniziativa all'impegno dichiarato e sancito in Parlamento con la risoluzione n. 7-00158 del 24 febbraio 1993, con la quale il Governo si era impegnato a soprassedere all'applicazione

dell'articolo 17 della 412/91 in assenza di un quadro chiaro di interventi e nell'ambito della riforma del settore. (5-01095)

TRABACCHINI e PIZZINATO. — *Ai Ministri dell'industria, commercio e artigianato, del lavoro e previdenza sociale e per le funzioni connesse al riordinamento delle partecipazioni statali.* — Per sapere – premesso che:

in data 12 novembre 1992 i firmatari presentarono la seguente interrogazione:

« la società Alenia del Gruppo Finmeccanica ha comunicato in data 6 novembre 1992 alle organizzazioni sindacali l'avvenuto accordo con la Società Elettronica di Roma – azienda privata a partecipazione Alenia di minoranza – per il trasferimento in quest'ultima società delle attività di difesa elettronica attualmente svolte presso lo stabilimento Alenia di Pomezia;

dette attività costituiscono una forte percentuale produttiva della sede di Pomezia che occupa circa 500 lavoratori la cui missione, come definitiva negli accordi Alenia-sindacati del 5 dicembre 1991 era proiettata verso un centro di eccellenza degli equipaggiamenti per difesa elettronica ed in particolare nelle attività di optometrica;

il trasferimento ad altra azienda delle attività di difesa elettronica corrisponderebbe secondo Alenia al completamento di processi già avviati di razionalizzazione produttiva del gruppo;

tali processi, per la sede di Pomezia, coinvolgendo oltre 130 lavoratori addetti di cui non si conoscono destini, sembra che si muovano invece nella direzione di una costante riduzione del peso produttivo di detta sede le cui prospettive appaiono sempre più incerte e pericolosamente esposte ad una non ripresa;

tutto ciò appare in una dimensione di poca trasparenza se si tiene conto dei consistenti finanziamenti pubblici erogati per Alenia, l'ultimo dei quali accordato il 29 marzo 1991 di 26 miliardi di cui 13 agevolati e 13 a fondo perduto, indirizzati per la ricerca scientifica e, in particolare per i sistemi della difesa elettronica prodotti nello stabilimento di Pomezia –:

se la decisione di Alenia di passare alla società Elettronica le attività di difesa svolte nella sede di Pomezia non costituisca violazione di patti concordati tra le parti sociali presso le competenti sedi ministeriali;

come si giustifichino i finanziamenti pubblici concessi per una determinata situazione (o attività di Alenia) e il trasferimento di queste attività ad altra società per di più privata;

quale sia la sorte dei 130 lavoratori occupati a Pomezia nei settori che si trasferiscono;

quale sia nel suo complesso per Alenia il costo-ricavo finanziario e produttivo dell'accordo con Elettronica, e quali conseguenze comporta nei rapporti tra le due aziende sul piano societario;

quali prospettive restino per la sede di Pomezia, quali attività dovrebbe svolgere, con quanta occupazione considerando valida la permanenza di questo polo di alta tecnologia in una zona che, non operando più le risorse finanziarie della Cassa del Mezzogiorno, è esposta a seri processi di riduzione del suo peso produttivo e della relativa occupazione »;

a tale interrogazione a tutt'oggi, dopo 4 mesi non è stata data risposta;

gli interroganti ribadiscono la validità della richieste avanzate con l'interrogazione su esposta pur conoscendo in generale gli esiti della vertenza del gruppo Alenia con l'ipotesi di accordo, peraltro non ancora firmato dai sindacati per l'opposizione dei lavoratori Alenia nel quale sarebbero precisati alcuni aspetti che garantirebbero la sopravvivenza produttiva della sede Alenia-Pomezia;

in particolare si ritiene necessario sottolineare il fatto che a distanza di 4 mesi il passaggio in Elettronica SpA delle

attività di difesa elettronica prima di Alenia, non abbia ancora assunto un vero assetto produttivo con una sottoutilizzazione dei lavoratori interessati e che, sembrerebbe aperta la questione di numerosi contratti Alenia nelle attività cedute e non assunti da Elettronica SpA;

tali contratti che Alenia non può più soddisfare avendo ceduto tutto il settore produttivo corrispondente, dovrebbero passare ad Elettronica SpA, con una notevole maggiorazione di costi che andrebbero a gravare in Alenia, costi al di fuori della operazione di passaggio avvenuta;

tutto ciò rende più pressante la necessità di conoscere quanto già richiesto nella precedente interrogazione su l'insieme della operazione Alenia-Elettronica SpA nei suoi aspetti finanziari e produttivi –:

quali iniziative intenda assumere riguardo a quanto esposto in premessa anche con riferimento al sopracitato atto di sindacato ispettivo. (5-01096)

D'AMATO. — *Al Ministro per i beni culturali ed ambientali.* — Per sapere – premesso che:

i custodi trimestrali della Campania, che da 6 anni lavorano solo d'estate e che, allo stato, non hanno notizie se saranno compresi nelle graduatorie di prossima pubblicazione, hanno inscenato, d'intesa con le organizzazioni sindacali CGIL-CISL-UIL, una pubblica manifestazione per richiamare l'attenzione del Ministro e del Governo su una incresciosa quanto inconcepibile situazione occupazionale che si trascina nella più totale indifferenza;

le organizzazioni sindacali hanno chiesto il varo di un piano globale che preveda l'elenco dei musei da aprire e quelli per i quali si intende prolungare l'orario, la quantizzazione del personale occorrente ed i periodi dell'anno, nonché una proposta di utilizzazione al meglio dei trimestrali storici e dei cassaintegrati, tenuto conto che non esistono notizie certe circa la possibilità di impiegare volontari;

le stesse organizzazioni sindacali hanno denunciato il trasferimento in altre amministrazioni di 11 cuatodi, previo comando, e di conoscere, altresì, i criteri di assegnazione di 62 sorveglianti neo assunti –:

quali iniziative intenda assumere affinché, sulla base di un definitivo programma di utilizzazione dell'immenso patrimonio artistico e culturale italiano:

1) si definiscano i nuovi organici fermi al 1976, nonostante l'aumento di spazi espositivi e l'apertura di nuovi archivi e biblioteche;

2) sia verificato il dichiarato *surplus* di organico, tenendo presente che, a quanto risulta, ad eccezione della Sicilia e della Calabria, tutte le regioni avrebbero uno scoperto di posti vautato dal 18 per cento della Liguria al 14 per cento della Toscana per cui nell'Italia meridionale mancherebbero 156 custodi, nell'Italia centrale 291 ed al Nord solo 66;

3) si valuti la possibilità di trasformare i 3 mesi di contratto precario a tempo pieno in contratto di lavoro per 6 mesi *part-time*, con evidenti vantaggi per l'amministrazione pubblica ed il personale interessato. (5-01097)

STANISCIA, DI PIETRO e MELILLA. — *Al Ministro dell'agricoltura e delle foreste.* — Per sapere – premesso che:

in Abruzzo si producono ogni anno circa 450 mila ettolitri di vino Montepulciano d'Abruzzo;

tale vino proviene da un omonimo vitigno presente in Abruzzo da tempi remoti;

il suddetto vino ha ottenuto nei primi anni '70 il riconoscimento della denominazione d'origine controllata;

sono 4 mila, circa, gli ettari di vigneto destinati alla produzione del Monte-

pulciano d'Abruzzo e migliaia sono gli agricoltori che trovano occupazione nella coltivazione degli stessi;

la produzione regionale abruzzese di tale vino muove un giro di affari che supera i 30 miliardi annui;

il Montepulciano d'Abruzzo con tale denominazione si è affermato sui mercati nazionali ed esteri;

la CEE, in applicazione dell'articolo 5 del regolamento 2392 del 1989, propone che la denominazione di Montepulciano d'Abruzzo venga abolita in quanto « il nome di una varietà non può essere confuso con il nome di una regione o di una unità geografica »;

tale circostanza, se trovasse riscontro, comporterebbe dei danni irrimediabili al comparto vinicolo abruzzese, in quanto buona parte dell'immagine della vitivinicultura regionale è legata al Montepulciano d'Abruzzo, infatti il cambio di denominazione disorienterebbe i consumatori e ci sarebbe una perdita di mercato;

tale perdita di mercato avrebbe come conseguenza che una parte di questo pregiato vino rimarrebbe invenduta e dovrebbe essere avviata alla distillazione;

l'Abruzzo ha il riconoscimento per due soli vini DOC, il Montepulciano d'Abruzzo, di cui sopra, ed il Trebbiano;

il problema che si pone per il Montepulciano d'Abruzzo si ripropone per molti altri vini DOC di altre regioni –:

se non ritenga di intervenire affinché la CEE riveda il regolamento di cui sopra ed elimini l'assurda norma che vieta la denominazione di un vino DOC che coincide con il nome di una regione geografica o di una città o, in subordine, conceda una deroga in modo che il vino Montepulciano d'Abruzzo continui a mantenere tale denominazione con cui si è affermato sui mercati nazionali ed esteri. (5-01098)

RONZANI. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

disservizi, ritardi, problemi organizzativi vengono denunciati con sempre maggior frequenza sulla tratta Vignale-Varallo;

per sostituire l'armamento ed automatizzare i passaggi a livello sono stati investiti 20 miliardi;

gli utenti e le comunità locali, che in questi anni si sono battuti contro la chiusura della Vignale-Varallo protestano puntualmente per il verificarsi di problemi che la ristrutturazione avrebbe dovuto risolvere tanto più che al momento della riapertura della tratta i dirigenti del Compartimento FFSS avevano sottolineato che vi sarebbe stato un miglioramento della qualità del servizio;

alcuni problemi, come le difficoltà che si incontrano nel reperire i biglietti, non hanno alcuna giustificazione e in ogni caso è assurdo che gli utenti del servizio debbano faticare per acquistarli;

altri, come la velocità sulla tratta, il mancato rispetto delle coincidenze, l'esiguo numero di vetture a disposizione che costringe i paasseggeri a viaggiare in piedi, richiedono un rinnovamento e un potenziamento del materiale rotabile impiegato su queste linee senza il quale la ristrutturazione sinora compiuta rischia di aver avuto pochissimo senso;

così come avviene per la Biella-Santhià-Novara anche sulla Vignale-Varallo continuano ad essere impiegate le automotrici 668-2400 che hanno mediamente 30 anni di vita;

il fatto che non si sia ancora provveduto a sostituirle comporta problemi di sicurezza come dimostrano i princìpi di incendio verificatisi all'altezza della stazione di Rovasenda e in prossimità di quella di Biella;

non è credibile la tesi, sostenuta dalle FFSS Spa, in risposta alla interrogazione n. 5-00986, secondo cui la causa degli inconvenienti andrebbe ricercata nell'improvviso deterioramento delle guarnizioni;

a ciò si aggiunge la decisione di aumentare a far data dal 1° aprile le tariffe ferroviarie attraverso la soppressione della tariffa 22 sostituita con l'abbonamento ordinario –:

*a)* le ragioni dei disguidi verificatisi all'atto dell'acquisto dei biglietti e quali provvedimenti intende assumere per eliminarli;

*b)* se e quando verranno potenziate le vetture in modo che i passeggeri che intendono utilizzare il servizio possano avere i posti a sedere;

*c)* se e quando verranno sostituite le automotrici impiegate sulla Biella-Santhià-Novara e sulla Vignale-Varallo.

(5-01099)

RONZANI. — *Al Ministro dei trasporti.* — Per sapere – premesso che:

ha avuto una vasta eco sulla stampa locale la presa di posizione dei pendolari che utilizzano la linea Santhià-Biella-Novara;

sono apparse pretestuose le ragioni addotte dalle FF.SS. nel rispondere alla interrogazione n. 5-00986 nella quale venivano denunciati i princìpi di incendio verificatisi su alcune automotrici;

nella loro denuncia i pendolari ricordano:

*a)* che sono stati spese alcune decine di miliardi;

*b)* che tali investimenti che hanno riguardato esclusivamente la linea e la segnaletica, non hanno comportato miglioramenti sostanziali;

*c)* che il materiale rotabile, risalente agli anni '60, è obsoleto, indecoroso, insicuro e inadeguato;

*d)* che le stazioni non più presenziate versano in condizioni penose se è vero che è stato eliminato il servizio di toilette, non è consentito l'accesso nelle sale d'aspetto, i marciapiedi sono sconnesi e le apparecchiature per la obliterazione dei biglietti sono perennemente fuori servizio;

gli utenti non sanno a chi rivolgersi per acquistare i biglietti;

la situazione peggiorerà con l'entrata in vigore del nuovo orario che comporterà un allungamento dei tempi di percorrenza, in particolare sulla linea Biella-Novara;

è una vergogna che il risultato della ristrutturazione sia un allungamento dei tempi di percorrenza a cui si aggiungono i disagi provocati da una totale mancanza di un minimo di confort;

continua a non essere previsto alcun collegamento diretto con Milano nonostante che le FF.SS. si fossero impegnate ad affrontare la questione;

al danno si aggiunge la beffa, rappresentata dall'aumento delle tariffe che in assenza di miglioramento della qualità del servizio, ivi compresi i tempi di percorrenza, non ha alcuna giustificazione –:

1) quanto è sinora costata la ristrutturazione della Biella-Novara;

2) quanto è sinora costata la ristrutturazione, ancora in corso, della Biella-Santhià;

3) cosa le FF.SS. hanno in programma di fare per consentire agli utenti di acquistare i biglietti nel modo più semplice e rapido;

4) se e come le FF.SS. intendono consentire un uso razionale e la manutenzione delle stazioni impresenziate e se esse non possano essere date in comodato ai comuni;

5) quando è in programma la sostituzione delle automotrici 668-2400, il mezzo di trazione diesel più vecchio dell'intero parco FF.SS., sapendo che dalla loro sostituzione dipende la possibilità di risolvere gran parte degli inconvenienti denunciati.

(5-01100)

PIZZINATO, POLLASTRINI MODIANO, RAMON MANTOVANI, MARTE FERRARI e MELILLA. — *Al Ministro dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

la Magistratura milanese ha accertato che (come ampiamente riportato dalla stampa) commercialisti e amministratori di immobili imponevano agli inquilini, dopo aver stipulato il regolare contratto di locazione, il pagamento di un *extra* in nero pena lo sfratto, tanto è che vari di essi sono stati denunciati a piede libero per estorsione;

dopo l'entrata in vigore della Legge n. 359 dell'8 agosto 1992, con il ricatto dello sfratto, il fenomeno degli *extra* in nero sui contratti di affitto si è esteso tanto è, come denunciato dalle associazioni degli inquilini milanesi, che gli sfratti hanno raggiunto il 6,6 per mille dei residenti;

nella città di Sesto San Giovanni (MI), in questo inizio del 1993, gli sfratti esecutivi superano le 300 unità. Come ampiamente documentato dai periodici « *Nuovasesto* » e « *Città Nostra* » si è giunti all'assurdo di:

eseguire uno sfratto con l'ausilio di una autoambulanza e di un medico, contro una donna malata terminale che viveva in uno stabile sito a Sesto San Giovanni, in via Ferrara 35;

eseguire uno sfratto, con l'intervento della forza pubblica e di un'autoambulanza in via Risorgimento, nei confronti di una donna di 85 anni invalida e non autosufficiente che viveva con la figlia;

l'impresa edile Santambrogio S.a.S. di Teresa Manzoni, proprietaria dello stabile sito a Sesto San Giovanni, in viale Casiraghi 102, attraverso propri emissari, ha richiesto un *extra* in nero sull'affitto di 20 milioni, pena lo sfratto. A fronte del rifiuto ha proceduto, alla scadenza dei primi sei contratti, agli sfratti, rifiutando – nelle due udienze presso il Tribunale di Monza – la definizione del « contratto in deroga », limitandosi alla proroga di due anni;

nello stabile sopra citato, costruito nel 1960, vivono da oltre 30 anni 48 nuclei familiari per un totale di 160 persone, che hanno sempre regolarmente pagato gli affitti non dando motivo alcuno di reclamo ed attualmente ben 33 di queste famiglie sono composte da pensionati ultra sessantenni;

l'introduzione dell'ICI, secondo calcoli fatti dall'Associazione degli IACP, comporta che il 35 per cento degli affitti delle circa 100.000 unità immobiliari dello IACP milanese, si trasforma in ICI al quale va aggiunta la maggiorazione dell'IRPEG del 18 per cento al 36 per cento con la pratica impossibilità per l'Istituto di svolgere qualsiasi attività –:

quale diffusione abbia il fenomeno degli *extra* in nero sugli affitti, per quanto a conoscenza del Ministero e quali misure Ministro intenda adottare per porvi rimedio;

quali misure il Ministro intenda adottare a fronte del diffondersi della pratica dello sfratto come arma di ricatto nei confronti degli inquilini che non intendono pagare l'*extra*;

se, a fronte dei fatti sopra riportati non ritenga necessario proporre modifiche alla Legge n. 359 dell'8 agosto 1992 al fine di assicurare certezza abitativa agli inquilini, in particolare a quelli a reddito fisso (salariati, pensionati, ecc.); se non sia necessario realizzare un Fondo Sociale in materia abitativa;

se il Ministro intenda parificare il prelievo fiscale sugli alloggi IACP a quello di proprietà comunale. (5-01101)

PIZZINATO, POLLASTRINI MODIANO e GRILLI. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

la stampa del 13 aprile ha riportato ampi stralci di una relazione alla Magistratura dei Corpi di Polizia relativa a manomissioni e furti della corrispondenza speciale (contenente fidi bancari, assegni

circolari, *etc.*) intervenuti nell'area milanese resi possibili – si legge nella relazione – « dall'arretratezza dell'organizzazione postale, dall'esiguità delle pene comminabili e dalla facile negoziabilità dei titoli di credito nonché dalla difficoltà di assumere elementi provatori.... che formano il substrato fertile nel quale questo tipo di malavita può attecchire e radicarsi profondamente.... », che renderebbero insicura la corrispondenza;

nel territorio servito dall'Ufficio PPTT di Cologno Monzese sarebbero andati dispersi sacchi di corrispondenza, e si verificherebbero ritardi nella distribuzione nonché mancati recapiti di corrispondenza speciale a causa dell'insufficienza dell'organico;

il servizio pacchi postali di Milano – il più grande del Paese – è in serie difficoltà ad assolvere alla sua attività per l'insufficiente dotazione di automezzi di trasporto e per il mancato decentramento nei quartieri dei depositi pacchi;

non si è data risposta alle numerose interrogazioni e interpellanze di deputati milanesi in materia ed in particolare a quelle formulate in data 1° luglio 1992, n. 4-02784; 4 agosto 1992, n. 4-04304; e del 2 marzo 1993, n. 4-11496 –:

se i fatti sopra denunciati corrispondano al vero e quali misure il Ministro intende adottare per rendere sicuro il servizio postale e per assicurare il tempestivo recapito della corrispondenza normale, speciale ed i pacchi;

quali interventi il Ministro intende adottare nei confronti dell'amministrazione postale al fine di assicurare la necessaria dotazione di automezzi al servizio pacchi, e la completezza degli organici all'ufficio PPTT di Cologno Monzese;

quali misure organizzative intendono adottare per rendere efficiente il servizio postale e pacchi della metropoli milanese e del suo *hinterland* senza attendere la trasformazione delle PPTT in S.p.A. (5-01102)

LUCARELLI, JANNELLI, IMPOSIMATO, PECORARO SCANIO e MARTUCCI. — *Al Ministro del tesoro.* — Per sapere — premesso che:

risulta agli scriventi che il Banco di Napoli ricorre da anni ad artifici contabili tesi ad incrementare fittiziamente l'utile lordo ed a falsare la reale capacità di reddito, con la conseguenza di ingannare i risparmiatori, gli analisti di bilancio e gli organi di vigilanza e di controllo;

in modo particolare risulta agli scriventi che, negli ultimi mesi del 1990, il Banco ha concluso con una società finanziaria privata (la Compagnia finanziaria ligure piemontese, con sede in Genova) un acquisto per circa quattrocento miliardi di titoli zero *coupon* che – non avendo cedola – sono stati acquistati ad un prezzo notevolmente inferiore al loro valore nominale;

contestualmente gli stessi titoli sono stati rivenduti ad un prezzo superiore a quello di acquisto di circa cento miliardi in quanto era stato *a latere* stipulato un contratto con l'acquirente che impegnava il banco a corrispondere su quei titoli, per tutti gli anni successivi fino alla loro scadenza, interessi parametrati all'andamento del mercato;

l'operazione, in effetti, non presentava alcun vantaggio economico ma è stata registrata in contabilità in maniera tale da far risultare una maggiorazione di circa cento miliardi degli utili su titoli e quindi dell'utile lordo;

l'incremento di utile era evidentemente solo apparente, in quanto – a fronte di quei ricavi – esistevano oneri per pari importo a carico degli esercizi successivi e non risulta che a fronte di tali oneri il Banco abbia costituito accantonamenti in misura adeguata;

in ogni caso, nella relazione al bilancio è stato ampiamente esaltato il risultato della negoziazione di titoli e l'utile lordo, ma non è stato fatto il benché minimo accenno al problema degli impegni futuri stipulati;

inoltre, anche se gli accantonamenti avessero coperto gli impegni, resta il problema che l'incremento fittizio degli utili ha determinato, a carico dell'anno 1990, il pagamento di imposte per circa cinquanta miliardi che si rarebbe potuto evitare attraverso una corretta registrazione;

tutto ciò, purtroppo, è in linea con la politica praticata dalla direzione dell'istituto di credito, tesa a scaricare sui futuri esercizi tutti gli oneri e le insufficienze dell'attuale e critica gestione –:

se il Ministro intenda fornire adeguati dettagli in merito all'operazione descritta, anche in relazione agli ipotizzabili reati di falso in bilancio o quanto altro in violazione di previsioni codicistiche;

se il Ministro intenda porre sotto una più attenta vigilanza la gestione del Banco di Napoli. (5-01103)

---

*ERRATA CORRIGE*

Nell'allegato B ai resoconti della seduta del 1° aprile 1993, a pagina 9653, seconda colonna, ultima riga, tra i firmatari della mozione Trabacchini ed altri n. 1-00166 deve leggersi: « Elio Vito », e non: « Vito », come stampato.

# *INTERROGAZIONI PER LE QUALI È PERVENUTA RISPOSTA SCRITTA ALLA PRESIDENZA*

## INTERROGAZIONI PER LE QUALI È PERVENUTA RISPOSTA SCRITTA ALLA PRESIDENZA

ALOISE. — *Al Ministro del turismo e dello spettacolo.* — Per sapere – premesso che:

l'Accademia d'arte drammatica della Calabria, con sede in Palmi (RC), un'associazione cui ha aderito la regione Calabria con legge n. 5/90, promuove e gestisce da sette anni un Festival di teatro estivo – che nelle due ultime edizioni ha assunto la denominazione « Calabria arte estate » – ed ha puntualmente presentato istanza al Ministero del turismo per ottenere i contributi previsti dalle leggi vigenti;

che, nonostante il notevole impegno economico e l'alta caratura artistica delle manifestazioni ospitate, il Ministero del turismo ha sistematicamente ignorato le istanze della suddetta accademia, ponendo un forte vincolo all'ulteriore crescita di una manifestazione che svolge, anche, un ruolo importante per la qualificazione dell'offerta turistica della Calabria –:

quali siano i festivals o rassegne teatrali che hanno ottenuto nel 1992 finanziamenti o contributi ministeriali con l'elenco completo degli spettacoli programmati, delle spese sostenute e dei contributi a ciascuno assegnati dal Ministero;

le motivazioni per le quali non sono state ritenute meritevoli di accoglimento le istanze presentate dall'Accademia di Palmi per gli anni 1991 e 1992 e se corrisponde al vero che tali domande siano state rigettate nonostante il parere favorevole degli uffici competenti. (4-09928)

RISPOSTA. — *L'amministrazione nella ripartizione della quota del fondo unico per lo spettacolo riservata alle attività teatrali di prosa tra i vari organismi teatrali, si avvale dle parere delle Commissioni consultivo della prosa, previsto dall'articolo 7 del regio decreto-legge 1° aprile 1935, n. 327 e dall'articolo 2 del decreto legislativo 20 marzo 1948, n. 62, e che, ai sensi dell'articolo 2, 7 comma, della legge 17 febbraio 1982, n. 43, si riuniscono congiuntamente.*

*I criteri e le modalità di ripartizione dei fondi, in mancanza di una disciplina organica di livello legislativo, sono fissati annualmente con circolari ministeriali.*

*L'ammissione al sovvenzionamento dell'organismo teatrale istante, espletata l'istruttoria da parte dell'ufficio in ordine alla presenza dei requisiti oggettivi prescritti nella circolare, è conseguente ad una valutazione della validità artistica del programma presentato e dalla capacità organizzativa del soggetto istante, anche comparativamente alle altre istanze pervenute, che viene formulata esclusivamente (non esistono, infatti, pareri degli uffici competenti) dalle predette commissioni consultive.*

*Esse, infatti, composte, tra l'altro, di operatori ed esperti del settore, forniscono all'amministrazione il necessario ausilio tecnico per le prescritte valutazioni artistiche dei programmi presentati ed organizzative degli operatori teatrali.*

*Le commissioni consultive prosa, nell'esaminare l'istanza presentata dall'accademia d'arte drammatica della Calabria per l'anno 1992, nella seduta del 22 dicembre 1992, espressero, all'unanimità, parere negativo al sovvenzionamento « attesa la riscontrata insussistenza dei presupposti di ammissibilità e dei requisiti normativi ».*

*Detto parere fu, poi, recepito nel decreto ministeriale 23 dicembre 1992.*

*Per l'anno 1992 sono stati disposti i seguenti 35 interventi finanziari a favore di altrettanti festival e rassegne, ai sensi dell'articolo 17 della circolare n. 17 del 28 marzo 1991, di cui i primi 26 come festival di rilevanza nazionale (le cifre si intendono in milioni di lire):*

*Asti – Comune: 150;*

*Chieri – Ente Festival Chieri: 50;*

*Borgio Verezzi – Comune: 95;*

*Milano – Centro servizio per lo spettacolo: 40;*

*Parma – Teatro Festival: 112;*

*Rimini – Ass. Meeting per l'amicizia fra i popoli: 50;*

*Pietrasanta – Comune: 80;*

*San Miniato – Istituto dramma popolare: 95;*

*Arezzo piccolo Teatro città di Arezzo: 20;*

*Monticchiello – Comp. Popolare Teatro Povero: 13;*

*Todi – Todi Festival: 40;*

*Spoleto – Ass. Festival dei due Mondi: 390;*

*Polverigi – Ass. Inteatro: 120;*

*Ancona – Ars Team: 50;*

*Roma – Ass. Festival Teatro Italiano: 125;*

*Caserta – EPT: 90;*

*Napoli – ATEC: 180;*

*Palermo – Ass. incontroazione: 90;*

*Taormina – Comitato Taormina Arte: 260;*

*Vicenza – Comune: 100;*

*Napoli – Ass. Due Città (Fest. Ville Vesuviane): 120;*

*Gibellina – Comune: 160;*

*Verona – Comune: 170;*

*Roma – Actas: 54;*

*Pescara – Ente Manifestazioni Pescaresi: 55;*

*Agrigento – Piccolo Teatro Città di Agrigento: 55;*

*Padova – Ist. Sperimentale Teatro Ragazzi: 20;*

*Sesto Fiorentino – Teatro della Limonata: 25;*

*Pesaro – Festival d'Arte Drammatica: 15;*

*Fano – Centro Teatro Festival Orizzonti: 15;*

*Tagliacozzo – Comune: 7;*

*Tivoli – Comune: 40;*

*Frascati – Comune: 33;*

*Noto (SR) – Ass. Noto Barocca: 70;*

*Basano Del Grappa – Comune: 30.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

BUTTITTA. — *Al Ministro dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

con decreto n. 115 del 19 maggio 1992, è stata opportunamente istituita la riserva marina delle isole Egadi;

tale decreto riguarda in particolare l'isola di Marettimo, estesa per chilometri 15, con 18 chilometri di costa in gran parte accessibile solo via mare, dove vive una comunità profondamente legata all'isola, che ha dimostrato in passato e continua a dimostrare come sia possibile fruire delle risorse naturali senza arrecare danno all'ambiente –:

se, nel rispetto dei valori naturali e culturali dell'isola, al fine di non paralizzarne le attività produttive, provocandone la desertificazione demografica, il Ministro non intenda valutare la opportunità di procedere a una parziale correzione del decreto in oggetto mediante un ridimensionamento della zona di riserva integrale (zona A) e una riduzione dei vincoli delle zone di riserva generale (zona B) e di riserva parziale (zona C);

se, al fine di acquisire necessari ulteriori elementi di conoscenza, anche tenuto conto del giustificato malessere diffuso fra la popolazione interessata, non intenda incontrare al più presto gli amministratori di Favignana, comune nel quale ricade l'isola di Marettimo. (4-04342)

RISPOSTA. — *Si comunica che con decreto 27 dicembre 1991 è stata istituita la riserva naturale marina Isole Egadi.*

*È noto che l'istituzione di un'area protetta comporta limitazioni rigide ai diversi tipi di attività antropiche; limitazioni e vincoli che, nel caso oggetto della presente interrogazione, possiedono caratteri differenziali di articolazione e graduazione a seconda del diverso tipo di tutela previsto per le varie zone: zona A di riserva integrale; zona B di riserva generale; zona C di riserva parziale.*

*Nella zona A di riserva integrale, sono vietate: l'asportazione, anche parziale, e il danneggiamento delle formazioni geologiche e minerali; la navigazione, l'accesso e la sosta di navi e natanti di qualsiasi genere e tipo, ad eccezione di quelli debitamente autorizzati dall'ente gestore per motivi di servizio o di studio; la balneazione; la pesca sia professionale che sportiva con qualunque mezzo esercitata; l'immersione con o senza apparecchi respiratori, fatte salve le immersioni autorizzate dall'ente gestore per finalità di ricerca scientifica; la caccia, la cattura, la raccolta, il danneggiamento e in genere qualunque attività che possa costituire pericolo o turbamento delle specie animali o vegetali, ivi compresa l'immissione di specie estranee; l'alterazione, con qualsiasi mezzo, diretta o indiretta, dell'ambiente bentonico e delle caratteristiche chimiche, fisiche e biologiche delle acque, nonché la discarica dei rifiuti solidi e liquidi e in genere l'immissione di qualsiasi sostanza che possa modificare, anche transitoriamente, le caratteristiche dell'ambiente marino; le attività che possono comunque arrecare danno, intralcio o turbativa alla realizzazione dei programmi di studio e di ricerca da attuarsi sull'area.*

*Nella zona B di riserva generale sono vietate: le immersioni con apparechi autorespiratori se non previa autorizzazione dell'ente gestore della riserva; la pesca subacquea; qualsiasi altra forma di pesca sportiva o professionale che non sia stata previamente autorizzata dall'ente gestore della riserva.*

*Sono consentite la balneazione, la fotografia subacquea in apnea nonché la navigazione oltre i 500 metri dalla costa.*

*L'ente gestore può consentire la navigazione, anche entro i 500 metri dalla costa ai natanti adibiti alla visita del pubblico, con personale debitamente autorizzato dall'ente stesso, nonché nei modi e nei periodi che dovranno essere previsti dal regolamento.*

*Nella zona C di riserva parziale sono consentite: la pesca professionale, la pesca sportiva e le immersioni con apparecchi autorespiratori, previa autorizzazione dell'ente gestore della riserva secondo quanto sarà previsto dal regolamento è comunque vietata qualunque forma di pesca con reti da traino.*

*In tale zona saranno effettuati interventi di protezione e di incremento delle risorse ittiche, anche mediante eventuale immissione di strutture artificiali, da realizzarsi in aree opportunamente scelte sulla base di specifiche indagini scientifiche.*

*Per quanto riguarda l'isola di Marettimo, sono presenti una zona A di riserva integrale, e due zone B di riserva generale, e una zona C di riserva parziale.*

*La zona A di riserva integrale comprende il tratto di mare tra la punta che delimita a sud-ovest Cala Bianca, il faro a sud di punta Libeccio e l'isobata di 50 metri, e delimitata dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

*La zona B di riserva generale comprende nell'isola di Marettimo due aree:*

a) *il tratto di mare tra la punta che delimita a sud-ovest Cala Bianca, la punta Troia e l'isobata dei 50 metri delimitato dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

b) *il tratto di mare tra la punta Bassana, il faro a sud di punta Libeccio e l'isobata dei 50 metri delimitato dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

*La zona C di riserva parziale comprende il residuo tratto di mare all'interno del perimetro della riserva.*

*L'articolo 8 del summenzionato decreto, prevede la regolamentazione della riserva, per cui con l'approvazione del regolamento potranno essere previsti fra i servizi della riserva anche le attività di visita guidata*

*all'interno della stessa zona A, con definizione di percorsi, tempi, numero e tipologia dei natanti, che, come esplicitamente previsto dall'articolo 3 ultimo comma, potranno essere gestiti in via prioritaria ed agevolata dai residenti locali.*

*Considerato inoltre che la quasi totalità della costa orientale dell'isola risulta libera da limitazioni di uso, essendo solo soggetta ai vincoli di regolamentazione previsti per la zona C, come sopra specificato, ed essendo perciò di massima consentite sia la pesca che le attività turistiche e ricreative, emerge una pianificazione ambientale che non solo non determinerà penalizzazione dell'economia locale, ma potrà invece favorire uno sviluppo duraturo basato sulla conservazione delle risorse naturali ed ambientali.*

*Si riferisce, infine, che, congiuntamente all'ispettorato centrale della difesa mare del Ministero della marina mercantile, il servizio conservazione della natura di questo Ministero, ha preso parte a diversi incontri con i rappresentanti del comune di Favignana. L'ultimo si è tenuto in data 13 novembre u.s. ed è in tale sede emersa la disponibilità dell'amministrazione comunale di Favignana a collaborare con questo Ministero per la realizzazione della riserva.*

*Ci si propone di continuare tali incontri al fine di raggiungere intese e consensi per il funzionamento a regime dell'area protetta e la contestuale realizzazione di specifici piani di sviluppo per la comunità locale; il prossimo si terrà a Roma – Piazza Venezia 11 – il 15 c.m. con i rappresentanti delle categorie.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

CALZOLAIO. — *Ai Ministri dell'ambiente, per il coordinamento della protezione civile e della sanità.* — Per sapere – premesso che:

nel 1983 analisi condotte su alcuni pozzi agricoli nella zona di S. Ubaldo (vicino Jesi, in provincia di Ancona) fecero riscontrare valori di cromo esavalente (riconosciuto come cancerogeno) trentasei volte superiore ai limiti di legge;

già dagli anni Settanta un'azienda della zona, la RCD di Monsano (specializzata nel trattamento di componenti metalliche), aveva sistematicamente sversato nel terreno circostante una quantità enorme di reflui di lavorazione con conseguente dilavamento del cromo nel reticolo sotterraneo che attraversa il bacino dell'Esino;

dopo denunce e interrogazioni di associazioni e enti locali i Ministeri della sanità e della protezione civile nominarono una Commissione di esperti che definì un piano di intervento, parzialmente realizzato nel marzo 1987; furono così costruiti una paratia impermeabile sotterranea lungo tutto il perimetro dell'area dello stabilimento e due pozzi drenanti per non far tracimare l'acqua contaminata a causa delle infiltrazioni piovane (non arrivò, invece il previsto depuratore per la decontaminazione dell'acqua drenata);

nel settembre 1990 un agricoltore della zona si accorse che l'acqua del proprio pozzo aveva uno strano colore giallo-verdino; le analisi immediatamente effettuate rivelarono una presenza nell'acqua di cromo esavalente in 22 parti per milione, contro una soglia massima ammessa di 50 parti per miliardo (quindi 440 volte superiore il limite di legge), profilandosi un disastro ecologico per l'intera Vallesina ed una minaccia per l'alveo stesso del fiume Esino fino al mare;

la nuova proprietà dell'azienda, subentrata nel 1989 dopo il fallimento del Gruppo SIMA e l'intervento della GEPI, ha già effettuato una completa ristrutturazione dell'impianto produttivo ed è richiesto all'impresa un'ulteriore serie di interventi tesi a prevenire eventuali infiltrazioni d'acqua;

ancora non si conoscono esattamente quale sia il livello di inquinamento e che area del territorio ne sia interessata;

attualmente siamo ancora all'emergenza e ai provvedimenti-tampone (come il telone di plastica che dovrebbe limitare il pericolo di nuove fuoriuscite di cromo dalla paratia costruita cinque anni fa)

mentre non scendono di livello i parametri dell'inquinamento tenuto sotto controllo dalla USL 10 delle Marche e si sono avuti continui rimpalli di responsabilità (tra Ministeri della Protezione Civile e dell'Ambiente, tra Governo e Regione, tra Regione e Azienda, ecc.) –:

*a)* se ritengono ancora valido il progetto complessivo di risanamento (per un importo di spese di lire 2.600.000) elaborato da una apposita Commissione tecnico-scientifica del Ministero per la Protezione Civile (insediata nel marzo 1986) che prevedeva opere di intervento (costruzione di un paratia, di opere drenanti, di un depuratore, di alcuni pozzi, di un acquedotto di soccorso, la ricostruzione di una fogna) e opere di soccorso (costruzione acquedotti ad uso irriguo); che furono molto parzialmente realizzate (nemmeno tutto il 1° stralcio) nel febbraio 1987;

*b)* come intendono promuovere un'accurata azione di monitoraggio dei pozzi e delle zone limitrofe, una mappa dettagliata del fenomeno e delle sue esatte dimensioni, la corretta informazione su tutti i possibili effetti dell'inquinamento da cromo sia per quanto riguarda la salute dei lavoratori e dei cittadini che le attività agricole locali e le risorse ambientali;

*c)* se non ritengono importante disotterrare i (quintali e quintali di) fanghi cromici;

*d)* viste le pesanti carenze delle gestioni aziendali passate (comprese quelle della GEPI) come intendano contribuire a garantire l'occupazione e la salute dei lavoratori;

*e)* quando intendono avviare l'azione di bonifica e di risanamento dell'area, con tempi definiti, competenze chiare, finanziamenti certi per affrontare quello che sembra il più consistente caso di inquinamento da cromo mai avvenuto in Europa. (4-04712)

RISPOSTA. — *In merito al grave problema dell'inquinamento da cromo delle acque sotterranee in Vallesina che interessa il comune di Monsano e marginalmente i comuni di Iesi, Chiaravalle e Monte S. Vito si ritiene opportuno illustrare brevemente l'evoluzione dei fatti e di riferire sugli interventi fino ad oggi adottati sia dalle competenti autorità locali, sia dal dipartimento della protezione civile, per fronteggiare la situazione.*

*L'origine del fenomeno è stata individuata in attività risalenti al periodo compreso tra il 1968 ed il 1974 e consistenti nello smaltimento incontrollato di fanghi e reflui liquidi che contenevano cromo esavalente, operato dalla ditta R.C.D. di Monsano, oggi Sima che effettuava trattamenti galvanici delle superfici metalliche.*

*A seguito delle indicazioni della commissione tecnica insediata dal Ministro della protezione civile nel marzo 1986, veniva all'epoca elaborato un progetto complessivo di risanamento, del costo totale di lire 4,6 miliardi. Esso prevedeva:*

*la messa in opera di barriere fisiche (paratie) perimetralmente allo stabilimento ex R.C.D. e opere di drenaggio delle acque meteoriche, al fine di assicurare il contenimento della massa di rifiuti cromici;*

*opere di rifacimento fognature interne allo stabilimento;*

*impianto di trattamento delle acque cromiche drenate dai pozzi;*

*opere di soccorso quali la realizzazione di acquedotti ad uso irriguo; il tutto accompagnato dall'indicazione dei costi di gestione e servitù, sia per le opere di intervento, che per quelle di soccorso.*

*Con ordinanza del Ministro per la protezione civile n. 766 del 4 luglio 1986 veniva finanziato il primo stralcio del progetto in parola per un importo di lire 770 milioni: il relativo costo era posto a carico del fondo per la protezione civile.*

*I lavori iniziati nell'agosto 1986, furono ultimati nel febbraio 1987; furono realizzati soltanto la paratia ed i pozzi di emungimento poiché lo stanziamento risultò insufficiente a realizzare l'impianto di trattamento delle acque e le opere di soccorso.*

*Nel marzo 87, il servizio decentrato opere pubbliche della regione Marche, redigeva il*

*progetto definitivo delle opere di completamento, per un importo complessivo di 1,2 miliardi.*

*Inoltrato detto progetto al dipartimento per la protezione civile, esso non trovava finanziamento essendo esaurito lo stanziamento previsto dalla legge n. 730/86. Essendosi in seguito, a partire dal 1989, rilevata la presenza di cromo nelle acque sotterranee anche a notevole distanza dal sito contaminato, la commissione tecnica a suo tempo insediata, convocata dal prefetto di Ancona il 6 febbraio 1990, indicava la necessità di pompare le acque invasate e portarle a depurazione, onde evitare il verificarsi di tracimazioni ed il conseguente ulteriore inquinamento del suolo e sottosuolo.*

*Detta commissione suggeriva altresì il trasporto delle acque così pompate, presso la raffineria Api di Falconara per il loro trattamento di depurazione.*

*Scongiurato in tal modo il pericolo di tracimazione, il comune di Monsano e la regione Marche, con propri atti ed in particolare con tre ordinanze emesse dal sindaco di Monsano rispettivamente il 28 maggio 1992, il 14 luglio 1992 e il 1° settembre 1992, ingiungevano alla ditta Sima, diventata proprietaria dello stabilimento, di realizzare gli ulteriori interventi necessari per completare la messa in sicurezza del sito.*

*In particolare detti interventi dovevano consistere nella posa in opera di una geomembrana impermeabile su tutte le superfici dello stabilimento non impermeabilizzate ed in una verifica sia dello stato e della tenuta della rete fognaria all'interno dello stabilimento, sia delle condotte all'interno dell'area circoscritta dalla paratia impermeabile a suo tempo realizzata.*

*La ditta Sima proponeva ricorso al TAR Marche chiedendo la sospensione dell'efficacia dell'ordinanza n. 11 del 28 maggio 1992 del sindaco di Monsano; il TAR rinviava la decisione, preannunciando altresì di voler disporre una propria perizia di ufficio. Al momento sono in corso di valutazione tecnica le riserve eccepite dalla ditta in ordine alla reale necessità di eseguire i suddetti lavori.*

*Tale essendo lo stato di fatto, poiché la contaminazione delle acque sotterranee, atteso il lungo lasso di tempo trascorso dall'evento che l'ha originato, ha ormai un'estensione a largo raggio, è evidente che la messa in sicurezza del sito contaminato attraverso la sua sigillatura, non rappresenta un intervento risolutivo.*

*Attualmente, pur non risultando che le acque siano usi potabili delle acque interessate, il Ministero dell'ambiente ha ritenuto tuttavia necessario dare impulso alla unità sanitaria locale n. 10 di Ancona affinché venga avviato un attento monitoraggio del fenomeno per controllare l'evoluzione della contaminazione.*

*Tale organo sanitario dovrà contestualmente sottoporre a controllo anche l'idoneità all'uso irriguo delle acque interessate.*

*Il Ministero dell'ambiente ha inoltre dato incarico all'Avvocatura generale dello Stato di tutelare l'interesse pubblico di cui è portanome richiedendo alla società Sima il risarcimento del danno ambientale e il rimborso degli oneri di risanamento sopportati dallo Stato nelle sue varie articolazioni. Il dipartimento della protezione civile, informato di tale iniziativa, sta inoltre valutando se ricorrano gli estremi per l'adozione dei provvedimenti previsti dall'articolo 5 della legge 24 febbraio 1992, n. 225 sulla istituzione del servizio nazionale della protezione civile (articolo 5: deliberazione dello stato di emergenza e potere di ordinanza).*

*Tanto si rappresenta, rilevando che questo Ministero avrà cura di seguire gli ulteriori sviluppi del problema.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

CRUCIANELLI e TRIPODI. — *Al Ministro per l'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

la SIP utilizza pali per la realizzazione di impianti telefonici impregnati, in misura massiccia, di pesticidi;

tali pali, per esplicita ammissione della SIP stessa in un documento ad uso interno, contengono « nella loro struttura chimica metalli pesanti particolarmente tossici, quali arsenico e cromo ... »;

i sali contenuti nei pali non sono indilavabili, come più volte affermato dall'Azienda telefonica, poiché analisi comparate tra quantità di sali contenute percentualmente in sezione di palo nuove e sezioni di pali recuperati dopo una esposizione agli agenti atmosferici di qualche anno, dimostrano il contrario;

il prelievo di campioni di terreno circostante la base del palo in opera da sottoporre ad analisi è mistificatorio poiché in occasione di dilavamento i sali penetrano nel sottosuolo;

l'unità sanitaria locale n. 10 della regione Marche (con sede a Iesi) ha accertato la tossicità dei pali;

la SIP potrebbe utilizzare per gli impianti telefonici sostegni alternativi o pali ecologici quali ad esempio quelli impregnati con sali non tossici denominati ECOLIGNUM CX-S;

nonostante le recenti notizie di stampa sull'argomento la SIP non ha modificato minimamente la propria procedura dimostrando un chiaro disprezzo per i problemi ecologici e di difesa ambientale;

la SIP utilizza tutti i mezzi di pressione per difendere i propri interessi, infatti in una nota interna dell'Azienda relativamente all'inquinamento del terreno con l'impiego dei pali trattati con pesticidi si legge testualmente: « nel 1989 il problema fu posto con interrogazione in Parlamento... la risposta fornita a quel tempo dall'allora Ministro delle Poste e Telecomunicazioni era stata sufficiente a smorzare la questione »;

la SIP definisce i pali recuperati e tolti d'opera « rifiuti tossico-nocivi » (decreto del Presidente della Repubblica 915 del 1982, decreto-legge 397 del 1988, convertito con modifiche, nella legge 475 del 1988) ma nonostante ciò cede in maniera onerosa tali pali ad alcune ditte che, previa lavorazione, li disperdono nuovamente nell'ambiente evitando con ciò la distruzione di prodotti altamente tossici per l'ambiente –:

quali provvedimenti si intendono adottare in proposito. (4-04655)

RISPOSTA. — *La concessionaria SIP per il trattamento di impregnazione dei pali telefonici in legno di pino, adotta il procedimento dell'autoclave a vuoto e pressione, denominato Bethel a cellula piena, attuato in Italia da alcune ditte specializzate.*

*La soluzione acquosa impiegata è del tipo indilavabile (Boliden K 33 oppure Tanalith C) al 2 – 3 per cento di sali a base di rame, cromo e arsenico (CCA) che possono considerarsi insolubili in quanto, a contatto con le sostanze organiche presenti nel legno, danno luogo a reazioni chimiche irreversibili.*

*Gli accertamenti condotti dal Consiglio Nazionale delle ricerche, mediante il proprio istituto del legno di S. Michele all'Adige, hanno evidenziato che la quantità di sali CCA dispersa durante l'utilizzazione dei pali è generalmente modesta e che l'effetto dilavabilità dei sali produce nelle acque disperse nel terreno una concentrazione di rame pari a 0,01 parti per milione, circa 20 volte inferiore ai limiti previsti dalla legge n. 319 del maggio 1976; per gli altri due componenti, cromo e arsenico, non sono state riscontrate perdite misurabili.*

*Ulteriori analisi sono state effettuate su alcuni pali telefonici, nel corso del 1989, dalla unità sanitaria locale n. 16 di Modena; i risultati di tali ricerche, esposti in una relazione finale del 25 luglio 1989, hanno ribadito la non sussistenza di problemi igienico-ambientali legati all'eventuale trasferimento di inquinanti al suolo.*

*A livello internazionale, l'inquinamento ambientale prodotto dai preservanti dei pali di legno, del tipo CCA, è stato oggetto di valutazione da parte dell'EPA* (U.S. Enviromental Protection Agency), *che ha giudicato, senza riserve, non inquinante per l'ambiente tale procedura di impregnazione.*

*In Italia la materia è regolamentata dalla norma UNI (Istituto italiano per l'unificazione) n. 8580 del gennaio 1984 nonché dalle norme n. 8859 e n. 8860 del gennaio 1986 relative a trattamenti con sali di CCA; il capitolato SIP n. 1082 è conforme alle predette norme.*

*Si rammenta, altresì, che la direttiva adottata dal Consiglio della Comunità europea in data 21 dicembre 1989 precisa, al punto 20, che le soluzioni di sali inorganici (quali il rame, il cromo e l'arsenico) utilizzati negli impianti industriali per l'impregnazione del legno sotto vuoto o sotto pressione, non costituiscono oggetto di divieto.*

*Per quanto riguarda il problema dei pali disinstallati si assicura che i criteri seguiti dalla SIP per il loro smaltimento rispondono all'esigenza di garantire, nel modo più rigoroso, la preservazione dell'ambiente da eventuali contaminazioni.*

*In merito, infine, all'utilizzo di pali cosiddetti ecologici, si comunica che è in via di sperimentazione presso la SIP l'introduzione di pali trattati con materiali privi di tossicità, il che semplificherebbe anche le procedure connesse alla dismissione dei pali medesimi.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

CRUCIANELLI e CAPRILI. — *Ai Ministri dell'ambiente, delle poste e telecomunicazioni, dell'industria, commercio e artigianato e,* ad interim, *delle partecipazioni statali.* — Per sapere se corrisponde al vero la notizia che circola da più parti secondo la quale la SIP intenderebbe promuovere un'azione, avvalendosi di non ben definiti « canali politici », tesa ad ottenere la variazione in aumento degli indici minimi di tossicità relativamente a cromo, arsenico e rame. (4-04656)

RISPOSTA. — *Non risultano pervenute, da parte della SIP, richieste volte ad ottenere un aumento delle percentuali di cromo, arsenico e rame nel trattamento di impregnazione dei pali telefonici.*

*Si assicura, comunque, che i competenti organi sanitari valuteranno con la massima scrupolosità le eventuali richieste che dovessero pervenire in tal senso.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

EBNER. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che il 2 gennaio 1990 il Ministero del lavoro ha inserito 2mila persone negli uffici di collocamento con un contratto privato a tempo determinato;

che alla fine di dicembre 1991 dette persone dovranno o essere licenziate o essere assunte a tempo indeterminato, sempre dal Ministero –:

quale sia l'orientamento del Ministero per quanto riguarda la decisione che verrà presa nei confronti delle persone interessate;

se comunque non ritenga opportuno devolvere la competenza per gli uffici di collocamento alla regione al fine di snellire alcune procedure burocratiche come nel caso in questione. (4-00041)

RISPOSTA. — *Con la legge 20 gennaio 1992, n. 22, articolo 2, è stata prorogata, di ulteriori 24 mesi, la durata del contratto di diritto privato stipulato per la assunzione, ai sensi della legge 160/88, di duemila unità di personale impiegatizio presso questo Ministero.*

*Si precisa, inoltre, che in materia di collocamento non sono previste forme di decentramento regionale, modificative dell'assetto solo recentemente raggiunto a seguito della riforma del mercato del lavoro intervenuta con la legge n. 56/87 e con la legge n. 223/91.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

FOLENA. — *Ai Ministri dell'ambiente e della marina mercantile.* — Per sapere – premesso che:

sono state recentemente istituite le riserve marine dell'arcipelago delle isole Egadi (Trapani);

la passata amministrazione comunale di Favignana, a guida DC, non si è occupata di operare perché tale istituzione, che ha un grande valore per le straordinarie ricchezze naturali dell'arcipelago, fosse l'occasione di una crescita delle attività economiche della popolazione locale, soprattutto nel settore del turismo qualificato e della promozione di itinerari naturalistici –:

se non ritengano necessario promuovere urgentemente un confronto con la popolazione dell'arcipelago e con le diverse categorie economiche per coinvolgere la comunità dell'arcipelago nel processo istitutivo delle riserve marine. (4-01902)

RISPOSTA. — *Si comunica che con decreto 27 dicembre 1991 è stata istituita la riserva naturale marina Isole Egadi.*

*È noto che l'istituzione di un'area protetta comporta limitazioni rigide ai diversi tipi di attività antropiche; limitazioni e vincoli che, nel caso oggetto della presente interrogazione, possiedono caratteri differenziali di articolazione e graduazione a seconda del diverso tipo di tutela previsto per le varie zone: zona A di riserva integrale; zona B di riserva generale; zona C di riserva parziale.*

*Nella zona A di riserva integrale, sono vietate: l'asportazione, anche parziale, e il danneggiamento delle formazioni geologiche e minerali; la navigazione, l'accesso e la sosta di navi e natanti di qualsiasi genere e tipo, ad eccezione di quelli debitamente autorizzati dall'ente gestore per motivi di servizio o di studio; la balneazione; la pesca sia professionale che sportiva con qualunque mezzo esercitata; l'immersione con o senza apparecchi respiratori, fatte salve le immersioni autorizzate dall'ente gestore per finalità di ricerca scientifica; la caccia, la cattura, la raccolta, il danneggiamento e in genere qualunque attività che possa costituire pericolo o turbamento delle specie animali o vegetali, ivi compresa l'immissione di specie estranee; l'alterazione, con qualsiasi mezzo, diretta o indiretta, dell'ambiente bentonico e delle caratteristiche chimiche, fisiche e biologiche delle acque, nonché la discarica dei rifiuti solidi e liquidi e in genere l'immissione di qualsiasi sostanza che possa modificare, anche transitoriamente, le caratteristiche dell'ambiente marino; le attività che possono comunque arrecare danno, intralcio o turbativa alla realizzazione dei programmi di studio e di ricerca da attuarsi sull'area.*

*Nella zona B di riserva generale sono vietate: le immersioni con apparechi autorespiratori se non previa autorizzazione dell'ente gestore della riserva; la pesca subacquea; qualsiasi altra forma di pesca sportiva o professionale che non sia stata previamente autorizzata dall'ente gestore della riserva.*

*Sono consentite la balneazione, la fotografia subacquea in apnea nonché la navigazione oltre i 500 metri dalla costa.*

*L'ente gestore può consentire la navigazione, anche entro i 500 metri dalla costa ai natanti adibiti alla visita del pubblico, con personale debitamente autorizzato dall'ente stesso, nonché nei modi e nei periodi che dovranno essere previsti dal regolamento.*

*Nella zona C di riserva parziale sono consentite: la pesca professionale, la pesca sportiva e le immersioni con apparecchi autorespiratori, previa autorizzazione dell'ente gestore della riserva secondo quanto sarà previsto dal regolamento è comunque vietata qualunque forma di pesca con reti da traino.*

*In tale zona saranno effettuati interventi di protezione e di incremento delle risorse ittiche, anche mediante eventuale immissione di strutture artificiali, da realizzarsi in aree opportunamente scelte sulla base di specifiche indagini scientifiche.*

*Per quanto riguarda l'isola di Marettimo, sono presenti una zona A di riserva integrale, e due zone B di riserva generale, e una zona C di riserva parziale.*

*La zona A di riserva integrale comprende il tratto di mare tra la punta che delimita a sud-ovest Cala Bianca, il faro a sud di punta Libeccio e l'isobata di 50 metri, e delimitata dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

*La zona B di riserva generale comprende nell'isola di Marettimo due aree:*

a) *il tratto di mare tra la punta che delimita a sud-ovest Cala Bianca, la punta Troia e l'isobata dei 50 metri delimitato dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

b) *il tratto di mare tra la punta Bassana, il faro a sud di punta Libeccio e l'isobata dei 50 metri delimitato dalla congiungente i punti indicati nella cartografia allegata al decreto.*

*La zona C di riserva parziale comprende il residuo tratto di mare all'interno del perimetro della riserva.*

*L'articolo 8 del summenzionato decreto, prevede la regolamentazione della riserva, per cui con l'approvazione del regolamento potranno essere previsti fra i servizi della riserva anche le attività di visita guidata all'interno della stessa zona A, con definizione di percorsi, tempi, numero e tipologia dei natanti, che, come esplicitamente previsto dall'articolo 3 ultimo comma, potranno essere gestiti in via prioritaria ed agevolata dai residenti locali.*

*Considerato inoltre che la quasi totalità della costa orientale dell'isola risulta libera da limitazioni di uso, essendo solo soggetta ai vincoli di regolamentazione previsti per la zona C, come sopra specificato, ed essendo perciò di massima consentite sia la pesca che le attività turistiche e ricreative, emerge una pianificazione ambientale che non solo non determinerà penalizzazione dell'economia locale, ma potrà invece favorire uno sviluppo duraturo basato sulla conservazione delle risorse naturali ed ambientali.*

*Si riferisce, infine, che, congiuntamente all'ispettorato centrale della difesa mare del Ministero della marina mercantile, il servizio conservazione della natura di questo Ministero, ha preso parte a diversi incontri con i rappresentanti del comune di Favignana. L'ultimo si è tenuto in data 13 novembre u.s. ed è in tale sede emersa la disponibilità dell'amministrazione comunale di Favignana a collaborare con questo Ministero per la realizzazione della riserva.*

*Ci si propone di continuare tali incontri al fine di raggiungere intese e consensi per il funzionamento a regime dell'area protetta e la contestuale realizzazione di specifici piani di sviluppo per la comunità locale; il prossimo si terrà a Roma – Piazza Venezia 11 – il 15 c.m. con i rappresentanti delle categorie.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

ALFREDO GALASSO, NOVELLI e ORLANDO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri per la funzione pubblica e del tesoro.* — Per sapere – premesso che:

l'articolo 14, comma 11 del decreto del Presidente della Repubblica n. 171 del 1991 (contratto di lavoro per il comparto degli enti di ricerca), autorizza gli enti destinatari del provvedimento stesso a bandire un concorso per l'attribuzione del profilo professionale di « collaboratore tecnico enti di ricerca » di VI livello, riservato al personale interno che, in possesso di diploma di istruzione secondaria di secondo grado, avendo rivestito nel precedente ordinamento il profilo professionale di « assistente tecnico statistico », abbia optato, ai sensi dello stesso articolo 14, comma 11, seconda parte, per il profilo professionale di « operatore tecnico » di VII livello;

la Presidenza del Consiglio dei ministri – Dipartimento per la funzione pubblica – con lettera-circolare n. 79848/6.2.16 del 26 settembre 1991, dettava norme per l'applicazione dell'accordo di lavoro recepito con il citato decreto del Presidente della Repubblica, e ciò ai fini di una corretta ed omogenea applicazione dell'accordo stesso, giusta il disposto dell'articolo 2 comma 1, del decreto del Presidente della Repubblica n. 568 del 1987;

la suddetta circolare ribadiva, in maniera chiara ed inequivocabile, che la partecipazione al citato concorso era preclusa a quei dipendenti che, rinunciando alla preventiva opzione per il profilo di « operatore tecnico », avessero deciso di conservare « *ad personam* » quello di « assistente tecnico statistico »;

l'ISTAT (Istituto nazionale di statistica), malgrado le precise disposizioni impartite dal Dipartimento della funzione pubblica, nel bandire il concorso di cui trattasi, con deliberazione n. 104/P del 17 marzo 1992, disattendeva totalmente le linee indicate nella detta circolare, pure recepite da tutti gli altri enti del comparto di ricerca, dal momento che consentiva, senza alcuna ragione plausibile, la partecipazione al concorso a tutti gli assistenti tecnico-statistici, senza il preventivo esercizio dell'opzione per il profilo di « operatore tecnico »;

il bando, pertanto, risultava inficiato da evidenti vizi di legittimità tali per cui circa duecento dipendenti si vedevano costretti ad adire il TAR del Lazio con ricorso del 15 aprile 1992, notificato anche alla Presidenza del Consiglio dei Ministri —:

se siano al corrente dei fatti sopra esposti ed in caso contrario se non intendano accertarli;

se non intendano attivarsi, ciascuno nell'ambito delle proprie competenze, affinché l'ISTAT provveda a rispettare la citata circolare, con conseguente annullamento del bando di cui alla deliberazione n. 104/P; ciò, anche, considerando il danno ingente e la perdita di credibilità che alla pubblica amministrazione deriverebbe dall'espletamento di un concorso fuori dal rispetto di legge. (4-02282)

RISPOSTA. — *L'accordo per il comparto enti di ricerca, recepito con decreto del Presidente della Repubblica 12 febbraio 1991, n. 171, stabilisce un nuovo ordinamento del personale che si articola in livelli ed in profili professionali che, solo in parte, trovano corrispondenza con le preesistenti qualifiche funzionali.*

*Infatti, la fase di primo inquadramento è stata attuata sulla base di una tabella di equiparazione nella quale non figura il profilo di assistente tecnico statistico, in quanto questo in precedenza derivava dall'aggregazione di funzioni effettuata dall'ISTAT ai sensi dell'articolo 3 del decreto del Presidente della Repubblica n. 285/88.*

*Ai dipendenti cui era stato attribuito tale profilo, l'articolo 14, comma 11, del decreto del Presidente della Repubblica n. 171/91, oltre a garantire il mantenimento del profilo preesistente e l'attribuzione del VII livello professionale, consente di accedere a due percorsi di carriera: quella tecnica (profilo di operatore tecnico, VII livello, con possibilità di accesso al VI livello, immediato, per i c.d. apicali e, in via successiva per gli altri) e quella amministrativa (profilo di collaboratore di amministrazione VII livello, con possibilità di accesso al VI ed al V livello del medesimo profilo). Il secondo percorso è precluso a coloro che non abbiano il titolo di studio di secondo grado.*

*Inoltre, la disposizione, in via del tutto eccezionale e per una sola volta, consente agli A.T.S. che abbiano un diploma di scuola secondaria di secondo grado, di accedere al profilo di collaboratore tecnico enti di ricerca, VI livello professionale, mediante concorso interno, anziché mediante concorso pubblico nazionale.*

*Per quanto concerne la lamentata inosservanza dell'articolo 14, comma 11, per la quale l'esercizio della facoltà di opzione per il profilo di operatore tecnico sarebbe condizione di accesso al concorso interno per CTER, si precisa che la disposizione in esame non prescrive alcuna sequenza temporale né, tanto meno, individua in coloro che hanno esercitato la facoltà di opzione i soli titolari del diritto a partecipare al concorso in parola.*

*Gli unici requisiti prescritti per l'ammissione a tale concorso sono il possesso del titolo di studio e la specializzazione richiesta per il profilo per il quale si concorre.*

*La diversa procedura stabilita dall'ISTAT con l'ordine di servizio n. 109 del 18 luglio*

*1991, era stata determinata dal fatto che, in un primo momento, si era inteso che l'inquadramento conseguente all'opzione al profilo di operatore tecnico e quello al profilo di collaboratore tecnico enti di ricerca, previo concorso, avessero decorrenze diverse.*

*Nel momento in cui la circolare della Presidenza del Consiglio dei ministri – dipartimento per la funzione pubblica – n. 79848.6.216 del 26 settembre 1991, ha chiarito definitivamente che l'attribuzione dei profili anzidetti rientra tra le operazioni di « primo inquadramento » e quindi le date di decorrenza giuridica ed economica sono le medesime, si è ritenuto che l'*iter *logico di applicazione della norma fosse quello indicato nell'ordine di servizio dell'ISTAT n. 31 del 17 marzo 1992.*

*Prevedere l'esercizio del diritto di opzione ad operatore tecnico prima della procedura concorsuale e condizionare l'ammissione al concorso stesso a tale opzione, circostanza questa che non trova riscontro né nella lettera, né nello spirito della legge, avrebbe significato imporre l'opzione stessa a tutti coloro che, in possesso dei requisiti richiesti, intendevano accedere al profilo di collaboratore tecnico enti di ricerca, previo concorso.*

*Il che significava, per coloro che non avessero superato le prove concorsuali, non poter più disporre di quel ventaglio di percorsi alternativi che, invece, la norma consente: il mantenere* ad personam *il profilo di assistente tecnico statistico, ovvero chiedere l'inquadramento nel profilo amministrativo di collaboratore di amministrazione.*

*A ciò si aggiunga l'ulteriore considerazione che, ove si fosse seguita la procedura che in un primo tempo era stata individuata, l'espletamento preventivo dell'opzione, con l'attribuzione del profilo di operatore tecnico, si sarebbe di fatto risolto in un passaggio intermedio transitorio ed inutile per coloro che, risultati vincitori del concorso, avrebbero poi ottenuto l'inquadramento nel profilo di collaboratore tecnico enti di ricerca con la medesima decorrenza.*

*Si rappresenta, inoltre, che su ricorso presentato da alcuni dipendenti dinanzi al TAR Lazio, quest'ultimo, con ordinanza del 14 maggio 1992 ha respinto la domanda incidentale di sospensione.*

*Infine, si fa presente che l'Unione sindacale italiana ha presentato in data 12 maggio 1992 ricorso al TAR del Lazio ex articolo 28, legge 300/70 per l'annullamento del provvedimento di cui trattasi, ricorso dichiarato inammissibile con decreto del 28 maggio 1992.*

*Avverso tale decreto l'USI ha dapprima proposto opposizione per poi rinunciarvi, essendo venute meno le ragioni e le motivazione che suggerirono a suo tempo il ricorso stesso.*

Il Sottosegretario di Stato alla Presidenza del Consiglio dei ministri: Fabbri.

LUCCHESI. — *Al Ministro per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali.* — Per sapere – premesso che:

sono ben noti i pesanti e pressanti problemi di *software* che la Comunità Europea e gli stati membri dovranno affrontare nell'immediato futuro perché siamo ancora lontani da una automazione soddisfacente dei processi di produzione e ci vorrà ancora molto tempo per raggiungere i livelli che hanno consentito il trasferimento della produzione ad aree esterne al gruppo dei paesi avanzati;

la CEE sta provvedendo ad incoraggiare sia iniziative di ricerca precompetitiva (vedi il programma ESPRIT), sia iniziative volte al più rapido trasferimento all'industria ed applicazione nei servizi di risultati della ricerca;

una di queste iniziative tende alla creazione di un Istituto Europeo del *software* che operi – come l'analogo statunitense a Pittsburg – come punto di riferimento centrale per l'industria del settore, intesa sia come utente che come fornitore, per quanto riguarda l'innovazione dei processo di produzione del *software*, le tecnologie relative e gli standard;

l'Istituto sarà aperto alla partecipazione di tutti gli operatori insieme a grandi banche e alle pubbliche amministrazioni nazionali;

sul piano dimensionale l'Istituto dovrà ospitare fino a 50 ricercatori e le attività saranno finanziate da parte dei soci per il 50 per cento e da parte della Commissione CEE per il rimanente 50 per cento con una previsione di budget intorno a 5 milioni di ECU ogni anno;

molte città si sono candidate ad ospitare l'Istituto di cui trattasi (fra le altre Ginevra, Archamp, Bilbao, Berlino, Bonn, Bordeaux);

condizione per ospitare l'Istituto è la disponibilità di una adeguata sede (fra i 1000 e i 1500 mq. cablati ed attrezzati per accogliere i mezzi di calcolo e di telecomunicazione) messa a disposizione in forma gratuita per almeno il primo triennio di attività;

è stata finalmente avanzata dal Sindaco la candidatura ufficiale di Pisa, occasione unica per rilanciare il ruolo di Pisa come cerniera fra ricerca accademica e industria nel settore informatico, garantendo una soluzione pro tempore presso il Consorzio Pisa Ricerche –:

quali iniziative il Governo abbia assunto o intenda assumere per sostenere adeguatamente questa candidatura, considerando che la concorrenza delle altre nazioni risulta essere molto agguerrita, ma anche che Pisa si presenta con ottime credenziali accademiche e tecniche ed anche con quanto indispensabile dal punto di vista economico. (4-10485)

RISPOSTA. — *Si è provveduto tempestivamente a sollecitare gli organi competenti della Comunità europea, affinché l'Istituto europeo del* software *scelga per la propria sede la città di Pisa, trattandosi di un centro accademico e industriale di primaria importanza nel settore informatico.*

Il Ministro per il coordinamento delle politiche comunitarie e gli affari regionali: Costa.

MACERATINI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso:

che il signor Marcello Binarelli ebbe a presentare ricorso in appello al Consiglio di Stato in sede giurisdizionale per l'annullamento della decisione del TAR del Lazio, sezione I - del 7 maggio 1986, n. 622;

che in data 22 giugno 1987 è stato presentato il ricorso ed è stato assegnato alla IV sezione del Consiglio di Stato e ha assunto i numeri 1155 e 368 –:

se al Governo risultino i motivi per i quali da quella data il ricorso non è stato né trattato né deciso. (4-05264)

RISPOSTA. — *Il Segretario generale del Consiglio di Stato ha comunicato che il ricorso in appello proposto dal signor Marcello Binarelli avverso la sentenza n. 622 del 1986, della sezione I del TAR Lazio è iscritto al ruolo della IV sezione dello stesso Consiglio di Stato con il n. 1155 del 1987.*

*Dal fascicolo d'ufficio non risultano mai presentate istanze di prelievo per sollecitare la trattazione urgente della causa.*

*Il ricorso fissato per l'udienza del 3 novembre 1992, è stato cancellato dal ruolo su richiesta dell'appellante con adesione della controparte.*

*Al fine della discussione di merito del predetto ricorso, occorrerà attendere che venga presentata una nuova domanda di fissazione d'udienza.*

Il Sottosegretario di Stato alla Presidenza del Consiglio dei ministri: Fabbri.

MARENCO. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per conoscere – premesso che:

la libertà di espressione è un diritto costituzionalmente garantito;

la creazione artistica non ha, all'interno del nostro sistema normativo, altri limiti che non siano quelli del comune senso del pudore;

l'unitarietà dell'espressione artistica è generalmente riconosciuta come essenziale per la sua piena comprensione –:

se risulti corrispondere a verità la notizia secondo la quale al termine della trasmissione « Serata d'Onore » (Raidue, 29 maggio 1992) sono stati censurati, tagliandoli, i seguenti quattro versi del cantautore Luca Barbarossa: « Sono i figli di quest'Italia – di quest'Italia antifascista – se cerchi casa non è un problema – basta conoscere un socialista »;

se risulti al Governo che tale censura sia stata concordata col cantautore;

se risulti con quali criteri sia stato deciso questo intervento censorio;

se il Governo condivida tale tipo di interventi che di fatto ledono la libertà di espressione;

se siano state decise misure di tipo amministrativo nei confronti di chi ha compiuto la censura. (4-01942)

RISPOSTA. — *Si ritiene opportuno premettere che non rientra fra i poteri di questo Ministero quello di sindacare l'operato della RAI per la parte riguardante il contenuto programmatico delle trasmissioni.*

*È noto, infatti, che la legge 14 aprile 1975, n. 103 recante norme sulla diffusione radiofonica e televisiva, ha sottratto la materia dei controlli sulla programmazione alla sfera di competenza dell'autorità governativa, conferendola alla Commissione parlamentare per l'indirizzo generale e la vigilanza dei servizi radiotelevisivi, la quale formula gli indirizzi dei vari programmi e ne controlla il rispetto adottando tempestivamente, se del caso, le deliberazioni necessarie per la loro osservanza.*

*Ciò risulta testualmente dall'articolo 4 della predetta legge, il quale richiama il precedente articolo 1, ove sono enunciati i princìpi di indipendenza, di obiettività e di apertura alle diverse tendenze politiche, sociali e culturali, cui deve essere fondamentalmente ispirato il servizio pubblico radiotelevisivo ed il Governo non può non essere rispettoso della riserva di competenza attribuita alla Commissione parlamentare anzidetta.*

*Allo scopo di poter disporre di elementi di valutazione in merito a quanto rappresentato non si è mancato, tuttavia, di interessare la concessionaria RAI la quale ha riferito che non è stata operata alcuna forma di censura sulla canzone eseguita da Luca Barbarossa alla fine del programma* Serata d'onore *andato in onda sulla seconda rete televisiva il 29 maggio 1992.*

*La concessionaria afferma che, come talvolta avviene nelle trasmissioni televisive, è stata utilizzata soltanto una parte della canzone perché legata esclusivamente alla durata del balletto abbinato.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

MARENCO. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

l'Amministrazione comunale di Pietrabruna ha sollecitato ormai da molti anni, l'intervento diretto della RAI per l'installazione di un ripetitore televisivo che permetta il superamento dei problemi di ricezione che, ieri come oggi, affliggono gli abitanti di Pietrabruna e quelli del comune di Civezza;

l'intervento della RAI ha permesso l'individuazione del punto ove dovrebbe realizzarsi il ripetitore e l'elaborazione di un progetto esecutivo per ottenere il *placet* dei competenti organi regionali e statali, preposti alla tutela dell'ambiente;

alla luce dei tagli agli investimenti effettuati dalla Direzione nazionale RAI, la sede di Genova competente territorialmente alla realizzazione dell'impianto, è rimasta priva delle necessarie risorse finanziarie per concretizzare l'opera;

gli stessi tagli di cui è rimasta vittima la sede RAI di Genova non hanno

riguardato altre sedi regionali, in specie dell'Italia meridionale –:

se non ritenga opportuno fornire alla sede RAI di Genova i mezzi per il completamento e l'esecuzione del progetto di installazione di un ripetitore RAI in località « San Salvatore ». (4-05022)

RISPOSTA. — *Premesso che non rientra fra i compiti del Governo quello di finanziare impianti radiotelevisivi della RAI, si significa che la vigente convenzione Stato-RAI fa obbligo alla concessionaria di estendere il servizio della 1ª e 2ª rete televisiva ai centri abitati con popolazione non inferiore ai 500 abitanti e di assicurare il servizio, per la 3ª rete TV, ai capoluoghi di provincia ed all'85 per cento della popolazione di ogni regione.*

*Allo scopo di soddisfare gli obblighi convenzionali, si è prevista la realizzazione del ripetitore di Pietrabruna che risolverà i problemi di ricezione televisiva presso le località indicate nell'atto parlamentare in esame e che verrà realizzato con gli stanziamenti previsti nei piani di investimenti aziendali.*

*La concessionaria ha assicurato che, in considerazione delle priorità prefissate, il ripetitore di cui trattasi potrà essere realizzato con i fondi disponibili per l'anno 1993.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

MARENCO. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso che:

il signor Benazzi Aldo, nato a Genova il 15 luglio 1928, numero di posizione provinciale 876051 GE 3400, ha presentato in data 13 febbraio 1990 domanda di supplemento di pensione VO 10616205 con ricorso avverso la reiezione della stessa in data 26 marzo 1992 –:

le ragioni del ritardo nella liquidazione della domanda di cui in premessa. (4-05447)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che la domanda di ricostituzione relativa ai contributi figurativi di disoccupazione avanzata dal signor Benazzi Aldo, titolare di pensione VO n. 10616205, è stata definita dalla sede provinciale di Roma.*

*In data 17 novembre 1992 la medesima sede ha provveduto a stampare gli elaborati per un importo di arretrati, comprensivi del rateo di novembre e dicembre 1992, di lire 1.707.145.*

*Il mandato di pagamento della somma sopracitata è stato inviato alla BNL il 23 novembre 1992.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

MATTEOLI. — *Al Ministro del turismo e dello spettacolo.* — Per sapere – premesso che:

sono considerati grandi autori i musicisti Bellini, Rossini, Donizetti, Puccini e Verdi;

mentre a Bellini sono intitolati il Teatro Nazionale di Palermo e a Catania l'Ente Lirico Regionale: a Rossini il Teatro di Tradizione ed il Festival di Pesaro, con un giro di 5/6 miliardi annui: a Donizetti il Teatro di Tradizione ed il Festival, ricevendo circa 110 milioni per rappresentazione, e vengono adeguatamente valorizzati, sia il Teatro di Torre del Lago (Lucca) intitolato a Puccini che i Teatri di Roncole, Parma e Busseto intitolati a Verdi sono considerati enti lirici minori quindi trascurati e con contributi pari a quelli erogati per la lirica ordinaria;

il Teatro di Torre del Lago Puccini è andato bene sino a quando il comune di Viareggio erogava annualmente un contributo aggirantesi attorno ai 2,5 miliardi;

attualmente il Teatro di Torre del Lago Puccini riceve dal Ministero del turismo e dello spettacolo solo 55 milioni a recita, non essendo considerato Teatro di Tradizione, al pari di qualsiasi altro piccolo teatro italiano –:

se non ritenga di dover emanare un decreto ministeriale che permetta al Teatro Pucciniano di Torre di assurgere a sede di festival importante in modo che lo stesso possa ricevere contributi sufficienti

a tenere a livello adeguato una tradizione lirica di importanza nazionale ed internazionale. (4-10852)

RISPOSTA. — *Il teatro Rossini di Pesaro non è stato mai riconosciuto Teatro di Tradizione ai sensi dell'articolo 28 della legge n. 800/67.*

*La quota a recita massima (c.d. 2ª quota maggiorata) concessa ai teatri di tradizione – e solo nel 1992 – non è quantificata in 110, ma in 105 milioni. comunque, al teatro Donizetti di Bergamo – non ricorrendo le particolari condizioni artistico – organizzative richieste dalla vigente normativa – non è stata riconosciuta detta quota per nessuna delle recite programmate nel 1992 (la quota massima concessa a detto teatro, e solo per alcune recite, è stata pari a lire 95 milioni).*

*I teatri di Roncole e Busseto non hanno mai richiesto sovvenzioni ministeriali per l'effettuazione di stagioni liriche. Il comune di Busseto ha presentato, invece, istanza nel solo anno 1991 per l'organizzazione del festival Verdiano, ma detta istanza – su conforme parere della commissione centrale per la musica – non è stata accolta. Al contrario il teatro di Parma (riconosciuto teatro di tradizione* ope legis *dal 1967) ha costantemente ottenuto congrue sovvenzioni statali, che nel 1992 sono state pari a lire 2.595 milioni.*

*Quanto al teatro di Torre del Lago Puccini si fa presente, innanzitutto, che a tutt'oggi non è stato riconosciuto teatro di tradizione (parimenti ad altri 19 teatri che, pure, hanno nel tempo presentato analoga domanda) poiché l'ammontare degli stanziamenti statali non ha finora consentito di ampliare ulteriormente il settore (attualmente i teatri di tradizione sono ventiquattro, di cui ben 3 nella sola regione Toscana).*

*Risponde al vero, quindi, che il teatro di Torre del Lago è stato finanziato sulla base delle quote a recita previste per le stagioni liriche ordinarie (nel 1992: 50 milioni, 32 milioni e 22 milioni, a seconda del livello artistico-organizzativo delle manifestazioni). Si ritiene, tuttavia, di dover precisare che il comune di Viareggio – che ha organizzato le stagioni liriche fino al 1991 – non è stato in grado, per carenza o totale mancanza di documentazione consuntiva, di riscuotere i contributi statali assegnati per ben sei stagioni comprese nel periodo 1975-91, per complessive lire 3.192.750.000.*

*La vigente normativa non vieta assolutamente (né prescrive l'emanazione di specifici provvedimenti ministeriali) che la stagione lirica di Torre del Lago venga strutturata come festival. In tal senso i responsabili della manifestazione, nell'ambito di una libera scelta, potrebbero orientarsi qualora aspirassero ad accedere ai contributi ministeriali previsti, appunto, per il settore dei festival. Comunque già da tempo a Torre del Lago viene svolto e sovvenzionato un festival prevalentemente concertistico.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

MENSORIO. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere se è a conoscenza del preoccupante allarmismo diffusosi in seguito alla notizia che la Direzione Generale delle poste sta procedendo alla soppressione dell'ufficio Centro interregionale Poste – Porto – Pacchi Dogana di Napoli.

Si tratta di una iniziativa quanto meno sconcertante, avendo il suddetto Centro una competenza esclusiva per lo sdoganamento dei pacchi esteri spediti nelle Regioni Campania, Veneto, Umbria, Calabria, Lucania e Molise.

Si rende opportuno, a questo punto, ricordare che l'Ufficio in questione è comprimario con quello di Genova Porto per quanto attiene a competenze e funzioni; anzi, rispetto a quello di Genova che riversa sul Centro Aeroporto parte del lavoro, ed in particolare le stampe provenienti dagli USA, quello di Napoli non ha tale possibilità di smistamento e pertanto è più gravemente sottoposto ai carichi di lavoro.

Si tratta, dunque, di uno sforzo immane non suscettibile di contrazione per flussi di traffico, nonostante l'approssimarsi del crollo delle barriere doganali in quanto la maggior parte del lavoro è svolto con i paesi extraeuropei, sia in importazione che in esportazione.

Non si può disconoscere, quindi, la fondamentalità della struttura di Napoli Porto che non può essere soppressa con provvedimento squisitamente amministrativo rendendosi necessaria una organica proposta di legge.

L'ufficio di Napoli più che soppresso verrebbe di fatto smantellato per ripartire i compiti operativi, dirottando le stampe USA a Genova e quelle della Campania sul Centro Meccanizzazione Pacchi Postali di Napoli, appesantendo ulteriormente strutture già sovraccariche. Si verrebbe, in effetti ad aggravare il fenomeno della disoccupazione a Napoli con ridotta efficienza ed una più bassa produttività.

Rispetto a siffatte considerazioni, rimane in essere soltanto il maldestro tentativo della Direzione Generale delle Poste di coprire l'inefficienza produttiva dell'apparato della Pubblica Amministrazione ponendo un'azienda di settore fuori mercato o cedendo i suoi migliori servizi dell'area meridionale ad imprenditori esterni per una manifesta testimonianza di inefficienza ed incapacità imprenditoriale dell'intera classe dirigente dell'azienda. L'interrogante, chiede, dunque, al Ministro delle Poste se non ritenga più opportuno insediare una commissione di lavoro mista avente quale componente Dirigenti della Pubblica Amministrazione ed in particolare delle Poste, delle Finanze (direzione dogana), del lavoro dell'industria e della funzione pubblica.

Si potrebbe in tal modo sviluppare uno studio approfondito per valutare e confrontare l'operatività delle strutture di Genova, di quella di Napoli, le difficoltà strutturali ed ambientali delle sedi nonché l'opportunità di programmare le necessità operative nell'una o nell'altra.

Con maggiore responsabilità si potrebbero esaminare le motivazioni prodotte per la soppressione dell'ufficio unitamente ai danni scaturenti dal declassamento dello stesso con eventuali rimedi alternativi al deprecabile provvedimento, indicando prioritariamente l'utilizzo a cui verrà destinato l'ufficio P.T. del Porto di Napoli.

L'interrogante, in conclusione, chiede di sapere se il Ministro non ritenga più giusto ed utile assumere gli opportuni provvedimenti alla luce dei lavori svolti dal gruppo misto previo razionale coordinamento delle commissioni parlamentari bilancio e programmazione economica, onde evitare scelte pericolose, penalizzando ulteriormente un'area già dolorosamente colpita da calamità naturali e devastata da una sempre più preoccupante crisi economico-occupazionale. (4-04727)

RISPOSTA. — *Non è intendimento di questa amministrazione procedere alla chiusura dell'ufficio di Napoli porto.*

*Ed invero, alla luce dei dati di traffico recentemente registrati dall'ufficio in questione, i competenti organi tecnici stanno valutando l'opportunità di affidarne la direzione al centro di meccanizzazione postale di Napoli onde ottenere una più razionale ed economica organizzazione del lavoro che continuerebbe comunque ad essere svolto in ambito portuale.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

MENSORIO. — *Al Ministro degli affari esteri.* — Per sapere – premesso che:

la signora Sonia Michilli era stata delegata dal Console italiano di Stoccarda per effettuare, nella sede della Missione Cattolica di Esslingen in data 24 marzo 1991, l'autentica delle firme occorrenti per la presentazione della lista « Associazione genitori » in vista della competizione elettorale degli organi statutari del « Comitato italiano all'estero » per la Circoscrizione di Stoccarda;

il dottor Tommaso Conte, medico generico a Stoccarda, per evitare lunghe file di attesa e di confusione, aveva consigliato ad oltre 187 persone, elettori provenienti da territori distanti anche diverse ore di macchina, di compilare la « Dichiarazione sostitutiva di certificazione » unitamente al foglio inerente la lista « Associazione Genitori », allegandovi parimenti un documento di riconoscimento;

nello svolgimento di tali adempimenti si è svolto tra il dottor Conte ed il

Consolato italiano di Stoccarda uno scambio di missive che hanno evidenziato una difesa ad oltranza dell'operato della signora Michilli, la quale è ricorsa persino all'Istituto dell'immunità per sottrarsi alla convocazione della Pretura di Esslingen, solertemente intervenuta per una puntuale e motivata querela sporta dal dottor Conte;

il Console italiano ha ritenuto opportuno di trasmettere gli atti dell'incresciosa vicenda al Ministero degli Esteri ed alla Procura della Repubblica di Roma, con un preciso e fin troppo palese orientamento di perseguire soltanto eventuali, per quanto inesistenti, illeciti del dottor Conte –:

quali provvedimenti intenda adottare per fare piena luce sull'intera vicenda, onde perseguire l'illecito comportamento assunto dalla signora Michilli nell'espletamento delle sue funzioni di delegata del Console, essendo esplose persino espressioni ingiuriose nei confronti del dottor Conte. Si tratta, peraltro, di avvenimenti non rientranti nell'ambito delle immunità ma nelle competenze esclusive del codice penale sia italiano che tedesco essendosi consumati sul territorio della Germania;

se il Ministro non ritenga necessario esaminare l'operato del Console italiano di Stoccarda per valutare eventuali responsabilità di eccesso di potere, intimidazioni e ritorsioni nei confronti del dottor Conte, con eccessiva superprotezione a favore della signora Michilli, a parte l'abuso dell'istituto dell'immunità, esteso anche a fatti privati prodotti da rappresentanti del consolato. (4-10571)

RISPOSTA. — *L'impiegata a contratto Sonia Mazzurana in Michilli mentre assolveva alle funzioni delegatele per l'autenticazione delle firme necessarie alla presentazione delle diverse liste, riceveva indebite pressioni, intese ad ottenenere da un pubblico impiegato, nell'esercizio delle sue funzioni, comportamenti difformi agli obblighi di legge.*

*L'impiegata ha creduto opportuno attirare l'attenzione del dottor Conte sull'illiceità di quanto richiestole.*

*Sulla base di tali fatti e circostanze, il console generale in Stoccarda, valutando il comportamento del dottor Conte come pressione verbale e morale intesa a far commetere all'impiegata Michilli atti contrari alla legge, segnalava l'episodio alla procura della Repubblica di Roma.*

*A seguito della querela sporta dal dottor Conte contro l'impiegata Michilli, l'ambasciata d'Italia in Bonn ha provveduto ad ascoltare l'interessata affinché fornisse la propria versione dell'accaduto e, conformemente alle istruzioni impartite dal Ministero affari esteri, il consolato generale in Stoccarda eccepiva l'immunità dalla giurisdizione tedesca per azioni compiute nell'esercizio di funzioni consolari formalmente delegate, come nel fatto in esame.*

*Sempre in tale occasione, l'ambasciata d'Italia in Bonn acquisiva ulteriori elementi che dimostravano l'opportunità della segnalazione, effettuata a suo tempo, da parte del console generale alla procura della Repubblica di Roma.*

*Il ministero di Stato del Baden Wurttemberg ha riconosciuto che al caso in esame si applicano le pertinenti disposizioni della Convenzione di Vienna sulle relazioni di procedibilità.*

*Compete ora al tribunale Esslingen deliberare, in sede giurisdizionale sull'esistenza o meno delle predette condizioni.*

Il Sottosegretario di Stato degli affari esteri: Giacovazzo.

MUNDO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri ed ai Ministri delle finanze e del turismo e spettacolo.* — Per sapere:

se non ritengono di promuovere l'apertura di una immediata inchiesta (contestuale a quella sull'accertamento delle responsabilità dello « sfascio » della schedina) che faccia piena luce sull'incredibile notizia denunciata da un importante quotidiano nazionale (*Il Giorno* 15 dicembre) dell'assunzione da parte del CONI, proprio di recente, di ben 976 impiegati, che porta così l'organico alla « pazzesca » cifra di 3.600 dipendenti: « È semplicemente sconcertante e immorale che possa essere ac-

caduto tutto ciò, proprio nel particolare momento che sta attraversando il nostro Paese. Va fatta la massima chiarezza e fornite tutte le risposte e i chiarimenti sul perché, sulle modalità, i termini precisi di questa valanga di assunzioni e sui motivi che portano il CONI ad avere bisogno di un esercito di 3.600 dipendenti ». (4-08916)

RISPOSTA. — *Le assunzioni cui si riferisce l'interrogante riguardano l'immissione in ruolo, mediante concorso, del personale assunto al CONI negli anni 1990 e 1991 con contratto di lavoro a tempo determinato ai sensi della legge 29 dicembre 1988, n. 554, nei limiti della dotazione organica che è di 3.262 dipendenti.*

*Nella suddetta dotazione organica è compresa anche l'immissione nei ruoli del CONI, previo concorso per titoli e prova selettiva attitudinale, del personale in servizio presso le federazioni sportive nazionali alla data del 31 dicembre 1990 con rapporto di lavoro di diritto privato a tempo indeterminato.*

*Il predetto Ente è stato autorizzato dall'articolo 3 della legge 31 gennaio 1992, n. 138, « Disposizioni urgenti per assicurare la funzionalità del C.O.N.I. » ad effettuare i suddetti concorsi.*

*In relazione a quanto sopra si fa rilevare che le suddette immissioni nei ruoli dell'ente sono state fatte nell'ambito della menzionata dotazione organica di 3.262 unità – e non 3.600 dipendenti, come sostiene l'interrogante – con le quali si devono soddisfare le esigenze degli uffici centrali e periferici del CONI (circa 60 uffici centrali e 115 organi periferici) delle 39 federazioni sportive nazionali, che ugualmente operano con propri organi periferici a livello regionale (tutte), provinciale (molte), comunale (alcune) e delle 14 Zone del Totocalcio e dell'Enalotto.*

*Si è peraltro ritenuto di invitare il CONI a fornire dettagliata relazione sulle procedure concorsuali attraverso le quali si è attuato il riferito disposto dell'articolo 3 della legge 138/92.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

NUCARA. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e dell'interno.* — Per sapere:

se siano a conoscenza del caso della cooperativa Anagramma di Reggio Calabria. Detta cooperativa impiegava circa novantaquattro persone e tra esse ottanta giovani per l'espletamento del lavoro di consegna degli assegni, per l'assistenza ai lavoratori agricoli. Gli assegni, su ordine dell'INPS, sono emessi da una banca di interesse nazionale; l'istituto bancario, in considerazione che la consegna attraverso i normali servizi comportava una perdita (smarrimento o furto) di circa il 30 per cento degli assegni emessi aveva deciso di affidare il lavoro di consegna alla cooperativa Anagramma il cui servizio risultava, poi, più che soddisfacente per i lavoratori, per l'istituto emittente e per l'INPS, ma non per il comitato provinciale dell'INPS la cui maggioranza è espressa dai sindacati. Le pressioni sindacali o di parte di essi hanno indotto l'INPS (che non ha nessun rapporto con la cooperativa) a « consigliare » un ritorno alle modalità di consegna originarie. La cooperativa Anagramma nel periodo novembre 1991-marzo 1992 ha provveduto alla consegna di 59 mila assegni con nessun caso di furto o smarrimento. Con il ritorno alle modalità originarie pare si siano verificati i primi furti di assegni. Tutti questi fatti avvengono in una provincia (Reggio Calabria) con il più alto tasso di disoccupazione in generale e giovanile in particolare;

considerato che non si ha notizia degli interventi svolti in favore della cooperativa Anagramma dal prefetto di Reggio Calabria, dal sindaco, dal presidente della provincia, dal presidente della giunta regionale e dall'assessore regionale al lavoro, quali siano le « vere » ragioni che hanno indotto l'INPS a intervenire impropriamente sulla banca emittente per revocare la convenzione con la cooperativa più volte citata;

quali siano le direttive che si intendono impartire per stabilire ordine, certezza del diritto proprio e altrui in quella

terra così lontana per far valere i più elementari principi e così vicina come elemento di propaganda contro sequestratori e delinquenti in generale. La piaga della criminalità si combatte con le forze dell'ordine ma anche con i comportamenti corretti e conseguenti dello Stato che in questo caso dimostra palesemente di non stare dalla parte giusta;

quali iniziative si intendano assumere per evitare le lunghe, inutili e defatiganti assemblee alla presenza evanescente di politici da far apparire sulla TV e sulla stampa;

quali direttive intenda impartire con immediatezza il ministro del lavoro per ridare possibilità di lavoro onesto a novantaquattro persone e per verificare la validità dell'agenzia regionale del lavoro e il legittimo diritto a percepire assistenza dall'INPS attraverso le caselle postali. (4-01050)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato di avere commissionato alla Comit il servizio di emissione e consegna degli assegni e che tale banca, a sua volta, ha affidato alla cooperativa Anagramma di Reggio Calabria il recapito degli assegni medesimi.*

*Successivamente ad un primo periodo di regolarità, sono state rappresentate all'istituto, attraverso tutte le organizzazioni sindacali confederali presenti sul territorio, ripetute lamentele sulla qualità del servizio di consegna degli assegni.*

*L'INPS ha, pertanto, chiesto alla Comit, al fine di soddisfare le richieste dell'utenza, di modificare le modalità di recapito e ciò ha comportato in via primaria la rinuncia, da parte della Comit, a servirsi della cooperativa Anagramma.*

*L'INPS ha fatto presente, inoltre, che attualmente la Comit, con la quale l'istituto stesso ha realizzato il collegamento telematico al fine di ridurre ulteriormente i tempi di pagamento delle prestazioni, invia gli assegni direttamente agli uffici postali periferici, i quali provvedono alla consegna ai singoli intestatari.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

PAISSAN. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri per il coordinamento della protezione civile e dell'ambiente.* — Per sapere – premesso che:

gli enti locali e numerose forze politiche e sociali pisane hanno chiesto l'inserimento del comune di Pisa nell'elenco dei comuni interessati dall'ordinanza del Ministero della protezione civile, che sospende fino al prossimo aprile tutti gli adempimenti, fiscali e non, per le aziende colpite dalle recenti alluvioni;

tale inserimento riguarda i danni in golena d'Arno;

molti dei manufatti spuntati in enorme quantità in questi anni nella golena d'Arno lungo il viale D'Annunzio sono in contrasto con il vigente piano regolatore di Pisa e con i numerosi vincoli di natura ambientale e paesaggistica esistenti sull'area;

nel corso di un recente consiglio provinciale dedicato ai danni della recente alluvione lo stesso presidente dell'amministrazione provinciale ha indicato tra le principali cause del dissesto idrogeologico, l'edificazione e l'urbanizzazione selvaggia delle aree golenali che dovrebbero essere lasciate libere di raccogliere le piene dei corsi d'acqua –:

se non ritenga opportuno concedere le annunciate agevolazioni solo a quelle aziende in regola con le concessioni edilizie e demaniali. (4-08257)

RISPOSTA. — *Con DL 4 novembre 1992, n. 426, convertito dalla legge 23 dicembre 1992, n. 497, sono stati assegnati alla Regione Toscana 75 miliardi di lire a titolo di contributo straordinario, per gli interventi di somma urgenza diretti alla riparazione dei danni subiti dalle infrastrutture, per la sistemazione degli alvei e dei corsi d'acqua, per il ripristino delle sezioni idriche e delle opere di contenimento, nonché per l'assistenza ai cittadini e la riparazione dei danni subiti dai medesimi.*

*In particolare, con l'articolo 1-*bis *della legge sopra citata è stato disposto che i*

*benefici previsti dall'ordinanza n. 2307/FPC del 4 novembre 1992, si applicano unicamente ai soggetti che hanno subito danni indennizzabili.*

*Peraltro, con la legge 4 febbraio 1993, n. 25, sono stati sospesi per il periodo intercorrente dal 31 ottobre 1992, al 30 aprile 1993, taluni termini a favore dei soggetti danneggiati dalle avversità atmosferiche nei comuni delle province di Firenze, Arezzo e Pisa e di quelli individuati dalla giunta regionale toscana con delibera datata 9 novembre 1992.*

Il Ministro per il coordinamento della protezione civile: Facchiano.

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e delle partecipazioni statali.* — Per sapere – premesso che:

la Nuova Samim Metals spa, società commerciale del gruppo ENI con strutture di vendita dislocate su tutto il territorio nazionale con l'esclusione delle regioni Calabria e Sicilia, intende chiudere la struttura regionale campana con sede a Napoli, senza fornire alcuna motivazione e con la dichiarata indisponibilità a servire zone del meridione;

in data 29 gennaio 1992 il presidente di detta società – dottor Antonio Pala – ha firmato verbale di mancato accordo presso l'ufficio del lavoro di Napoli nel quale ribadiva quanto sopra e nello stesso tempo dichiarava di voler trasferire il personale tutto, con conseguente utilizzo della legge n. 223 del 1991 o in subordine con il ricorso ad esodi cosiddetti incentivati (determinando così licenziamenti di fatto) –:

quali iniziative intenda assumere affinché sia chiarita la strana strategia della discussa Nuova Samim Metals spa in ordine alla indiscriminata chiusura della sede di Napoli e cosa osti al passaggio di detti lavoratori alla Nuova Samim spa di Marcianise-Caserta, stabilimenti dai quali detti lavoratori provengono e che risultano in espansione come investimenti e come addetti;

che cosa osti al passaggio di un numero così esiguo di lavoratori – cinque addetti – ad una delle tante società consociate del gruppo ENI presente sul territorio società che a tutt'oggi necessitano di personale come è dimostrato dalle continue assunzioni che vi si fanno e che sono ovviamente bene a conoscenza del Ministero del lavoro e previdenza sociale tramite i suoi uffici periferici e cioè: Nuova Samim spa Marcianise; Napoletanagas; Italgas sud; Metano città; Napoletanametano; AGIP Servizi; AGIP Covengas; SNAM spa; SNAM progetti spa; Acquedotto vesuviano; Casenergia; AGIP Petroli; IP-Italiana Petroli; CLASA Petroli.

Quanto precede anche in relazione all'atto ispettivo di uguale contenuto, restato privo di riscontro nella decima legislatura, n. 4-31279 del 12 febbraio 1992. (4-00295)

RISPOSTA. — *La Nuova Samin Metals SpA, società commerciale del gruppo ENI, ha chiuso la struttura regionale campana che operava a Napoli con un organico di cinque dipendenti.*

*La decisione della chiusura è stata presa dopo che un approfondito studio ha evidenziato, tra l'altro, che il mercato dei prodotti venduti è estremamente limitato nell'area coperta dall'ufficio di Napoli.*

*Quindi solo un'analisi economica e delle potenzialità di area ha portato alla decisione di chiudere l'ufficio di Napoli, senza condizionamenti di alcun tipo che non il mercato e la rarefazione della clientela attiva.*

*Tutti i dipendenti, tranne uno dimessosi, sono stati ricollocati presso altre società del gruppo operanti nel territorio napoletano.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

PARLATO. — *Ai Ministri del lavoro e della previdenza sociale e delle finanze.* — Per conoscere:

se risponda al vero che le società POLFRUT e POMONA, con sede in Policoro (MT) sarebbero debitrici nei confronti dell'INPS di quasi 2 miliardi e stiano

tentando, a quanto risulta all'interrogante da fonti provenienti dagli ambienti interessati, di evadere i pagamenti con il sostegno di alcuni notabili appartenenti al partito di maggioranza relativa sfruttando la legislazione sulle cooperative. Infatti queste società cooperative maschererebbero un'impresa privata (la Massocchi) sempre con sede a Policoro;

se risponda al vero che i titolari di queste società si distinguano per metodi da sfruttamento ottocentesco delle maestranze ed antisindacali;

se risponda al vero che, avendo diversi lavoratori che risultano senza inquadramento, quando arriva il controllo dell'ispettorato, preceduto da una « soffiata », detti lavoratori vengano allontanati, come si è verificato il 1° maggio 1989;

se risponda al vero che gli operai vengano sorvegliati e marcati come o peggio che in una caserma del KGB e spesso è loro vietato persino di recarsi alla *toilette*;

se risponda al vero che pretendendo dagli operai la reperibilità domiciliare perché, essendo stabilimenti che lavorano l'ortofrutta, non c'è lavoto continuato nel caso in cui gli operai chiamati non vengano reperiti a casa per una eventuale chiamata, essi non sono più interpellati per altri periodi di ingaggio;

se risponda al vero che esiste anche un contenzioso con gli autotrasportatori, i quali per poter essere pagati devono attendere lunghi periodi;

se risponda al vero che la maggior parte dei dipendenti risultino essere inquadrati come braccianti agricoli a carico della cooperativa POMONA mentre in realtà lavorano nello stabilimento di trasformazione di prodotti agricoli della società POLFRUT;

se intendano svolgere accertamenti ed in ordine all'esito degli stessi – che si chiede di conoscere – assumere le opportune iniziative.

Quanto precede anche in relazione all'atto ispettivo di uguale contenuto, restato privo di riscontro nella decima legislatura, n. 4-30761 del 22 gennaio 1992. (4-00826)

RISPOSTA. — *La cooperativa Pomona a r.l. di Policoro (Matera), esercente attività di lavorazione e surgelazione di prodotti ortofrutticoli, è stata inquadrata sin dall'inizio (gennaio 1988) nel settore agricoltura ai sensi della legge n. 240/1984, nel presupposto che la stessa lavorasse in prevalenza prodotti conferiti dai soci.*

*In seguito ad accertamento congiunto, INPS-INAIL-ispettorato del lavoro, è peraltro risultato che la Pomona dal 1° febbraio 1988 al 31 agosto 1989 avrebbe lavorato in prevalenza (per oltre il 51 per cento) prodotti conferiti da produttori non associati.*

*In conseguenza di quanto sopra, ai sensi della predetta legge, è stato disposto il trasferimento della Pomona nel settore industria, con effetto ex tunc e con addebito dei contributi INPS per lire 634.165.337, più gli accessori di legge.*

*Avverso tale provvedimento l'azienda ha presentato ricorso al comitato esecutivo dell'INPS, contestando l'attribuzione al settore industriale in quanto i prodotti dalla stessa lavorati sarebbero stati in prevalenza conferiti dai soci.*

*Successivamente al ricorso, è stato effettuato presso la Pomona un ulteriore accesso ispettivo da parte dell'INPS e dell'ispettorato del lavoro dal quale è emerso che i lavoratori assunti e retribuiti dalla cooperativa predetta sarebbero da ritenere a tutti gli effetti alle dipendenze della srl Polfruit.*

*In particolare, è stato accertato che tutto il prodotto della Pomona è acquistato dalla Polfruit, che la Pomona lavora le materie prime con capitali, macchine e attrezzature forniti dalla Polfruit ed il potere direttivo, di controllo e disciplinare sui dipendenti assunti e retribuiti dalla Pomona viene esercitato dalla Polfruit.*

*Ritenendo che le citate circostanze configurino il reato di violazione del divieto di intermediazione della manodopera, di cui all'articolo 1 della legge n. 1369 del 23 ottobre 1969, l'ispettorato del lavoro ha riferito i fatti all'autorità giudiziaria.*

*In seguito a quanto sopra, la cooperativa in oggetto ha presentato una memoria aggiuntiva con la quale ha sollecitato il riesame della propria posizione, sia in ordine alla contestata violazione del divieto di intermediazione della manodopera sia per quanto concerne il riconoscimento della natura agricola dell'attività esercitata.*

*La questione, considerato il numero dei lavoratori interessati e i riflessi economici e sociali che presenta, è stata oggetto di esame presso il Ministero del lavoro nel corso di una riunione, cui hanno partecipato anche rappresentanti della Presidenza del Consiglio, dell'ispettorato regionale e provinciale del lavoro e di questo istituto.*

*Alla luce degli approfondimenti che ne sono scaturiti, il Ministero, considerato che la decisione in ordine all'inquadramento previdenziale della società non può prescindere dagli esiti della vicenda giudiziaria, ha fatto presente all'INPS l'opportunità che, in attesa della pronuncia della magistratura, venga mantenuto l'originario inquadramento nel settore agricoltura. Ciò anche in relazione alla gravissima tensione sociale esistente* in loco, *che ha coinvolto i lavoratori interessati e le loro rappresentanze sindacali per l'erogazione delle prestazioni agricole richieste.*

*Di conseguenza, l'istituto ha impartito disposizioni alla propria sede di Matera per la temporanea conferma dell'inquadramento previdenziale della Pomona in agricoltura e per il ripristino delle prestazioni agricole, con espressa riserva, peraltro, da formulare nei confronti sia della società sia dei lavoratori, di globale revisione della situazione nel caso in cui la vicenda giudiziaria dovesse concludersi con l'accertamento della natura industriale dell'attività svolta dalla società.*

*L'ispettorato provinciale del lavoro di Matera ha fatto presente, inoltre, di non avere riscontrato a carico dei titolari delle due società il ricorso a sistemi di sfruttamento ottocentesco ed antisindacale ed ha precisato, infine, di non avere eseguito nessuna ispezione il 1° maggio 1989.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

PARLATO. — *Ai Ministri dell'interno e per il coordinamento della protezione civile.* — Per conoscere:

1) se il Nucleo di protezione civile del comune di Caiazzo è ancora operante, visto i numerosi incidenti che si sono verificati nel territorio e la sistematica assenza della protezione civile;

2) se risulti rispondente al vero che siano stati stanziati finanziamenti per gli anni 1990, 1991 e 1922 a favore della protezione civile di Caiazzo e come siano stati utilizzati;

3) per quali motivi non sia stato da lungo tempo convocato il nucleo della protezione civile di Caiazzo, viste le esigenze che si devono affrontare durante questo periodo;

4) a cosa serva la sede nel centro storico della cittadina della protezione civile se questa non funziona. (4-04914)

RISPOSTA. — *Il nucleo di protezione civile del comune di Caiazzo è tuttora operante, conta allo stato 26 unità, e ne è responsabile l'assessore comunale Crescenzo Merola, delegato del sindaco.*

*Per gli anni 1990, 1991 e 1992 non sono stati assegnati al nucleo finanziamenti da parte dello Stato o di altri enti, ma solo fondi riferiti ai bilanci del comune di Caiazzo così ripartiti:*

*Anno 1990 = stanziati lire 1.549.000 di cui spese lire 1.102.600 e precisamente lire 915.000 per acquisto tute e lire 187.000 per acquisto borracce e per la cattura di cani randagi;*

*Anno 1991 = stanziati lire 1.100.000 di cui spese lire 60.000 per acquisto fasce distintive per gli addetti al nucleo;*

*Anno 1992 = stanziati lire 3.000.000 senza alcuna spesa sostenuta a tutto il 3 novembre 1992.*

*Le somme stanziate e non spese sono custodite presso l'ufficio ragioneria del comune.*

*Secondo quanto riferito dal responsabile del nucleo, assessore Merola, nei vari incontri avuti con il nucleo, sono state dibattute e decise le strategie di intervento, e considerata la positività operativa del gruppo, non si è ritenuto di convocarlo con frequenza.*

*Lo stesso assessore ha soggiunto che il nucleo stesso viene convocato ogni qualvolta il caso lo richieda, e che l'ultima convocazione ha avuto luogo nel giugno del 1991 per un censimento della potenzialità delle forze di volontariato.*

*Relativamente alla operatività del gruppo, risulta che per l'anno 1990 si sono avuti 4 interventi, nessuno per l'anno 1991 non essendosi verificati eventi, e 7 interventi per l'anno 1992.*

*Il nucleo di protezione civile non dispone di una sede per le riunioni che vengono tenute presso la sala consiliare del comune.*

*Il locale occupato nel centro storico di Caiazzo è costituito da un piccolo vano adibito a deposito di attrezzature varie.*

Il Ministro per il coordinamento della protezione civile: Facchiano.

PARLATO. — *Al Ministro dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

la seduta del Consiglio comunale di Lagonegro (Pz) del 3 marzo 1990 relativa alla elezione del sindaco fu interrotta e sciolta dal presidente dell'assemblea senza aver proceduto alla elezione del sindaco né aver deliberato nulla la stessa votazione per mancanza di *quorum*. Quindi la successiva seduta del 10 marzo 1990 fu illegalmente ritenuta seconda convocazione, laddove era continuazione della prima;

il CO.RE.CO., con nota prot. n. 1441, 1744, 1746/50 comunicava l'annullamento delle delibere consiliari n. 5, 8, 9, 10, 11 e 12 del 7 febbraio 1990 senza includere la n. 6 della stessa data con la quale si prendeva atto delle dimissioni dell'assessore professor Aldo Tallarico;

tale delibera aveva uguale natura e fonti di quelle annullate e se si intendeva annullata si veniva a creare una situazione confusa e illegittima in seno alla Giunta comunale, mentre se tale atto si intendeva convalidato allora anche l'annullamento delle altre doveva essere contestato con la conseguente invalidità della seduta consiliare e delle relative delibere del 10 marzo 1990 conseguenti ai su citati annullamenti;

in conseguenza di tutto ciò il consigliere comunale del MSI ragionier Carmine Brigante chiedeva l'annullamento dell'elezione del sindaco e della giunta di Lagonegro –:

quale esito ha avuto la vicenda;

quali iniziative al riguardo siano state assunte;

quali provvedimenti, in conseguenza della incompatibilità ai sensi della legge n. 964/24 e del regolamento n. 225 del 5 febbraio 1931 della carica di sindaco del professor Tallarico eletto nella seduta del 10 marzo 1990 con quella di membro del Consiglio di amministrazione della Cassa di Risparmio di Calabria e Lucania, con Agenzia a Lagonegro, siano stati adottati.

Quanto precede anche in relazione all'atto ispettivo di uguale contenuto, restato privo di riscontro nella decima legislatura, n. 4-23549 del 15 gennaio 1991. (4-07181)

RISPOSTA. — *Nella sessione straordinaria del 7 febbraio 1990, il consiglio comunale di Lagonegro, riunito in seconda convocazione, eleggeva sindaco il professor Aldo Tallarico, dimissionario dalla carica di assessore comunale.*

*Nella circostanza, il consiglio comunale procedeva, inoltre, all'accettazione delle dimissioni degli assessori componenti la giunta municipale ed alla conseguente nuova elezione dell'organo.*

*Durante la riunione, veniva avanzata da un consigliere comunale di opposizione censura di illegittimità per l'elezione del sindaco, sul presupposto dell'incompatibilità della funzione di amministratore comunale con l'attivita svolta dal professor Tallarico nel consiglio di amministrazione della Cassa di risparmio di Calabria e di Lucania, con sede in Lagonegro.*

*In proposito, l'interessato opponeva che il servizio di tesoreria comunale era affidato, a quella data, alla Società esattorie meridionali – S.E.M. – e, in precedenza, alla tesoreria gestita da Amedeo Siervo.*

*Era quindi da escludere una presunta incompatibilità, non sussistendo rapporti di natura giuridica tra il servizio di tesoreria del comune e la Cassa di risparmio di Calabria e di Lucania.*

*Sta di fatto che le deliberazioni consiliari, cui fa riferimento l'interrogante, venivano tutte annullate dall'organo regionale di controllo, ad eccezione dell'atto n. 6, riguardante la presa d'atto delle dimissioni del professor Tallarico dalla carica di assessore.*

*Dalle precisazioni, fornite dal presidente della competente sezione provinciale dell'organo regionale di controllo, risulta che la deliberazione è stata esaminata singolarmente e non come atto consequenziale del procedimento di costituzione degli organi elettivi dell'amministrazione comunale.*

*Di qui il giudizio favorevole dell'organo di controllo, risultando l'atto deliberativo regolare nella forma e nella sostanza ed immune, quindi, da vizi di legittimità.*

*Il Consiglio comunale di Lagonegro veniva convocato il 3 marzo 1990.*

*L'adunanza non poteva avere luogo per mancanza del numero legale dei consiglieri e quindi il consiglio veniva nuovamente convocato il successivo 10 marzo.*

*In questa seconda seduta, il consesso elettivo procedeva alla surrogazione ed alla convalida di un componente e a nuova elezione del sindaco e della giunta municipale.*

*Le deliberazioni venivano tutte esaminate senza rilievi dall'organo regionale di controllo.*

*In presenza degli atti promossi dal consiglio comunale e del sindacato di legittimità del comitato regionale di controllo, non vi sono interventi che possano essere promossi dall'autorità di Governo.*

*Per quanto, in particolare, attiene al problema della presunta incompatibilità del sindaco, cui fa riferimento l'interrogante, risulta osservata dal consiglio comunale la procedura prevista dall'Ordinamento, che conferisce al consiglio comunale la funzione di primo giudice della verifica della sussistenza dei requisiti soggettivi dei titolari delle cariche elettive.*

*Non vi è spazio, quindi, per interventi sostitutivi, che peraltro non potrebbero essere promossi dal Governo.*

*Eventuali censure di illegittimità potranno, pertanto, essere fatte valere dagli interessati dinanzi all'autorità giudiziaria ordinaria.*

*Successivamente, non risultano essersi verificati sviluppi di particolare rilievo, rispetto a quanto segnalato.*

Il Ministro dell'interno: Mancino.

PARLATO. — *Ai Ministri del turismo e dello spettacolo, per i beni culturali ed ambientali e per il coordinamento delle politiche comunitarie e per gli affari regionali.* — Per conoscere – premesso che:

il 5 settembre 1990 il presidente della FIAVET (Federazione italiana associazioni imprese viaggi e turismo) ha inviato al Ministro del turismo e dello spettacolo una nota del seguente preciso tenore: « ... con recente decreto del Ministro per i Beni Culturali ed Ambientali è stato disposto con decorrenza 1° ottobre prossimo un aumento piuttosto consistente (in alcuni casi il raddoppio) delle tariffe di ingresso ai musei statali. Il provvedimento appare abbastanza contraddittorio con l'orientamento governativo anche da Lei più volte espresso, tendente a riqualificare, sul piano culturale, il turismo italiano.

La notizia, diffusa dalla stampa italiana e ripresa anche dai giornali esteri ha notevolmente preoccupato i *Tour Operators* europei ed extraeuropei, corrispondenti dei nostri agenti ricettivisti.

Secondo le nuove direttive europee dei viaggi organizzati le tariffe infatti non possono essere modificate, una volta chiuso il contratto ed è noto che le prenotazioni dei pacchetti turistici avvengono da parte dei clienti stranieri con molti mesi di anticipo (sino ad oltre 12/18 mesi) sulla reale data di effettuazione della vacanza).

Gli agenti di viaggio italiani si trovano quindi ad aver promesso, ora per allora, un prezzo che è praticamente immodificabile.

Ecco perché mi rivolgo alla Sua cortesia per pregarLa di voler intervenire presso il Ministro Facchiano al fine di ottenere un congruo rinvio dell'entrata in vigore del provvedimento o, in alternativa, una deroga che conservi nei confronti delle sole agenzie di viaggio il vecchio tariffario almeno per 12 mesi.

Ritengo che tale richiesta, oltre a salvaguardare gli interessi della categoria costituirebbe un valido strumento promozionale nei confronti della clientela estera in visita al nostro paese »;

ed al Ministro per i beni culturali ed ambientali la lettera di cui al seguente testo: « ... la notizia degli aumenti tariffari degli ingressi ai Musei disposti con decorrenza 1° ottobre p.v., diffusa dalla stampa italiana e ripresa anche da giornali esteri ha notevolmente preoccupato i *Tour Operators* europei ed extraeuropei corrispondenti dei nostri agenti ricettivisti.

Secondo le nuove direttive europee dei viaggi organizzati le tariffe infatti non possono essere modificate, una volta chiuso il contratto ed è noto che le prenotazioni dei pacchetti turistici avvengono da parte dei clienti stranieri con molti mesi di anticipo (sino ad oltre 12/18 mesi) sulla reale data di effettuazione della vacanza.

Gli agenti di viaggio si trovano quindi ad aver promesso, ora per allora, un prezzo che è praticamente immodificabile.

Il provvedimento, inoltre, si pone in contraddizione con il proposito, più volte affermato in sede governativa di dare al turismo italiano una crescente qualificazione in senso culturale.

Ecco perché mi rivolgo alla Sua cortesia per pregarLa di disporre un congruo rinvio dell'entrata in vigore del provvedimento od in alternativa, una deroga che conservi nei confronti delle agenzie di viaggio il vecchio tariffario almeno per 12 mesi.

Ritengo che tale richiesta oltre a salvaguardare gli interessi della categoria costituirebbe un valido strumento promozionale nei confronti della clientela estera in visita al nostro Paese »;

la richiesta della FIAVET è più che fondata giacché non può nemmeno ipotizzarsi che la direttiva europea relativa ai viaggi organizzati possa essere oggetto di deroga a seguito di iniziative di uno stato membro, né d'altra parte, l'ottemperanza alle medesime direttive può concretare un gravissimo danno nei confronti delle imprese di viaggi e turismo;

la soluzione proposta, un rinvio dell'applicazione delle nuove tariffe di ingresso ai monumenti e musei statali, risolverebbe in maniera equa il problema –:

quale riscontro sia stato dato o si intenda dare alla lettera della FIAVET che rappresenta esigenze sicuramente da soddisfare per evitare danni gravi quanto ingiustificati agli operatori turistici italiani e tali da modificare addirittura in loro danno il regime di libera concorrenza in sede CEE, stante l'effetto punitivo nei confronti degli agenti di viaggio italiani che, sia pure inconsapevolmente, ignorandosi dal Governo le direttive CEE, ha prodotto l'aumento, successivo alla stipula dei contratti con l'estero, delle tariffe di ingresso ai musei ed ai monumenti statali.

Quanto precede anche in relazione all'atto ispettivo di uguale contenuto, restato privo di riscontro nella decima legislatura, n. 4-21433 del 21 settembre 1990.

(4-10918)

RISPOSTA. — *Con riferimento all'interrogazione in oggetto si fa presente che la situazione esposta si riferisce all'aumento delle tariffe d'ingresso nei musei statali intervenuta nel 1990.*

*La disposizione in questione proviene dal Ministero dei beni culturali.*

*Il rappresentante del Ministero del turismo in seno al comitato per la tassa ingresso ai musei, il cui parere viene sentito dal quel Ministero ogni qualvolta debba intervenire una variazione dei prezzi d'ingresso, prospettò le difficoltà che si sarebbero avute da*

*parte degli operatori italiani i quali avevano già stipulato contratti di viaggio « tutto compreso », ipotizzando costi inferiori quanto agli ingressi nei musei.*

*Null'altro fu possibile ottenere, attese le esigenze di incrementare le entrate per disporre di maggiori strumenti finanziari da destinare tra l'altro alla tutela degli stessi beni culturali.*

*Invero la questione del pagamento di un prezzo d'ingresso nei musei risente di due opposte tendenze.*

*La prima porterebbe alla gratuità dell'ingresso, se il museo dev'essere inteso quale servizio culturale che lo Stato dovrebbe prestare gratuitamente ai cittadini per indurre una elevazione anche spirituale.*

*La seconda vede il servizio in questione alla stregua dell'acquisto generico di un bene di cui va comunque pagato il costo con una visione non più solo culturale ma soprattutto economica.*

*Tanto premesso, si esprime l'avviso che le nuove norme sulla gestione delle istituzioni museali consentiranno una gestione più dinamica e proficua che in prosieguo di tempo potrebbe condurre alla stabilizzazione o alla riduzione dei prezzi d'ingresso.*

Il Ministro del turismo e spettacolo: Boniver.

PASETTO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere – premesso:

che in Italia è in atto da alcuni anni un preoccupante calo demografico che nel giro di qualche decennio rischia di mettere in crisi l'intera nazione;

che i governi della Repubblica non hanno mai preso alcun provvedimento per prevenire e/o affrontare adeguatamente il calo demografico;

che tra le principali cause di denatalità vi è il costo, diretto ed indiretto, che la nascita di un figlio rappresenta oggi per l'economia familiare –:

se sia vero che negli ultimi quindici anni i contributi versati alla Cassa assegni familiari sono stati in costante ascesa senza che vi sia stato un corrispettivo aumento degli assegni familiari distribuiti e se corrisponde al vero che nel 1989 il 37 per cento dei contributi versati alla Cassa assegni familiari, pari a 19.000 miliardi, sia stato adoperato per sanare il *deficit* dell'INPS anziché essere destinato alle famiglie, come logica e leggi vorrebbero.

(4-05236)

RISPOSTA. — *Il regio decreto-legge 4 ottobre 1935, n. 1827, ha attribuito all'INPS personalità giuridica, affidandogli l'amministrazione di diverse gestioni previdenziali, dotate di sola autonomia contabile ed economica, ed ha sancito che le disponibilità finanziarie delle gestioni ad esso affidate dovessero essere investite unitariamente nelle forme di impiego previste dallo stesso decreto.*

*L'INPS, perciò, provvede, per conto delle gestioni amministrate, alla riscossione dei contributi, alla erogazione delle prestazioni, alla organizzazione unitaria dei servizi e alla gestione del patrimonio, svolgendo, in pratica, una funzione di intermediazione finanziaria, che consente di attingere ad una cassa unica – alla quale affluiscono le entrate – e di utilizzare le risorse disponibili delle gestioni attive per finanziare il fabbisogno di quelle passive.*

*Gli effetti economici e patrimoniali, derivanti dalla gestione complessiva sopra esposta, vengono imputati alle diverse gestioni amministrate, con le quali l'INPS definisce i conseguenti rapporti finanziari mediante la tenuta di conti correnti fruttiferi che trovano il loro assestamento alla fine dell'esercizio.*

*Peraltro, la legge 9 marzo 1989, n. 88, articolo 21, nell'istituire il comparto dei lavoratori dipendenti (fondo pensioni e gestione prestazioni temporanee nella quale sono confluite la cassa unica assegni familiari, la cassa integrazione guadagni ordinaria, l'assicurazione obbligatoria per la disoccupazione involontaria ed altre assicurazioni minori), ha previsto che in tale comparto il consiglio di amministrazione dell'INPS può*

*deliberare l'utilizzazione, senza corresponsione di interessi, degli eventuali avanzi di gestione.*

*Si allega copia del prospetto nel quale sono stati evidenziati i contributi riscossi e le prestazioni erogate, dal 1977 al 1988, dalla cassa unica assegni familiari e, dal 1989, dalla gestione prestazioni temporanee ai lavoratori dipendenti.*

*Allegato.*

*INPS - DIREZIONE CENTRALE PER I SERVIZI DI RAGIONERIA E FINANZA*

*Trattamenti di famiglia - Dati economici consuntivi 1977-1991 relativi a entrate per contributi e spese per prestazioni desunti dalla ex gestione CUAF e dalla gestione PTLD.*

*(in miliardi)*

*1977:*
*contributi 2.589; prestazioni 1.659;*

*1978:*
*contributi 3.082; prestazioni 1.844;*

*1979:*
*contributi 3.580; prestazioni 1.834;*

*1980:*
*contributi 4.673; prestazioni 2.658;*

*1981:*
*contributi 5.604; prestazioni 3.810;*

*1982:*
*contributi 6.475; prestazioni 3.689;*

*1983:*
*contributi 7.626; prestazioni 4.349;*

*1984:*
*contributi 7.864; prestazioni 4.417;*

*1985:*
*contributi 8.534; prestazioni 4.183;*

*1986:*
*contributi 9.218; prestazioni 3.854;*

*1987:*
*contributi 10.036; prestazioni 4.113;*

*1988:*
*contributi 11.335; prestazioni 4.826* (a);

*1989:*
*contributi 11.677; prestazioni 6.461* (b);

*1990:*
*contributi 13.237; prestazioni 6.485* (c);

*1991:*
*contributi 14.596; prestazioni 5.239* (d).

---

(a) *di cui 2.515 miliardi per maggiori oneri derivanti dalla erogazione degli assegni per il nucleo familiare - articolo 2, legge n. 153 del 1988;*

(b) *comprende l'importo di 4.251 miliardi posto a carico della Gestione degli interventi assistenziali e di sostegno alle gestioni previdenziali;*

(c) *comprende l'importo di 4.471 miliardi posto a carico della Gestione degli interventi assistenziali e di sostegno alle gestioni previdenziali;*

(d) *comprende l'importo di 3.218 miliardi posto a carico della Gestione degli interventi assistenziali e di sostegno alle gestioni previdenziali.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

PASETTO. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso:

che i dipendenti dell'ufficio postale di Jesolo Lido da oltre due anni lavorano in condizioni di assoluto disagio, in particolare nei mesi estivi, a causa dell'incendio avvenuto circa due anni fa dei condizionatori d'aria, cosa che ha portato, durante i mesi di lavoro estivo, a condizioni di invivibilità negli uffici stessi, ove si raggiungono temperature di 40 gradi;

che si sono anche verificati casi di malore a seguito di tale situazione;

che a tutt'oggi non sono stati presi provvedimenti adeguati per porre rimedio a tale incredibile situazione, che crea disagio anche agli utenti –:

quali passi intenda muovere per porre fine a questa vergognosa situazione

di disagio nella quale sono costretti ad operare i dipendenti dell'ufficio postale di Jesolo Lido e, ovviamente, situazione nella quale si vengono a creare gli utenti dell'ufficio postale stesso. (4-05394)

RISPOSTA. — *L'ufficio postale di Jesolo Lido è dotato di 6 impianti di condizionamento, due dei quali installati dietro il bancone sportelleria, ad una altezza di circa 5 metri dal suolo e ciò a causa delle caratteristiche architettoniche-strutturali dell'edificio che non hanno reso possibile una diversa collocazione.*

*Tale circostanza ha impedito la sostituzione dei condizionatori – resi inutilizzabili da un corto circuito che li ha irreparabilmente danneggiati – poiché il gruppo di manutenzione immobili non è dotato di ponteggi e mezzi di sollevamento adeguati all'intervento da effettuare.*

*Si è, pertanto, reso necessario ricercare ditte specializzate in tali lavori e, poiché l'unica reperita ha avanzato una richiesta economica esosa, date le particolari condizioni ambientali in cui doveva avvenire l'esecuzione del lavoro, si è ritenuto opportuno adottare altri rimedi.*

*Per ovviare agli inconvenienti lamentati nell'atto parlamentare in esame, si è, quindi, provveduto ad aprire due vetrate, che consentono una migliore aerazione naturale del settore posto dietro la sportelleria, nonché a sostituire due condizionatori situati in locali attigui (collocati ad una altezza normale di circa m. 2,50).*

*Si assicura, tuttavia, che prima della stagione estiva 1993 il problema delle condizioni microclimatiche della sede di Jesolo Lido, verrà definitivamente risolto attraverso l'installazione di un impianto di condizionamento d'aria centralizzato.*

Il Ministro delle poste e telecomunicazioni: Pagani.

PETROCELLI, STANISCIA, ENRICO TESTA, PRATESI, MATTIOLI, SCALIA e NICOLINI. — *Ai Ministri dell'ambiente, dell'interno, della sanità, per il coordinamento della protezione civile, per i beni culturali ed ambientali e delle partecipazioni statali.* — Per sapere – premesso che:

il Molise e alcune aree di confine dell'Abruzzo sono interessati da enormi discariche già in funzione o in progettazione, come quelle di « Bocche di Forlì » (Isernia-L'Aquila), la « Laterlite » di Bojano (Campobasso) e quella proposta di recente dalla Castalia S.p.A., la Sigla Soc. Coop. a responsabilità limitata e la SIRIO società a responsabilità limitata, da costruire in agro di Montemitro (Campobasso-Chieti);

nei vari casi le aree direttamente o indirettamente interessate sono quelle interne che da vari anni pongono con serietà il problema del loro sviluppo;

in tutti e tre i casi i siti destinati ad ingoiare e demolire milioni e milioni di tonnellate di rifiuti sono previste a ridosso del « Parco Nazionale d'Abruzzo », dell'istituendo « Parco Interregionale del Matese » e del futuro « Parco dell'Alto Molise », senza dire che eventuali infiltrazioni ed inquinamenti interessano direttamente ben tre grossi fiumi, cioè il Volturno, il Biferno e il Trigno;

con precedenti interrogazioni sono state sollevate in dettaglio le contraddizioni e i danni che le prime due provocano all'economia locale, al turismo, alla salute e all'ambiente;

il nuovo impianto polivalente modulare di termodistruzione di Montemitro, della capacità massima progressiva di 100 tonnellate al giorno, è destinato allo stoccaggio provvisorio, al trattamento e all'incenerimento di rifiuti speciali, speciali ospedalieri e tossico nocivi, conferibili (come per le altre discariche) senza limite regionale o territoriale;

in cambio di tale ospitalità venticinquennale le società concessionarie del suolo pagherebbero al comune un canone annuo di 80 milioni, smaltirebbero gratis i rifiuti solidi urbani dei 600 abitanti di Montemitro, assumerebbero nel tempo circa 80 persone e pagherebbero una tassa

di 16,5 lire per ogni chilogrammo di rifiuto tossico conferito all'ingresso dell'impianto;

a fronte di questi « vantaggi » la giunta comunale di Montemitro ha deliberato (con atto divenuto esecutivo per decorrenza di termini) lo schema di convenzione; il sindaco, noncurante dei ripetuti annullamenti da parte del CORECO per illegittimità di analoghe delibere consiliari, in quanto la discarica in parola non è prevista nel relativo piano regionale ed anche per il fatto che la competenza in materia è stata delegata con legge regionale alla comunità montana, ha sentenziato che quello « dell'ambiente è una problematica rispetto alla quale non basta indossare magliette più o meno spiritose o firmare cartoline di protesta », bensì occorre « trasformare una sostanziale cultura del NO in una cultura del SI, fatta di convergenze e di negoziazione più razionale e condivisa, passando precisamente da una cultura di tutela assoluta dell'ambiente, così com'è, ad una cultura del rischio voluto, nel senso di negoziare le inevitabili quote di compromissione ambientale che lo sviluppo comporta » e, vestendo poi i panni dell'alfiere delle zone interne, ha aggiunto che la realizzazione dell'impianto inceneritore « esercita una funzione trainante e decisiva sullo sviluppo economico del comune stesso e di tutta l'area montana circostante », ignorando volutamente che nei piani di sviluppo delle comunità montane dell'Alto e Medio Trigno tutto era previsto fuorché un inceneritore di rifiuti;

in un vasto territorio molisano-abruzzese, attraversato dal tratturo Atelete-Biferno, Montemitro è l'unico che ha frettolosamente dichiarato la propria disponibilità, mentre la provincia di Campobasso, la comunità montana Medio Vastese-Gissi, il comune e la comunità montana di Palata, le popolazioni e i comuni di Tavenna, Celenza sul Trigno, Acquaviva Collecroce, Roccavivara, Schiavi d'Abruzzo, Montefalcone nel Sannio, Tufillo, San Salvo, Mafalda, S. Felice del Molise, Fresagrandinara, Palmoli e Trivento hanno formalmente respinto la decisione di influire dall'esterno sulle scelte socio-economiche ed ambientali dell'area trignina, ed in particolare, hanno contestato: l'idoneità dell'area scelta in quanto non prevista fra quelle indicate dal piano regionale (attualmente sospeso) e surrettiziamente inserita dalla Giunta regionale in un fumoso piano di emergenza; la mancanza di studi e verifiche dei fattori climatici, del regime dei venti, delle caratteristiche geomorfologiche e paesaggistiche della zona; il non rispetto del vincolo archeologico, delle norme sismiche e del dissesto idrogeologico; la sottovalutazione della presenza a soli 150 metri dell'asta del fiume Trigno, che sfocia a pochi chilometri nell'Adriatico; il rischio per le attività produttive e per le popolazioni presenti nel raggio di 3000 metri, perciò non escluse da un progressivo inquinamento, come sostiene la stessa relazione sul VIA che accompagna il progetto di impianto, la quale suggerisce solo per l'agricoltura la riconversione di colture in serra, mentre nel fiume possono tranquillamente cadere per anni veleni di ogni tipo;

è proprio tale relazione, i parametri e la metodologia utilizzata, che depone contro la realizzazione dell'impianto stesso; infatti le imprese proponenti non hanno operato una scientifica valutazione di impatto ambientale, ma hanno tentato di dimostrare, con una superficiale analisi di dati superati, con formule stereotipate e richiami dottrinari, una generica compatibilità ambientale valida per ogni situazione, rinviando a fasi successive, con apposite rilevazioni *in loco*, la volontà di accertare, verificare e acquisire dati sul suolo, sulla situazione meteoclimatica, sulle conseguenze per la salute della popolazione e sull'ambiente; infine, il tutto viene rinviato a successivi monitoraggi da realizzare dopo la installazione dell'impianto, in netto contrasto con il Decreto del Presidente della Repubblica n. 460 del 5 ottobre 1991 (il quale modifica l'articolo 6 decreto del Presidente del Consiglio dei ministri del 10 agosto 1988, n. 377), che prevede il controllo del VIA nella fase di progettazione —:

quali provvedimenti abbia adottato o intenda adottare, ognuno per la propria competenza, per evitare che scoppi una vera e propria sollevazione delle popolazioni della valle del Trigno e della costa adriatica;

se non valutino necessario intervenire per controllare la validità degli atti comunali e le autorizzazioni finora messe in essere;

se non ritengano che la presenza della discarica, al di là dell'entusiasmo del sindaco di Montemitro, danneggia proprio lo sviluppo programmato e scoraggia futuri investimenti nell'area in questione;

se non pensino di dover difendere, con verifiche serie e approfondite, la salute dei cittadini e la tutela della natura, presupposto indispensabile per la sopravvivenza delle comunità e delle attività produttive presenti su entrambi i versanti del fiume Trigno, che divide e unisce allo stesso tempo le regioni Abruzzo e Molise. (4-01795)

RISPOSTA. — *Sulla base delle notizie avute dalle autorità locali in merito all'interrogazione indicata in oggetto, si riferisce che nell'ambito degli interventi di emergenza finalizzati al trattamento dei rifiuti industriali, la giunta regionale, in attuazione dell'articolo 7 del decreto-legge 9 settembre 1988, n. 397 convertito in legge 9 novembre 1988, n. 475 recante « Disposizioni urgenti in materia di smaltimento dei rifiuti industriali », con delibera 3827, del 22 luglio 1991, ha previsto, tra gli altri, un impianto di termodistruzione della capacità di 45 mila t./a. da realizzarsi nel territorio di Montemitro.*

*Tale scelta è stata determinata sia dalla posizione geografica della zona rispetto ai poli produttivi molisani, sia dalla favorevole disponibilità manifestata dal comune ad accogliere nel proprio territorio un tale impianto, che avrebbe dovuto trattare rifiuti industriali del Molise con esclusione di ogni apporto extra-regionale.*

*Poiché la delibera con la quale la giunta regionale ha approvato le linee di emergenza non prevede la possibilità di deroghe alle procedure stabilite dalla legge, il progetto relativo all'impianto di Montemitro, presentato dalla Castalia SpA, non è stato neppure sottoposto alle procedure istruttorie previste all'articolo 3-*bis *del decreto-legge 31 agosto 1987, n. 361 convertito in legge 29 ottobre 1987, n. 441 recante « Disposizioni urgenti in materia di smaltimento dei rifiuti »; né risulta che lo stesso, depositato presso l'assessorato regionale all'ambiente, ai sensi dell'articolo 5 decreto del Presidente del Consiglio dei ministri 377/88 sia stato inviato a questo Ministero per essere sottoposto alla preventiva ed obbligatoria procedura di valutazione di impatto ambientale di cui all'articolo 6, legge 349/86.*

*Si rappresenta a tale proposito che il Ministero è venuto a conoscenza della questione tramite notizia della pubblicazione sul quotidiano* Il Tempo *del 9 aprile 1992 in cui figurava un annuncio relativo alla « richiesta di pronunzia di compatibilità ambientale del Ministro dell'ambiente e del Ministro dei beni culturali e ambientali ».*

*Questo Ministero, ha provveduto ad inviare una comunicazione in data 3 agosto 1992 prot. 5120/VIA alla soc. Castalia, alla regione Molise ed al Ministero dei beni culturali ed ambientali con la quale ha fatto presente che a tale data non risultava pervenuta alcuna domanda in merito, né lo studio di impatto o il progetto citati dal suddetto annuncio; che la tipologia dell'impianto in oggetto rientrava tra quelle per le quali ai sensi dell'articolo 6 della legge 8 luglio 1986, n. 349 è prevista obbligatoriamente la procedura di VIA, e che l'attivazione del relativo procedimento amministrativo doveva essere effettuato secondo quanto previsto dalle stesse norme e dai successivi decreti attuativi (decreto del Presidente del Consiglio dei ministri 10 agosto 1988 n. 377 e decreto del Presidente del Consiglio dei ministri 27 dicembre 1988), all'interno del procedimento di cui all'articolo 3-*bis *della già citata legge 441/87.*

*Nella stessa comunicazione precisava che nel caso di inserimento del progetto in questione nell'ambito procedurale del programma di emergenza di cui all'articolo 5 della legge 475/88 il Ministero, ai fini dell'attuazione della procedura di VIA, avrebbe*

*esaminato unicamente il progetto proposto dall'impresa pubblica o privata prescelta dalla regione Molise per l'affidamento in concessione ai sensi dell'articolo 7 della medesima legge 475/88.*

*Si fa presente che con delibera 102 del 29 aprile 1992 il consiglio regionale del Molise ha approvato un ordine del giorno con il quale impegna la giunta regionale a sospendere le procedure di competenza relative agli impianti di termodistruzione di Montemitro e di altri comuni.*

*Non risulta che dopo tale provvedimento la giunta abbia adottato alcuna decisione in merito.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

PIERONI. — *Ai Ministri dell'ambiente e per il coordinamento della protezione civile.* — Per sapere – premesso che:

è nota dal 1983 l'emergenza idrogeologica da cromo esavalente che interessa il comune di Monsano, in provincia di Ancona, provocata dallo stabilimento *ex* Rcd: nel giugno 1983 furono rilevate le prime tracce di cromo nei pozzi privati e nei fanghi dei canali di scolo, e da testimonianze di anziani operai risulta che negli anni sono stati interrati quintali di fanghi cromici. La Usl 10 compie attualmente rilievi settimanali su decine e decine di pozzi-spia distribuiti tra Jesi e Monsano, e da questi risulta che i parametri di inquinamento da cromo esavalente non scendono di livello, confermando una situazione di rischio per le sue dimensioni unica in Europa;

dal 1989 lo stabilimento *ex* Rcd è proprietà della Sima Industrie, che se ne avvale per la cromatura dei componenti metallici prodotti nella fabbrica jesina di Roncaglia;

su invito della regione Marche, il sindaco di Monsano ha emesso il 28 maggio 1992 un'ordinanza che assegnava all'azienda suddetta 45 giorni di tempo per « eseguire direttamente tutti gli interventi di ripristino delle condizioni di sicurezza », individuati dalla ditta e da una commissione tecnica di protezione civile nominata dalla Giunta regionale nel novembre 1991: i lavori ingiunti alla Sima riguardavano impermeabilizzazione del piazzale, asfaltature, drenaggi, nuove protezioni e adeguamento della rete fognaria, per investimenti pari a circa un miliardo e 200 milioni;

la Sima Industrie risulta aver realizzato interventi relativi al ciclo lavorativo interno, ma si è rifiutata di eseguire altri lavori che, pur ritenuti necessari, sono considerati dall'azienda retaggio sfavorevole della passata gestione. Il consiglio di amministrazione della Sima Industrie ha così deliberato nel luglio 1992 di mettere in liquidazione la società e di licenziare i 250 dipendenti, nel caso non fosse revocata l'ordinanza del sindaco;

dopo ordinanza, ricorsi al Tar, proroga dell'ordinanza, risulta ora sufficiente stendere con una certa pendenza un telone impermeabile sull'area verde che circonda lo stabilimento *ex* Rcd: è questa la conclusione di assidue consultazioni fra i comuni di Jesi e Monsano da una parte e la regione Marche dall'altra. Dopo anni di polemiche su chi debba accollarsi la bonifica dell'area, la sicurezza degli acquedotti pubblici nella zona esterna e a valle dello stabilimento è affidato a una cosiddetta « geomembrana impermeabile », nulla più che un telone in plastica –:

se non si intenda intervenire direttamente presso la regione Marche, perché promuova la bonifica radicale dell'area, attraverso il dissotterramento della carica inquinante rappresentata dal cromo esavalente;

quali provvedimenti si intendano assumere nei confronti della stessa regione Marche che attraverso l'*escamotage* del telone in plastica, con cui pretenderebbe di risolvere il problema della sicurezza e della protezione dell'area, è venuta palesemente meno ai suoi obblighi istituzionali in campo ambientale e sanitario, e alle sue competenze in materia di protezione civile. (4-04825)

RISPOSTA. — *In merito al grave problema dell'inquinamento da cromo delle acque sotterranee in Vallesina che interessa il comune di Monsano e marginalmente i comuni di Iesi, Chiaravalle e Monte S. Vito si ritiene opportuno illustrare brevemente l'evoluzione dei fatti e di riferire sugli interventi fino ad oggi adottati sia dalle competenti autorità locali, sia dal dipartimento della protezione civile, per fronteggiare la situazione.*

*L'origine del fenomeno è stata individuata in attività risalenti al periodo compreso tra il 1968 ed il 1974 e consistenti nello smaltimento incontrollato di fanghi e reflui liquidi che contenevano cromo esavalente, operato dalla ditta R.C.D. di Monsano, oggi Sima che effettuava trattamenti galvanici delle superfici metalliche.*

*A seguito delle indicazioni della commissione tecnica insediata dal Ministro della protezione civile nel marzo 1986, veniva all'epoca elaborato un progetto complessivo di risanamento, del costo totale di lire 4,6 miliardi. Esso prevedeva:*

*la messa in opera di barriere fisiche (paratie) perimetralmente allo stabilimento ex R.C.D. e opere di drenaggio delle acque meteoriche, al fine di assicurare il contenimento della massa di rifiuti cromici;*

*opere di rifacimento fognature interne allo stabilimento;*

*impianto di trattamento delle acque cromiche drenate dai pozzi;*

*opere di soccorso quali la realizzazione di acquedotti ad uso irriguo; il tutto accompagnato dall'indicazione dei costi di gestione e servitù, sia per le opere di intervento, che per quelle di soccorso.*

*Con ordinanza del Ministro per la protezione civile n. 766 del 4 luglio 1986 veniva finanziato il primo stralcio del progetto in parola per un importo di lire 770 milioni: il relativo costo era posto a carico del fondo per la protezione civile.*

*I lavori iniziati nell'agosto 1986, furono ultimati nel febbraio 1987; furono realizzati soltanto la paratia ed i pozzi di emungimento poiché lo stanziamento risultò insufficiente a realizzare l'impianto di trattamento delle acque e le opere di soccorso.*

*Nel marzo 1987, il servizio decentrato opere pubbliche della regione Marche, redigeva il progetto definitivo delle opere di completamento, per un importo complessivo di 1,2 miliardi.*

*Inoltrato detto progetto al dipartimento per la protezione civile, esso non trovava finanziamento essendo esaurito lo stanziamento previsto dalla legge n. 730/86. Essendosi in seguito, a partire dal 1989, rilevata la presenza di cromo nelle acque sotterranee anche a notevole distanza dal sito contaminato, la commissione tecnica a suo tempo insediata, convocata dal prefetto di Ancona il 6 febbraio 1990, indicava la necessità di pompare le acque invasate e portarle a depurazione, onde evitare il verificarsi di tracimazioni ed il conseguente ulteriore inquinamento del suolo e sottosuolo.*

*Detta commissione suggeriva altresì il trasporto delle acque così pompate, presso la raffineria Api di Falconara per il loro trattamento di depurazione.*

*Scongiurato in tal modo il pericolo di tracimazione, il comune di Monsano e la regione Marche, con propri atti ed in particolare con tre ordinanze emesse dal sindaco di Monsano rispettivamente il 28 maggio 1992, il 14 luglio 1992 e il 1° settembre 1992, ingiungevano alla ditta Sima, diventata proprietaria dello stabilimento, di realizzare gli ulteriori interventi necessari per completare la messa in sicurezza del sito.*

*In particolare detti interventi dovevano consistere nella posa in opera di una geomembrana impermeabile su tutte le superfici dello stabilimento non impermeabilizzate ed in una verifica sia dello stato e della tenuta della rete fognaria all'interno dello stabilimento, sia delle condotte all'interno dell'area circoscritta dalla paratia impermeabile a suo tempo realizzata.*

*La ditta Sima proponeva ricorso al TAR Marche chiedendo la sospensione dell'efficacia dell'ordinanza n. 11 del 28 maggio 1992 del sindaco di Monsano; il TAR rinviava la decisione, preannunciando altresì di voler disporre una propria perizia di ufficio. Al momento sono in corso di valutazione tec-*

*nica le riserve eccepite dalla ditta in ordine alla reale necessità di eseguire i suddetti lavori.*

*Tale essendo lo stato di fatto, poiché la contaminazione delle acque sotterranee, atteso il lungo lasso di tempo trascorso dall'evento che l'ha originato, ha ormai un'estensione a largo raggio, è evidente che la messa in sicurezza del sito contaminato attraverso la sua sigillatura, non rappresenta un intervento risolutivo.*

*Attualmente, pur non risultando che le acque siano usi potabili delle acque interessate, il Ministero dell'ambiente ha ritenuto tuttavia necessario dare impulso alla unità sanitaria locale n. 10 di Ancona affinché venga avviato un attento monitoraggio del fenomeno per controllare l'evoluzione della contaminazione.*

*Tale organo sanitario dovrà contestualmente sottoporre a controllo anche l'idoneità all'uso irriguo delle acque interessate.*

*Il Ministero dell'ambiente ha inoltre dato incarico all'Avvocatura generale dello Stato di tutelare l'interesse pubblico di cui è portanome richiedendo alla società Sima il risarcimento del danno ambientale e il rimborso degli oneri di risanamento sopportati dallo Stato nelle sue varie articolazioni. Il dipartimento della protezione civile, informato di tale iniziativa, sta inoltre valutando se ricorrano gli estremi per l'adozione dei provvedimenti previsti dall'articolo 5 della legge 24 febbraio 1992, n. 225 sulla istituzione del servizio nazionale della protezione civile (articolo 5: deliberazione dello stato di emergenza e potere di ordinanza).*

*Tanto si rappresenta, rilevando che questo Ministero avrà cura di seguire gli ulteriori sviluppi del problema.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

POLI BORTONE. — *Ai Ministri dell'ambiente e dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

l'EAAP (Ente autonomo acquedotto pugliese) con lettera del 14 marzo 1991 (protocollo n. 2224/3) informava i sindaci di Parabita, Taviano, Racale, Alliste, Ugento e Gallipoli del fatto « che nell'ambito degli interventi necessari per l'alimentazione idrica delle aree non ancora servite da acquedotto, ha redatto il progetto esecutivo per l'alimentazione idrica della fascia costiera jonica fra Gallipoli e Ugento ». Le opere da realizzare sono costituite (anche) da una condotta di adduzione della lunghezza complessiva di circa chilometri 501;

non è a conoscenza dell'interrogante il fatto che l'EAAP abbia acquisito il parere regionale relativo al vincolo paesaggistico;

il progetto di detta condotta si estende per una lunghezza di chilometri 50 e per una larghezza di 7 metri;

dall'intera condotta ben 13 chilometri ricadono nel territorio di Alliste, sicché solo in tale zona per l'opera progettata dovrebbero essere interessati 9 ettari;

su un ettaro insistono dai 100 ai 120 alberi !;

dunque per costruire su 9 ettari le condotte dovranno essere abbattuti un migliaio di alberi, con conseguenze sull'economia (si tratta di alberi di ulivo), sulla termoregolazione, sull'abbattimento di anidride carbonica, sull'umidità indotta nell'atmosfera –:

se non intendano assumere idonee iniziative nei confronti dell'EAAP per evitare che tale opera sia compiuta con grave nocumento per l'ambiente e per l'economia delle zone interessate ed in particolare di Alliste (Lecce). (4-00351)

RISPOSTA. — *Dai dati forniti a questo Ministero dalla prefettura di Lecce risulta che il progetto per la realizzazione di una condotta idrica tra Gallipoli ed Ugento ha la finalità di assicurare il rifornimento idrico potabile in una zona – caratterizzata da un notevole interesse turistico-balneare – totalmente priva di acquedotti.*

*Il progetto, per il quale l'EAAP ha chiesto alle autorità competenti le necessarie autorizzazioni, si svilupperà senza alcuna interferenza con gli aspetti paesaggistici ed am-*

*bientali, essendo prevista una condotta interrata. In particolare, la minaccia di abbattimento di un migliaio di alberi di ulivo non trova nessun riscontro effettivo ed il fatto non presenta attinenza con i lavori da eseguire.*

*Si fa presente che del progetto è stato informato l'assessorato regionale all'urbanistica ed all'assetto del territorio.*

*Sulla base delle notizie acquisite non si ravvisano, allo stato, motivi per l'adozione d'iniziative da parte di questo Ministero.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

POLI BORTONE e SERVELLO. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere – premesso che:

fra le attribuzioni assegnate al ministro delle poste e telecomunicazioni è anche quella di effettuare verifiche in materia di introiti pubblicitari da parte della concessionaria pubblica;

la disciplina transitoria (fino al 31 dicembre 1992) dà al ministro medesimo il compito, da esercitare di concerto con il ministro delle partecipazioni statali e « sentiti il garante ed il Consiglio dei ministri », a formulare al Presidente del Consiglio dei ministri, entro il 30 giugno di ogni anno, la proposta sul limite massimo degli introiti pubblicitari che la concessionaria pubblica « potrà conseguire nell'anno successivo » quale « fonte accessoria di proventi »;

il comma 6 dell'articolo 8 della legge n. 223 del 1990 stabilisce il tetto pubblicitario per la concessionaria pubblica ed il comma 13 dello stesso articolo annuncia i criteri cui debbono rispondere i programmi sponsorizzati, ed in particolare alla lettera *a)* è testualmente detto che « il contenuto e la programmazione di una trasmissione sponsorizzata non possono in nessun caso essere influenzati dallo *sponsor* in maniera tale da cedere la responsabilità e l'autonomia editoriale dei concessionari privati o della concessionaria pubblica nei confronti delle trasmissioni »;

come rilevava il garante (relazione trasmessa alla Presidenza della Camera il 2 maggio 1991) l'attività di garanzia in materia pubblicitaria comporta la necessità di rilevamento di ordine quantitativo (fra cui la durata dei programmi sponsorizzati e della loro incidenza sugli indici di affollamento) e di ordine qualitativo (ai fini del rispetto dei limiti di influenza degli *sponsor* sui programmi) –:

se non ritenga di dover verificare la circostanza per la quale la RAI, servizio cosiddetto pubblico, e pertanto finanziato dagli utenti attraverso canone, subisce come pare, una pesante influenza degli *sponsor* sui programmi. Risulta agli interroganti, infatti, che ormai siano gli *sponsor* a stabilire in quali fasce orarie desiderino essere programmati, quali conduttori debbano essere assunti per le trasmissioni, in che modo debba essere dato il messaggio pubblicitario. Sicché si viene a creare una condizione di « soffocamento da *sponsor* » a danno della qualità del prodotto televisivo, a danno degli operatori del settore, in particolare di attori, ballerini, conduttori, professionisti dello spettacolo in genere che lavoreranno presso la TV di Stato solo se graditi agli *sponsor*, a danno degli utenti il cui contributo attraverso una tassa statale (canone) verrà vanificato dalla sopraffazione economica dello *sponsor* che, senza limiti di alcun genere, determina di fatto la programmazione televisiva pubblica e genera situazioni di palese contrasto con gli articoli 1 e 2 della legge n. 223 e con l'articolo 2461 del codice civile, in virtù del quale alla concessionaria pubblica è attribuita la qualifica di « società di interesse nazionale ». (4-00352)

RISPOSTA. — *L'articolo 21 della legge 14 aprile 1975, n. 103 prevedeva che la durata complessiva dei programmi pubblicitari trasmessi dalla RAI non dovesse superare il 5 per cento della durata delle trasmissioni sia televisive che radiofoniche, limite che, sulla scorta delle rilevazioni effettuate dalla società AGB negli anni dal 1988 ad oggi, risulta non essere stato mai oltrepassato.*

*Attualmente la materia in questione è disciplinata dalla legge 6 agosto 1990,*

*n. 223, che all'articolo 8, comma 6, stabilisce le condizioni ed i limiti relativi alla trasmissione dei messaggi pubblicitari mentre al comma 15 prevede che i programmi sponsorizzati debbano essere considerati messaggi pubblicitari nella misura minima del 2 per cento della durata dei programmi stessi disponendo nel contempo di provvedere ad una dettagliata regolamentazione in materia, sia per la concessionaria pubblica che per i concessionari privati.*

*Ed invero, il decreto ministeriale 4 luglio 1991, n. 439 recante norme sulla sponsorizzazione dei programmi radiotelevisivi, ha previsto, all'articolo 12 e seguenti, la misura in cui i programmi sponsorizzati, in relazione alla durata ed al numero degli* sponsor *che vi partecipano, debbano essere considerati messaggi pubblicitari.*

*Per dare piena attuazione alla direttiva del Consiglio delle comunità europee del 3 ottobre 1989 (89/552/CEE) si è reso necessario apportare alcune modifiche al testo dell'articolo 8 della legge 223/90; a ciò si è provveduto, con decreto-legge 19 ottobre 1992, n. 408, convertito in legge 17 dicembre 1992, n. 483.*

*Quest'ultima legge ha, altresì, stabilito che entro 180 giorni dalla sua entrata in vigore vengano opportunamente modificate le norme, in materia di sponsorizzazioni dettate dal decreto ministeriale 4 luglio 1991, n. 439 adeguandole alle disposizioni comunitarie e tenendo conto delle disposizioni di cui al decreto legislativo 15 gennaio 1992, n. 50.*

*Il compito poi di accertare eventuali casi di inosservanza della normativa prevista dalla legge 223/90 spetta all'ufficio del garante per la radiodiffusione e l'editoria che si avvale per i rilevamenti e la registrazione sistematica dei dati necessari all'esercizio dei compiti di vigilanza in materia di pubblicità di una propria organizzazione permanente istituita con decreto del Presidente della Repubblica 10 luglio 1991, n. 231.*

*Si significa infine che i controlli relativi al contenuto programmatico delle trasmissioni non rientrano tra i poteri del Governo avendo la legge 14 aprile 1975, n. 103 conferito gli stessi alla Commissione parlamentare di vigilanza dei servizi radiotelevisivi, la quale formula gli indirizzi dei vari programmi e ne controlla il rispetto adottando tempestivamente, se del caso, le deliberazioni necessarie per la loro osservanza.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

POLI BORTONE, IGNAZIO LA RUSSA, ROSITANI e SERVELLO. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere quali iniziative ritenga di dover immediatamente assumere presso il consiglio di amministrazione della RAI per bloccare la nomina dei dirigenti di una nuova fascia detta « due super ». Tanto in considerazione dei fatti riportati dalla stampa riguardanti contrasti sul numero e sui nomi che fanno chiaramente pensare ancora a forme di lottizzazione partitica; ed in considerazione, altresì, della situazione di illegittimità in cui da tempo sta operando il consiglio di amministrazione della RAI.

(4-03085)

RISPOSTA. — *I problemi relativi all'organizzazione e alla gestione del personale RAI rientrano nella esclusiva competenza degli organi societari.*

*Ciò esclude qualsiasi possibilità di intervento governativo, in quanto il consiglio di amministrazione della società opera, ai sensi della legge 14 aprile 1975, n. 103, nel quadro delle direttive e dei criteri formulati dalla apposita commissione parlamentare per l'indirizzo generale e la vigilanza dei servizi radiotelevisivi.*

*Tuttavia, allo scopo di poter disporre di elementi di valutazione su quanto rappresentato non si è mancato di interessare la concessionaria RAI la quale ha riferito che il consiglio di amministrazione, nella seduta del giorno 8 luglio 1992, ha deliberato una diversa articolazione delle posizioni dirigenziali, nel rispetto delle disposizioni risultanti dal contratto collettivo nazionale per i dirigenti d'azienda.*

*La concessionaria ha precisato, inoltre, che si è ritenuto di adottare questo provvedimento per accorpare linee di responsabilità e conseguire una maggiore verticalizzazione delle strutture.*

*La nuova posizione dirigenziale è stata fissata per la cura dei settori di significativa importanza strategica e di consolidata autonomia aziendale.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

POLI BORTONE. — *Al Ministro del turismo e spettacolo.* — Per sapere, negli ultimi 20 anni, quali somme siano state erogate dallo Stato alla compagnia di prosa Dario Fo-Franca Rame. (4-06556)

RISPOSTA. — *Con riferimento all'interrogazione indicata in oggetto si fa presente che nessuna sovvenzione risulta essere stata mai concessa alla compagnia di prosa Dario Fo-Franca Rame.*

*I due citati attori, comunque, hanno svolto attività professionale per l'organismo teatrale* La Comune *al quale sono state erogate le sottoelencate sovvenzioni per gli anni accanto a ciascuno di essi indicati:*

*lire 267.000.000 per l'anno 1985;*

*lire 289.000.000 per l'anno 1986;*

*lire 204.000.000 per l'anno 1987.*

*Alla società C.T.F.R. Srl, per la quale gli stessi attori hanno prestato la loro attività, sono state concesse, infine, le altre sottoelencate sovvenzioni:*

*lire 91.611.000 per l'anno 1989;*

*lire 242.229.400 per l'anno 1990;*

*lire 343.745.700 per l'anno 1991;*

*lire 288.900.000 per l'anno 1992;*

*lire 222.000.000 per la stagione teatrale 1992-93.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

RAPAGNÀ. — *Al Ministro del turismo e dello spettacolo.* — Per sapere – premesso che:

il Supercinema Odeon di Roseto degli Abruzzi sta per essere chiuso e trasformato in un centro commerciale;

dietro tale operazione si individuano responsabilità della amministrazione comunale e probabili interessi speculativi;

l'Odeon rappresenta l'unica sala cinematografica della cittadina;

quali iniziative, nell'ambito delle proprie competenze, intenda assumere per evitare la chiusura della sala. (4-10134)

RISPOSTA. — *Con riferimento all'interrogazione indicata in oggetto si fa presente che i quesiti posti sfuggono alla competenza istituzionale di questa amministrazione.*

*Comunque al riguardo si osserva quanto segue.*

*La caduta verticale in questi ultimi anni della produzione cinematografica nazionale seppure non carente di risorse creative – si è tra l'altro tradotta in una perdita secca per il consumo cinematografico in sala e, quindi, per la frequenza complessiva nei cinema italiani con il conseguente deterioramento e ridimensionamento del comparto delle sale cinematografiche espresso dalla chiusura di numerosi esercizi.*

*Ciò pur in presenza di una normativa (legge 23 luglio 1990, n. 378 – legge 13 luglio 1994, n. 313) che prevede appositi interventi creditizi mediante contributi in conto capitale ed operazioni di finanziamento a tasso agevolato per l'adeguamento delle strutture ed il rinnovo delle sale di pubblico spettacolo anche del piccolo esercizio cinematografico.*

*Nel caso di specie, peraltro, non risulta pervenuta all'ufficio alcuna istanza di contributo per la sala in argomento, ai sensi della normativa citata.*

*Quanto al riferimento ad asserite responsabilità amministrative comunali, che nell'interrogazione si assumono quale causa della chiusura del supercinema Odeon, appare evidente che una tale questione implica aspetti e problematiche che esulano dalla sfera di competenza e dai compiti istituzionali del Ministero del turismo e dello spettacolo, cui la legge non demanda alcun*

*potere d'intervento inteso ad evitare la paventata chiusura della sala cinematografica in questione.*

*Conclusivamente, ad ogni modo, per quel che concerne il problema costituito dall'attuale stato di crisi in cui complessivamente versa l'esercizio cinematografico, non può non sottolinearsi che il deterioramento del sistema sala a livello nazionale è certamente conseguenza della carenza di indicazione e di scelte dichiarate e perseguite a livello legislativo.*

*È pertanto necessario che, come previsto nei prospettati interventi legislativi per la cinematografia, il sistema sala continui a costituire un capitolo essenziale della nuova legge per il cinema, con atteggiamenti chiari e coerenti, attraverso una sempre più adeguata politica di sostegno al rinnovamento del parco sale e la riaffermazione di un diverso e più conferente sistema creditizio.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

RONZANI. — *Ai Ministri per il coordinamento della protezione civile, della difesa e dei lavori pubblici.* — Per sapere – premesso che:

lo straripamento del rio Valpitola e della roggia Della Pista a Masazza (VC) ha seriamente danneggiato abitazioni civili e negozi, sollevando in più punti l'asfalto sulla strada Trossi;

i danni ammontano ad alcune centinaia di milioni;

si è trattato di un disastro largamente prevedibile se è vero che qualcosa di simile era già accaduto nel 1976 e nel 1982;

lo straripamento è, oltre che conseguenza delle forti precipitazioni dei giorni scorsi, da imputare: 1) al fatto che l'area colpita è zona militare, quindi, sede di esercitazioni nel corso dei quali vengono divelti alberi e arbusti che a detta di molti finirebbero nel rio contribuendo alla sua ostruzione; 2) al fatto che in occasione dell'alluvione del 1968 venne costruito un ponte provvisorio, che esso col passare del tempo è diventato definitivo, che il diametro del tubo entro cui confluiscono le acque del rio è inferiore a quello del ponte che lo precede, ragione per cui si determina una forte pressione dell'acqua che durante l'ultimo straripamento ha sollevato l'asfalto in più punti –:

1) dal ministro della protezione civile se non ritenga di dover intervenire urgentemente per consentire a coloro che sono stati danneggiati di godere dei benefici previsti dalla legge nel caso in cui si tratti di calamità naturali;

2) dal ministro della difesa se non ritenga di dover stabilire che al termine di ogni esercitazione l'esercito debba provvedere alla pulizia del torrente e più in generale alla sua sistemazione;

3) dal ministro dei lavori pubblici se non ritenga essere necessaria la realizzazione di un nuovo ponte. (4-02707)

RISPOSTA. — *Ai sensi della legge istitutiva del Servizio nazionale della protezione civile l'intervento di questo dipartimento è possibile quando gli eventi sono di estensione ed intensità tali da richiedere mezzi e poteri straordinari per fronteggiarli.*

*L'attuale legislazione, inoltre, prevede forme di sostegno economico e finanziario in favore di aziende agricole, industriali ecc. danneggiate da calamità naturali.*

*Si richiamano in proposito la legge 14 febbraio 1992, n. 185, che disciplina il fondo di solidarietà nazionale per il settore agricoltura e la legge 13 febbraio 1952, n. 50, per gli altri settori economici. La procedura per accedere a tali provvidenze richiede, peraltro, la successiva attivazione da parte delle regioni e degli altri enti locali.*

*In merito al secondo quesito proposto dalla interrogazione in argomento si precisa, secondo quanto riferito dal Ministero della difesa, che le cause dello straripamento del rio Valpitola sono da attribuirsi a circostanze meteorologiche particolari che hanno provocato smottamenti di terreno lungo gli argini e trascinamento nel rio di residui vari e di alberi di alto fusto, siti in prossimità degli argini stessi, la cui rimozione esula*

*dalle competenze dei reparti militari che utilizzano il poligono di Candelo Masazza.*

*Al riguardo si fa presente che tutte le unità, che impegnano il poligono, porgono grande attenzione alla tutela dell'ambiente e, in particolare, alla salvaguardia della vegetazione, ivi esistente, mentre i veicoli cingolati utilizzano i punti di obbligato passaggio dove non c'è possibilità di provocare smottamenti di terreno. Si assicura che le aree in prossimità del torrente non vengono utilizzate per l'addestramento con i mezzi cingolati a causa della pericolosità dovuta alla ripidità degli argini.*

*Il comando della regione militare nord-ovest, inoltre, ha disposto l'esecuzione dei pertinenti lavori di manutenzione delle opere di canalizzazione presenti nell'area. In proposito, è in programma una ispezione congiunta da parte di organi tecnici dei comuni interessati e del comando genio della regione militare nord-ovest per una verifica di tutti i canali di scolo che dal poligono confluiscono nel rio in questione.*

*Da quanto comunicato dal Ministero dei lavori pubblici, emerge, circa la richiesta di realizzazione di un nuovo ponte, che i tombini della statale n. 230 interessati dall'evento alluvionale verificatosi sono stati costruiti nel 1968 a seguito di un'alluvione ed all'epoca dimensionati in funzione della portata dell'evento alluvionale medesimo e che solo recentemente vi sono state richieste di adeguamento dei suddetti tombini a causa delle modificazioni nel sistema idraulico delle rogge dovute sia all'urbanizzazione delle zone adiacenti che hanno influito sui tempi di corrivazione, sia alla costruzione di alcune canalizzazioni da parte del demanio militare.*

*La sede compartimentale dell'ANAS di Torino – secondo quanto comunicato – ha, comunque, in programma di redigere un'apposita perizia di spesa per il rifacimento degli attraversamenti con sezioni maggiori, perizia che verrà sottoposta all'esame del comitato tecnico-amministrativo compartimentale.*

Il Ministro per il coordinamento della protezione civile: Facchiano.

**IVO RUSSO, BIAFORA, CARDINALE, NUCCI MAURO, CECERE, POLIZIO, SAPIENZA e DI GIUSEPPE.** — *Ai Ministri del commercio con l'estero, dell'agricoltura e foreste e per il coordinamento delle politiche comunitarie.* — Per sapere – premesso che:

gli interroganti apprendono con viva soddisfazione la conclusione dell'accordo agricolo USA-CEE;

in meno di 15 giorni dall'annuncio da parte USA dell'intenzione di applicare un superdazio del 200 per cento su vini bianchi ed altri prodotti di provenienza CEE, quest'ultima si è attivata in modo encomiabile, tanto da raggiungere in tempi brevissimi l'attuale risultato positivo;

l'unico settore che assiste perplesso e non nasconde il suo sconcerto a detto accordo è quello conserviero del pomodoro pelato;

le ritorsioni USA-CEE annunciate il 1° gennaio 1988 e attuate dal 1° gennaio 1989 (superdazio 100 per cento sui pomodori pelati CEE), in risposta alla decisione comunitaria di non consentire, nel suo ambito, l'importazione dagli USA di carne trattata con ormoni, non registrarono certamente una identica seria ed efficace reazione da parte dei nostri responsabili CEE;

da circa quattro anni l'industria CEE del pomodoro pelato sopporta da sola tale indecisione;

l'ingiustizia viene perpetrata non solo nella unilateralità di detto atto di ritorsione ma anche di assoluta indifferenza con cui la CEE si rende complice della stessa –:

quali iniziative urgenti intendano assumere, affinché venga abolito, a carattere immediato, l'ormai anacronistico superdazio del 100 per cento sui prodotti pelati di provenienza CEE, onde evitare che l'industria conserviera del pomodoro pelato paghi da sola per un giusto atteggiamento verso un problema sanitario che investe ed interessa la salute di tutti i cittadini della Comunità europea. (4-08462)

RISPOSTA. — *L'applicazione da parte americana di sovraddazi all'importazione dalla CEE di pomodori pelati effettivamente ha penalizzato gravemente la nostra esportazione dei suddetti prodotti.*

*Questa amministrazione pertanto ha effettuato passi sia in sede comunitaria che direttamente con il governo USA per la rimozione delle misure in questione, ritenute illecite perché decise arbitrariamente in risposta ad una direttiva CEE volta a tutelare, con l'interdizione della carne di importazione USA trattata con ormoni, la salute dei cittadini.*

*Sebbene tali interventi siano stati finora infruttuosi, anche per la scarsa sensibilità mostrata al problema da alcuni paesi membri, la questione è stata recentemente riproposta da parte italiana (con l'appoggio della Spagna) all'attenzione comunitaria perché venga ripresa con la nuova amministrazione americana, ed è attualmente all'esame della Commissione CEE.*

*Il Ministero dell'agricoltura, parimenti interrogato sulla questione, provvederà direttamente a fornire eventuali ulteriori elementi di propria competenza qualora – per completezza di risposta – ne ravvisasse la necessità.*

Il Ministro del commercio con l'estero: Vitalone.

SCALIA e MATTIOLI. — *Ai Ministri dell'ambiente e dell'interno.* — Per sapere – premesso che:

ogni anno con l'arrivo della primavera centinaia di bracconieri attendono sul versante calabrese dello stretto di Messina i rapaci in migrazione per farne strage;

i bracconieri si appostano, illegalmente armati, dietro *bunkers* in cemento o sui terrazzi delle case e arrivano a commettere gravi atti di violenza contro chiunque tenti di ostacolarli, siano essi appartenenti ad associazioni protezionistiche o alle forze dell'ordine, creando così gravissimi problemi di ordine pubblico;

il danno che ne deriva per la fauna selvatica è gravissimo: ogni anno vengono abbattuti circa 700 falchi pecchiaioli, 1.000 altri piccoli rapaci ed anche cicogne, aquile ed avvoltoi –:

se siano a conoscenza dei fatti esposti;

se non ritengano opportuno sospendere annualmente dal 15 aprile al 31 maggio il porto delle armi nella provincia di Reggio Calabria;

se non ritengano opportuno sensibilizzare le forze dell'ordine ed in particolare i Carabinieri e la Polizia di Stato affinché effettuino maggiori e più pressanti controlli. (4-00639)

RISPOSTA. — *Nei mesi di aprile e maggio di ogni anno la regione Calabria ha sempre concordato con l'amministrazione provinciale di Reggio Calabria, con la Polizia di Stato, l'Arma dei Carabinieri ed il Corpo forestale dello Stato, tutte quelle operazioni necessarie ad eliminare il bracconaggio nello stretto di Messina.*

*Dal 10 al 20 maggio 1992 squadre del NOE di questo Ministero, come negli anni precedenti, nel periodo di maggior passo degli uccelli migratori, ha effettuato, un servizio a scopo preventivo e repressivo di bracconaggi.*

*Durante tali operazioni sono stati effettuati diversi controlli, segnalate alcune persone, sequestrati richiami acustici e fucili.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

SOSPIRI. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per conoscere quali ostacoli impediscano la definizione della pratica di invalidità intestata a Donato Martella, nato il 12 aprile 1937 e residente a Pianella (Pescara), di professione artigiano. (4-01193)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che il signor Donato Martella non è mai stato riconosciuto invalido agli accertamenti sanitari cui è stato sottoposto ai fini del riconoscimento del diritto a pensione di invalidità a carico dell'istituto.*

*Infatti l'INPS ha fatto presente che una domanda, presentata in data 10 giugno 1975, è stata respinta anche a seguito di giudizio e che l'ultima domanda del 20 aprile 1983 è stata definita negativamente a seguito di ricorso di 2° grado in data 16 febbraio 1987.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TASSI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere quali iniziative ritenga di adottare in merito all'atteggiamento tenuto dal dottor Milana, il quale pretende dagli uffici fiscali di Piacenza rapporti su tutte le « evasioni » fiscali « accertate » anche al di sotto, e di molto, della soglia minima di legge per poter configurare ipotesi di reato. Costituendo ciò un vero e proprio abuso continuato dell'attività e delle funzioni di pubblico ministero il quale deve indagare su ipotesi di reato denunciate, non su reati ipotizzabili;

se non ritenga di informare di questi fatti e circostanze il Consiglio superiore della magistratura per le iniziative di competenza. (4-00500)

TASSI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

il dottor Angelo Milana, magistrato imputato di reati gravissimi, in attesa di giudizio avanti la magistratura di Firenze, utilizza in modo illegittimo il proprio potere di Procurature della Repubblica per perseguitare i suoi nemici personali, talché si è creata una situazione di centro di potere finalizzata all'interesse personale, con la mortificazione e l'emarginazione dei poteri legittimi;

è stata disposta dal ministro della giustizia un'ispezione ministeriale presso la procura della Repubblica di Piacenza in relazione ad una vicenda vertente su una dichiarazione concernente il dottor Giorgio Galbiati, procuratore generale della Corte di appello di Bologna, diretto superiore gerarchico del Milana, che un consigliere dell'ordine degli avvocati di Piacenza sarebbe stato costretto a rilasciare, a seguito di un intervento del dottor Angelo Milana, il quale così avrebbe violato, a parere dell'interrogante, l'articolo 629 del codice penale –:

a quali risultati sia pervenuta la suddetta ispezione ministeriale. (4-00508)

TASSI. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere:

quali iniziative ritenga di prendere, per quanto di competenza, in ordine all'incredibile comportamento del dottor Angelo Milana procuratore della Repubblica di Piacenza, che esercita le sue funzioni con criteri personali non corrispondenti a quelli della giustizia e della imparzialità, come già documentato in altre precedenti interrogazioni presentate nelle precedenti legislature e nonostante che sia sotto processo per oltraggio aggravato e minaccioso, nei confronti del suo diretto superiore gerarchico il Procuratore Generale della Repubblica di Bologna;

se sia noto che il predetto dottor Milana ha ordinato al capo della segreteria della Procura e ai vari funzionari di non rispondere nemmeno alle richieste di informative della Procura Generale, anche per i dati necessari alla risposta alle interrogazioni parlamentari;

se sia noto che non esiste alcuna possibilità di coordinamento di attività tra la procura della Repubblica di Piacenza e la Procura Generale di Bologna sino a che la prima sarà retta dal predetto dottor Milana, per precisa dichiarazione di costui;

che cosa intenda fare in proposito, con l'urgenza che il caso gravissimo richiede, anche per poter dare alla civile città di Piacenza e alla sua laboriosa e onesta popolazione un clima di vita costituzionale e affinché possa cessare il clima da « caccia alle streghe » che da anni regna in quella provincia. (4-00557)

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere:

se sia vero che il posto di procuratore capo presso la Procura della Repubblica di Piacenza è attualmente ancora occupato dal dottor Angelo Milana, in regime di *prorogatio* per il fatto che è ancora in corso il termine per impugnare la pronuncia del 19 settembre 1988, del Consiglio superiore della magistratura, con cui l'attuale occupante dottor Angelo Milana fu colpito da provvedimento di trasferimento d'ufficio per ragioni disciplinari, e se la relativa notizia inviata per telex a tutti gli uffici giudiziari, come di prassi, sia stata inviata anche agli uffici giudiziari di Piacenza e, segnatamente a quella Procura;

a quale punto siano le numerose istruttorie per procedimenti penali a carico del predetto dottor Angelo Milana avanti gli uffici giudiziari di Firenze, autorità giudiziaria competente per legge trattandosi di un magistrato emiliano. (4-00606)

RISPOSTA. — *Il dottor Angelo Milana – già procuratore della Repubblica presso il tribunale di Piacenza, trasferito, con decreto ministeriale 21 febbraio 1991 alla corte di appello di Trieste, con funzioni di consigliere – è stato collocato a riposo a decorrere dal 21 aprile 1991.*

*Pertanto ogni potere ispettivo nei suoi confronti è venuto a cessare da quella data.*

Il Ministro di grazia e giustizia: Conso.

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, dell'industria, commercio e artigianato, della sanità, dell'ambiente, di grazia e giustizia e delle finanze.* — Per sapere:

quali iniziative intendano assumere i ministri interrogati a seguito della concessa autorizzazione, nell'abitato della frazione di Fidenza, Bastelli ad un'azienda con deposito e miscelazione di bitume e annesso deposito di carburanti: questo ha comportato la installazione e il funzionamento di forni ad altissima temperatura con esalazioni, che determinano, anche nell'immediatezza, malori ai passanti e ai residenti;

se in merito siano stati fatti gli interventi e gli esami che hanno portato ad esempio in territorio del comune di Ponte dell'Olio in zona ben lontana dall'abitato alla chiusura dell'impianto di tale Molinelli, che, invece aveva adottato tutti i sistemi possibili per evitare ogni inquinamento, mentre nel territorio di Fidenza sembra che i pubblici poteri ed uffici non abbiano funzionato nel rispetto delle vigenti normative in tema di doverosa tutela della salute e dell'ambiente;

quali iniziative intendano urgentemente assumere per porre rimedio ai ritardi e ai mancati funzionamenti dei pubblici poteri in agro di Fidenza. (4-00515)

RISPOSTA. — *In riferimento alla situazione denunciata dall'interrogante, questo Ministero ha acquisito dal comune di Fidenza (PR) e dal commissario di Governo nella regione Emilia-Romagna gli elementi sottoriportati.*

*Il problema esposto concerne uno stabilimento per la produzione di emulsioni bituminose gestito dalla S.E.I.B. SpA, esistente da oltre 30 anni, cui non sono stati apportati ampliamenti e modificazioni.*

*A seguito di segnalazioni da parte di cittadini del comune, il servizio di igiene pubblica della unità sanitaria locale n. 5 ha effettuato nel corso degli anni diversi interventi ispettivi, che peraltro non hanno evidenziato la sussistenza degli inconvenienti lamentati.*

*Risulta che l'impresa abbia presentato istanza di autorizzazione per l'emissione – che è sottoposta ai limiti ed ai vincoli previsti dalle norme vigenti ed in particolare alle procedure previste dal decreto del Presidente della Repubblica 203/88 e dalla legge regionale n. 36/89.*

*Poiché la situazione appare ben controllata dalle locali autorità, questo Ministero non ravvisa, allo stato attuale, motivi di preoccupazione per l'area in oggetto.*

Il Ministro dell'ambiente: Ripa di Meana.

TASSI. — *Ai Ministri delle poste e telecomunicazioni, dell'interno, delle partecipazioni statali e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

cosa intenda fare il Governo in merito alla situazione creatasi a seguito della nota sentenza appena pubblicata del Consiglio di Stato, confermativa dell'impugnata sentenza, da parte della avvocatura di Stato, del tribunale amministrativo del Lazio, che annullava l'aumento delle tariffe SIP. La cosa riveste particolare interesse e gravità, tenuto conto che ora ogni utente potrà richiedere la restituzione di quanto pagato e non dovuto, assumendo peraltro l'onere e il fastidio della relativa domanda e di una procedura di rimborso, che, stante la burocrazia imperante, sarà non facile e non semplice;

se in merito all'illecito disposto aumento delle tariffe SIP siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia tributaria o giudiziaria, procedimenti penali. (4-00622)

RISPOSTA. — *In sostituzione del decreto del Presidente della Repubblica 12 gennaio 1991 – concernente l'adeguamento delle tariffe telefoniche nazionali – è stato emanato un nuovo decreto presidenziale in data 11 luglio 1992 (*Gazzetta Ufficiale *22 luglio 1992, n. 171) decorrente, quanto all'efficacia, dalla stessa data indicata dal precedente decreto del Presidente della Repubblica 12 gennaio 1991.*

*Tale atto è intervenuto a seguito della rimozione del vizio di procedura (irrituale convocazione dei membri della commissione centrale prezzi) in base al quale il TAR Lazio aveva annullato il provvedimento tariffario in questione, con sentenza n. 480 del 2 marzo 1992.*

*Ne consegue che, a seguito dell'emanazione del decreto del Presidente della Repubblica 11 luglio 1992, nessun rimborso dovrà essere effettuato a favore degli utenti.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e per la funzione pubblica.* — Per sapere se sia noto al Governo il comportamento di continua violazione che le amministrazioni locali degli enti autonomi territoriali, così come degli enti pubblici in genere, fanno della normativa relativa all'assunzione obbligatoria di invalidi e, in genere, di chi abbia titolo di privilegio legale per tali assunzioni. Un caso clamoroso è quello del comune di Piacenza presso la cui amministrazione risulta una ormai endemica « scopertura » di posti specie nelle qualifiche e carriere di « ausiliari » e « operai » (rispettivamente 8 e 11 al 31 dicembre 1991). Tale situazione, peraltro, è simile anche presso gli altri enti territoriali locali, e in genere presso gli enti pubblici nella provincia ma altrettanto nei territori di Parma, Reggio nell'Emilia e Modena.

Per sapere che cosa intenda fare il Governo per garantire l'esecuzione e il doveroso rispetto delle leggi che sanciscono diritti a favore dei minorati nella salute e nel fisico, che farisaicamente indica come portatori di *handicap* (come se la parola « lombarda » non significhi peraltro menomazione e come se essere « portatore » non significhi essere « affetto » !) ma che, in realtà, non fa nulla per garantire l'esecuzione il rispetto delle norme a favore dei più sfortunati, tra i cittadini che sono quelli con menomazioni fisiche e deficienze croniche di salute.

Per sapere se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e doverosamente reprimere le responsabilità contabili sempre conseguenti, ad abusi e ad omissioni nei doveri d'ufficio, compreso quello di controllo, di funzionari pubblici di carriera siano essi direttori generali o capi di unità operative ovvero onorari quali sindaci, o presidenti, o ministri o assessori. (4-03307)

RISPOSTA. — *Gli enti pubblici sulla base della normativa vigente (legge n. 482 del 2 aprile 1968; III comma dell'articolo 24 della legge n. 67 del 1988) non sono tenuti a*

*rispettare le graduatorie del collocamento obbligatorio formate dagli uffici provinciali del lavoro, ma assumono i lavoratori appartenenti alle categorie protette, nelle carriere per le quali non è richiesto il pubblico concorso, direttamente, cioè senza richiedere il rilascio del nulla-osta all'ufficio provinciale del lavoro, e tenendo conto del maggiore grado di mutilazione del soggetto invalido e dell'idoneità dello stesso allo svolgimento delle mansioni relative al posto da ricoprire.*

*Di conseguenza gli uffici periferici non hanno concrete possibilità di intervenire sulle assunzioni effettuate dagli enti pubblici.*

*Ciò premesso, si precisa che l'ufficio provinciale del lavoro di Piacenza ha comunicato che la commissione provinciale per il collocamento obbligatorio, istituita presso il citato ufficio, e competente, ai sensi di legge, ad esaminare le denunce semestrali degli enti pubblici, ha mostrato e mostra la massima attenzione alla problematica in esame.*

*Infatti, semestralmente, tale commissione procede ad una approfondita analisi delle singole situazioni occupazionali, decidendo di volta in volta il tipo di intervento da effettuare, quale, ad esempio, l'interessamento del prefetto, teso a sensibilizzare gli amministratori pubblici ad adempiere agli obblighi di legge, non essendo l'ufficio del lavoro, come detto prima, competente all'avviamento numerico o nominativo dei lavoratori* ex lege *482/68 presso gli enti pubblici e le pubbliche amministrazioni.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri e ai Ministri dell'interno, del lavoro e previdenza sociale, per il coordinamento della protezione civile e di grazia e giustizia.* — Per sapere:

come mai nell'anno di grazia 1992, alle soglie del terzo millennio, possano ancora accadere « disgrazie » e « infortuni sul lavoro » come quello che ha provocato il decesso di Bozzi Santino, nato a Rottofreno il 26 agosto 1940, residente a San Nicolò a Trebbia, via Calendasco, dipendente della ditta Mulino Dellagiovanna, il quale il 9 settembre 1992 verso le ore 7 e 30 circa in Codogno, mentre era intento allo scarico della farina mediante un montacarichi di Isidoro Riboldi commerciante in Codogno, via Santa Maria 20, moriva per le ferite e le lesioni subite dallo schiacciamento provocato dalla rottura del predetto montacarichi. Da informazioni assunte sembra che il predetto montacarichi fosse stato costruito da non oltre sei mesi come attrezzatura fissa nella sede della ditta Riboldi;

quali collaudi erano stati effettuati di quella nuova attrezzatura, se la medesima era stata fatta in ottemperanza delle norme sulla sicurezza del lavoro e quali siano state le cause che hanno determinato la rottura di così luttuosa conseguenza;

se, in merito, siano in atto inchieste amministrative, indagini di polizia giudiziaria o tributaria e se i fatti siano noti alla Procura generale presso la Corte dei conti al fine di accertare, perseguire e reprimere le responsabilità contabili, sempre conseguenti abusi e omissioni, anche nei doveri di controllo (pure di collaudo !) addebitabili o addebitati a pubblici funzionari siano essi di carriera o onorari.

(4-05300)

RISPOSTA. — *L'ispettorato provinciale del lavoro di Milano ha comunicato che il montacarichi dove è avvenuto l'infortunio mortale è situato nel retrobottega di un negozio di gastronomia il cui titolare è Riboldi Isidoro.*

*Risulta acquisita agli atti del citato ufficio, in copia conforme, una dichiarazione di agibilità del negozio, datata 19 maggio 1992 e da tale data disponibile per il ritiro presso il comune di Codogno, ma ritirata il 27 ottobre 1992, in quanto, non disponendo della specifica dichiarazione di conformità relativa al montacarichi, l'uso del medesimo non è stato compreso nel citato atto.*

*Per il montacarichi in questione non è stato richiesto collaudo, né risulta che la documentazione ad esso relativa sia stata fatta pervenire agli organi competenti per il*

*collaudo (ISPELS) e per il rilascio, della licenza di impianto e di esercizio (comune di Codogno).*

*L'ispettorato ha precisato, inoltre, che, essendo stato effettuato sopralluogo da parte dell'unità sanitaria locale competente per territorio, i fatti sono stati portati a conoscenza della procura della Repubblica presso la pretura di Lodi che ha posto sotto sequestro in data 9 settembre 1992 il predetto montacarichi.*

*Per quanto concerne, infine, eventuali abusi od omissioni nei doveri di controllo e di collaudo del montacarichi si rileva che l'ente competente per il collaudo (ISPELS), non essendo stato portato a conoscenza dell'esistenza dello stesso, non può essere imputato di omissione.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TASSI. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere:

quale posizione intenda assumere il Governo a fronte dell'episodio che l'interrogante considera di vero e proprio razzismo, perpetrato con inaudita violenza tesa al linciaggio da cittadini somali a Mogadiscio il 14 dicembre 1992 e conosciuto in tutto il mondo in diretta TV a danno di una bella ragazza somala che essi giudicavano colpevole solo di « essere stata coi bianchi ». Tra l'altro, ufficialmente, risulta soltanto che la ragazza aveva avuto un passaggio su una camionetta guidata e occupata da militari francesi della missione di pace;

quali iniziative siano state prese dal Governo per far sapere in Italia e all'estero la sua riprovazione anche di quello che l'interrogante considera il « razzismo » negro stante anche il silenzio già tenuto dal Governo sulla strage di bianchi nel campo da golf sudafricano avvenuta qualche settimana fa;

quali iniziative intenda assumere al fine di dire una parola chiara di condanna di ogni e qualsiasi razzismo da qualsiasi parte provenga. (4-08831)

RISPOSTA. — *Occorre sottolineare che il Governo italiano non era chiamato ad assumere una posizione specifica sul deplorevole episodio avvenuto il 14 dicembre scorso ai danni di una ragazza somala, episodio che si inquadra nella drammatica e caotica situazione esistente a Mogadiscio. Del resto, una nostra presa di posizione avrebbe rischiato di venire strumentalizzata nella delicata fase dell'avvio dell'operazione umanitaria in Somalia.*

*In ogni caso il Governo italiano ha sempre mantenuto un inequivocabile atteggiamento di condanna nei confronti delle manifestazioni di razzismo e di xenofobia, da qualunque parte provengano.*

*Sul piano giuridico l'Italia ha aderito alla Convenzione del 1965 sull'eliminazione di tutte le forme di discriminazione razziale, approvata nell'ambito delle Nazioni Unite e fino ad oggi ratificata da 132 Stati. Il nostro paese riferisce regolarmente sugli adempimenti della Convenzione ed è al momento in fase di elaborazione – di concerto con le competenti amministrazioni degli interni, di grazia e giustizia, della pubblica istruzione, della sanità e del lavoro – il nuovo rapporto del Governo italiano sulla discriminazione razziale.*

*Sul piano politico l'Italia, quale Stato membro della comunità europea, non può che sottolineare come i propri principi e linea di azione siano racchiusi nella solenne Dichiarazione dell'11 luglio 1986 con la quale, congiuntamente, il Parlamento europeo, il Consiglio europeo e la Commissione della CEE hanno riaffermato la condanna del razzismo e della xenofobia.*

*Occorre inoltre ricordare che, a seguito dell'evoluzione della situazione in Europa, i capi di Stato e di Governo riuniti nel Consiglio europeo di Maastricht hanno adottato, il 10 dicembre 1991, una nuova Dichiarazione che sottolinea chiaramente che « il rispetto della dignità degli esseri umani è essenziale per l'Europa della comunità e che la lotta contro la discriminazione in tutte le sue forme è pertanto essenziale per la comunità europea in quanto Stati governati dallo Stato di diritto. Il Consiglio europeo ritiene che i Governi e i Parlamenti degli Stati membri debbano agire con chiarezza e*

*senza ambiguità per opporsi alla crescita di sentimenti e di manifestazioni di razzismo e di xenofobia* ».

*Nell'ambito delle Nazioni Unite l'Italia ha infine aderito alla proclamazione, da parte dell'ultima sessione dell'Assemblea generale, del « III decennio per combattere il razzismo e la xenofobia ». A nome dei dodici* partners *comunitari la Presidenza britannica ha espresso in quell'ambito la deplorazione per l'emergere di nuove forme di razzismo e di nuove tendenze xenofobe.*

Il Sottosegretario di Stato per gli affari esteri: Azzarà.

TATARELLA. — *Al Presidente del Consiglio dei ministri.* — Per sapere – premesso che:

le associazioni per la difesa dei consumatori hanno impugnato davanti al TAR del Lazio il decreto di aumento delle tariffe telefoniche, giudicando detto aumento superiore a quello dichiarato ed approvato con una procedura irregolare da parte della Commissione centrale prezzi;

in data 2 marzo 1992, con sentenza n. 480, il TAR del Lazio ha accolto il ricorso, confermato anche dal Consiglio di Stato, al quale si era rivolta la SIP per ottenere la sospensiva del provvedimento, con l'ordinanza del 24 aprile 1992;

successivamente, con quello che l'interrogante ritiene un discutibile decreto-legge (n. 278 dell'8 maggio 1992), il Governo ha annullato di fatto tali sentenze, ripristinando gli aumenti tariffari;

tale decreto è ritenuto di dubbia costituzionalità dalle associazioni dei consumatori, essendo retroattivo e privo del carattere d'urgenza, nonché lesivo di una sentenza della magistratura –:

quali iniziative, anche di ordine legislativo, si intendano assumere affinché le tariffe telefoniche in Italia siano in linea con le tariffe degli altri paesi della CEE, distinguendo i costi del servizio, da addebitare agli utenti, dai costi per gli investimenti tecnologici, di competenza dell'azionariato;

quali iniziative si intendano assumere per restituire ai consumatori gli aumenti ritenuti illeciti, evitando altresì di insistere per l'approvazione del decreto-legge governativo. (4-01874)

RISPOSTA. — *Con decreto del Presidente della Repubblica 12 gennaio 1991, pubblicato nella* Gazzetta Ufficiale *n. 12 del 15 gennaio 1991, sono state fissate le tariffe telefoniche con decorrenza 16 gennaio 1991; tale provvedimento è stato annullato dal TAR del Lazio con sentenza n. 480/92 su ricorso proposto da alcune associazioni di consumatori.*

*Le motivazioni addotte nella menzionata sentenza del TAR del Lazio non hanno avuto ad oggetto ragioni di ordine sostanziale, avendo il citato tribunale rilevato esclusivamente l'illegittimità della deliberazione della commissione centrale prezzi del 14 dicembre 1990, a causa della irrituale convocazione dei membri della stessa. è stato, pertanto, annullato, in quanto ritenuto viziato in via derivata, il parere del CIP n. 42 del 18 dicembre 1990, che ha tratto fondamento da detta deliberazione, ed il conseguente decreto del Presidente della Repubblica 12 gennaio 1991 di adeguamento delle tariffe telefoniche nazionali.*

*Con ordinanza n. 359/92 il Consiglio di Stato, su ricorso proposto dalla concessionaria SIP, ha sospeso l'esecuzione della suddetta sentenza del TAR Lazio con riferimento:*

*alle variazioni dei ritmi degli impulsi della tariffa urbana a tempo e delle comunicazioni interurbane settoriali;*

*al diritto fisso per le comunicazioni extraurbane dal posto telefonico pubblico; mentre ha tenuto fermi gli effetti della sentenza relativamente alle altre voci tariffarie.*

*Il vizio formale, consistente nella pretesa intempestività della convocazione della seduta di un organo collegiale, ha prodotto ingenti danni consistenti, oltre che nei man-*

*cati introiti derivanti dall'ottemperanza alla sentenza, fino alla sua sospensione ad opera del Consiglio di Stato, anche nell'impossibilità per la concessionaria di dar corso ai programmi di sviluppo, a causa dell'incertezza futura sul loro finanziamento.*

*Per tali motivi il Governo è intervenuto con il decreto-legge 8 maggio 1992, n. 278; non essendo stato possibile convertire in legge tale decreto-legge, si è intervenuti in via amministrativa con il rinnovo, ora per allora, del provvedimento tariffario annullato.*

*Di conseguenza, si è acquisito di nuovo il parere della Commissione centrale prezzi; sulla base di tale parere favorevole, il comitato interministeriale prezzi ha adottato il provvedimento di propria competenza a seguito del quale è stato emanato il decreto del Presidente della Repubblica 11 luglio 1992.*

*Quanto alla ristrutturazione delle tariffe si precisa che il problema è all'attenzione dei competenti organi che, conformemente a quanto previsto dall'articolo 2 della legge 29 gennaio 1992, n. 58, recante « disposizioni per la riforma del settore delle telecomunicazioni », stanno elaborando un piano di ristrutturazione delle tariffe dei servizi di telecomunicazione volto, da un lato, e porre in stretta correlazione il costo e la tariffa dei singoli servizi, secondo il principio dell'autofinanziamento e, dall'altro, ad armonizzare le tariffe italiane con quelle in vigore negli altri paesi della comunità economica europea.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

TORCHIO, FRANCESCO FERRARI e CASTELLOTTI. — *Ai Ministri del lavoro e previdenza sociale e dell'agricoltura e foreste.* — Per sapere – premesso che:

il quotidiano *La Gazzetta di Mantova* in data 5 agosto ha pubblicato nella rubrica « Mondo lavoro » un articolo intitolato: « Coldiretti: La protesta contro lo Scau » che così recita: « L'assemblea dei presidenti della Federazione provinciale coltivatori diretti, si è riunita per esaminare la grave ed insostenibile situazione determinata dall'Ufficio Provinciale Contributi Agricoli Unificati. In questi giorni sono in pagamento i contributi sociali per l'anno 1992 ed i coltivatori non sono in grado di sapere come comportarsi, sia per l'incertezza della normativa sia per una serie di cancellazioni d'ufficio da parte dello Scau che sono ritenute del tutto illegittime tanto nella forma che nella sostanza. Nella forma in quanto sono avvenute, con effetto retroattivo, all'insaputa dell'interessato, ledendone così un sacrosanto diritto legato al lavoro ed al trattamento pensionistico. Nella sostanza, in quanto, in molti casi non esistono i presupposti oggettivi per la cancellazione. L'assemblea dei coltivatori diretti, dopo aver sentito delle iniziative di collaborazione che da attivare un rapporto costruttivo con lo Scau e dei loro esiti praticamente inconsistenti, constatato l'aggravarsi della situazione, ha deciso di prendere una pubblica posizione fortemente critica nei confronti dell'operato dell'Ufficio Scau di Mantova, segnalando la cosa in modo formale alla propria Confederazione ed alle autorità competenti. L'assemblea ha inoltre dato mandato alla Federazione di attivare le procedure legali a tutela dei coltivatori colpiti nei loro diritti dai provvedimenti dello Scau »;

successivamente a tale articolo è comparsa una lettera al direttore dello stesso quotidiano a firma della Confcoltivatori – ora C.I.A. – di Mantova nella quale si conferma tale difficile stato di cose e si chiedono urgenti provvedimenti anche per l'accentuarsi delle proteste degli agricoltori –:

quali iniziative intendano assumere, con particolare riferimento alle competenze del Ministero del lavoro, per garantire alla sede mantovana dello Scau il ritorno a quella condizione di serenità e di oggettività che pure aveva caratterizzato il recente passato, e se non intendano procedere ad una indagine con audizione dei rappresentanti della vasta utenza servita, particolarmente delle organizzazioni professionali e dei patronati in modo da garantire sollecita decisione nel senso richiesto e qui ribadito. (4-04836)

RISPOSTA. — *Come è noto la legge 2 agosto 1990, n. 233, ha imposto a tutti i titolari d'impresa diretto-coltivatrice, compresi quelli che sono già accertati presso lo SCAU, l'obbligo della presentazione di una dichiarazione contenente i dati riguardanti sia la situazione aziendale (superficie e colture dei terreni, bestiame allevato) sia la posizione dei componenti di ciascun nucleo diretto-coltivatore.*

*In proposito lo SCAU ha riferito che dalla presentazione generalizzata di detta dichiarazione aziendale è derivata la verifica delle relative posizioni assicurative da parte dell'ufficio di Mantova il quale, come tutti gli altri uffici provinciali operanti sul territorio nazionale, è preposto al controllo ed all'eventuale rettifica dei dati dichiarati.*

*Proprio perché l'attività di riscontro da parte dell'ufficio di Mantova ha investito la generalità dei coltivatori diretti della provincia si è potuta determinare in alcuni casi una situazione di incertezza derivante dalla nuova disciplina legislativa così come si è potuto verificare in qualche caso un ritardo nello svolgimento degli adempimenti procedurali, ritardo che alla data odierna risulta del tutto superato.*

*Lo SCAU ha precisato, inoltre, che le cancellazioni dagli elenchi dei coltivatori diretti sono state effettuate dall'ufficio di Mantova solo quando, a seguito di accertamenti, i soggetti presi in esame siano risultati non più in possesso delle condizioni richieste dalla legge per la ricorrenza degli obblighi assicurativi per l'invalidità, la vecchiaia e contro gli infortuni sul lavoro; in particolare il predetto ufficio ha dovuto disporre la cancellazione nei confronti di un certo numero di coltivatori diretti che, avendo dichiarato la conduzione o di irrisorie superfici di terreno o di inconsistenti aziende sotto il profilo del lavoro, non erano in regola con il requisito, prescritto dalla legge, del fabbisogno lavorativo aziendale non inferiore alle 104 giornate annue.*

*Lo SCAU ha fatto presente, infine, che i rapporti intercorrenti fra l'ufficio di Mantova, l'utenza, le associazioni professionali ed i patronati agricoli sono improntati alla più completa trasparenza e ad una assoluta linearità comportamentale.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere quando verrà liquidata la pensione di vecchiaia in convenzione internazionale al signor Politi Salvatore, nato il 23 novembre 1916, residente in Belgio, il quale nell'agosto 1990 inviò, come richiestogli dalla direzione regionale per la Sicilia dell'INPS, la documentazione per il servizio militare mancante nella domanda inoltrata nel 1989. (4-02022)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che la liquidazione della pensione di vecchiaia in convenzione internazionale del signor Politi Salvatore, nato il 23 novembre 1918, è già stata definita e risulta in pagamento in provata, sulla base di 338 contributi figurativi settimanali, riferiti al periodo di servizio militare svolto dall'interessato dall'aprile dell'anno 1939 al settembre dell'anno 1945.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere se effettivamente le spettanze arretrate maturate al 31 agosto 1991 sulla pensione n. 10039932 categoria VO di cui è titolare la signora Rotella Rosaria nata il 1° gennaio 1933, siano state versate al DSS (l'organismo assicuratore britannico) per le operazioni di conguaglio, come da comunicazione del Reparto VIII del Servizio rapporti e convenzioni internazionali della sede centrale di Roma del 17 dicembre 1991 all'interessata, considerato che presso l'ente estero non risulta effettuato tale versamento. (4-02685)

RISPOSTA. — *L'INPS ha confermato che le spettanze arretrate sulla pensione VO/10039932 di cui è titolare la signora Rosaria Rotella, relativa al periodo 1° feb-*

*braio 1988-31 agosto 1991 e pari a lire 21.781.180, sono state versate a favore del DSS, l'ente assicuratore britannico, con mandato n. 8237 emesso dalla Banca commerciale italiana – ag. 23, in data 17 dicembre 1991.*

*Si comunica, inoltre, che l'istituto stesso ha sollecitato il succitato organismo assicuratore estero a corrispondere all'interessata l'importo spettantele, una prima volta il 13 luglio 1992 e quindi, nuovamente, il 15 novembre 1992.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere quando verrà rimessa in pagamento la pensione di vecchiaia in convenzione internazionale n. 50419604, categoria VO-S, di cui è titolare il signor Beniamino de Sisto, nato il 22 luglio 1926, il quale inoltrò domanda di ricostituzione il 31 dicembre 1991 (n. 382822) alla sede INPS di Caserta, pratica attualmente in trattazione presso la sede regionale della Campania. (4-03272)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che la pensione di vecchiaia in regime CEE, di cui è titolare il signor De Sisto Beniamino, è stata riliquidata in pro-rata l'8 settembre 1992 dalla sede dell'istituto di Caserta e posta in pagamento per un importo mensile di lire 398.450.*

*Tale riliquidazione si è resa necessaria in seguito alla liquidazione della prestazione di cui l'interessato è divenuto titolare a carico dell'ente assicuratore britannico.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per sapere quali ragioni impediscano la liquidazione della pensione di vecchiaia in convenzione italo-svizzera del signor Annichiarico Carmine nato il 7 novembre 1928 a Flumeri (Avellino), la cui domanda fu inoltrata alla sede INPS di Avellino nel 1988. (4-04211)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che la sede di Avellino ha provveduto a definire ed acquisire la pensione liquidata ai sensi della convenzione con la Svizzera del signor Carmine Annichiarico nel mese di novembre 1992.*

*Tenuto conto che l'assicurato non beneficia di prestazioni a carico di tale istituzione estera, l'importo della pensione è stato determinato in misura pari al trattamento minimo cristallizzato alla data del 31 gennaio 1991 in base alla legge n. 407/1990.*

*Tale pensione, in seguito a un'eventuale concessione di un pro-rata o di una pensione autonoma a carico della Svizzera, potrà subire una riduzione ai sensi dei commi 3 e 4 dell'articolo 8 della legge 30 aprile 1969, n. 153.*

*Perfezionata l'elaborazione della pensione, cui è stato attribuito il numero 6643508 – categoria VO/S, le spettanze arretrate verranno corrisposte dall'INPS unitamente alla prima rata della pensione in favore del delegato signor Annichiarico Felice nato il 1° febbraio 1951 e residente a Zungoli.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TREMAGLIA. — *Al Ministro delle poste e delle telecomunicazioni.* — Per sapere:

come si valuti il comportamento del signor Michele Borillo responsabile dell'Ufficio Postale di Molinara (Benevento), che si è rifiutato di accettare un telegramma di condoglianze e solidarietà alla famiglia del Giudice Borsellino, il giorno successivo alla sua tragica morte. Il telegramma era stato presentato, anche a nome di altre persone, dal signor Cosimo Cirocco, in quei giorni in vacanza al suo paese ma emigrato da 20 anni in Germania, per esprimere il suo sdegno e quello dell'Associazione di italiani all'estero che dirige per il barbaro assassinio;

la motivazione addotta per respingere il telegramma è stata che il testo conte-

neva critiche al Governo nella conduzione della lotta alla mafia;

quali provvedimenti si intendano prendere nei confronti del responsabile dell'Ufficio Postale di Molinara che ha respinto il testo di un telegramma perché conteneva critiche al Governo, critiche legittime in regime di libertà e democrazia. (4-06050)

RISPOSTA. — *Dalle indagini ispettive disposte da questa amministrazione in merito a quanto segnalato è emerso che il giorno 20 luglio 1992 si è presentata presso l'ufficio postale di Molinara la signora Girolamo Francesca esibendo, allo sportello dell'accettazione telegrafica, un modello per telegramma contenente un messaggio diretto alla segreteria nazionale del MSI dottor Fini – Roma del seguente tenore: « Esprimo le più vive condoglianze per la scomparsa del giudice Borsellino assassinato dalla mafia con la collaborazione del Governo ». Figurava come mittente il signor Cirocco Cosimo.*

*Il direttore dell'ufficio, rilevato il contenuto ingiurioso nei confronti delle istituzioni, fece osservare all'incaricata che il telegramma, ai sensi della normativa vigente (articolo 18 delle Istruzioni dei servizi telegrafici), poteva essere accettato solo previo accertamento dell'identità del mittente e la sottoscrizione del messaggio da parte del medesimo.*

*Poiché l'incaricata precisava che l'estensore non si trovava a Molinara, il suindicato dirigente non ammetteva il telegramma alla spedizione, circostanza che si è ripetuta anche quattro giorni dopo, allorché il signor Cirocco in persona si è presentato nella sede postale per chiedere spiegazioni sul mancato inoltro del telegramma, senza peraltro aderire all'invito, rivoltogli dallo stesso direttore a sottoscrivere il messaggio.*

*Alla luce di quanto sopra esposto si ritiene che il responsabile dell'ufficio in questione abbia correttamente interpretato il regolamento e che pertanto non sia proponibile nei suoi confronti alcun procedimento disciplinare.*

Il Ministro delle poste e delle telecomunicazioni: Pagani.

TREMAGLIA. — *Al Ministro del lavoro e della previdenza sociale.* — Per conoscere i motivi per cui è stata sospesa nel 1988 dal pagamento la pensione VO-S n. 50275866 di cui è titolare il signor Infanti Igino nato il 19 settembre 1917 a Cordovado (PN) residente in Argentina, e se non si pensi di ripristinarla comprensiva della maggiorazione quale *ex* combattente. (4-06425)

RISPOSTA. — *L'INPS ha comunicato che la pensione di cui è titolare il signor Infanti Igino è stata revocata su richiesta del reparto convenzioni internazionali della sede regionale per il Friuli-Venezia Giulia ai sensi dell'articolo 32, paragrafo 2, della vigente convenzione italo-argentina. Essa, infatti, espressamente non consente di riesaminare, ai sensi della normativa più favorevole dalla stessa prevista, le pratiche definite sotto il vigore della precedente convenzione, tra le quali si deve includere quella del signor Infanti Igino il quale, già titolare di pensione autonoma argentina, in data 15 giugno 1981 ha rinunciato all'applicazione della convenzione italo-argentina attualmente in vigore.*

Il Ministro del lavoro e della previdenza sociale: Cristofori.

TRUPIA ABATE, CORRENTI, CESETTI, COLAIANNI, DE SIMONE, FINOCCHIARO FIDELBO, IMPOSIMATO e SENESE. — *Al Ministro di grazia e giustizia.* — Per sapere – premesso che:

in pressoché tutti gli uffici notificazioni esecuzioni e protesti si riscontrano gravi problemi soprattutto nelle condizioni di lavoro in cui operano gli ufficiali, gli aiutanti e i coadiutori UNEP;

questi lavoratori vedono però molte volte negata la loro professionalità venendo collocati ingiustificatamente in una posizione decisamente più sfavorevole rispetto ad altre categorie operanti nell'amministrazione giudiziaria;

nonostante che l'articolo 26, quinto comma del decreto del Presidente della Repubblica n. 266 del 1987, imponesse di adeguare l'ordinamento autonomo del per-

sonale UNEP alle norme stabilite dalla legge n. 312 del 1980 e successive modificazioni, tutto è rimasto ancora immutato;

l'intero settore UNEP è tuttora ancorato al decreto del Presidente della Repubblica n. 1229 del 1959 di per sé inadeguato perché già stravolto da numerosi interventi legislativi, quasi sempre parziali e disorganici, che miravano solo a mediare i conflitti tra le categorie del settore, senza mai riuscire a risolvere i veri problemi di fondo;

le stesse circolari emanate dal Ministero di grazia e giustizia non riescono a chiarire i dubbi esistenti;

la specificità di questa categoria, con un elevato grado di produttività, necessita una urgente e improcrastinabile riorganizzazione generale che preveda, in modo chiaro, le diverse aree di competenza e figure professionali che le compongono –:

*a)* se il Ministro abbia allo studio un progetto organico per la ristrutturazione e la modernizzazione degli uffici UNEP e, in caso affermativo, quali siano le linee direttrici;

*b)* se siano previsti potenziamenti di organico. (4-04461)

RISPOSTA. — *Gli uffici unici notificazioni, esecuzioni e protesti, salvo qualche discrasia che si verifica per lo più nei grossi centri anche a causa di problemi locali di carattere organizzativo, funzionano nel complesso in modo soddisfacente ed hanno, come gli stessi interroganti riconoscono, un elevato grado di produttività.*

*Non risulta poi che il personale UNEP sia collocato in posizione più sfavorevole rispetto alle altre categorie giudiziarie, specie in seguito ai recenti cospicui miglioramenti normativi e retributivi. Il personale in questione, infatti, ha ottenuto, da poco tempo, l'attribuzione dei profili professionali con conseguente avanzamento dei livelli di collocazione normativi ed economici, essendo gli ufficiali giudiziari (oggi denominati collaboratori UNEP) transitati dal VI al VII livello, gli aiutanti ufficiali giudiziari (oggi denominati assistenti UNEP) dal IV al VI livello, ed i coadiutori (oggi denominati operatori UNEP) dal IV al V livello.*

*Inoltre, per effetto della legge 15 gennaio 1991, n. 14, il personale in oggetto ha ottenuto la corresponsione di un compenso mensile di importo pari alla speciale indennità già goduta dal personale amministrativo giudiziario ai sensi della legge 22 giugno 1988, n. 221, a parità di qualifiche funzionali.*

*Il fatto che il settore UNEP sia ancora in buona parte disciplinato dall'apposito ordinamento, approvato con decreto del Presidente della Repubblica 15 dicembre 1959, n. 1229, emanato in seguito a delega legislativa, non sembra fonte di situazioni problematiche o di conflittualità tra le categorie, in quanto i numerosi interventi legislativi, ultima la legge 16 ottobre 1991, n. 321 che con l'articolo 11 ha statalizzato gli operatori UNEP, pur avendo inciso nella struttura dell'ordinamento non ne hanno disarticolato l'impianto complessivo che si ritiene ancora idoneo a disciplinare gli UNEP.*

*A tal proposito si sottolinea che questo Ministero reputa opportuno mantenere l'attuale assetto retributivo a carattere sia pure solo parzialmente proventistico, degli ufficiali giudiziari e degli assistenti UNEP, assetto che consente la realizzazione di un elevato* standard *di produttività da parte di questi validissimi collaboratori del giudice. La conflittualità, che indubbiamente esiste in alcuni uffici, non trae alimento da inadeguatezza dell'ordinamento, ma da reciproche incomprensioni tra le categorie. Il fatto che le attribuzioni delle stesse siano state di recente analiticamente individuate e puntualizzate mediante l'attribuzione dei profili professionali a ciascuna delle tre categorie di personale operante negli UNEP, dovrebbe rappresentare un valido fattore di eliminazione o almeno attenuazione della conflittualità.*

*È certo necessario che l'andamento degli UNEP sia attentamente seguito dai capi degli uffici giudiziari e da questo Ministero al fine dell'emanazione di precise direttive, come finora non si è mancato di fare.*

*Non si ritiene infine utile l'adozione di un progetto organico per la ristrutturazione*

*degli UNEP, in quanto la commissione ministeriale, istituita con decreto ministeriale 21 dicembre 1982, presieduta dal giudice costituzionale dottor Francesco Greco, dopo ampia disamina e numerosi dibattiti ha concluso i suoi lavori auspicando sostanzialmente il mantenimento dell'attuale assetto di tali uffici e la statalizzazione per i soli coadiutori, introdotta dalla citata legge 321/91, che ha già trovato attuazione.*

*Per quanto concerne eventuali potenziamenti dell'organico si rappresenta che è allo studio un progetto complessivo di ampliamento dei ruoli del personale UNEP.*

*Inoltre, con la legge 21 novembre 1991 n. 374 istitutiva del giudice di pace è stato previsto, per detto personale un aumento organico di 240 unità per i collaboratori, di 480 per gli assistenti e di 640 per gli operatori.*

*Con l'entrata in vigore del decreto del Presidente della Repubblica 17 gennaio 1990, n. 44 sono state poi apportate integrazioni e modificazioni ai profili professionali allegati al decreto del Presidente della Repubblica 29 dicembre 1984, n. 1219. Tali modificazioni riguardano la possibilità, per i collaboratori UNEP inquadrati nella 7ª qualifica funzionale, di poter accedere al profilo professionale n. 292 di funzionario UNEP, 8ª qualifica funzionale.*

Il Ministro di grazia e giustizia: Conso.

VIGNERI, BETTIN e TRUPIA ABATE. — *Al Ministro del turismo e dello spettacolo.* — Per sapere – premesso che:

il Consiglio comunale di Venezia ha designato Gianfranco Pontel, socialista, *ex* assessore, prima al commercio, poi al bilancio e al turismo del comune di Venezia, e attualmente consigliere comunale, per la carica di sovrintendente dell'ente lirico La Fenice di Venezia;

il *curriculum* del dottor Pontel è il seguente:

« Nato a Venezia il 26 settembre 1935. Laureato in giurisprudezza a Padova. Dal 1959 al 1964 nello studio Sarfatti-Sullam. Dal 1964 al 1972 dirigente azienda turismo. Dal 1973 assistente del presidente e poi consigliere di amministrazione del Consorzio industriale di Porto Marghera. amministratore della Camera di Commercio per quindici anni. Consigliere di Amministrazione delle università di Cà Foscari ed Architettura. Dal 1980 assessore al commercio. Dal 1988 Assessore al bilancio. Dal 1990 al 1992 assessore al turismo. Dal 1985 al 1988 vice presidente della Biennale di Venezia. Dal 1986 presidente del Consorzio per la gestione dell'aeroporto Niceli del Lido di Venezia. Dal 1989 presidente dell'Assonautica. Dal 1991 presidente della Venis Informatica »;

il dottor Pontel è stato recentemente candidato senza successo, anche per la carica di segretario generale della Biennale;

vi è ragione di ritenere che la candidatura di Pontel all'ente teatro La Fenice sia stata accettata in cambio dell'assenso della democrazia cristiana alla candidatura Rondi per la Biennale di Venezia, nella logica del voto di scambio;

come si può notare leggendo il *curriculum*, il dottor Pontel:

1) attualmente egli è soltanto consigliere comunale, essendo stato escluso dall'ultima giunta;

2) egli ha una competenza di tipo amministrativo organizzativo sostanzialmente maturata nei suoi incarichi di assessore;

3) egli non ha alcuna competenza nella materia di cui si occupa l'ente teatro la Fenice di Venezia, né in alcun modo prima ha dimostrato di occuparsi di teatro o di musica, né per gli aspetti organizzativi, né per quelli culturali;

anche per i suoi aspetti formali la designazione suscita perplessità. Il comune di Venezia sta elaborando in attuazione dello Statuto il regolamento consiliare. In attesa del suo completamento, che tardava a venire, sono stati stralciati ed approvati in commissione alcuni articoli sui criteri e

le procedure per le nomine di competenza del comune. Vi si dice tra l'altro che i candidati debbono possedere, oltre a capacità organizzative amministrative, specifiche competenze nelle materie di cui l'ente si occupa. Nel caso in esame quelle procedure non sono state rispettate, è non e stata neppure rispettata la norma sostanziale che richiede, oltre alle generiche competenze amministrative, la competenza nella materia oggetto dell'attività dell'ente che si dovrebbe dirigere o amministrare;

non è in discussione la persona di Gianfranco Pontel, che ha certamente una competenza di carattere organizzativo amministrativo: ma che, appunto per questo, allo stesso titolo per il quale è stato chiamato alla Fenice, potrebbe dirigere la Camera di Commercio, i Mercati generali o il Porto di Chioggia. Sono in discussione il metodo e la logica seguiti –:

se non ritenga il ministro:

che il Veneto, con la Biennale Musica, l'Arena di Verona e la Fenice di Venezia, abbia la maggiore presenza di potenzialità musicali nel nostro paese; che per Venezia e il Veneto l'ente teatro La Fenice, insieme con la Biennale, costituiscano un patrimonio culturale insostituibile; che per il bene del Teatro e della città si debba scegliere un Sovrintendente radicato nella cultura teatrale e musicale del Paese;

che i candidati sovrintendenti possano non essere necessariamente dei critici musicali o dei musicologi, ma debbano possedere in ogni caso una specifica professionalità;

che l'episodio in esame costituisca prosecuzione di quella stessa logica di « spettanza » delle cariche ai partiti politici, cariche disponibili per le loro « politiche del personale », che ha finora funestato molte istituzioni, anche culturali. E sia come tale respinto, prima ancora che dalla minoranza del consiglio comunale e da rappresentanti del mondo della cultura musicale e teatrale, dai cittadini italiani;

che per tutti questi motivi, e in applicazione di quello stesso criterio che ha convinto il Ministro a rifiutare la nomina a sovrintendente dell'attuale vice sindaco del comune di Venezia, Fulgenzio Livieri, debba essere negato l'ulteriore corso della nomina in oggetto. (4-10296)

RISPOSTA. — *In riferimento all'interrogazione di cui all'oggetto, recante considerazioni sul* curriculum *professionale del dottor Gianfranco Pontel e sulla opportunità di dotare gli enti lirico-sinfonici di sovrintendenti all'altezza dei compiti, devo chiarire in via preliminare che condivido l'esposta opportunità che a sovraintendere gli enti lirici e sinfonici siano chiamati personaggi radicati nella cultura musicale e artistica del paese. Peraltro, la legge 800/67 mentre esige per il direttore artistico il possesso di qualità definite, configura il sovrintendente non per le qualità presupposte nel candidato ma per la funzione attiva cui deve cimentarsi, commettendone al ministro del turismo e dello spettacolo un potere formale mentre la scelta spetta sostanzialmente all'ente locale storicamente portatore di specifico interesse alla buona gestione dell'ente lirico-sinfonico ospitato.*

*Il sovrintendente deve pertanto assicurare, in base alla legge 800/67 e 450/87, sia l'amministrazione dell'azienda ente lirico con le sue particolari connotazioni giuspubblicistiche sia la specifica programmazione musicale, affiancato per questo aspetto, dal direttore artistico.*

*A prescindere dalla formale regolarità delle proposte formulate dal consiglio comunale di Venezia, appurata dal locale organo di controllo sulla base delle norme positive, si è accertato che il designato ha ricoperto incarichi dirigenziali presso aziende pubbliche e private, quale ad esempio l'ufficio bilancio del comune di Venezia, si è occupato di questioni di spettacolo presso la Biennale di Venezia.*

*Tralasciando il riferimento a pratiche spartitorie, affermazione questa che allo stato non è minimamente provata, pur non potendosi parlare nel caso in esame di una specifica professionalità maturata presso enti musicali non si può nemmeno negare il rispetto della legge n. 800/67 che comunque, si ripete, lascia al comune il compito pri-*

*mario della individuazione dell'incaricando.*

*Si tratta quindi di nomina ineccepibile sotto il profilo della legittimità.*

*Coerentemente alle premesse nel disegno di legge di riforma degli enti lirici di prossima presentazione, inserirò fra i requisiti per la nomina a sovrintendente, quello della chiara fama nel settore della cultura musicale.*

Il Ministro del turismo e dello spettacolo: Boniver.

*Stabilimenti Tipografici Carlo Colombo S. p. A.*

ALB11-168
Lire 7900